1

भूमिका

राजस्थानी गद्य–साहित्य : अेक ओळखांण

राजस्थानी भाषा अेक जीवंत, समाज–सापेक्ष, कलात्मक, वैभवपूरण अर ऊंचै दरजै री भाषा है जिणमें सरावणजोग गद्य लिख्यो गयो है। राजस्थानी भाषा में रच्योड़ै काव्य री भांत, अठै गद्य–साहित्य भी घणो सिमरध अर विविधतापूरण है। राजस्थानी रै प्राचीन गद्य में अठै रा सामाजिक, राजनीतिक, धारमिक अर नैतिक पखां रो कलाकारी रै साथै चित्रण होयो है। वात, ख्यात, वंसावली, टीका, वचनिका, हाल, पट्टा, परवाना, सिलालेख, बही, खत आद रै माध्यम सूं सुंदरता रा भावां, सिरजणात्मक प्रवृत्तियां, राजनीतिक दांव–पेच, नैतिक आदर्श अर समाज रा संघर्षपूर्ण तत्त्वां रो हिरदै माथै गहरो असर न्हाखण वाळा चितराम, अठै रै गद्य री महताऊ भूमिका नैं दरसावै। रूपगत अर भौलीगत गुणां रै कारण राजस्थानी–गद्य–साहित्य रो आपरो खास महत्त्व है। राजस्थानी रो प्राचीन गद्य मूळ रूप सूं दो रूपां में मिलै–– 1. मौलिक गद्य, अर 2. अमौलिक गद्य।

प्राचीन अमौलिक गद्य रै अंतर्गत लिखीज्योड़ी सामग्री अठै रा गद्य लिखारां री स्वतंत्र रूप सूं लिख्योड़ी सामग्री है। राजस्थानी रो प्राचीन मौलिक गद्य भी धारमिक मौलिक गद्य, अैतिहासिक मौलिक गद्य, कलात्मक मौलिक गद्य अर अन्य–– आं चार वर्गां में बांट्यो जाय सकै।

राजस्थानी रो प्राचीन मौलिक धारमिक गद्य धरम, दरसण अर आध्यात्मिक भावां सूं परिपूर्ण है। वि. सं. 1330 री 'आराधना' नैं राजस्थानी–गद्य साहित्य परंपरा री पैली कड़ी कैयो जाय सकै। इण भाषा माथै संस्कृत, अपभ्रंश अर सामासिक पदावली रो खासो असर है। धारमिक गद्य भी जैन–शैली अर जैनेतर–शैली, यां दो रूपां में उपलब्ध होवै। जैन–शैली प्राचीन होवण सूं अपभ्रंश सूं प्रभावित ही, जदकै जैनेतर–शैली रै गद्य मांय आम बोलचाल री भाषा रो प्रयोग होवतो हो। जैन–शैली री गद्य रचनावां में नमस्कार, तत्त्वविचार प्रकरण, धनपाल कथा आद चावी है। होळै–होळै जैन–शैली, अपभ्रंश रै प्रभाव सूं मुगत होवण लागी। मेरुसुंदर, पार्श्वचंद्रसूरि, जयशेखरसूरि, साधुकीर्ति, जयसोम, शिवनिधान, समयसुंदर, मतिकीर्ति, भीखण, जयाचार्य आद जैनाचार्य तत्त्व–ग्यान अर रीति–नीति रा ग्रंथ लिख'र जनै धरम रै प्रचार–प्रसार में आपरी भूमिका निभाई। जैनेतर धारमिक गद्य में वरत, तीज–तिंवार अर धारमिक पौराणिक कथावां शामिल है। नरसिंघ जयंती, नाग पांचम, बछ बारस, ऊब छठ, रामनवमी, सोमवती अमावस, जनमाष्टमी, शिवरात आद री वातां आवै।

धारमिक गद्य लेखन परंपरा रै विकास रै साथै अैतिहासिक गद्य लेखन कांनी भी गद्यकारां रो ध्यान आकर्षित होवण लागो। ओ गद्य भी जैन–शैली अर जैनेतर–शैलियां मांय लिख्यो गयो। जैन धरम रा विद्वान गुरवावळी, पट्टावली, वंसावली, उत्पत्ति ग्रंथ, दफ्तर बही अर अैतिहासिक टिप्पण रै माध्यम सूं इतिहास रा तथ्यां नैं, सहेजण रो सफळ प्रयास कर्‌यो।

इतिहास री घटनावां नैं गद्यबद्ध करण वाळा विद्वानां में जैनेतर धरम रा विद्वानां रो खासो महत्त्व है। वि. सं. 1574 मांय बादशाह अकबर अलग सूं 'इतिहास कक्ष' री थरपणा करी जिणरो असर स्थानीय शासकां माथै भी पड़्यो। इणरो खास कारण ओ भी हो कै स्थानीय राजा–महाराजा अर अमीर–उमराव आप–आपरा हलकां में होया वीरोचित कामां नैं जगचावो करणो चावता हा। राजस्थानी रै प्राचीन अैतिहासिक गद्य री सामग्री ख्यात, वात, पीढी, विगत, वंसावली आद रूपां में उपलब्ध होवै। ख्यात में चावा राजवंशां, शासकां अर वीर जोधावां रै वीरतापूर्ण कामां रो बखाण होवतो। ख्यात–साहित्य रा भी च्यार रूप मिलै–– इतिहासपरक ख्यात, वारतापरक ख्यात, व्यक्तिपरक ख्यात अर स्फुट ख्यात।

इतिहासपरक ख्यात मांय किणी शासक कै इतिहास नैं नवी दिशा–दृष्टि देखावण वाळै जोधा रै जोरावरी पूर्ण कामां रो तिथिक्रम रै परिपेख में वर्णन होवतो। 'दयालदास री ख्यात', 'चहुंवाण सोनगरा री ख्यात' आद ख्यातां इणी वर्ग रो प्रतिनिधित्व करै। वारतापरक ख्यातां मांय इतिहास री घटना रै साथै दूजी घटनावां रो भी मेळ देखण में आवै। 'मुंहता नैणसी री ख्यात' इणी वर्ग री ख्यात है। इणमें भांत–भांत रा राजघराणां, राजा–महाराजा अर इतिहास री घटनावां रो विवरण होवै। केई बार आं ख्यातां में अतिरंजना रा उदाहरण भी निजर आवै। उदाहरण सरूप 'बांकीदास री ख्यात' नैं लियो जाय सकै। इण ख्यात में 2776 वातां है। उण समै रै सामाजिक सांस्कृतिक जीवण रा भांत–भांत रा पखां नैं उजागर करण वाळी व्यक्तिपरक ख्यातां घणी सरस होवै। व्यक्तिपरक ख्यात विधा में किणी खास मिनख, कै इतिहास पुरुष रा गुणां रो बखाण देख्यो जाय सकै।

ख्यात री भांत विलास भी प्राचीन गद्य रो खास रूप है। इणमें किणीं व्यक्ति रै जीवण–चरित्र रो विस्तारू विवरण होवै। राजस्थानी–गद्य रूप विलास नैं, फारसी तवारीख ग्रंथ 'नामा' सूं मिलतो–जुलतो मान्यो जाय सकै। इण वर्ग री सिरै रचना 'दलपत विलास' है। इणमें बीकानेर रा महाराजा रायसिंह रै राजकुमार दलपतसिंह रै जीवण रा घटना–प्रसंगां रो असरदार वर्णन होयो है। इणी भांत पट्टा, परवाना, इलकाबनामा, जनम–पत्रियां, तहकीकात आद भी, उण समै रै सामाजिक, राजनीतिक अर सांस्कृतिक जीवण नैं गहराई सूं दरसावण री सामरथ वाळा है। तहकीकात, किणी घटना री खोज–खबर अर छाण–बीण सूं संबंध राखण वाळो विवरण होवै। फैसला अर वसीयतनामा भी इतिहासू गद्य री ई कड़ियां है।

राजस्थानी–गद्य–साहित्य री खास अर चावी विधावां मांय कलात्मक गद्य लेखन रो घणो महत्त्व है। ओ गद्य भी पांच रूपां में मिलै। वचनिका, दवावैत, सिलोका, वरणक–ग्रंथ अर वात। वचनिका रा पद्यबद्ध अर गद्यबद्ध––अै दो रूप चावा है। पद्य वाळी वचनिका मांय आठ–आठ मात्रा, कै बीस–बीस मात्रा में तुकबंदी वाळै गद्य रो लेखन होवै जदकै गद्यबद्ध वचनिका में मात्रावां रो कोई बंधन नीं होवै। गद्यबद्ध वचनिका वारता अर तुकवाळै गद्य––आं दो रूपां में मिलै। वचनिका लिखारां मांय चारण अर जैन विद्वान शामिल है। शिवदास गाडण री 'अचलदास खीची री वचनिका', जग्गा खिड़िया री 'वचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोत री खिड़िया जग्गा री कही' चारण–शैली री सरावणजोग वचनिकावां है। जैन–शैली री वचनिका में जिनसमुद्रसूरि री वचनिका अर शांतिसागरसूरि री वचनिका खासी महताऊ है। राजस्थानी री प्राचीन गद्य परंपरा मांय 'दवावैत' रो खास महत्त्व है। पंजाब मांय 'वेतां' रो घणो प्रचार हो। 'वैत' सबद अरबी भाषा रो है। चावा मुगल तवारीख लेखक फिरदौसी 'शाहनामा' ग्रंथ में इणीं छंद रो प्रयोग कर्‌यो हैं ओ छंद पिंगल रै चावै गीताछंद सूं मिलतो–जुलतो है, जिणमें 14–12 मात्रावां होवै। राजस्थानी दवावैत थोड़ी अलग तरै री होवै। छंद–शास्त्र रै 'रघुनाथ रूपक' ग्रंथ में दवावैत रा पद्यबद्ध अर गद्यबद्ध––अै दो रूप बताया गया है। पद्यबद्ध दवावैत मांय 24–24 मात्रावां वाळै तुकबद्ध गद्य रो प्रयोग तो होवै, पण इणमें मात्रावां रो बंधण नीं होवै। चारण–शैली रा दवावैतां में वि. सं. 1715 सूं 1739 रै बीच री रची 'भींवजी विट्ठलदासौत गौड़' अजमेर रा राजगढ ठिकाणां रा स्वामी री है। गद्य अर पद्य में रची आं दवावैतां मांय वीर रस, सिणगार रस अर भक्ति रस री अनूठी छटा रा दरसाव घणा सोवणा है। आं दवावैतां में वयण सगाई अलंकार री सोभा भी तारीफ रै काबिल है। उदाहरण रै रूप में नायिका री खूबसूरती रो चितराम दरसावण वाळी दवावैत 'रतना हमीर री वारता' में दिरीज्योड़ी च्यार दवावैतां मांय सूं, चौथी दवावैत री कीं ओळ्यां मुलाइजो फरमाओ––

''आभा की बीज। सांवण की तीज।। नेह की सागर। अम्रत की गागर।। पूंगळ को लहजौ। हेत को हेजौ। रेसम को लछौ। कुरज को बचौ। दौत रो फूंदौ। चंदण रौ सूंघौ। थाकौ सो हंस। रती

को अंस।। होळी की झाळ। चंपा की डाळ।। केसर की क्यारी। नखरै छट न्यारी।।''

दवावैत परंपरा मांय 'महाराजा अजीतसिंहजी री दवावैत', 'महाराजा रतनसिंहजी री दवावैत' अर 'सुपना मध्य री दवावैत' चारण–शैली री है अर जिनसुखसूरि अर जिनलाभसूरि री दवावैतां नैं जैन–शैली री दवावैतां रै वर्ग में राखी जाय सकै। 'सिलोको' भी कलात्मक गद्य रो ई रूप है। रघुनाथ रूपककार इणनैं गद्य रो ईज प्रकार मान्यो है। अंत में तुक मिलण रै कारण ओ काव्य जैड़ो लखावै जरूर है, पण है आ गद्य री ई विधा। इण विधा मांय देवी–देवता अर शूरवीरां री जस–महिमा रो बखाण कर्‌यो जावै। राजस्थानी रा प्राचीन कलात्मक गद्य परंपरा रो अेक खास रूप 'वरणक' कै 'वर्णक' भी है। वरणक–ग्रंथां में किणीं विषय या घटना कै प्रसंग रै विस्तार रै साथै वर्णन री प्रवृत्ति देखण में आवै। 'सभा शृंगार' ग्रंथ इण परंपरा रो सिरै ग्रंथ है जिणरो असर उण समै रा अर बाद में लिख्या गया 'वरणक' ग्रंथां माथै पड़्यो। 'वरणक' ग्रंथां में कविता वाळी भाषा, आलंकारिकता, तुकबंदी, प्रवाह अर चित्रात्मकता जैड़ा गुणां रा दरसाव होवै। चारण–शैली रा वर्णक ग्रंथां मांय 'खीची गंगेव नींबावत रो दोपहरो', 'वाग्विलास', 'राजान राउत रो वात बणाव' अर 'आखड़ी री वात' आपरी खास अहमियत राखै। वात–साहित्य भी कलात्मक गद्य रो ईज अेक रूप है। हालांकै आधुनिक कहाणी री तुलना मांय वात–साहित्य में थोड़ी अलग रूपता देखण में आवै। आं वातां नैं कैवण–सुणण री अलग परंपरा है। वात कैवण वाळो रस री तल्लीनता रै साथै वात सुणावै अर सुणन वाळा श्रोता 'हुंकारा' देय–देयनै वात रो रसपान करता रैवै। अठै दो–तीन मिनटां में संपूर्ण होवण वाळी लघुवातां रै साथै ई, छः–छः मईनां तक पूरी होवण वाळी दीरघ वातां भी मिलै। कथा रै बीच में मधुरोक्तियां, चुटकियां, सटीक सबदां, कहावतां–मुहावरां अर अनुभव कर्‌योड़ा दूहा–सोरठां रै प्रयोग सूं वातां नैं घणी वजनदार अर असरदास बणायी जावै। राजस्थानी वातां भांत–भातं रा रंग अर रसां सूं परिपूर्ण है। धारमिक, पौराणिक, सामाजिक, राजनीतिक, पारलौकिक, भूत–प्रेत, पशु–पक्षियां, टूणा–टोटका, जादू–मंतर आदि सूं संबंध राखण वाळी अै वातां आकार–प्रकार अर कलेवर में लंबी होयां रै बावजूद किणी तरै री नीरसता री सृष्टि नीं होवण देवै। वीर रस, सिंणगार रस, भक्ति रस, रीति, नीति अर ग्यान–ध्यान री वातां रो आपरो अनूठो इतिहास है।

प्राचीन गद्य रा दूजा रूपां मांय ज्योतिष, वैद्यक, विग्यान, व्याकरण अर योग रा ग्रंथ आवै। शिलालेख अर चिट्‌ठी पत्रियां रो गद्य भी उण बगत री परिस्थितियां नैं चित्रित करै। जैन–धरम रा विद्वान भी घणा ई धारमिक ग्रंथ लिख्या। उन्नीसवीं सदी में विरचित 'भिक्खु द्रष्टांत' संस्मरण वाळै गद्य रो उल्लेखजोग उदाहरण है। मंज्योड़ै गद्य री दीठ सूं उण बगत री लिखी चिट्‌ठी–पत्रियां री भी खास भूमिका है। उदाहरण रै तौर माथै सासू रै हाथां सूं जंवाई नैं संबोधित करनै लिखी चिट्‌ठी री कीं ओळ्यां देखो, आं मांय सबदां री नक्काशी अर उपमावां री चित्रकारी साथै, हिरदै री उमंग रो सरसता रै साथै प्रकासण होयो है––

''जीव रा आधार। जीव री जड़ी। काळजै री कोर। चढते तेज। वधती वेल। हीरा–पन्ना री खान। मोतियां रा आगर। केसर री क्यारी।''

प्राचीन अमौलिक गद्य मांय टीका अर अनुवाद ग्रंथ भेळा है। कठिन अर क्लिष्ट भाषा रा संस्कृत, अपभ्रंश अर प्राकृत ग्रंथां नैं सुपाठ्य बणावण रै उद्देश्य सूं, टीका ग्रंथ लिख्या गया। टीका ग्रंथ रा दो रूप––बालावबोध अर टब्बा मिलै। बालावबोध में मूळ बात, कै सिद्धांत नैं सरल अर सुगम बणावण री नीयत सूं उणांरै साथै दूजा कथा–प्रसंगां नैं जोड़ देवै। वि. सं. 1358 में 'नवकार व्याख्यान' ग्रंथ री सिरजणा रै साथै बालावबोध रो लेखन सरू होयग्यो हो, पण इण विधा नै सही तरीकै सूं लोकचावी बणावण रो श्रेय तरुणप्रभसूरि नैं है। 'शडावश्यक बालावबोध' ग्रंथ में आचार्य तरुणप्रभ संस्कृत अर प्राकृत रा क्लिष्ट अर कठिन प्रसंगां री लोकभाषा मांय व्याख्या करी। सोमसुदंरसूरि, मेरुसुंदर अर पार्श्वचंद्र

जैन–शैली री बालावबोध री सिरजणा करी जदकै शिवनिधान, जयकीर्ति, कुशलधीर, लक्ष्मीवल्लभ आद विद्वान जैन धरम रै अलावा दूजा विषयां नैं बालावबोध रो आधार बणायो। जैन धरम रा विद्वान पृथ्वीराज राठौड़ री रची 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' ग्रंथ री भी टीका लिखी ही।

टब्बा रो आकार अर फैलाव बालावबोध सूं कम अर सीमित होवै। इण टीका में कठिन सबदां रा अरथ लिख दिया जावै। संवेगदेव, सोमविमलसूरि, शिवनिधान जैड़ा टब्बाकारां रै अलावा श्रीमद्भगवद्गीता अर दूजा पौराणिक ग्रंथां रो टब्बा–लेखन भी, राजस्थानी भाषा में घणै परिमाण में होयो। अनुवाद नैं भी अमौलिक गद्य–साहित्य री खास विधा कैयो जावै। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश अर अरबी–फारसी भाषावां रै ग्रंथां रो राजस्थानी भाषा में अनुवाद करनै बहुभाषावां रा जाणकार विद्वान, अनुवाद विधा रै माध्यम सूं लोगां रो ग्यानवर्धन कर्‌यो। क्षमाविजय रो 'विशेष सतक' संस्कृत ग्रंथ रो राजस्थानी में अनुवाद है। विसं. 1877 में लक्ष्मीधर, वि. सं. 1886 में श्रीकृष्ण व्यास अर वि. सं. 1913 में हीरालाल रतानी 'गरुड़ पुराण' रो राजस्थानी मांय अनुवाद कर्‌यो। ज्योतिष रा जाणकार श्रीधर संस्कृत रै 'गणित सार' ग्रंथ रै अनुवाद सूं, वैग्यानिक अनुवाद ग्रंथां रै लेखन रो श्रीगणेश होयो। विग्यान रै साथै ज्योतिष अर वेदगिरी रा ग्रंथां रै अनुवाद रो काम भी राजस्थानी भाषा में जोस–खरोस रै साथै होवण लागो।

प्राचीन गद्य री भांत, राजस्थानी रो आधुनिक गद्य भी आपरी खास ओळखांण करावण वाळो है। गद्य रा भांत–भांत रा रूपां मांय कहाणी उपन्यास, अेकांकी, नाटक, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा, डायरी, पत्र–लेखन, यात्रा–वर्णन, फीचर लेखन, रेडियो लेखन आद रूप घणा चावा है। 'वेश्योपकारक' हिंदी मासिक में शिवचंद्र भरतिया री लिखी 'विश्रांत प्रवासी' पैली राजस्थानी कहाणी छपी। गुलाबचंद नागौरी, छोटेराम शुक्ला, ब्रिजलाल बियाणी, भगवतीप्रसाद दारूका, नारायण तोसनीवाल आद कहाणीकार आम बोलचाल री भाषा मांय समाज सुधारवादी कहाणियां रै माध्यम सूं शिवचंद्र भरतिया री परंपरा नैं आगै बधावण रो प्रयास कर्‌यो। इणरै बाद घटना प्रधान कहाणी लेखन री परंपरा रो श्रीगणेश होयो। मुरलीधर व्यास 'राजस्थानी' रो कहाणी–संग्रै 'बरसगांठ', श्रीचंद राम माथुर रो 'मिठाई रो पूतळो', श्रीलाल नथमल जोशी रो 'परण्योड़ी कंवारी', डॉ. नृसिंह राजपुरोहित रा कथा–संग्रै 'रातवासो', 'अमर चूंनड़ी', 'मऊ चाली माळवै', 'प्रभातियो तारो' अर 'अधूरा सुपना' रै प्रकासण रै साथै, राजस्थानी कहाणी कला रै विकास–विस्तार में सरावणजोग बदळाव आयो। संस्कृति रा आछा गुणां नैं सहेजण रै साथै, आं कहाणियां में मिनख, परिवार अर समाज री तरक्की नैं रोकण वाळा परंपरागत अंधविश्वासां रै अंधारै सूं बारै आवण रो, उद्‌घोष मुखरित होयो है। सुशीला गुप्ता री 'अमाणत' कथा पति अर पत्नी रा आपसी रिश्ता मांय पैदा होवण वाळी खटास अर कड़वास, लक्ष्मीनारायण रंगा री 'इंदर धनुस' जात–पांत री संकीर्णता, भंवरलाल भ्रमर री 'अपडाउन' नौकरी करण वाळी स्त्री रै पारिवारिक अर सामाजिक जीवण में पैदा होवण वाळी अबखायां, शांता भानावत री 'सगपण', कुसुम मेघवाळ री 'लौटती खुसियां' दायजै री समस्या, यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' री 'खून' जासूसी कथावस्तु रै परिपेख में दहेज रै लोभी पति री कारगुजारियां रो हवालो दियो गयो है। 'घर' कहाणी में डॉ. मदन केवलिया अनाथ अर बेसहारा टाबरां री समस्या कांनी ध्यान आकर्षित करायो है। 'आसिरवाद' कहाणी में ओमप्रकाश गर्ग 'मधुप' परिवार रा सदस्यां री खुशियां में बाधा बणण वाळा अंधविश्वास, पगफेरा, सुगन–अपसुगन आद कुरीतियां माथै प्रकाश डाल्यो है। अशोक जोशी 'क्रांत' रै कहाणी संग्रै 'आड़ंग' में उत्तर आधुनिकता नैं परोटता थकां आज रै बदळतै संबंधां री कहाणियां है, 'जोड़–बाकी' बात–बतळाव–शैली में लिख्योड़ी प्रशासनिक भ्रष्टाचार माथै चोट करै जदकै 'राड़ अर बाड़' कहाणी आर्थिक अभाव अर टूटता संयुक्त परिवारां री पीड़ पंपोळै। डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत रो कहाणी संग्रै 'हिये रा हरफ' नारी–जीवण रै भांत–भांत रा पखां री ओळखांण करावै। रामनिवास सोनी री 'जीवती जूण' कहाणी विधवा नारी रै जीवण रो मानसिक चित्रण

करण वाळी कहाणी है। सत्यनारायण स्वामी री 'बाबासा री लाडली' डाकू समस्या माथै आधारित कथा है। लक्ष्मण गिरी गोस्वामी 'करम रेख' कहाणी रै माध्यम सूं वां भारतीयां रै चारित्रिक अधोःपतन नैं दरसायो है जिका विदेश में जाय'र दूजो ब्याव रचा लेवै। गाडिया लुहारां री निरधनता नैं उजागर करण वाळी मनोहर सिंह राठौड़ री 'इमरती' कहाणी भाव अर भाषा री दीठ सूं असरदार है।

राजस्थानी भाषा री पत्र–पत्रिकावां में टैम–टैम माथै बाल–कथावां रो भी प्रकासण होयो है। ओळमों, कुरजां, हरावळ, मरुवाणी, माणक आद में छपी बाल–कथावां, राजस्थानी जनजीवण री सही अर सटीक ओळखांण करावै। फकीरचंद व्यास री 'बामण रो पेट' अर 'मतलबी मोडा', श्रीलाल नथमल जोशी रा 'दो बाळगोटिया', 'गोकड़ी रा लाडू' अर 'सुधी अर पाटळ', देव शर्मा री 'ताजा पकवान', 'अणमोल वरदान' अर 'संगत रो फळ', मंजु खारेड़ री 'छोटकी राणी' डॉ. किरण नाहटा री 'सूनी दीठ', 'तैरता चित्राम' अर 'तिरवाळो', गोविंद अग्रवाळ री 'घर रा घर में सलट लिया' अर 'राजाजी री बिल्लड़ी', कमलसिंह वैद री 'रजपूताणी', शशिकांत शर्मा री 'सूवो अर कबूतर', राजश्री राठौड़ री 'उदबिलाव अर सेवलो', झूमरलाल वर्मा रो 'धनुष किण तोड़्यो', शांता संत री 'तीरथ जातरा', भंवरलाल सुथार री 'गधै सूं आदमी', मूलचंद प्राणेश री 'ज्यान ऊबरी लाखां पाया', किशोर कल्पनाकांत री 'मूरख', 'तेरवों कमरो', शकुंतला री 'सांप सीढी रो खेल', निर्मोही व्यास री 'रात रो रुखाळो', जुगल परिहार री 'धरमराज अर बाणियौ', कन्हैयालाल सहल री 'उत्तर पड़ूत्तर', सौभाग्यसिंह शेखावत री 'आकास रै मांय गंडक घुसै है', पारस कुमार नाहटा री 'फुटबाल री आतमकथा' अर विनोद सोमानी री 'मोटा मिनख' अर 'हंस' आद कथावां बाल–मनोविग्यान नैं आधार बणाय'र लिखीज्योड़ी कहाणियां है। आं कहाणियां मांय बाल सुलभ सरसता, सरलता अर मन बहलाव रै साथै ग्यान–वर्धन रै तत्त्वां माथै खास तौर सूं जोर दिरीज्यो है।

लोककथावां री शैली माथै राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, विजयदान देथा, डॉ. मनोहर शर्मा, नानूराम संस्कर्ता आद राजस्थानी री लोक–संस्कृति अर अठै रा लोगां मांय मिलण वाळा सरावणजोग गुणां नैं आधार बणाय'र कथावां रो लेखन कर्‌यो है। आधुनिक गद्य विधावां मांय 'लघुकथा' री भी घणी अहमियत है। पच्चीस सबदां सूं लेयनै दो सौ सबदां तक में लिखी जावण वाळी आं कहाणियां में 'गागर में सागर' भरण री प्रवृत्ति देखण में आवै। श्रीलाल नथमल जोशी री 'कोथळी में लाडू', श्रीचंद राय माथुर री 'खरो सनेव', विश्वंभर प्रसाद शर्मा री 'ओसाण', डॉ. मनोहर शर्मा री 'सोनल भींग' अर रामनिवास शर्मा री 'नैणा खूट्यो नीर' आद इण परंपरा री सिरै लघुकथावां है।

मिनख रै वास्तविक जीवण री काल्पनिक अर बणावटी कथा नैं उपन्यास कैवै। राजस्थानी उपन्यासां री सरूआत सन् 1903 सूं शिवचंद्र भरतिया रै 'कनक सुंदर' उपन्यास सूं मानी जावै। इणमें मारवाड़ी समाज री कुरीतियां रा चितराम खेंच्या गया है। श्रीनारायण अग्रवाळ रो 'चंपा' उपन्यास भी सामाजिक समस्या माथै आधारित है। इण मांय अणमेळ ब्याव रै परिपेख में अेक निरधन परिवार री स्त्री रै वेश्या बण जावण री घटना रो वर्णन है। श्रीलाल नथमल जोशी रा उपन्यासां मांय 'धोरां रो धोरी' जीवणी परक उपन्यास है, जदकै 'अेक बीनणी, दो बींद' अर 'आभै पटकी' उपन्यास मांय अणमेळ ब्याव अर विधवा समस्या नैं उभार्‌यो गयो है। अन्नाराम सुदामा री 'मैकती काया मुळकती धरती', 'मेवै रा रूंख', 'आंधी अर आस्था' आद ग्रामीण समस्यावां माथै आधारित सामाजिक उपन्यास है। राजस्थानी रा आधुनिक उपन्यासकारां में यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' री महती भूमिका है। आं रा उपन्यासां में भाग्य री विडंबना नैं दरसावता, विधना रा लेखां नैं अटल मान्यो गयो है। 'हूं गोरी किण पीव री' अर 'जोग संजोग' अैड़ा ई आंचलिक उपन्यास है, जिणां में भाग री प्रबळता नैं मार्मिकता रै साथै चित्रित कर्‌यो गयो है। दीनदयाल कुंदन 'गुवारपाठो' उपन्यास रै माध्यम सूं भिखारियां रै दीन–हीण जीवण रै परिपेख में उणांरै हिरदै मांय लोगां रै वास्तै पैदा होवण वाळा हमदरदी रा भावां रो दरसाव करायो है। डॉ. नृसिंह राजपुरोहित जैन

धरम रा चौबीसवां तीर्थंकर भगवान महावीर रै जीवण–दरसण अर उणांरा मानवतावादी विचारां नैं आधार बणाय'र 'भगवान महावीर' उपन्यास री सिरजणा करी। अैतिहासिक उपन्यासां री परंपरा में सत्येन जोशी रो 'कंवळ पूजा', महेंद्र प्रतापसिंघ रो 'अेक चिमटी लूंण री खातिर' अर पारस अरोड़ा रो 'खुलती गांठां' सरावणजोग उपन्यास है। राजस्थानी भाषा मांय मनोविश्लेषण वाळा उपन्यास लिखारां मांय छत्रपति सिंह रो 'तिरसंकू' उपन्यास उल्लेखजोग है। फ्रायड रै मनोविग्यान माथै आधारित इण उपन्यास में यौन कुंठा रै कारण पैदा होवण वाळी समस्यावां अर वर्ग–संघर्ष रा सबदचित्र खेंच्या गया है। लोककथावां माथै आधारित उपन्यासां मांय विजयदान देथा रा 'आठ राजकुंवर', 'सांच रो भरम', 'तीडौ राव' अर 'मां रौ बदळौ' उपन्यास लोकजीवण में घणा चावा है। आं उपन्यासां मांय वर्णन घणा सरस अर चित्रात्मक है। 'तीडौ राव' प्रतीक शैली रो उपन्यास है। रामनिवास शर्मा रै 'काळ भैरवी' उपन्यास में तांत्रिक–साधना रै परिपेख में, अेक नारी रा मन रा भावां रा चितराम खेंच्या गया है। राजस्थानी रा आधुनिक उपन्यास लिखारां मांय देवकिशन राजपुरोहित रो भी चावो नांव है। अै समाज री समस्यावां नैं आधार बणायनै उपन्यासां री सिरजणा करी है। 'सूरज', 'जंजाळ', 'कपूत', 'धाड़वी', 'दातार', लिछमी' अर 'कळंक' आं रा चावा उपन्यास है। आं उपन्यासां रै अलावा सीताराम महर्षि री 'लालड़ी अेकर फेरूं गमगी', किशोर कल्पनाकांत रो 'धाड़वी' अर 'भोळियो', रामकृष्ण व्यास 'महेंद्र' रो 'रोहिड़ै रा फूल', गोविंद कल्ला रो 'हुंकारा' अर 'दुर्गादास राठौड़', प्रेमजी प्रेम रो 'सेळी छांव खजूर की', जुगल परिहार रो 'हेलो' अर 'सड़कां', हरमन चौहान रो 'ओयधन', सुमेरसिंह शेखावत रो 'रावळै री रातां' उपन्यास भी उल्लेखजोग है।

राजस्थानी भाषा मांय बाल–उपन्यासां री भी सिरजणा होयी है। भंवरलाल 'भ्रमर' रो 'भोर रा पगलिया', बी. अेल. माली 'अशांत' रा 'बिलाणियो दादो', 'दूधिया दांत', 'कुचमादी राजू', 'बैजू' अर 'पिंटू बाबो', अब्दुल वहीद 'कमल' रो 'हाऊड़ै रो धोरो', अन्नाराम सुदामा रो 'गांव रो गौरव' अर मानसिंह शेखावत रो 'अेक थाळी आरतो' आद बाल–उपन्यास टाबर–टोळी द्वारा घणा सराया गया है। आं री भाषा आम बोलचाल री, मुहावरां वाळी, सरस अर चित्रात्मक है।

राजस्थानी अेकांकी री सरूआत वि. सं. 1962 में 'वैश्योपकारक' मांय पंडित माधवप्रसाद री छपी 'बड़ा बाजार' अेकांकी सूं हुई। इण अेकांकी मांय मारवाड़ी समाज रा दुरगुणां रो हवालो दियो गयो है। शोभाराम जम्मड़ री 'वृद्ध विवाह विदूषण' अणमेळ ब्याव अर उणरै कारण पैदा होवण वाळी समस्यावां माथै आधारित अेकांकी है। 'टींगर–टोळी' में जनसंख्या बढोतरी अर उणरा बुरा परिणामां कांनी संकेत कर्‌यो गयो है। गांव वाळां री अशिक्षा अर भोळपणै रै कारण, पूंजीपति लोगां रै, उणांरै साथै शोषण री समस्या रो वर्णन श्रीनाथ मोदी री 'गोमो जाट' अेकांकी मांय होयो है।

राजस्थानी रा अेकांकी लिखारा मांय गोविंदलाल माथुर री घणी मानींद ठौड़ है। फूटरी, सरस अर मुहावरा वाळी आम बोलचाल री सरल भाषा में अै समाज री समस्यावां नैं आपरी अेकांकियां री सहायता सूं जगजाहिर करी है। 'सतरंगिनी' अर 'राजस्थानी हास्य अेकांकी' संग्रहां रै माध्यम सूं गोविंदलाल माथुर अेकांकी कला रो सरावणजोग विकास कर्‌यो। 'डाक्टर रो ब्याव' अेकांकी दहेज री कुटेव माथै आधारित अेकांकी है। इणरै अलावा 'परदा', 'बेकारी', 'फिल्मी हवा', 'शादी या बरबादी', 'काळा बाजारी', शराब री शराफत', 'आदर्श गांव', 'जातिभेद', 'मुकदमेबाजी' आद अेकांकियां लिख'र सामयिक समस्यावां कांनी लोगां रो ध्यान आकर्षित कर्‌यो है। निरंजन नाथ आचार्य री 'नहरी झगड़ो' अर 'गांव री जोत' ग्रामीण समस्यावां माथै अेकांकी है। आं में ऊंच–नीच, छुआछूत आद बुराइयां नैं छोड'र, आपसी हेत रै साथै रैवण रो उद्‌घोष है। मालचंद कीला 'ठा पड़बा लागगी' अेकांकी मांय हास्य–व्यंग्य रै साथै ग्रामीण लोगां नैं अेकता रो पाठ पढायो है। रामदत्त सांकृत्य री 'देस रो हेलो' अर 'सुरग री पुकार'

अेकांकियां देशभक्ति, वीरता अर मायड़ भोम खातर प्राण निछावर करण री ललक माथै आधारित अेकांकिया है। सुखदा कछवाहा री 'हाथी रा दांत' दहेज समस्या, आज्ञाचंद भंडारी री 'देस रै वास्तै', 'कायर', 'सजा', 'बदळा री आग', 'भगवान मिलै', 'देस भगत भामासा' सामाजिक समस्या अर देशप्रेम, नागराज शर्मा री 'राम मिलाई जोड़ी' संग्रै री सात समस्या प्रधान अेकांकियां है।

डॉ. मनोहर शर्मा रै अेकांकी संग्रै 'नैणसी रो साको' मांय इग्यारै अेकांकियां है। सुधार री भावना सूं लिखीजी अेकांकियां मांय अन्नाराम सुदामा री 'उठती दूकान', बैजनाथ पंवार री 'आपणो खास आदमी', रावत सारस्वत री 'संपादक री मौत', नारायणदत्त श्रीमाळी री 'बातचीत', विनोद सोमानी री 'रंग में भंग' रामनिवास शर्मा री 'टमरक टूं' आद अेकांकियां घणी सामयिक अर हास्य–व्यंग्य रै साथै समाज रै छबरूप री सही ओळखाण करावण वाळी है।

राजस्थानी नाटकां रो लेखन शिवचंद्र भरतिया रा 'केसर विलास', 'फाटका जंजाळ' अर 'बुढापै री सगाई' नाटकां सूं मान्यो जावै। आं नाटकां मांय उण बगत रा मारवाड़ी समाज री कुरीतियां रा चितराम खेंच्या गया है। भगवतीप्रसाद दारुका रा 'बालविवाह', 'व द्धविवाह', 'ढळती फिरती छाया', 'सीठणा सुधार' अर 'कलकतिया बाबू' नाटक वि. सं. 1988 में कलकत्ता सूं 'मारवाड़ी पंचनाटक' शीर्षक सूं छप्या। गुलाबचंद नागौरी रा 'मारवाड़ी मौसर' अर 'सगाई जंजाळ', बालकृष्ण लाहोटी रो 'कन्या बिक्री' अर नारायण सारड़ा रै 'बाल ब्याव' नाटक में मौत रै बाद होवण वाळै भोज, ब्याव–सगाई री समस्यावां, दहेज समस्या अर बाल–ब्याव री समस्या नैं उठाय'र लोगां नैं आं दुरगुणां सूं अळगो रैवण रो संदेश दियो है। नारायण अग्रवाळ रा 'विद्या उदय', 'अक्कल बडी कै भैंस', 'बाल ब्याव को फोर्स', 'महाभारत को श्रीगणेश' आद नाटकां में सामाजिक बुराइयां नैं मेट'र आछै अर आदर्श समाज रै निर्माण री कामना करी है। अशिक्षा नैं सगळी बुराइयां रो कारण मानतां नाटककार लिख्यो है––

''हाय, आ मारवाड़ी समाज की कांई दशा हो रही है। बैपार डूब गयो। धरम–करम सूं सरधा हट गई। आपस को प्रेम मिटग्यो, नै बारै सूं विदेसी लोगां आय'र धन कमाय रया छै। समाज नै बड़ा–बड़ा जातीय विद्यालय खोल'र सुशिक्षित बणाणो चाइजै। मातृ भाषा मारवाड़ी को दिन–दिन ह्रास होयर दूजी भाषावां बींको सिंघासण खोस रइ छै। इण दुख सूं काळजो फाटै छै।''

नारायण अग्रवाळ 'महाराणा प्रताप', 'भाग्योदय', 'क्षात्रधर्म', 'समाज सेवक' अर 'सरस्वती विजय' नाटकां री भी सिरजणा करी। सुधार भावां रा नाटकां में पंडित मदन मोहन रो 'जैपर री ज्योणार', ठाकुर दत्त दधीचि रो 'माहेश्वरी पंचायत रो बायस्कोप', ओसवाळ हितकारिणी सभा, लाडनूं रो 'समाज सुधार', जमनादास पचेरिया रो 'नई बीनणी', निर्मोही व्यास रो 'मंगळियै रो बाप' घणा असरदार है। यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' रा 'तास रो घर' में स्वतंत्रता रै बाद देश में पनपी अवसरवादिता अर आपाधापी रा सटीक चितराम खेंचीज्या है। डॉ. अर्जुनदेव चारण रो संस्कृत नाटक मृच्छकटिकम् रो अनुवाद 'माटी री गाडी' अर लोककथावां माथै आधारित 'धरमजुद्ध' दो नाटकां रो संग्रै है। जयचंद शर्मा रो 'गणगोर', बद्रीप्रसाद पंचोली रो 'अरजण समरपण', दलपत परिहार रो 'मिनख कै पेड़', बी. अेल. माली 'अशांत' रो 'बोलता आखर', राघव प्रकाश रो 'तीसरो मचाण', अे. वी. कमल रो 'अमूजो' आद नाटकां में समसामयिक घटनावां रै परिपेख मांय मिनख री मजबूरियां रा मनोवैज्ञानिक चितराम घणा असरदार अर राजस्थानी भाषा अर साहित्य रै गौरव नै बधावण वाळा है। अशोक जोशी 'क्रांत' रो नाटक 'जागतो रैणो है' समाज री विसंगतियां माथै चोट करता थकां सावचेती रो संदेस देवै। आंरै बाल नाटक संग्रै 'आखर–आखौ' मांय चार लघुनाटक– 'आखर–आखौ , 'अणभणिया राम', 'नकली राजा' अर 'हिम्मत री कीमत' बाल–मनोविग्यान माथै आधारित सरस अर असरदार नाटक है।

मिनख री चिंतन–शैली री छबरूप निबंध विधा भी, गद्य–साहित्य री खास विधा है। राजस्थानी

भाषा रा निबंधां मांय भी भांत–भांत रा विषयां रो सूक्ष्म, सटीक अर मनोविश्लेषण वाळो वर्णन मिलै। गंगाराम पथिक रो 'देस दिसावर रा लोग', 'डॉ. शक्तिदान कविया रो 'मायड़ भाषा में शिक्षा अर राजस्थानी', डॉ. गोवर्द्धन शर्मा रो 'साहित्य अर उणरा भेद', राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रो 'मेवाड़ी फागण' अर तेजाराम स्वामी रो 'थळी रो मेवो–मतीरो' निबंध घणा असरदार अर राजस्थान री संस्कृति रा गुणां रा दरसाव करावण वाळा है। सौभाग्यसिंह शेखावत रा निबंधां मांय इतिहास री घटनावां रा असरदार चितराम है। डॉ. मनोहर शर्मा रो 'मुंशीजी रो सुपनो', मुरलीधर व्यास 'राजस्थानी' रो 'जूना जींवता चितराम' अर शिवराज छंगाणी रो 'उणियारा' संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। पुरुषोत्तम दास स्वामी रो 'तत्त्वां री कथा' विग्यान रा नियमां री ओळखांण करावै। डॉ. नाथूराम रो 'हाड़ौती में श्रीगणेश पूजा' भक्ति–भावां रो सुवास विकिरण करण वाळो निबंध है।

डॉ. किरण नाहटा 'भल लूआं बाजो कित्ती' निबंध मांय असरदार भाषा–शैली मांय कठोर अर नीरस मान्या जावण वाळा मरुस्थलीय वातावरण में, जीवण बसर करण वाळा मृदु सुभाव रा स्त्री–पुरुषां रा गुणां रो बखाण कर्‌यो है। सौभाग्यसिंह शेखावत रो 'राजस्थानी फागण में फूटरापो' फागण रुत री मस्ती अर मादकता नैं चित्रित करण वाळो निबंध है। 'कौमी अेकता रा सुर्ख दस्तावेज–मलिक मोहम्मद जायसी' निबंध में डॉ. राजकृष्ण दूग्गड़ सूफी संत अर कवि जायसी रै व्यक्तित्व अर कर्तृत्व रो सांगोपांग वर्णन कर्‌यो है। डॉ. जहूर खां मेहर रा 'राजस्थानी संस्कृति रा चितराम' अर 'धर मजलां धर कोसां' संग्रहां मांय राजस्थान री संस्कृति अर अठै रै इतिहास नैं प्रतिबिंबित करण वाळा खोजी अर सरावणजोग निबंध है। सबदां री सटीक पकड़, भावां री गहराई अर अभिव्यक्ति रो आकर्षण जहूर खां मेहर रा निबंधां रा खास गुण है।

डॉ. नेमनारायण जोशी रो 'ओळूं री अखियातां', सत्येन जोशी रो 'रोवणिया दा'सा', डॉअस्तअली खां मलकांण रो 'उणियारा ओळ्यूं तणां', डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत रो 'ओळूं री आरसी', 'यादां रा चितराम', 'पीड़ री पड़तां' अर 'दुखड़ां रो दरियाव', मनोहरसिंह राठौड़ रो 'यादां रो झरोखो' अर सूर्यशंकर पारीक रो 'मन सूं कदै नीं वीसरै' आद सरावणजोग संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। आं रेखाचित्रां री भाषा में प्रवाह रै साथै वर्णित घटनावां नैं सजीव–साकार रूप मांय चित्रित करण गुण भी मिलै।

राजस्थानी रा हास्य–व्यंग्य लिखारा मांय महेन्द्र प्रताप सिंह रा 'दो पाटां रै बीच में' अर 'बुरा फंस्या हेलमेट लगायनै', गोविंद कल्ला रो 'आं रो कांई कहणो', बृजरतन व्यास रो 'फदड़पंच री पिछाण', सांवर दइया रो 'निंदा रस महारस', शंकरसिंह राजपुरोहित रो 'सुण अरजुण', प्रहलाद श्रीमाळी रो 'होळी रै संग, रंग–रंग रा रंग', त्रिलोक गोयल रो 'सांड देवताभ्यो नमः', श्यामसुंदर भारती रो 'अजगर करै न चाकरी' बैजनाथ पंवार रो 'अकल बिना ऊंट उभाणो', श्रीलाल नथमल जोशी रो 'सांच बोल्यां किंयां पार पड़ै' अर 'आंबा मूंगा किया हुया', दामोदर प्रसाद रो 'काळो चसमो', गोविंद अग्रवाळ रो 'सुनार अर सोनो', नानूराम सस्कर्ता रो 'सूई रो इलाज', श्याम महर्षि रो 'दोय किरोड़ जणां री वाणी– राज–निजर में मूक', सुबोध कुमार रो 'किण किणनैं समझाइए' अर 'कूवै ई भांग पड़ी', मोहन आलोक रो 'मंत्रीजी रो भाषण', विजयदान देथा रो 'नकटा देव नै सूरड़ा पुजारी', गोवर्द्धन हेडाऊ रो 'दो–दो हाथ गरीबी सूं' अर रामदेव रो 'बकरै रो झटको' आद हास्य–व्यंग्य रै वातावरण द्वारा मनबहलाव रै साथै ग्यान री बढोतरी करण वाळा हास्य–व्यंग्य रा निबंध है। गद्य–काव्य अर गद्य–गीत लेखन कांनी भी अठै रा गद्यकार सजग रैया है। ब्रिजलाल बियाणी रो 'पंचराज', चंद्रसिंह री 'सीप', विद्याधर शास्त्री रो 'नागरपान' अर डॉ. कन्हैयालाल सेठिया रो 'गळगचिया' अर 'पांखड़ल्यां' इणीं परंपरा रा गद्य है।

आधुनिक काळ रै साहित्य मांय अठै रा इतिहास ग्रंथ लिखारां अर आलोचकां री भी सरावणजोग भूमिका रैयी है। पंडित नरोत्तमदास स्वामी 'राजस्थानी साहित्य; अेक परिचय', डॉ. मोतीलाल मेनारिया

'राजस्थानी भाषा और साहित्य', डॉ. मोहनलाल जिज्ञासु 'चारण साहित्य का इतिहास', सीताराम लाळस 'राजस्थानी सबदकोस', डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया अर डॉ. गोवर्द्धन शर्मा 'साहित्य इतिहास', डॉ. नरेन्द्र भानावत 'राजस्थानी साहित्य : कुछ प्रवृत्तियां', डॉ. हीरालाल माहेश्वरी 'राजस्थानी भाषा और साहित्य का इतिहास– वि. सं. 1500–1650', डॉ. देव कोठारी 'राजस्थानी साहित्य का इतिहास–वि. सं. 1650 से 1700 तक', डॉ. किरण नाहटा 'आधुनिक राजस्थानी साहित्य', डॉ. जगमोहन सिंह परिहार 'राजस्थानी भाषा और साहित्य का इतिहास', 'मध्यकालीन चारण काव्य' अर 'राजस्थानी भक्ति साहित्य', डॉ. कल्याणसिंह शेखावत 'राजस्थानी साहित्य', साहित्य इतिहास रा ग्रंथां रै माध्यम सूं राजस्थानी भाषा अर साहित्य रै सुव्यवस्थित, क्रमवार अर वैज्ञानिक अध्ययन नैं प्रस्तुत कर्‌यो है। कुंदन माली रो 'समकालीन राजस्थानी काव्य– संवेदना अर शिल्प', नन्द भारद्वाज रो 'दौर अर दायरो', पुरुषोत्तम आसोपा रो 'सिरजण परख' अर माधोसिंह इन्दा रो 'राजस्थानी साहित्य मीमांसा' आलोचना री दीठ सूं महताऊ ग्रंथ है।

इणीं भांत राजस्थानी रा व्याकरण अर कोश ग्रंथ रचण वाळा विद्वानां में पंडित रामकर्ण आसोपा, पंडित नरोत्तमदास स्वामी, सीताराम लाळस, उदयराज आद रो घणो महताऊ योगदान रैयो है। डिंगळ नाममाळा, डिंगळ कोश, हमीर नाममाळा, अवधान माळा, अनेकारथी कोश अर राजस्थांनी सबदकोस इण परंपरा रा उल्लेखजोग ग्रंथ है।

राजस्थानी रै गद्य अर पद्य रै विकास मांय अठै छपण वाळी पत्र–पत्रिकावां रो भी घणो महताऊ योगदान रैयो है। मारवाड़ी, पंचराज, आगीवांण, मारवाड़, मरुवाणी, मरवण, वरदा, परंपरा, लूर, कुरजां, ओळमों, लाडेसर, वांणी, हरावळ, म्हारो देश, मूमल, ईसरलाट, ओळखांण, माणक, गणपत, आगूंच, जागती जोत, हेलो, सरवर, राजस्थान भारती, नैणसी, क्षत्रिय, चामळ, राजस्थली, बिणजारो, मायड़ रो हेलो, नेगचार, राजस्थानी गंगा अर ओळख आद राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति अर इतिहास रो प्रचार–प्रसार करण वाळी पत्रिकावां है।

इण भांत कैयो जाय सकै कै राजस्थानी भाषा रो प्राचीन अर आधुनिक गद्य घणो विविधतापूर्ण अर सिमरध है। गद्य री आं विधावां में राजस्थान री संस्कृति, इतिहास, समाज अर अठै री गौरव–गुमेजपूर्ण परंपरावां रा दरसाव होवै।

– डॉ. जगमोहनसिंह परिहार

10

इकाई : एक
(वात–साहित्य)
डॉ. मनोहर शर्मा

लेखक–परिचै

डॉ. मनोहर शर्मा रो जलम वि. सं. 1972 मांय शेखावाटी रै बिसाऊ नगर में होयो। भांत–भांत री भाषावां रा जाणकार अर विद्वान लेखक डॉ. मनोहर शर्मा राजस्थानी भाषा रा चावा साहित्यकार हा। लोक–साहित्य में आपरी गहरी रुचि रैची। राजस्थानी लोक कथावां, लोकगीतां अर कहावती कथावां रै संकलन में आपरो लूंठो अवदान रैयो, साथै ई राजस्थानी लोक–साहित्य माथै अलेखूं शोध–आलेख भी आप लिख्या। शोध–पत्रिका 'वरदा' रो आप बरसां लग संपादन कर्‌यो।

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर सूं 'राजस्थानी मनीषी' री उपाधि सूं अलंकृत डॉ. मनोहर शर्मा 'राजस्थानी वात साहित्य' विषय माथै पी–अेचडी. री उपाधि सारू शोध–प्रबंध लिख्यो। इण शोध–ग्रथं रै अलावा आपरी राजस्थानी में तीस–पैंतीस नैड़ी पोथ्यां छप चुकी है। आं में 'कन्यादान', 'रोहिड़ै रा फूल', 'सोनल भींग' अर 'नैणसी रो साको' आद प्रमुख है। आप आपरी रचनावां में आम बोलचाल री सरल–सहज भाषा में राजस्थानी संस्कृति अर मिनखपणै रै गुणां रो असरदार रूप में बखाण कर्‌यो है।

पाठ–परिचै

'रामदेव तंवर री वात' डॉ. मनोहर शर्मा द्वारा संकलित राजस्थानी री प्राचीन वात है। इणमें राजस्थान रा लोकचावा लोकदेवता रामदेवजी रै जीवण री कीं अचरज भरी घटनावां रै वर्णन साथै उणांरै असाधारण गुणां रो बखाण भी होयो है। बाळपणै अर जवानी रा दिनां में रामदेवजी, समाज विरोधी ताकतां रो नास कर'र लोक समाज नैं त्राण दिरावण री महताऊ भूमिका रो निभाव कर्‌यो। आं घटनावां सूं पतो लागै कै रामदेवजी साधारण घर–परिवार में पैदा होवण वाळा अर आपरा लोकसेवी अचरज भरिया कामां सूं असाधारण व्यक्तित्व रा धणी बण जावण वाळा लोकनायक हा।

वात–साहित्य
रामदेव तंवर री वात

बाबो रामदेव अछूतां रा उद्धारक अर हिंदू–मुस्लिम अेकता रा आगीवांण हा। हिंदू भगतां वांनैं 'अलखधणी' अर द्वारकाधीश रै अवतार रै रूप में आराधिया तो मुसळमान मुरीदां वांनैं 'पीर' रै रूप में पूजिया। वि. सं. 1729 में रचित अेक छंद में भक्त–कवि सायर खेम रामदेवजी वास्तै कैयो है–

अल्ला, आदम, अलख तूं राम, रहीम, करीम।
गोसांई, गोरख तूं, तेरौ ई नाम तसलीम।।

इणी'ज सदी रा कवि जालूजी रामदेव बाबै नैं आदि पुरुष अवतारी मान'र वांरी वंदणा करी–

इळ इसमान उपाय अनंतु, अजै महेस उपाय अनंतु।
अनंत कळा धिन जोत अनंतु, आदि पुरुष अवतार अनंतु।।

इण भांत बाबो रामदेवजी अेकरूप में 'द्वारकाधीश कृष्ण रा अवतार है, तो दूजै रूप में अलख पुरुष–अवतारी है, तीजै रूप में 'अलखधणी' आपो–आप है, तो चौथै रूप में वै 'पीर' है। राजस्थान रै लोकमानस में पांच पीरां री महताऊ थापना है, वांमें रामदेवजी री ठावकी ठौड़ है–

पाबू, हड़बू, रांमदे, मांगळिया, मेहा।
पांचूं पीर पधारजौ, गोगोजी जेहा।।

राजस्थान संतां अर सूरवीरां री धरती मानीजै। बाबै रामदेवजी रो सरूप संत अर सूर दोन्यूं रूपां

में रैयो। वांरो व्यक्तित्व भगती अर सगती रो संगम है। इणी'ज कारण वांरै अेक हाथ में सगती अर सूरापणै रो सहनाण भळहळतो भालो है तो दूजै हाथ में भगती रस रो प्रतीक तंदूरो है। जनवाणी वांनैं आपरी श्रद्धा सूं पिछम धरा रा पातशाह, हिंदवाणी सूरज, लीलै रा असवार, धवळी धजा रा धणी, पिछम धरा रा पीर, अलखधणी अर निकळंक नेजाधारी इत्याद केई विशेषणां सूं विभूषित कर्‌या है।

बाबै रामदेवजी अठै री परजा नैं भैरव राकस रै आतंक सूं मुगत करी पण भैरव नैं भी मारियो कोनीं, उणनैं जीवणदान दियो। इण भांत रामदेवजी रो भालो निकळंक नेजो है अर बाबो निकळंक नेजाधारी कहीजै। आतंक रै अंत, अहिंसा, निशस्त्रीकरण, ग्राम विकास अर अछूतां रै उद्धार रा हिमायती बाबो रामदेवजी हिंदू–मुस्लिम अेकता रा आगीवाण है।

ओ पाठ रामदेवजी तंवर री वात पुराणै राजस्थानी गद्य री अेक सांवठी विधा 'वात' री अजरी–ओपती बानगी है, जिण मांय बाबा रामदेवजी री संक्षेप ओळखाण होवै। साथै ई राजस्थानी रै पुराणै गद्य री हथोटी री पिछाण होवै। विक्रम री 18वीं सदी में लिपिबद्ध इण वात री मूळ प्रति अनूप संस्कृत ग्रंथालय, बीकानेर में सुरक्षित है। इण वात री प्रतियां प्रोफेसर नरोत्तमदासजी स्वामी अर श्री अगरचंदजी नाहटा, बीकानेर रै निजू पोथीखानै मांय मौजूद है। राजस्थानी लोक–साहित्य रा ठावका विद्वान डॉ. मनोहर शर्मा आ ईज वात 'शोध–पत्रिका' (वर्ष 28, अंक–3/4) में छपवाई। सुरगवासी डॉ. मनोहर शर्मा री छपवायोड़ी इण वात नैं इण पोथी मांय लेवण सारू ओ संपादक मंडळ वांरो गुण मानै, वांरी अमर आत्मा नैं सत–सत नमन करै।

'रामदेव तंवर री वात' रो मूळ–पाठ इण भांत है–

(1)

सालरसी तंवर दिल्ली रौ पातसा हुवो। सालरसी रौ बेटो रैणसी हुवो। तिण पातसाही छोड आप रा मन सूं कासी–करवत लियौ। पछै रैणसाजी रौ बेटो अजैसीजी हुवा। जागा छोड वांरू छांहण आया। अठै पम्मो बुध भाटी राज करै छै। अठै इयां रो कोट थो। किरड़े वाहण बारू विचै इंयां रौ राज हंतो। तठै अजैसीजी उचाळा री गाड्यां आंण छोडाया। इणां कनै माल–वित्त घणो छै तरै लोकां जायनै पम्मै भाटी नूं कहियो जे इणां कनै माल घणो छै। तद पम्मो चढनै इणां ऊपर आयो। देखै तो दोळौ तांबै रौ काटे छै। ताहरां पम्मै दीठो औ कोई सिद्ध पुरुभा छै। तरै पम्मो पाछौ गयो। दूजै दिन इणां सूं मिलण गयो। मिलनै अजैसी जी नूं बेटी परणायी। केइक दिन तांई अुठै रहिया।

पछै उठा सूं गाडा जोतनै चालिया तिकै पोकहरण सूं तीन कोस माथै गाडा छोडाया। उठै अजैसीजी रै बेटो जायो। नाम उण रौ वीरम देव दियो। तरै वीरम देहरो उण रै नाम वसायो।

(2)

पोहकरण में भैरव नामै राखस रहै छै। जागां सूनी कीवी। इण दिसा कदै ही कोई आयो नहीं। कितरेक दिनै गाडा पोहकरण सूं कोस दोय ऊपर ले जाय छोडिया। उठै रांमदेवजी रौ जनम हुवो। रांमदेवजी दिन सात रा हुवा छै। नै अजैसीजी सेवा मांहै बैठा था। सेवा पोहर अेक तांई करै छै तठां तांई किण ही सूं बोलता नहीं। अर रांमदेवजी पिंण पीढै पोढिया छै। दूध रौ दहळियो चाढियो थो। मां दूध ऊनो करता था। दहळिया नीचै वासदे बळै छै। रांमदेवजी री मां बारै दूध नै गया था। लारै दूध ऊफणियो। तरै रांमदेवजी उठनै दूध रा दहळिया नै नीचै उतार्‌यो। इतरै अजैसीजी दीठो रांमदेवजी तो दहळिया उतारनै सोय र्‌या छै। इतरै रांमदेवजी री मां आयी। देखै तो दहळिया धरती नीचा पड़िया छै। नै आदमी और दूसरो कोई दीसै नहीं नै ठाकुर तो सेवा करता उठे नहीं। तो अे दहळिया किण उतारिया ? औ का विरतंत छै ? इण री तो ठीक नहीं, और तो इचरज हुवो। इतरै अजैसीजी सेवा करनै उठिया। तरै अजैसीजी कहियो जे रांमदे डावड़ै पीढा में सूं उठ दहळिया दूध रा उफणता राखिया नै नीचा उतारिया छै तिण सूं औ कोई सिध मरद छै।

(3)

इण रीत रांमदेवजी वधता मोटा हुवै छै। सो वरस सात रा हुवा छै। तिकै डावड़ा मांहै रमा फिरै। तिकै डावड़ा रमै तिणां– में आप पिण दड़िया रमै छै। इतरै पुकार हुयी सू रमता ही दोड़िया। आगै दैहरै पोकरण रै विचै भैरव राकस माणस मारनै खाय धापनै अेक जाळ नीचै सूतो छै। इतरै रांमदेवजी राकस नै सुतो देखनै छाती ऊपर जाय बैठा नै कहियो जे तैं खून घणा किया छै, तनै मारीस। भैरव राकस दीठो जे औ बाळक मनै इतरो कहै सूं कांई तरह? तरै राकस जोर घणोई जो बळ कियो पिण उठ सकियो नहीं। ताहरां राकस घणो अजीजी किया। कहियो– मनै छोड। ताहरां रांमदेवजी कहियो– आ जागां छोड और जागां जावै तो छोडां नहीं तो न छोडां। राकस विलाप किया घणो ही पिण छोडै नहीं। ताहरां राकस दीठो मौत आयी। तद कहियो जाईस। रांमदेवजी राकस सूं ए वाचा लै नै छोडियौ। तरै राकस पिण धरती छोडनै परो गयो।

(4)

ताहरां रांमदेवजी पोकरण वसायी। उठै जोगी बाळकनाथ बावड़ी ऊपर प्रगट रहै। ऊ ई वडो सिद्ध मरद छैं उण कनां दिख्या ले उवां नै माथै गुर कियो। पछै कोईक दिन पोकरण रह्या। पछै रावळ मालै सूं मिळिया। आपस में भाई हुवा। पछै पाछा घरै आया।

अबै एक दिन रै समै मालोजी नै रांमदेवजी चौपड़ रमता था। अनै रांमदेवजी रै हाथ में पासा था। इतरै अेक वाणियो समुद्र मांहै डूबतौ थो। इतरै रांमदेवजी नूं ईयाद किया छै। तद रांमदेवजी जिण हाथ में पासा था तिण हाथ सूं वाणियै नै काढियो। तरै उवा बांह पांणी में डूबी थी तिणसूं भीज गयी। तरै मालैजी कहियो औ कांसू विचार छै ? तद रांमदेवजी मांडनै वाणियै री वात सारी ही कही। मालोजी तो जाणता हुता जे औ कोई सिध मरद छै। पछै रांमदेवजी मालाजी सूं सीख कर मुळतान पधारिया। कोई दिन उठै लागा।

(5)

रांमदेवजी री बेटी एक वडी हुयी छै सू भायां भेळा हुयनै जगमाल मालावत नै नाळेर मेलनै परणायी। इतरै रामंदेवजी पिण पाछा पोहकरण आया। इतरै रांमदेवजी नै खबर हुयी जे बाई नै परणायी। ताहरां आप गांव में वड़िया नहीं। तरै बारै बैस रह्या छै। इतरै घर में खबर हुयी जे रांमदेवजी आया छै। तरै भाई भेळा हुयनै सामा आया। कहियो– घरै पधारो। तद रांमदेवजी कहियो जे बाई रौ विवाह कद किया छै ? मालोजी तो मांहरा भाई छै। तद अै घरां गया। इतरै रांमदेवजी री बहू सेजवाळो जोत परी गयी जो लाऊं। तद रांमदेवजी कहाड़ियौ जे मतां आव। पिण आ रही नहीं। सू आ वात देख कहियो उठै ही रहो। तद इणां आंदोहो कियो।

रांमदेवजी उठै रांमदेसर तळाव करायो। करायनै बहू रो नाम दियो। पोहकरण बेटी रै दायजै दीवी छै। आप रामं दहे रै आया। कितरा हेक दिन तो रह्या पछै मन में आयी जे समाध लीजैं तद समाध लीवी।

(6)

हड़बूजी बुहगटी रहै। वडो सिध–मरद छै। हमें रांमदेवजी रै नै हड़बूजी रै आपस में वडो सुख छै। तरै आ खबर हड़बूजी नै गयी जे रांमदेवजी तो समाध लीवी। ताहरां हड़बूजी घोड़ो फेरावण नै आया था। इतरै अध विचाळै रांमदेवजी आण मिळिया हड़बूजी नै कहियो– कहो, कठै पधारो छो ? तद रांमदेवजी नै देखनै हड़बूजी जाणियो कासूं कहीजै ? तद हड़बूजी कहियो– थां सूं मिलण आया था। ताहरां हड़बूजी नै रांमदेवजी वार्ता करता आंवता था। कोस च्यार। रांमदेवजी ओण लग आया। तरै रांमदेवजी हड़बूजी नै कहियो थे पधारो। म्है पिण काल आवां छां। ताहरां हड़बूजी घरां आया। आगै देखै तो साथरै रांमदेवजी रै बैठा छै। तद हड़बूजी कहियो– म्है तो रांमदेवजी सूं अबार वार्ता करनै आया छां।

तद भायां रै मन में कांईक भरम आयो जे कदास समाध में सूं निकळ गया हुवै ? तद उवां भायां जाणियो। तद समाध खोलै नै जोवै तो मांहि सूता छै। ताहरां मिट्टी देयनै घरै आया।

रातै रांमदेवजी सुपनै में आयने कहियो जे कपूतां ! समाध मांहरी न खुणी होती तो पीढियां दर पीढियां तांई अेक इसो हुतो, थे मांहरी पूठ सोझी तिण सूं अठै थे मांहरी कबर सेवो नै परसरो पिण दूजो काई हुवै नहीं। सिद्धाई इयां सूं गयी, थे तो पेट–भराई करबो करो। इसो रांमदेवजी आप रा भायां नै सुपनां में कहियो। नै आप तो आप रै मुकांम गया छै।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. रांमदेवजी रै दादोसा रो नांव हो–

(अ) सालरसी। (ब) अजैसी जी।
(स) रैणसी जी। (द) अनंगपाळ जी। ( )

2. 'अजैसीजी उचाळा री गाड्यां आंण छोडाया', कठै ?

(अ) फळोदी में। (ब) जैसलमेर में।
(स) वांरू छाहण में। (द) भणियाणै में। ( )

3. सालरसी तंवर पातसा हुवो–

(अ) साथरमेर रो। (ब) दिल्ली रो।
(स) अमरकोट रो। (द) गागरोण रो। ( )

4. रांमदेवजी रा गुरु हा–

(अ) उगमसी भाटी। (ब) गोरखनाथ।
(स) मछंदर नाथ। (द) बाळकनाथ। ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. भैरव राकस नैं पोकरण सूं भगायो जर रामदेवजी कित्तै बरसां रा हा ?
2. राकस रो उजाड़ियोड़ो पोकरण नगर पाछो किण बसायो ?
3. समाधि लियां पछै रामदेवजी पैलो परचो किणनै बतायो ?
4. रामदेवजी डावड़ां रै साथै कांई रमता हा ?
5. रामदेवजी री बेटी किणनैं परणाई ?

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. पोकरण नगर क्यूं उजड़ग्यो ?
2. रामदेवजी अेक सेठ री कांई मदद करी ?
3. रामदेवजी तंवरां नैं कांई स्राप दियो ?
4. रामदेवजी तंवरां नैं स्राप क्यूं दियो ?
5. चौपड़ रमतां रामदेवजी री बांह क्यूं भींजगी ?

लेख रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. रामदेवजी तंवर री वात रो सार आपरै सबदां में लिखो।
2. भैरव राकस रै आतंक सूं मारवाड़ री जनता नैं होवणियै नुकसाण रो वरणाव करो।
3. रामदेवजी राकस नैं मारियो क्यूं कोनीं ? अर कांई वाचा लेयनै छोडियो ?
4. 'रांमदेव तंवर री वात' रै आधार माथै रामदेवजी री करणी (कर्तृत्व) उजागर करो।
5. हड़बूजी अर रामदेवजी रो आपसी प्रसंग आपरै सबदां मांय लिखो।

14

इकाई : दो

(कहाणियां)

मुरलीधर व्यास 'राजस्थानी'

लेखक–परिचै

मुरलीधर व्यास 'राजस्थानी' रो जलम 4 अप्रैल 1898 में लालाणी व्यास रै पुष्करणा परिवार में बीकानेर में हुयो। आप राजस्थानी री आधुनिक कहाणी रा सिरमौर, जनक अर आगीवाण मानीजै। आप ई आधुनिक राजस्थानी री पैलड़ी कहाणियां लिखी। पैलीपोत आप हिंदी में लिखणो सरू कियो हो पण राजस्थानी अर संस्कृत रा विद्वान स्व. नरोत्तमदास स्वामीजी रै संपर्क में आवण सूं आप राजस्थानी में ई बोलणै अर लिखणै री सौगन खाई अर जीवण री आखरी सांस तांई आ सौगन निभाई। आप बहुमुखी प्रतिभा रा धणी हा, आ बात इण सूं सुभट हुवै कै आप राजस्थानी री केई विधावां में रचाव कियो। आप कहाणी रै टाळ रेखाचित्र, नाटक, हास्य–व्यंग्य, कविता अर लोक साहित्य रो रचाव कर्‌यो। आपरी प्रकासित पोथ्यां है– बरसगांठ, इक्कैवाळो, जूना जींवता चितराम, दाढी पर टैक्स, घूमरें, राजस्थानी कहावतें अर उज्ज्वळ मणियां।

आपरी राजस्थानी साहित्य सेवा नैं देखतां थकां आपनैं केई संस्थावां अर अकादमियां सूं पुरस्कार अर सम्मान भी मिल्या। श्री फूलचंद बांठिया पुरस्कार, मारवाड़ी सम्मेलन बम्बई सूं सम्मान अर पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर सूं पुरस्कार, भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर कांनी सूं पुरस्कार अर सम्मान। आपरी राजस्थानी री सांतरी सेवा रो माले आंकता थकां विद्वानां आपनैं राजस्थानी रा शरत्‌चन्द्र, राजस्थानी रा दधीचि अर राजस्थानी कहाणी रा भीष्म पितामह रो माण दियो। आप सांचा मिनख, दृढ़ निश्चयी, राजस्थानी रा हिमायती, धुन रा धणी, सफल नाटककार, समाज सुधारक अर प्रगतिशील विचारधारा रा हिमायती हा। आप 15 फरवरी, 1984 नै रामसरण हुया।

पाठ–परिचै

'गाय' कहाणी मानवीय संवेदना री कहाणी है। संवेदना नीं फगत मिनखां रो धणियाप पण जानवरां में उणसूं बत्ती संवेदना हुवै। ओझाजी गाय नैं जद ठाण सूं खोल'र आपरै घरै लिजावण सारू व्हीर हुवै, तद गाय दीनता अर करूणा भरी भोळी दीठ घर कांनी न्हांखै। आ अेक आदर्शवादी कहाणी भी है। फाटकां वाळी गायां नै कसायां रै हाथां बिकवा सूं बचावण सारू वंसी अर सेठ गोपीराम समाजसेवी रै आदर्श रूप में साम्है आवै। वां गायां में सूं वंसी अेक गाय आपरै घरै ले आवै अर उणरी घणी ई सेवा करै। कहाणी मनोवैग्यानिक दीठ सूं भी सांतरी बण पड़ी है। वंसी रो गाय–टोघड़ी सूं इत्तो हेज उणरी मा अर लुगाई री आंख री किरकिरी बण जावै। अेक बार वंसी जद बम्बई गयोड़ो हुवै, वै लारै सूं गाय ओझाजी नैं दान में दे देवै। वंसी जद बम्बई सूं पाछो बावड़ै, गाय–टोघड़ी नैं आपरै ठाणै नीं देखै तो उणरी हालत खराब हुय जावै। अठै मानवीय संवेदना परगट हुवै। वठीनै ओझाजी रै अठै गाय–टोघड़ी री हालत भी घणी माड़ी हुवै। इण कहाणी री प्रासंगिकता आज रै जुग में घणी बधगी है। आज भी दमड़ी रा लोभी मिनख बूढ़ी अर ढोळै बैठ्‌योड़ी गायां नै यूं ई रोही में टोर देवै। सेठ गोपीराम अर वंसी जैड़ै समाज सेवकां री आज घणी दरकार है।

15

कहाणी

गाय

मिनखां री इत्ती भीड़ ही कै थाळी तिरायी तिर जाय। तरै–तरै री खोपड़ियां भेळी हुयोड़ी, तरै–तरै री बोली बोलै। कोई कैवतो हो चावै कुंई होवो, कसाइयां नै तो गायां लेवण नहीं देणी जोयीजै।

दूजो भाई ! आ तो पईसां री खीर है, कांई कसाई'र कांई बीजो। आजकाल तो धरम–वरम सै खूणै में पड़िया रैवै है। अेक रूपराजजी चलै है, 'रूपली पल्लै तो रोई में ई चल्लै।'

तीजो थां जिसा रैग्या नी, अबै धरम नैं कुण पूछै ? धरम रै आगै पईसां तो कांई, जान–ई कंई चीज कोयनी।

चौथो– थै फालतू जिदो हो भाई ! आपां–रै किसी सारै–री बात है। फाटक–वाळां नै ईज जोईजै के वे सगळी गायां–नै पींजरा–पिरोळ में घाल देवै। कांई आपां–ईज हिन्दू हां, वे कोयनी ?

पांचवो– भाई ! कैई–नै दोस–कोयनी। भगवान–री मरजी हुसी जिकी काम आसी।

छठो– थांनै भगवान आप–री मरजी तार सूं बताय दी होवैला ? कांई बातां करो हो ! इंयां तो नहीं कै पांच–सात जणा भेळा हुय'र सगळी गायां–नैं बोली वध'र लेलां, सगळा आप–आप–री सैणप वघारै है।

अेक तिलकधारी सेठजी आ'र बोलिया– कांय–री भीड़ है ?

अेक जणो फाटक री गायां लीलाम हुवै है।

सेठ– बाजबी है, सदा मुजब री बात है।

कट्टर गो–भक्त गायां कसाई लेवै है, बियै सूं ऊपर कोई बोली को देवै नी, इत्ता डांगरां री 150/– मुकातै बोली दी है, कुंई थैई बधो नी, तिलक काढण नै है, दीखो तो वैसणू धरम में हो।

सेठ– ना रे भाई ! आपां रै कुण गळै में घालै, कुंई कस रो सौदो कोयनी।

गो–भक्त इयै–में कांई धूड़ कस बढ लगावो हो, कसाई रै हाथ–सूं गायां छोडावणी है।

सेठ– पण भाई! इत्ता डांगर तो गळै में घालणा पड़ै नी ? आ आज ई नूंवी बात हुवै इसी तो कोयनी, नित रो रोजणै है। ना बाबा रे ! कुण नींद बेच'र ओझको मोल लेवै।

गो–भक्त तो भाई ! पींजरा पिरोळ में घाल दिया।

सेठ पईसा फोकट–रा को आयानी, चाम चीरीजै जद दाम आवै है।

अेक भंगेड़ी इयै भिलंगियै सेठ रै कांई लेवण नै है ! ओतो मूत'र तोलणियो है। तिलक तो हाथ अेक रो काड'र वैसणू बणियो है। पण कांय रो वैसणू है– 'लांबो तिलक माधरी वाणी, बेईमानां री आ–ई निसाणी।'

बंसीधर ई रस्तै बैवतो ऊभग्यो। सगळी बातां सुणी। भावुक तो हो ही। आँख्यां में पाणी आयग्यो। पण करै कांई ? सती रो सांग वडो दोरो। हिरदै री निसांसा सागै मूंडै सूं नीकळ पड़ियो– 'उत्पाद्यन्ते विलीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः।' इत्तै में ई तो जाणै झट बै नै कोई बात याद आयी, आंखियां में आसा री जोत जाग उठी।

बोली बोलणवाळो– डोढ सौ अेक, वधै सो पावै। डोढ सौ अेक, डोढ सौ दोय, बोलो डोढ सौ. .....। बोलो कैई नै बोलणो हुवै तो। डोढ सौ अेक, डोढ सौ दोय, डोढ सौ ती.....

वंसी आगै वध'र बोलियो– भाई ! हूं वधूंला, पण 15 मिनट ठैरणो पड़सी, अेक जणै सूं सला कर'र आवूं हूं।

भीड़ मांय सूं अेक रंग है रे शेर ! कोई माई रो लाल निकळियो तो खरा! धरती में भला–भली

किसी को वसै नीं ?

कट्टर गो–भक्त अर बीजा– ''गो माता री जै, सनातन धर्म री जै।''

बोलीदार– बैगो आयै, भाई ! नहीं जणै बोली खतम हुय जासी।

वंसी 'अबार लो' कैय'र बाईसिकल उठायी'र फर्र.....। झट सेठ गोपीरामजी रै बंगलै पूगो। सेठजी हरिजनां री मंडळी रै बीच में बैठा 'सबद' सुण रया हा। आंख्यां मीचियोड़ी ही अर किणी बीजी दुनिया में विचर रया हा।

वंसी– सेठजी ! राम राम।

सेठजी– (चमक'र) आवो, आवो म्हाराज! आगीनै पधारो।

वंसी– पल्ला भेळा करतो आगै वधियो।

सेठजी– (हंस'र) देखो, छूयीज जावोला, म्हाराज !

वंसी– भलां ई गोई करो, सेठां ! आखर तो.....

सेठजी– (वात काट'र) ....है तो है, पण है मिनख ई, म्हाराज! छाती पर हाथ धर'र कैया– कांई मिनख मिनख रै पल्लो लागतै ई अभड़ीज जावै !' अबकै वंसी रै हिरदै रा तार खड़क उठिया। परम्परा सूं हिरदै में घर कियोड़ै अभड़–छोत रै विश्वास री नींव हिलगी। वात टाळ'र बोलियो–सेठां! कसाई रै हाथ सूं गायां छोड़ावो।

सेठजी– कांई बात है ? अबळां बापड़ी गायां ईज हुवै है। समाज बां रै ऊपर बड़ो जुलम करै है, आपां रै विधवा आसरम में.....।

वंसी– (बीच में ई) अबळा रूपी गायां नहीं, सांचैली गायां। इत्ती कै'र सारी हकीकत समझायी।

सेठजी पांच सौ रा लोट दिया अर कयो इत्तै तो छोडिया मत। भळै जोयीजै तो कई रै लारै खड़क कराय दिया। बोली आपां रै नांव पर खतम होणी जोयीजै। ऊभोड़ां नै अेक अेक गाय दे दिया।

वंसी– सेठां ! गऊ–दान कुण लेवैला भलां ?

सेठजी– म्हाराज ! दान थोड़ै ई देवा हां। आपां तो गऊमाता नै बां रै ईज पुत्रां नै सेवा करण सारू सूंपा हां। 'मा–मा' कैणिया कांई कसाई रै हाथ सूं छूटणै पर भी, मा री सेवा को करैला नीं ?

वंसी आशीर्वाद दे'र चालतो हुयो। आंख्यां में प्रेम रा आंसू अर हिरदै सूं अवाज उठती ही–हाय रे दुनियां ! इसै लाखीणै नै 'अरियापंथी'' कैवै है। धिक्कार !

(2)

वंसी अेक गाय आप रै घरै लायो। आप रै हाथां–सूं ईज चरांवतो, पांवतो, ठाण साफ करतो, गोबर उठावतो, अर दोनूं वखत दूंवतो। वंसी नै आंवतो देख'र गाय हुर–हुर करती। अब बैरी आंखियां में सरळता, वच्छळता अर करुणा री मिळावट रा भाव साफ प्रगट हुता। वंसी मूंडै सूं मूंडो चिपा'र सोचतो–गाय किसी'क अलभ्य वस्तु भगवान दुनिया रै लाभ रै वास्ते बणायी है। आ दूध सूं बल, छाछ सूं पाचन–शक्ति, गोबर सूं बळीतो अर शुद्धि, मूत सूं आरोग्यता, माखण सूं जीवण देवै है। कांई–कांई इयै रा उपकार गिणायीजै। जदैई तो इसै उपकारी जीव रै दरसण सूं हिन्दू आपनै किरतार्थ हुया समझै। ऋषि–महात्मावां इयै वास्तै ई तो इयै नै मा कयी है, आ साचै ई 'मा' ईज है। सगळां नै जात–पांत रै भैद–भाव रै बिना दूध रै रूप में जीवण–दान देवै। हाय! इसै उपकारी जीव नै मारण री व्यवस्था देवणवाळै निर्दयी नियम नै कांई 'धरम' कैणो जोग है ?

सोचतां–सोचतां बियैरी आंखियां प्रेमाश्रुवां सूं डबडबायीज जाती ओर बो मा–मा कै'र गऊमाता रै मूंडै सूं मूंडो चिपाय लेतो। मा–बेटै रै मिलण रो ओ दृश्य बड़ो ही अलोकिक हुतो।

धीरै–धीरै गऊमाता ब्यायगी। घर में जाणै आणंद वरसग्यो। वंसी टोघड़ी नै गोद में लियां बियै रो लाड

किया करतो। बियै रै शरीर पर मैदी रा डब्बा–डब्बा रचाया, गळै में घूघरा बांधिया। टोघड़ी जद आगंणै में नाचती, तो बियै रै सागै–सागै ही वंसी रो हिरदो उत्साह'र आणन्द सूं नाच उठतो। मा–बेटी दोनां नै साफ–सुथरी राखतो। दोनूं बेळां वियां रै धूप खैंवतो। लागे –बाग कैया करता, वंसी गाय रो गैलो भगत है। कोई– कोई कैवतो, गाय सोरी रैणै सूं 'भैंस री भैंस' हुयगी है, आयी जद आंखियां में सांस हो। वंसी चाख रै टूण रै वास्तै बियै रै डावै पग री धूड़ लेर गऊमाता रै ऊपर सूं उवार देंवतो।

अेक दिन गाय दूंवती बेळा वंसी री मा कनै आयगी। वंसी दो थणां मांय सूं दूध काढ'र बाकी रा थण इयां ई छोड दिया। मा बोली, वंसी! दो थण कियां छोड दिया ?

वंसी– टोघड़ी रै वास्तै।

माजी– तूं तो गैलो है, बच्छी तो इयां ही बचियो–खुचियो दूध चूंघ लेसी अर घास–फूस खा लेसी।

वंसी– ना मा! बापड़ी हठी कमजोर रैजावै। दूध सूं इयै'रा हाड मजबूत रैसी। हूं इयै नै खूब दूध पा–पा'र मोटी करूंला। आ म्हारी 'गोपी' मा साचै ई प्रेम रो अवतार है।

मा– तू तो गैलो है। मोवन–मोवनी सारू दूध बचै कोयनी।

वंसी– मोवनी–मोवनी तो आ तीजी सोवनी।

मा– हां ! हुवै क्योंनी ? आयो घणो कैण आळो ! टाबरां री'र जिनावरां री अेक–बराबरी करी, क्यो ?

(3)

मिनख ह्रदय री दुर्बलता' ई विचित्र हुवै है। कैई नै लाड–प्यार करतां देख'र दूजै नै कुण जाणै कियां ईरखा हुवण लाग जावै। गऊमाता रो घर में इयै तरै रो मान–सम्मान, लाड–प्यार, देख'र घर आळा कैवण लागा, ओ घर में किसो घोड़ो घाल लियो, दूसरै काम री तो फुरसत ई को मिळै नी, जणै देखो जणै इयै री हाजरी।

मोवन री मा– सासूजी ! थै इयै, नै दान ईज क्यूं देय देवो नी ?

वंसी री मा– नहीं बेटा, वंसी लड़ै।

मोवन री मा– दो–चार दिन लड़'र रै जासी। नित रो टंटो तो कट जासी।

वंसी री मा– थारै जचै तो, बीनणी ! ओझाजी नै बुलाय'र गऊ दान देय देवां।

मोवन री मा– लड़ै जणै कैय दिया, मैं जीवतै जी गऊदान कियो है, लारै सूं कूण जाणै कांई हुवै। जणै कांई कैसी ?

वंसी री मा– हां, बात तो ठीक है।

अेक दिन सासू–बहू नै मौको लाधग्यो। वंसी कुंई काम बम्बई गयो हो। इयै नै बठै 20–25 दिन रैणो हो। मौको देख'र वंसी री मा ओझाजी नै बुलाय'र गऊ–दान देय दियो। देंवती वेळां वंसी री मा कयो, ओझाजी! गाय नै सोरी राखीजो। डोकरी री आंखियां डबडबायीजगी'र गळो भारी हुग्यो। आगै बोली–बापड़ी रा सैंसकार थांरै घरां रा हुयग्या, महाराज ! म्हारै घर रो अन्न–जळ चूकग्यो।

ओझाजी गाय नै टोरी। बा मचकी। ठाण–री हर करण लागी। अबकी ओझाजी नैजणै री मदद ली। गाय माडाणै टुरी। दीनता अर करुणा भरी भोळी दृष्टि घर कांनी नाखी। पण फजूल। बा ढैंकी, छेकड़ली वार निरासा–भरी निजर कैई नै देखण सारू पसारी, पण ओझाजी री डिच–डिच वियै नै बठै ज्यादा पग ठामण को दिया नी।

बिछोड़ै रै झीणै पड़दै मांय सूं 'करुणा' रा छेकड़ला दरसण वंसी री मा, बहू अर पाड़ोसी सगळां किया।

(4)

वंसी दिन–रात उदास रैवण लाग्यो। बै नै रै रै'र कुंई बात याद आवती अर हिरदै मैं हूक उठती। आंखियां मांय धंसगी। चैरो इसो हुयग्यो जाणै किणी लूंट लियो हुवै। अेकलो घंटा तांई बैठो रैतो। मन सूं ईज ऊंताळी वातां करतो अर कैवतो–मा ! तनै कुण बठै बुचकारतो हुसी ? कुण थारै धूप खैंवतो हुसी? हाय मा ! आज तूं अनाथ हुयगी, म्हारै जीतै–जी कुण जाणै तनै कांई–कांई दुख भोगणा पड़ता हुसी, मा ! थारै आंखियां रो भाव कुण समझतो हुसी ? ओझाजी रै घरे धरमादै रा डांगर मोकळा ऊभा हुसी। थारी बठै कुण परवा करतो हुसी। बियै नै कणै ई समाज पर सूग आती, कणै ई घर–आळां पर क्रोध आतो, कणां ई आत्म–ग्लानी हुती। दिन–दिन वंसी री हालत बिगड़ती जांवती ही।

अेक दिन वंसी नै बराबर बुखार बणियो रयो। रात नै बुखार 108 डिगरी हुयग्यो, जकै रै जोर सूं वेळण लाग्यो। रै' रै' र कैवतो' मा गोमती! तूं कठै है ? हाय ! म्हारै जीतां जी तनै दूसरै रो द्वारो देखणो पड़ियो! कदै ई कैतो, अरे ! गोपी नै पकड़ो–रे ! बारै नहीं दोड़ जावै। कदै ई कैवतो, अरे मा! थां लोगां कांई दान दियो ? कैई नै भूख रै ओटै मारण रै वास्तै बीजै रै घरै भेज देणो कांई धरम कयीजै? तामस करणै सूं सांस जोर–जोर सूं चालण लागी। डाक्टर कैयो के इयै रै हिरदै नै ठेस लागी है, हार्ट फेल होण रो डर है। वैदजी आया। बधिया खुराख दी। हिरदै री गति में कांई सुधार हुयो। मरणै री घाटी टळी। वंसी महीनै भर मांचै में पड़ियो रयो।

(5)

ओझाजी रै घरे घणा ई डांगरा हा। कुण गायरी परवा करतो हो। दूध दियो जितै तो माथो मोरियो, नीरो नाखियो। टळियां पछै दिनूंगै सूं डिचकारी दे'र घर सूं बारै टोर देंवता। दिन भर गाय–बच्छी ओखर करती फिरती। चामड़ी रा रूं उडग्या अर सींग टूटग्यो। बापड़ी अबोल जिनावर कै नै आप रै दुख री कैवै ?

अेक दिन वंसी तावड़ै में ऊभो आप रै विचारां में गरक हो। इत्तै में अेक जणै कैयो, आ देखो, वंसी भाई ! थांरी गाय'र बच्छी। वंसी हड़बडाय'र उठियो। गाय–रै गळै में बाथ घालणै री चेष्टा करी पण ठोकर खा'र पड़ियो'र अचेत हुयग्यो। चेतो हुयो जणै फेर पागल दांई दौड़ियो अर गाय रै गळै में बाथ घालदी। हिरदै में भावां रो बेग रोकियै, ई को रुकतो हो नी।

मा ! मा म्हारी गोमती ! गोपी ! तनै.... नहीं, नहीं, मा ! मा ! ओ धरम नहीं है, मा ! म्हारो कसूर....। इंयां बोलतो–बोलता चेतना–शून्य हो'र मूधै मूडैं जाय पड़ियो।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. गायां नै कसाई रै हाथां बिकवा सूं कुण बचायी ?
   (अ) वंसी (ब) कट्टर गो भक्त
   (स) सेठ गोपीराम (द) अेक भंगेड़ी ( )
2. गायां री बोळी कित्तां रुपिया तक लागी ही ?
   (अ) 150 रुपिया (ब) 250 रुपिया
   (स) 350 रुपिया (द) 450 रुपिया ( )
3. वंसी गाय रै हाचळां मांय किण सारू दूध छोड देवतो हो ?
   (अ) गाय सारू (ब) टोघड़ी सारू
   (स) पाडोसियां सारू (द) आपरी मां सारू ( )

4. वंसी री मां अर लुगाई जद गऊदान कर्‌यो हो, उण दिनां वंसी कठै गयोड़ो हो ?

(अ) दिल्ली (ब) बम्बई

(स) माळवै (द) गुजरात ( )

साव छोटै पड्‌ूत्तर वाळा सवाल

1. आज भी अेक जाति विशेष संगठन गायां सूं संबंधित किण बात रो विरोध करै है ?
2. सती रो सांग वडो दोरो क्यूं है ?
3. सेठ गोपीराम गायां नै कसाईयां रै हाथं सूं बचावण सारू जादा बोली लगावण वंसी नै कित्ता रुपिया दिया हा ?
4. 'अरिया पंथी' पंथ रो अेक खास नियम बतावो ?
5. वंसी जद सेठ गोपीरामजी रै बंगलै पूगो, उण बखत वै कांई कर रैया हा?
6. वंसी सेठ गोपीराम रै रुपिया सूं गायां छुडाय'र वां रो कांई कर्‌यो ?

छोटै पड्‌ूत्तर वाळा सवाल

1. 'फाटक री गायां लीलाम हुवै है।' अठै फाटक री गायां सूं कांई मतलब है ?
2. वंसी रो चरित्र–चित्रण करो।
3. वंसी री मां अर लुगाई गाय सूं पिंड छुडावण सारू कांई जाळ गूंथियो?
4. कहाणी 'गाय' रै पात्र सेठ गोपीराम रो चरित्र.–चित्रण करो।
5. 'कांई मिनख मिनख रै पल्लो लागतै ई अभड़ीज जावै।' सेठजी रै यूं कैवण रो वंसी माथै कांई प्रभाव पड्‌यो ?

लेख रूप पड्‌ूत्तर वाळा सवाल

1. 'गाय' कहाणी रै तत्त्वां री चरचा करता थकां इण बात रो खुलासो करो कै मुरलीधर व्यास 'राजस्थानी' आधुनिक राजस्थानी कहाणी रा जनक, सिरमोर अर आंगीवाण कहाणीकार हा ?
2. 'गाय' कहाणी माथै शरतचन्द्र, प्रेमचंद युगीन आदर्शवाद री छाप है। इण दीठ सूं इण कहाणी री खुलासैवार चरचा करो।
3. 'गाय' कहाणी रै शिल्प अर भासा शैली री दीठ सूं चरचा करो।
4. हेटै लिख्योड़ै मुहावरां रो आप–अपणै वाक्यां में प्रयोग करो।

पईसा री खीर, रूपली पल्लै तो रोई में ई चल्लै, घर में घोड़ो घालणो, नींद बेच'र ओझको माले लेणो, आंख्यां में सांस हुवणो।

20

डॉ. नृसिंह राजपुरोहित

लेखक–परिचै

डॉ. नृसिंह राजपुरोहित रो जलम 18 अप्रैल, 1924 गांव बाड़मेर जिलै रै खांडप गांव में हुयो। आप अेम. अे., पी–अेचडी. तांई भणाई करी है। आपरै शोध रो विषय 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थानी कवियां रौ योगदान' रैयो। राजस्थानी रा चावा, ठावा अर लूंठा कथाकार। आपरी कहाणियां ग्रामीण परिवेस, आम जन–जीवण अर राजस्थानी संस्कृति री छिब नैं दरसावै। आज तक आपरा सात कहाणी संग्रै प्रकासित हुय चुक्या है। 'पुन्न रौ काम', 'रातवासौ', 'अमर चूंनड़ी', 'प्रभातियौ तारौ', 'मऊ चाली माळवै', 'अधूरा सुपना', अर 'भगवान महावीर'। इण रै टाळ आप केई पोथियां रो अनुवाद भी कर्‌यो है। आपनैं राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार 1969, सोवियत लैंड पुरस्कार 1981, केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार 1993 आद पुरस्कार मिळ चुक्या है। आप लगैटगै दस बरसां तक राजस्थानी री पारिवारिक मासिक पत्रिका 'माणक' रो संपादन भी कर्‌यो।

पाठ–परिचै

'रजाई' कहाणी 'प्रभातियो तारौ' संग्रै सूं सामळ करीजी है। आ कहाणी मध्यम वर्ग री आर्थिक स्थिति नै आपां रै साम्है परतख पेस करै। काळ–दुकाळ सूं दाझ्योड़ा मिनख कीकर आपरी जीयाजूण पूरण करै, जिंदगाणी री पैलीपोत री जरूरतां रोटी, गाभै अर टापरै सारू वो कांई–कांई सुपनां नीं देखै। मिनख रै अेक सुपना सूं दूजो सुपनो कीकर उपोकर निकळ जावै कै उणनैं ठा ई नीं पड़ै। माह री रठ सूं बचण सारू अेक सीरख मोलावणी अर मोलायां पछै उणनैं आपरी बेटी रै दायजै सारू अंवेर नै राख देवणी। अैड़ी कसक नै परोटती आ कहाणी मिनख रै मजबूर हालातां रा चितराम उकेरै। कहाणी री भाषा सरल, बोलचाल री हुवतां पाण भी रळियावणी अर मुहावरैदार है।

कहाणी

रजाई

ठंड जोर री ही। बूढा वडेरा कैवै के इसी ठंड लारलै पचास बरसां में ई नीं पड़ी। दिन आथम तांई ठंड जाणै आभै सूं झरवा लागै। परड़ो इज पड़ै। डांफर इसी चालै के हाडका धूजण लागै। आग रा ताजा खीरा ई देखतां–देखतां राख री पड़तां चढ'र काळूंठीज जावै।

पण अकेली ठंड नैं इज क्यूं दोस देवां। इण साल जिसो भयंकर दुकाळ ई कद पड़्यौ ? काचौ करवरौ बरस व्है जद थोड़ी घणी तो बिरखा व्है पण अबकाळै तो आभै सूं छांट ई नीं पड़ी। पीवण रै पाणी रा ई सांसा पड़ग्या।

पेट रो खाडौ भरण नै दाणा नीं अर सरीर माथै साबत कपड़ौ नीं। इण उपरांत कोढ में खाज रै ज्यूं काळजौ धूजावै जिसी आ अणूंती ठंड। सियाळू वायरौ तीर रै ज्यूं चालै। पिंड में घुसनै हाडकां नैं हिलाय नांखै। गूदड़ा में सूतां–सूतां ई बत्तीसी बाजै।

रावतसिंघ झूंपड़ा रै आगै बारली ग्वाड़ी रै टपरिया में सूतौ। टूटोड़ौ डुखळियौ, फाटोड़ा गूदड़ा अर सरणाट करतोड़ौ सियाळू वायरौ। रैय–रैयनै धूजणी छूटै। गोडा छाती में चेप'र जळेबी बणनै सूवण री कोसिस करै तो थोड़ीक ताळ निवास वापरै पण छिनेक में पाछी सागण गत बण जावै। सूतौ–सूतौ विचार करै मिनखा जूण में आयनै ई झख मारी। उमर आधी बीतगी पण नीं तो माथौ घालवा नै ढंग रौ टापरौ बणाय सक्यौ। सीरख पथरणा तो आगडा गया पण जिंदगी में सियाळौ काढै जिसा ई गूदड़ा बणाय सक्यौ व्हैतौ तो ई जीव नै संतोख व्हैतौ।

21

वो मन में हंसण लाग्यौ–मा रौ तो पतौ ई कोनी अर मासी नैं रोवै। पेट रौ खाडौ तो भरीजै ई कोनीं अर सीरख–पथरणा री बात सोचै। तीन–तीन दुकाळ अेकण सागै इज पड़ग्या। अनाज रौ दाणौ ई कोनी पाकौ। घर में नैंना–मोटा आठ मिनख। नाडी री खुदाई अर सड़क रौ काम सरु व्हैग्यौ नीं तौ मरवा री पाळी आयोड़ी ही। आ ई भगवान री मेहरबानी समझणी चाहिजै के पेट भराई रौ जुगाड़ तो कियां ई बैठग्यौ। खैर, जीवैला नर तो बसावैला घर। सांस खोळियै में रह्यौ तो ढंग रौ टापरौ ई बणास्यां अर सीरख पथरणा ई त्यार करास्यां। अबार तो विखा रा दिन है सो कियां ई काढणा है। वावळ वाळा ढीरा माथै होयनै निकळ जासी।

पगांथिया कांनी राली रौ गूदड़ौ फाटोड़ौ हो, सो बगारै में होय नै ठंड रौ जाणै रेलौ सो आयौ। वो डील रै च्यारूंमेर राली काठी विंटोळनै मांचै माथै बैठग्यौ। पछै आभै कांनी देख'र अंदाज करण लाग्यौ–रात कित्तीक बाकी होसी ? उगूंणी दिस निजर नांखी तो प्रभातियौ तारौ निजर आयौ। रात घड़ी तीनेक बाकी। इतरी रात तो बैठनैं ई बिताय सकां। वो गांठड़ी बणनै बैठग्यौ। थोड़ीक ताळ में बैठै बैठै नैं झेरां आवण लागगी।.....सुपनां रा आळ जंजाळ चालू व्हैग्या..... मोटोड़ी बेटी सुगणां रौ ब्याव मंडयौ .... दायजौ दिरीजण लाग्यौ... वो अेक–अेक करनै दायजै रौ सामान बारै लाय'र जमावण लाग्यौ। सै सूं पछै ढोलियौ अर रजाई पथरणा बारै आया। रंगीन सूत रौ खांमचाई सूं बण्योड़ो सांगोपांग ढोलियौ, रंगीन ई पाया जिकां माथै हाथीदांत री फूलड़ियां जड़ी थकी, दोलड़ी अदांवण जिको खांचनै तणकी तूंताड़ कियोड़ी। टणकौ घासियौ ओपता तकिया अर रेसमी रजाई रौ तो पछै पूछणौ ई कांई। सोवणी रंगाई, पूजती लंबाई अर आछी भराई। तळियोड़ी पुड़ी रै उनमांन उपस्योड़ी थकी। दायजौ देख'र सगळा जानी बखांण करण लाग्या तो बीं री छाती फूलीजगी। पण थोड़ीक देर में आंख खुलतां ई सै रांमत बिखरगी अर फूल्योडी छाती पिंक्चर व्हियोड़ा टयूब रै ज्यूं पाछी बैठगी।

वो आंगळियां माथै गिणवा लाग्यौ.... सतरै, अठारै, उगणीस.....बीस! सुगणां पूरी बीस बरसां री होयगी। गई साल इज बीरां पीळा हाथ करावणा हा पण ऊपरा–ऊपरी दुकाळ पड़ जावण सूं बातडी बैठी कोनीं। सांवरियै री मेहर हुई तो आगली साल जरूर ब्याव करणौ है। टाबर मोटौ व्हियौ, हाथ पीळा व्है जावै तो छाती माथै सूं भार उतरै।

भखवाटौ होवण वाळौ हौ। विचार कियौ घट्टी वेळा व्हैगी सो लुगावड़ी नै जगाय दूं। पण याद आयौ के घर में अनाज तो कालै इज खूटग्यौ इण वास्तै जगावां तो ई पीसैला कांई ? मजूरी रा पैसा मिळियां इज अनाज आय सकै। पण टाबरां नै भूखा तो किंया राखीजै ? भाई सैण रै अठै सूं उधारौ–ऊसीनौ लायनै ई इणां नै तो दाणौ–चुग्गौ देवणौ इज पड़सी। विखै में टाबर अेक टंक ई भूखा रैयग्या तो गजब व्है जासी। दिन बीत जासी अर बातां रैय जासी।

दिन उगतांई रावतसिंघ डुखलियो छोड़'र तावड़ियै आयग्यो। बींरी लुगाई ज्वार उधार लावण नैं पड़ोस में गई अर टाबरिया ई बारै निकळग्या। थोड़ीक ताळ में गांव रै गोर में मोटर री आवाज सुणीजी अर गळियां में अठी उठी मिनख आवता–जावता निंगै आया। इतराक में रावतसिंघ रौ नैंनकियौ बेटौ दडी छंट दोड़तौ घरां आयौ अर हळफळतौ थकौ कैवण लाग्यौ–

–जीसा ! जीसा ! चांवटै पधारौ !

–क्यूं बेटा ! कांई बात है ?

–चांवटै सेठां री अेक मोटर आई है अर रजाइयां–कांबळा बांटै है!.....

छोरौ सांस भरीजग्यौ हौ सो थोड़ौ दम मारनै बोल्यौ– जीसा मिनख तो चांवटै मावै ई कोनीं, अड़थडै है..... झट चालौ नीं तो पछै कीं हाथ नीं आवै। रंग–रंग री फूटरी रजाइयां नुंवी अटंग अर भांत–भांत री सोवणी कांबळां.....किसनियै रै काकै नै कांबळ मिळी अर किसनियै रजाई कबाड़ली..... लो

चालौ आंपांई फुरती सूं चालां।

–चालां रे भाई चालां ! अर ठाकर रावतसिंघ गोडां रै हाथ राखनै नीठ ऊभा व्हिया। टाबर नै पूछण लाग्या–कित्तीक रजाईयां लाया है रै ?

–मोटर काठी भरनैं लाया है जीसा ! भांत–भांत री फूटरी डिजाइन वाळी! आंपणै पटवारी जी ओढै जिसी। टाबर री आंख्यां में उमंग अर उछाव रौ दरियौ हबोळा खावै हौ।

रावतसिंघ टाबर नैं आंगळी पकड़ायां बारली गवाड़ी में आयौ के पल्लै में ज्वार लियां बींरी लुगाई साम्ही मिळी। बोली– अेक टंक रा सीधा खातर ज्वार तो म्हूं पेमजी रै अठै सूं लेय आई, थै कठै जावौ हौ ?

–नारायण कैवै के चांवटै मोटरड़ी आई है अर रजाईयां–कांबळां बांटै है! म्हैं ई देखनैं आऊं। ठाकर लचकांणौ पड़तौ बोल्यौ।

–कांई देखणो है उठै ?

–देखूं किसीक रजाइयां है ?

–क्यूं अेकाध लावण रौ विचार है कांई ?

–लावां तो हरज कांई है?

–हरज ? धरमादै रा पूर लावण में थांनै कीं हरज नीं लागै ? कैवतां सरम नीं आवै ?

–इणमें लाज सरम री कांई बात है ? सगळो गावं लेवै है तो आंपां इसा कांई टणकचंदजी हा ?

–गांव री बात छोड़ौ। म्हूं थांनै पूछूं। थै धरमादै रा पूर ओढ'र सियाळौ काढस्यौ ?

–आपतकाळै मरजादा नास्ती।

–आ आपत पै'लड़ी वार थां माथै इज आई है के फेरुं कदैई कोई रै माथै आई होसी ?..... मारवाड़ री धरती माथै काळ दुकाळ तो परंपरा सूं पड़ता आया। सात–सात दुकाळ अेकण सागै पडया पण मांनखै छैं कोनीं दियो। मैंणत मजूरी करली, भूखं मरणौ कबूल कर लियौ पण कोई रै आगै हाथ कोनीं मांडयौ के चोरी चकारी कोनीं करी।

–पण रजाइयां तो.....

–फेरुं पाछी वाइज बात? म्हैं पूछूं के थै मैंणत मजूरी क्यूं करौ ? क्यूं दिन भर सड़क माथै धूड़ री तगारियां ऊंचावौ ? म्हनैं अर टाबरां नैं हाथां में ठीबड़ा पकड़ाय दो। पेट तो यूं ई भरीज जासी।

–थूं म्हारी बात नैं समझी आथ कोनीं।

–कांई समझूं थांरी बात नै ? सूरज रै उजास ज्यूं बात सुभट अर साफ है के कोई सेठ आपरै पाप री कमाई में सूं धरमादौ बांटनै पाप नैं कीं हळकौ करणी चावै अर थारै जिसा हाथ मांडवा नैं त्यार व्हियोड़ा है। धिरगार है थांनै। इण करतां तो मूंढौ बांधनै मरणौ चोखौ।

–तो थूं कैवै तो म्है नीं जाऊं।

–म्है कांई कैवूं ? थांनैं कीं सूझै कोनीं भला मिनखां ! विखौ मांनखै रै माथै इज आया करै। असली मिनख वो इज है जिकौ विखौ पड़यां ई आपरी मरजादा नैं कायम राखै। मैंणत मजूरी में कोई लाज मैंणी कोनीं। पण भीख मांगवा करतां तो मरणौ चोखौ। आपांनैं रजाई बणावणी है तो दो–च्यार हफ्तां में मजूरी में सूं कीं पैसा बचाय नैं जरूर बणास्यां। वा आपणै पसीनै री कमाई री होसी। रावतसिंघ चोकी माथै चढ'र तावड़ियै बैठग्यौ।

सियाळै रा दिन होळै–होळै बीतता गया अर रावतसिंघ फाटोड़ा गूदड़ां में सूतौ ठंड सूं जूझतो रह्यौ। हर हफ्तै थोड़ी–थोड़ी बचत करण सूं पांचवै हफ्तै इतरा पैसा भेळा होयग्या के जिणसूं रजाई बण सकै। पैसा धणी रै हाथ में देवती लुगाई बोली– फेमिन कैंप री मोटरड़ी में बैठ'र अेक दिन सहर जावौ अर अेक सागैड़ी रजाई लेय आवौ।

उणैं बाजार में च्यार छः दुकानां माथै फिरनै रजाईयां देखी। पण अेक ई दाय नीं आई। कठैई माल बोदौ तो कठैई कीमत आकरी। बातड़ी कीं जची कोनीं। सेवट आपरी पसंद रौ कपड़ौ अर रुई मोल लेयनै रजाई त्यार कराई। चीज तबियत सूं बणवाई सो चीज सांगोपांग बणी। नुंवी डिजाईन री चटकदार छींट, लंबी–चवड़ी पूजती, उपसमीं भराई अर खांमचाई सूं डोरा फेर्योड़ी।

घरां आयां रजाई नै देखी जिणै ई बखांणी। दिन भर टाबरिया कंवळी–कंवळी रजाई माथै लौटता रह्या अर बीं पर आपरा गाल रगड़ता रह्या। सिंझ्या पड़्यां रजाई रावतसिंघ रै डुखलियै माथै पूगी तो बीं आपरी लुगाई नैं बुलाय'र कह्यौ–रजाई तो मांयनै ले जावौ, इणनै थूं अर टाबरिया ओढजौ। म्हारै तो ओढवानै गूदड़ा मोकळा ई है। सियाळौ आधौ ऊपर तो बीतग्यौ। अबै घणौ जोर तो महीनौ मास ठंड ओरुं पड़सी। कैवत है के–आधै माह खांधै कांबळ।

लुगाई थोड़ी ताळ ठैर नैं विचार करती बोली–रजाई थै नीं ओढौ तो पछै टाबरिया ई कोनीं ओढै। इणनैं तो अंवेर नै मांय नै धर देस्यां। चीज चोखी है सो आगली साल सुगणां रै दायजै में काम आय जासी।

रावतसिंघ खुसी में उछळतौ थकौ बोल्यौ– बात तो थैं लाख रुपियां री कही। रजाई तो दायजै में देवण जोग इज है। कोई नुंवै तापड़ियै में लपेट'र इणनैं कोठै रै मांय नैं धरदौ अर वो फाटोड़ौ म्हनैं गूदड़ौ अठीनै देयदौ। म्हैं तो इणमें ई सियाळो मजै सूं काढ़ लेस्यूं अर वो गूदड़ो आढे 'र सोयग्यौ। बीं रात बीं नै नींद इसी सांतरी आई के दिन चढयां इज जागौ।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. हरज ? धरमादै रा पूर लावण में थांनै कीं हरज नीं लागै ? रावतसिंघ री लुगाई रै इण वाक्य में उणरो किसो चारितक गुण परगट हुवै ?

(अ) स्वाभिमान। (ब) घमंड।
(स) रीस । (द) विरोध। ( )

2. भखवाटो हुवतां पाण रावतसिंघ आपरी लुगाई नै जगावणी चावता थकां भी क्यूं नीं जगाई ?

(अ) आटो पीसीयोड़ो हो। (ब) घर में घट्टी कोनीं ही।
(स) घर में दाणा कोनीं हा।(द) वा गैरी ऊंघ में ही। ( )

3. रावतसिंघ सियाळै री रात काढण सारू गांठड़ी बणनै बैठग्यो। थोड़ी'क ताळ में उणनै झेरां आवण लागगी। झेरां लेवतो वो कांई सुपनो देखै ?

(अ) सुगणा रो ब्याव। (ब) नूंवो टापरो बणियोड़ो।
(स) लुगाई रै आड़ पैहर्योड़ी। (द) चारूंमेर बुटतो मेह। ( )

4. रावतसिंघ री लुगाई पेट काट–काट नै पईसा किण सारू भेळा कर्या ?

(अ) मकान बणांवण सारू। (ब) रजाई खरीदण सारू।
(स) गैणां घड़ावण सारू। (द) सुगणा रै ब्याव सारू। ( )

5. रावतसिंघ बचत रै पईसा सूं बोत आछी रजाई घरै ले आयो, पण ओढ़ क्यूं नी सक्यो ?

(अ) रजाई टाबर ओढण नै लेली। (ब) रजाई उणरी लुगाई लेली।
(स) सुगणा रै दायजै सारू राख दी।
(द) आगली सरदी सारू अंवेर नै राख दी। ( )

6. रजाई बाबत सैसूं आछो सुझाव कुण दियो ?

(अ) सुगणा। (ब) रावतसिंघ री लुगाई।

(स) रावतसिंघ। (द) नैनकियो। ( )

साव छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. रावतसिंघ री लुगाई किण रै अठै सूं कांई उधार लाई ही ?
2. रावतसिंघ रो नैनकियो बेटो दड़ीछंट दोड़तो आय'र उण नै कांई कैयो ?
3. रावतसिंघ रै घर में कुल कित्ता जणां हा ?
4. रजाई नै ठेठ राजस्थानी भासा में कांई कैवै ?
5. रावतसिंघ कठै मजूरी करतो हो अर क्यूं ?
6. 'रजाई' कहाणी हिंदी रा चावा–ठावा कहाणीकार प्रेमचंद री किसी कहाणी री याद दिरावै ?

छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. रावतसिंघ धरमादै री रजाई लेवण सारू व्हीर हुयो तो उण री लुगाई उण नै कांई समझाय'र ढाब्यो ?
2. 'रजाई' कहाणी रै संदेस नै खुलासो करता थकां समझावो ?
3. रावतसिंह सैर रै बाजार सूं रेडीमेड रजाई क्यूं नीं खरीदी? छेवट वो कांई कर्यो ?
4. 'रजाई' कहाणी रै आधार माथै रावतसिंघ री लुगाई रो चरित्र–चित्रण करो।
5. हेटै लिखियोड़ी कहावतां रो अर्थ सुभट करता थकां थारै वाक्यां में लिखो।
   कोढ में खाज, मां तो है ई नीं, मासी नै रोवै, आधै माह खांधै कांबल
6. 'सेठ आपरै पाप री कमाई में सूं धरमादो बांटनै पाप नै कीं हलको करणी चावै।' आज री सामाजिक वैवस्था माथै चोट करता थकां इण बात नै समझाय'र लिखो।

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. कहाणी कला री दीठ सूं 'रजाई' कहाणी री समीक्षा करो।
2. रावतसिंघ अर उणरी जोड़ायत में सूं आप सै सूं घणा प्रभावित किण पात्र सूं हुया ? खुलासो करता थकां दोन्यूं रै चरित्र री विसेसतावां उजागर करो।
3. 'रजाई' कहाणी माथै प्रेमचंद जुग री कहाणी रो प्रभाव दीसै। इण बाबत आपरा विचार परगट करो।
4. आ कहाणी निम्न वर्ग री आर्थिक स्थिति रो सांचो रूप परगट करै। कहाणी रै कथ्य रै आधार माथै वरणन करो।

25

हनुमान दीक्षित

लेखक–परिचै

हनुमान दीक्षित राजस्थानी कहाणी रा सबळा हस्ताक्षर। आपरो जलम 4 मई, 1943 नैं हुयो। आप अेम. अे., बी. अेड. तांई शिक्षा प्राप्त करी। हिंदी अर राजस्थानी रा चावा लेखक। बहुमुखी प्रतिभा रा धणी। कहाणियां टाळ कविता, व्यंग्य, बाल साहित्य अर निबंध ई लिखै। 'गांव–गळी री कहाणियां' कथा संग्रै 1989 में प्रकाशित। 'बंटवारो' कहाणी इणी संग्रै मांय सूं सामळ करीजी है। इणरै टाळ 'डाकी दायजो' अर राजस्थानी में तीन रेडियो रूपक भी प्रकाशित। आप राजस्थान रत्नाकार दिल्ली सूं 'महेन्द्र जाजोदिया' पुरस्कार सूं सम्मानित भी हुय चुक्या है। राजस्थानी पोथियां रै टाळ आपरी हिंदी में भी केई पोथियां प्रकाशित हुय चुकी है। आपरी घणकरी कहाणियां में गांव–जमीं सूं जुड़ियोड़ी माटी री सोंधी–सोंधी महक आवै।

पाठ–परिचै

बंटवारो कहाणी राजस्थान ई नीं, भारत रै गांव–गांव, ढाणी–ढाणी अर घर–घर री कहाणी लखावै। आज संयुक्त परिवार टूटता जा रैया है। व्यक्तिगत स्वारथ रै पाण व्यक्ति केन्द्रित परिवार पनप रैया है। इण रै पाण जमीं बंट रैयी है, मन बंट रैया है अर सामाजिक–आर्थिक स्थितियां भी बदळ रैयी है। आ कहाणी परोख रूप सूं दुषित ग्रामीण राजनीति कांनी भी इसारो करै। आज री स्वारथपूरण राजनीति गांवां में भी केई बंट घाल राख्या है।

कहाणी

बंटवारो

रामसरो मोटो गांव। चौधरी रतनाराम इलाकै रो मोटो मिनख। मोटी गुवाड़ी रो धणी। रियासत रै बगत सूं मिल्योड़ी लंबरदारी। आजादी आयी। लंबरदारी गई परी। पण लोग अर सरकारी कारुन्दा बांनै लंबरदार सा'ब केवै। चौधरी कनैं मोकळी जमीन। अै ई कोई तीन सौ बीघा अर तीन भाई। बिचलै रो नाम हेतराम जको खेती–पाती री देखभाल करै। छोटै भाई रो नाम साहबराम, जको दसवीं जमात तांई पढ़योड़ो। राजनीति भी करै सागै ई मंडी जाय'र खेती री निपज बेचणी अर बठै सूं घर री जरूरत मुजब चीज बस्त खरीद'र ल्याणै रो काम भी करै।

खेती रो घणखरो काम–पाड़, पाती, बीजणो, अनाज काढणो आद ट्रैक्टर स्यूं करै। पण चौधरी नैं पुराणी रीत सारू मदुओ ऊँट राखणै रो घणो कोड। सर्दी रै टेम मांय बाखळ में खड़यो ऊँट बलबलावै अर माकड़ी पीटै जद देख'र चौधरी रो जी सोरो हुय ज्यावै। चौधरी सवारी करणै खातर घोड़ी भी राखै। गांव–गांवतरो कर'र बो अपूठो आंवतो तद भीमलै रै ताल में पड़ती घोड़ी री टापां सूं ठा पड़ जांवतो कै चौधरी आवै है। बो कारू–कारिंदा रै भरोसै ऊँट–घोड़ी नीं छोडतो। खुद नीरतो अर आंथण पौर रो पाणी प्यावण सारू जोहड़ै ले ज्यांवतो। गांव री बू–बेटियां चौधरी रो घणो काण–कायदो राखती। जद पाणी ल्यांवती बीनणियां सांमी मिल ज्यांवती तो बै आदर देण खातर पीठ मोड़'र खड़ी हुय ज्यांवती।

चौधरी रै घरै दूध–छा री कमी नीं ही। तीन भैंस अर पांच –छः गायां नोहरै में हरदम बंधी रैवती। दिन उगणै सूं पैली ई बिलोवणै री आवाज उगाड़ में दूर –दूर तांई सूणीजती। भाग फाटतां रै सागै गांव री लुगायां अर टाबर लोटा, हांडी अर जग ले'र छा खातर चौधरी री ड्योढ़ी माथै ऊभा हुय ज्यावतां।

आंथण पौर चौधरी री चूंतरी माथै गांव री चौपाळ जुड़या करती। चौधरी होको भर'र मुढै माथै बैठ ज्यांवतो। सै भांत रा लोग भी आ बैठता। होकै री कुरड़–कुरड़ रै सागै गांव–देश री, सुख–दुःख री

बात्यां हुया करती। चौधरी गांव रा गरीब–गुरबां रौ घणौ ख्यांल राख्या करतो। जद कदै इलाको अकाळ री चपेट में आ ज्यांवतो तद आपरी बखारी अर चारै–तूड़ी रै कुपां रो मूंडो खोल देंवतो। सगळां रै सुख–दुःख रो सीरी हो। जरूरतमंद मिनख उम्मीद ले'र आंवता अर मूंडै पर हांसी लिया पाछा जांवता। लोग चौधरी रै भरोसै आपरी बेटी रो ब्याव मांड देंता। बण जीतै जी ना–नुकर नीं करी। आधी रात पछै तांई चौपाळ लागी रैवती। जद होको ठंडो पड़ ज्यांवतो तद कारू–कारिंदा खीरा अर तंबाकू ओज्यूं टेक ल्यांवता। गरमी री टेम मांय धूणी कोनीं धुकती पण सरदी में सगळां बिचाळै धूणी धुक्या करती।

गांव में काम सारू सरकारी हाकम, पटवारी, सिपाही आद आंवता तद लंबरदार री बैठक में रुकता। जाण–पिछाण हाळा ही नीं, राह–बगता बटाऊ भी रातबासो लेंवता। सैंग जणा नै डोळ–माजनै सारू आवभगत अर रोटी–खाट मिलती।

सूरज भगवान रो रथ जिंयां घूमै बिंयां टेम रो पहियो भी सरकतो रैयो। लंबरदार आपरी उम्र रा अस्सी फागण देख लिया। आंख्यां अर गोडा जबाब देयग्या। अब घर में अर बारै साहब राम री चालण लागगी। बींरो राजनीति करणै रो चस्को बधतो गयो। पंचायत रा चुणाव आयग्या। चौधरी रै बरजतां– बरजतां बो सरपंच रै चुणाव में खड़यो हुग्यो। बीरै सांमी ठाकर जसवंत सिंह खड़्यो हो। ई स्यूं पैली गांव री पंचायत रो चुणाव सदीव निर्विरोध हुया करतो। सैंग जणा भेळा हो'र पंच–सरपंच चुण लेंवता। सरकार कांनीं सूं पुरस्कार में मोटी रकम ले'र गांव रै विकास में लगा देंवता।

जकी चूंतरी माथै आखै गांव री चौपाल जुड़्या करती, गांव रै विकास री बातां हुया करती, अबै बठै पटका–पछाड़ी री योजना बणनै लागगी। चौधरी रै प्रभाव सूं आधै स्यूं बतो गांव साहब राम कांनी हो। पण गांव तो बंटग्यो ई। चौधरी कनै सगळी बातां पूगती जद सैंग जणां नैं आ ही समझावतो कै मन मोटा ना करो। अेक दूसरै री बुराई ना काढो। जिकै नैं जनता चावैगी बो ही सरपंच बण ज्यासी। पण सुणै कुण ? सगळा आप चाही करै। जिंयां–जिंयां चुणाव री तारीख नेड़ै आंवती गई तिंयां–तिंयां खरचै रा खाळ बिगण लागग्या। रिपियां रा पनाळा बैहग्या। छेवट जीत साहब री हुयी।

चुणाव रै सालैक पछै चौधरी बीमार पड़ग्यो। घणी दवा–दारू करीजी पण सारो नीं आयो। अेक दिन बो सगळा जणा नैं भेळा कर'र बोल्यो, ''इण दुनियां में कोई कोनी रैयो। राम–रावण सरीखा नीं रैया। सबनै अेक न अेक दिन जावणो ई पड़ै। म्हैं तो सोरो–सुखी जांऊलो। म्हारै जी में अेक बात अटकी पड़ी है जकी थांनैं कैयनै जाऊं। बीं पर चालस्यो तो सुख पावोला। खानदान रो नांव ऊंचो रैसी। धरती किसान री मा हुवै। मा कदै कोनी बंट सकै। बा सगळां बेटां री मा हुवै। जमीन नीं होवणै सूं भूमिहीण बण ज्यावै। म्हारो ओ कैवणो है कै जमीन मत बांटियो। समय सारू भेळा नीं रह सको तो कोई बात नीं पण खेती मिल'र करिया।। फसल भलैई बांट लेइयो। जमीन बांटण री बीमारी चाल रैयी है। घणै टेम पैली म्हारै कनै खेती–बाड़ी अधिकारी आयो। आ बात म्हनैं समझाई कैं छोटा–छोटा जमीन रा टुकड़ा आर्थिक दृष्टि सूं लाभप्रद नीं हुवै। आज आपणै कनै तीन सौ बीघा जमीन है जद मोटी गुवाड़ी बाजै। आ ही जमीन म्हैं भाई बांटल्यां तो सौ–सौ बीघा पांती आवै। फेरुं आपणै टाबरां में बंटती जावै तो छेवट दो–दो बीघा पांती आसी। किसान सूं आपणी औलाद मजदूर बण ज्यासी। आपांनैं टाबरां नैं पढाणा चाहीजै जकै सूं बै दूजा धंधा कर सकै। आपणा बडेरा कैया करता–कै 'घण जाम्या ऊत जा कै घण बरस्यां'। साहब राम नैं खास तौर सूं ताकीद करूं कै थूं सरपंच है, सगळै गांव रो खयाल राखी। आपणै कनैं आवणियै री डोळ–माजनै सारू मदद करियो। सगळां रो भलो करियो। बुरी नीं बिचारियो।''

केई दिनां पछै चौधरी बिंयासी बरस री उमर ले देवलोक हुयग्यो। सगळै गांव दुःख मनायो क म्हारो रूखाळो चल्यो गयो।

चौधरी री सीख घणां दिनां तांई कोनीं मानीजी। 'गढ़' जिस्यो मकान तीन हिस्सा में बंटग्यो। बाखळ में दो भींता खींच'र तीन हिस्सा कर दिया। खेत बी बंटग्या। जमीन बंटी जद घणी ले–दे,

चख–चख हुयी। रिश्तेदार भेळा हुग्या। आपस में खींचाताण हुयी। जको घर सगळै इलाकै री पंचायती करिया करतो अबै दूजा लोग बीं घर री पंचायती करणै लागग्या। छेवट चौधरी रतनाराम रो बेटो दुनीराम ई आपरी मा रै कैवणै सूं कम उपजाऊ अर टीबै हाळी जमीन लेवण सारू राजी हुग्यो। जमीन कांई बंटी, मन भी बंटग्या। जकी चूंतरी माथै आखो गांव भेळो हुया करतो बठै अब घरहाळा भी भेळा नीं हुवै। अबै बा सूनी पड़ी रैवै या बीं पर झावरियो गंडको पड़्यो रैवै।

कई सालां पछै दुनीराम री छोरी चंदो रो ब्याव मंडग्यो। सबैरे–आथण गीत गाइजै। घर रा नीं आवै। आड़ोसी–पाड़ोसी जरूर आवै। इण मौकै परिवार रो बामण तेजाराम आयो। तेजाराम चौधरी रै देवलोक रै टेम आयो हो। बाखळ में भींता खींची देख'र उदास हुयग्यो। नीं बठै घोड़ी हिणहिणावै ही अर नी मदुओ बलबलावै हो। भींत रै खूणै में बंधी डांग जरूर अरड़ावै ही। पंडतजी सगळां भाइयां रै घरां गयो। सैंग जणा सूं रामा–स्यामा करी। हालात रो जायजो लियो।

आथण पौर में रोटी जीम'र बैठक में जा बैठयो। केई ताळ तांई अेकलो ई बीड़ी फूंकतो रैयो। फेर मांची पर आडो हुयग्यो। सामली भींत माथै महात्मा गांधी री तस्वीर टंग रैयी ही। बीं तस्वीर रै तळै रतनाराम चौधरी री। तेजाराम सोच में पड़ग्यो कै इण बापू गांधी देश नै बांटणै हाळी बात रो घणो विरोध करियो। लोगां नैं, नेतावां नैं कितरा समझाया। भारत म्हारी मा है। आपणी सगळां री मा है। भेळा रैवो। पण जिन्ना सरीखा धर्मांध माणस हित री बात नीं सुणी। देश बंटग्यो तीन हिस्सा में। लाखू माणस तबाह हुयग्या। हजारूं सुहाग उजड़ग्या। घणी उथळ–पाथळ माची। देश नै बांट कांई सुखी हुया। चौधरी भी घणा समझाया। जमीन नीं बांटियो। बीरै जांवता ही जमीन बंटी। घर बंट्या। मन भी बंटग्या।

थोड़ी ताल पछै तेजाराम कनै दुन्नीराम चिलम भर'र बैठग्यो। केई ताळ तांई घर–बार, गांव–गुवाड़ री बातां हुयी। दुन्नीराम सगळी कहाणी बंटवारै री सुणा दी। सुण'र तेजाराम बोल्यो ''चौधरी री बात पर थै सगळा जणां कोनी चाल्या। घर–जमीन बंटग्या। संपत कोनी रैयो। आ बात सैं स्यूं माड़ी हुयी। ईंट जुड़यां भींत खड़ी हुवै। भींत पड़ी, डगळिया खिंड्या। म्हैं थांनैं कैवूं कै ओज्यूं भी भेळा हुय सको हो।''

''म्हैं फंट्योड़ा कीकर भेळा हो सकां पडंतजी ? म्हारा तो मुसाण ई कोनी मिलै।'' दुन्नीराम बोल्यो।

तेजाराम पडूतर देवतां थकां बोल्यो, ''थांरा सगळां रा ओळ–नाळा जद अेक जिग्यां गड्या है तो मुसाण भी अेक जिग्यां रैसी, थूं बडै मिनख चौधरी रतनाराम रो बेटो कुहावै। टूटी जेवड़ी नै फेरूं जोड़। बिना गांठ लगायां बंट लगा'र पाछी जोड़। चंदो रो ब्याव है। परिवार बिना ब्याव फूटरो नीं लागै। चंदो रतनाराम री पोती नीं है, हेतराम अर साहबराम री भी पोती है। थूं म्हारै सागै चाल। म्हैं सारी बात कर लेस्यूं। ब्याव पर भेळा करणा म्हारै जुम्मै। म्हैं तो सगळां रो ई साझी बामण हूं।''

केई ताळ तांई दोनूं जणां में बांथा–झोड़ हुयो। दूजै दिन आगै पंडित तेजाराम अर लारै दुन्नीराम आपरै दोनूं काकां रै घरां कांनी जांवता दीस्या।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. चौधरी कनै कुल कित्ती बीघा जमीं ही।

(अ) तीन सौ बीघा। (ब) दो सौ बीघा।
(स) पांच सौ बीघा। (द) सौ बीघा। ( )

2. चौधरी रतनाराम टाळ उणरै कित्ता भाई हा।

(अ) तीन । (ब) दो।
(स) अेक। (द) चार। ( )

3. खेती रा सगळा काम ट्रेक्टर सूं हुवतां हा, पण चौधरी नै पुराणी रीत सारू किण रो घणो कोड हो।
(अ) घोड़ी। (ब) बळद।
(स) ऊंट । (द) घोड़ो। ( )

4. चौधरी री पोती रो ब्याव हो, वा किणरी बेटी ही ?
(अ) रतनाराम जी। (ब) साहब राम री।
(स) हेतराम री। (द) दुन्नी राम री। ( )

5. चौधरी री पोती, जिण रो ब्याव हो, उणरो कांई नांव हो ?
(अ) चन्दो। (ब) सुगना।
(स) मंगळी। (द) रुकमा। ( )

6. ''बंटवारो'' कहाणी कैड़ै परिवार नैं आछो मानै।
(अ) छोटो परिवार। (ब) मोटो परिवार।
(स) व्यक्ति केन्द्रित परिवार। (द) मात्तृ सत्तात्मक परिवार। ( )

साव छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. चौधरी रो किसो भाई जादा भणियोड़ो हो, जिको राजनीति में भी भाग लेंवतो हो।
2. चौधरी नैं सवारी सारू किणरो कोड हो।
3. कहाणी में लंबरदार किणनैं कैयो गयो है ?
4. चौधरी रै मांचौ पकड्यां पछै घर अर बारै किण री ज्यादा चालण लागगी ही ?
5. पंचायत रै चुणाव री टैम किणरो पलड़ो भारी हो अर क्यूं ?
6. दुन्नीराम किण रै समझायां सूं आपरै काकां नैं ब्याव सारू तेड़ण नैं जावै ?

छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. चौधरी आपरा दिन नैड़ा आवतां देख'र सगळा जणां नै भेळा कर कांई हिदायत दीवी ही ?
2. 'घण जाम्या ऊत जा कै घण बरस्यां।' इण कैवत रो खुलासो करतां थकां समझावो।
3. 'जमीं कांई बंटी, मन भी बंटग्या।' इणनैं समझाय'र लिखो।
4. तेजाराम बामण रो चरित्र–चित्रण करो।
5. तेजाराम बामण दुन्नीराम नै अैड़ो कांई समझायो कै वो आपरी बेटी रै ब्याव सारू आपरै काकां नै तैड़ण सारू व्हीर हुयग्यो ?
6. 'बंटवारो' कहाणी कांई संदेस देवै।

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. ''घर री गुवाड़ी रो आप–आप रै स्वारथ अर गांव री खुशहाली रो राजनीति रा पड़पंच बंटवारो कर दियो।'' कहाणी रै कथ्य री दीठ सूं इण बात रो खुलासो करो।
2. चौधरी रतनाराम रो चरित्र–चित्रण करता थकां आ बात सुभट करो के कीकर वै गांव अर आपरी गुवाड़ी रो भलो सोचण वाळा मिनख हा।
3. कहाणी रै मूळ–तत्त्वां रै आधार माथै 'बंटवारो' कहाणी री समालोचना करो।
4. 'बंटवारो' कहाणी राजस्थान ई नीं, भारत रै गांव–गांव, ढाणी–ढाणी अर घर–घर री आडै आंसुवां रोवण वाळी कथा है।'' इण कथन रै आलोक मांय कहाणी री पीड़ अर मूळ संवेदना नैं उकेरो।

29

डॉ. मदन सैनी

लेखक–परिचै

डॉ. मदन सैनी राजस्थानी रा चावा–ठावा कथाकार। आपरो जलम 3 मई, 1958 श्री डूंगरगढ़ (बीकानेर) में हुयो। आप हिंदी में अेम. अे. अर 'राजस्थानी काव्य में रामकथा' माथै पी–अेचडी. री उपाधि प्राप्त करी। अबार आप रामपुरिया महाविद्यालय, बीकानेर में व्याख्याता है। डॉ. सैनी राजस्थानी रै सागै हिंदी रा भी सबळा अर संजीदा लेखक। जिंदगाणी री छोटी सूं छोटी बात कीकर कहाणी रै डोरै में पिरोई जा सकै, आ बात आपरी कहाणियां में देखण नै मिळै। राजस्थानी में आपरा दो कथा–संग्रै छप चुक्या है। 'फुरसत' कथा–संग्रै नै राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर कांनी सूं 'मुरलीधर व्यास राजस्थानी कथा–साहित्य पुरस्कार' मिल्यो। आपरै कथा–संग्रै 'भोळी बांता' नैं भी राजस्थानी साहित्य जगत में ओपतो आदर मिल्यो है। आपरी केई कहाणियां हिंदी, अंग्रेजी, मलयालम अर कन्नड़ मांय ई अनूदित होय चुकी है।

पाठ–परिचै

'सोनै रो सूरज' कहाणी डॉ. मदन सैनी रै कहाणी–संग्रै 'फुरसत' सूं सामळ करीजी है। आ कहाणी बाल मनोविग्यान माथै आधारित है। कहाणी पात्रात्मक शैली में लिख्योड़ी है। कहाणी रै नायक नैं इस्कूल में मोवनी री नाक री बाळी लाधै, जिणनैं वो बाल लोभ रै पाण लुकाय'र घरै ले आवै। घरै मां उणनैं फटकार लगावै। उणरो हिरदै परिवर्तन हुवै। वो नाक री बाळी पाछी मोवनी नै देवण सारू अेक नाटक रचै। छेवट नाक री बाळी पाछी मोवनी कनै पूग जावै। कहाणी खरै चाल–चलन अर ईमानदारी रो संदेस देवै। अर इण नै ईज सोनै रो सूरज मानै। इण भांत आ कहाणी मनोवैग्यानिक सोच अर हिरदै परिवर्तन री कहाणी है।

कहाणी

सोनै रो सूरज

अेकै कांनी अगूण में लाल गट्टो–सो सूरज निकळतो अर बीजै कांनी मा, 'उठो रे, उठो रे ! इस्कूल रो टैम हुयग्यो।' कयै'र म्हानैं काची नींद में उठा देंवती। दिनूगै री सक्कर–नींदं म्हनैं मीठी तो अैड़ी लागती कै उठणै रो मन ई नीं होंवतो। पण कांई जोर करतो। कुरळा–दांतण अर न्हावण–धोवण सारू ई केई बार टैम नीं मिलती अर बेगो–बेगो हाथ–पग धोय'र ई इस्कूल कांनी टुरणो पड़तो।

अैड़ो ई अेक दिन। आज ई अगूण में लाल गट्टो–सो सूरज निकळ्यो। म्हैं खथावळ सूं न्हायो–धोयो, त्यार हुयो अर पाटी–बस्तो लेय'र इस्कूल कांनी बहीर हुयो।

गांव रै उतरादै पासै बाळू रेत रा चमचमांवता धोरा हा। धोरां माथै ऊगतै सूरज री तिरछी किरणां सोवणी लागती। गांव–किनारै धोरां रै कनै ई म्हारी इस्कूल ही। इस्कूल कनै अेक कूवो, कुवै कनै अेक नीम अर दो सरेस रा दरखत हुंवता, जिण माथै म्हे 'कां–कां खैलता, 'नीम' री नींबोळ्यां खांवता, सरेस रा फूल तोड़ता, डाळ्यां रै लमूटता अर इस्कूल री कोटड़्यां में हुबड़ास हुंवतो जणा बां दरखतां री छिंयां तळै दर्‌यां बिछाय'र बैठनै भणाई करता। इस्कूल री कोटड़्यां कुवै सूं चिपती ई ही। बां रै आगै चौबारो हो, जिणमें चौका बीड़्योड़ा। चौकां बिचाळै कदैई 'सीमेंट' सूं दरजां भर्‌योड़ी ही, जकी अबै उखड़'र बारै आयगी ही। उणरी ठौड़ अबै रेत भरीज्योड़ी पड़ी ही। 'म्हे प्रार्थना पछै चौबारै मांय बैठता, पढता। गुरुजी धोती–चोळो पैरता अर हाथ में छत्तो राखता। सांचै अरथां में बा इस्कूल गुरुकुळ रै आश्रम सरीखी ही। गुरुजी दोपारां घोर खांचता अर म्हे दरखतां माथै खेलता। अबै तो न बै गुरुजी रैया है, न बै दरखत रैया

है अर न बा इस्कूल। पण बो कुवो अजेस ई थिर है, उणी भांत, जिण भांत म्हारै हियै में उण इस्कूल री यादां थिर है।

रोजीना री दांई उण दिन ई प्रार्थना हुई। प्रार्थना पछै प्रतिज्ञा बोलाईजी अर पछै सैंग जणा चौबारै मांय दरयां बिछाय'र बां माथै बैठ'र भणाई करण लागग्या। केई छोरा–छोरयां हथायां ई करै हा। गुरुजी मानेटर नैं हिदायत देंवता थकां कै म्हैं मायं नै थोड़ो आराम करूं हूं। जे कोई ओपरो मिनख इस्कूल कांनी आंवतो दीसै तो म्हनैं जगा दीजै अर किणी नैं लड़ण–झगड़ण मत दीजै –कै परा'र कोटड़ी में बड़ग्या।

मानेटर खेल में खुद आगीवाण हो। उणरै सागै केई जणां दरखतां कांनी टुरग्या। म्हैं म्हारी पाटी माथै भरतै सूं रमतिया बणावण में लाग्योड़ो हो कै म्हारै हाथ सूं तिसळ'र भरतो चौकै री चीर मांय जाय धंस्यो। म्हैं अेक घोचो लेय'र चीर सूं भरतो निकाळण लाग्यो, तो भरतै रै साथै ई अेक नान्हों–सो लाल मोती अर उणरै साथै ई सोनै री पतळी डांडी निंगै आई। म्हनैं अणूतो हरख हुयो। इनै–बिनै जोयो कै कोई देखै तो नीं है... कोई नीं देखै हो। म्हैं होळै–सीक उण लाल नग जड़्योड़ी सोनै री बाळी नैं उठाय'र गूंजियै में घाली अर भरतो लेयनै फेरूं रमतिया मांडण में लागग्यो।

थोड़ी–सीक ई ताळ हुई हुवैला। सोवनी–मोवनी साथै तीन–च्यार छोरा–छोरयां आय'र कीं ढूंढण लाग्या। म्हैं पूछ्यो, 'कांई हुयो ?' बै बोल्या कै मोवनी रै नाक री बाळी गमगी।

अबै म्हैं ई बां रै सागै बाळी ढूंढण रो नाटक करण लागग्यो। अेक मन करतो कै सांची बात बता देवणी चाइजै। पण छाती नीं हुई अर बीजा छोरा–छोरयां साथै खासी ताळ तांई दरयां झड़काय'र नाकै हुयो। इणी बीच छुट्टी री घंटी बाजगी। सैंग आप–आपरा पाटी–बस्ता लेय'र उछळता–कूदता आप–आपरै घर कांनी टुरग्या। म्हैं मारग मांय सोचतो जाय रैयो हो कै आज इण सोनै री बाळी नैं देख'र मा मोकळी राजी हुवैली। मां सूं ई म्हनैं पतो लाग्यो हो कै सोनो घणो कीमती हुवै, चांदी सूं ई बेसी ! आ बात लारलै बरस मा बताई ही, जिण दिन म्हनैं पीपळगट्टै कनै खेलती बेळा चांदी रो सिक्को लाध्यो हो। उण दिन मां कित्ती राजी हुई ही। म्हैं मन ई मन हरखीजतो घरै पूग्यो। पाटी–बस्तो आळै में मैलनै सीधो मा कनै गयो अर मा रै सामनै जीवणै हाथ री मुट्ठी ताण'र बोल्यो, 'मा, मा, देख म्हारी मुट्ठी में कांई है ?'

'दीखै कोनी, कांई बताऊं ?' मा बोली।

'कांई हुवणो चाइजै, बता तो सरी।'

'गळगचिया हुवैला !' मा इचरज करती कैयो।

'ऊं–हूं, आ देख !' म्हैं मुट्ठी खोली।

'अरे, आ तो सोनै री बाळी है, कठै लाधी रे ?'

'पीपळगट्टे कनै ! म्हैं बठै छोरां सागै चरभर रमै हो....' झूठ बोलती बेळा काळजै मांय धुकधुकी –सी छूट रैयी ही। मा म्हारै मूंढै कांनी टोर बांध्यां देखती रैयी अर बा बाळी आपरै हाथ मांय लेय लीनी। पण मा रै चैरै माथै चिंता झळकै लागी। मा री उदासी रो कारण म्हारी समझ में नीं आयो। म्हैं तो सोचै हो कै आज मा रै हरख रो पार नीं रैवैला। पण आ कांई अजोगती बात हुई ?

'सोनो लाधणो आछो नीं हुवै, असुभ हुवै.....जरूर कोई आफत आसी, खैर, कीं बात नीं। सात दिनां बाद सकरांत है। जोतकी नैं कीं तिल–तेल, पईसा–टकां साथै आ बाळी देय'र भरभार उतारस्यां।' मा उदासी मांय डूब्योड़ी–सीक बोली।

म्हैं कांई केवतो ? सारो जोस छूमंतर अर तन मन आकळ–बाकळ हुयग्यो। रात नैं रोटी ई सावळ नीं खाय सक्यो, न नींद ई आई। पड़्यो पसवाड़ा फोरतो रैयो। जियां–तियां ई फेरूं दिन ऊग्यो। म्हैं प्रार्थना बोल्यां सूं पैलां ई इस्कूल पूगग्यो अर बीजा छोरां रै आवण री उडीक करै लाग्यो।

31

प्रार्थना पछै चौबारै में बैठतां ई मोवनी री बाळी री बात आज फेरूं छिड़ी। सोवनी अर मोवनी दोनूं ई बेळायतण्यां (जुड़वां) बैनां ही। सोवनी बतायो कै मा मोवनी नैं काल घणी ई कूटी अर साव कैय दीन्यो कै इण भांत उजाड़ कस्यां भळै कदैई कीं चीज नीं दिरावैली। मा 'रामदेवजी' म्हाराज रै सवा रिपियै रा पतासा ई बोल्या है, जे बाळी लाध जावै तो।

म्हे सगळा मोवनी कांनी जोवै हा। बा घणी उदास ही। म्हनैं लाग्यो, जाणै म्हैं ई मोवनी नैं कूटी हूं, उणरी मा नीं मारी है। अेक भाई बैन नैं कूटै तो उणनैं कित्तो पाप लागै..... म्हैं मन ई मन पिछतावो करै हो। म्हनैं प्रार्थना रै पछै बोलाईजण वाळी प्रतिज्ञा रो अेक–अेक आखर याद आवण लाग्यो..... 'भारत मेरा देश है... समस्त भारतीय मेरे भाई–बहिन हैं.....'

जद कोई चीज गम जावै अर लाधै नीं। तद अेक–दो बार ढूंढ्यां सूं पतियारो नीं हुवै–म्हे सैंग जणां सोवनी–मोवनी सागै अेक बार फेरूं बाळी सोधण सारू खेचळ करी। उण बेळा म्हारी मनगत म्हैं कांई बताऊं ? पढण–लिखण में म्हारो दर ई मन नीं हो। म्हैं मन ई मन इण दोगाचींती सूं उबरण रो उपाय सोचतो आधी छुट्टी नैं उडीकतो रैयो।

आधी छुट्टी में घरां जांवता ई मा बोली। 'आज इत्यारां ई पूरी छुट्टी हुयगी कांई ? आज सनिवार तो नीं है ?'

'नीं, आधी छुट्टी ई हुई है, पण बा बाळी है नीं। बा मोवनी री है। उणनैं उणरी मा अबार ई नूंई बाळी दिरवाई ही। काल दिनूगै पींपळ–गट्टै कनै रमती बेळा उणरी बाळी गमगी ही। आज इस्कूल में बेरो पड़्यो जद म्हैं बताय दियो कै बा बाळी काल म्हनैं लाधी ही। अबै बा बाळी लेवण सारू ई म्हैं भाजतो–हांफतो आयो हूं।' म्हैं म्हारो सोच्यो–समझ्यो पडूत्तर दीन्यो।

मा घणी राजी हुई। बेगी–सीक बाळी लायनै म्हारै हाथ में धर दीनी अर बोली, 'कित्ती आछी बात है, अबै आपांनै किणी बीजै नैं कीं ई नीं देवणो पड़ैला। जाबतै सूं ले जायनै जिणरी बाळी है, उणनैं सूंप दीजै !'

म्हैं दड़ाछंट दौड़्यो आयो। ओजूं इस्कूल बैठी नीं ही। छिड़्या–बीछड़्या छोरा–छोर्यां रम रैया हा। म्हैं चोर निजरां सूं इनै–बिनै जोंवता थकां चोबारै रै चौकां बीचै री अेक चीर मांय उण बाळी नैं नाख दीनी अर उण माथै कीं रेत बुरकाय दीनी। इत्तै मांय घंटी लागगी। सैंग आप–आपरी ठौड़ आय बैठ्या। म्हैं मोवनी सूं पूछ्यो, 'बाळी लाधी कांई ?'

'कठै लाधण नै पड़ी है ?' बा उदास हुय'र बोली।

'म्हारो अेक सुझाव है, आपां सैंग जणां अेक–अेक घोचो लेय'र आं चौकां री अेक–अेक चीर कुचर–कुचरनै देखां.....स्यात् बाळी लाध ई जावै ? म्हैं बोल्यो।

म्हारो सुझाव मान'र अेकर ओजूं सैंग जणां दर्यां उठायनै चौकां री चीरां घोचां सूं कुचरै लाग्या। बाळी नैं जिण जग्यां म्हैं 'नाखी' उण ठौड़ म्हैं खुद घोचो लेयनै बैठग्यो। म्हैं होळै–होळै घोचै सूं चोकै री चीर मांय लीकट्यां–सी कर रैयो हो कै अचाणचकै घोचै री अणी बाळी सूं अड़ी अर बाळी उछळ'र मोवनी रै माथै पर जाय पड़ी।

'लाधगी !'–'लाधगी !!' कैय'र सैंग जणां उछळ–कूद मचावै लाग्या।

'कांई लाधगी ?' कोटड़ी मांय नींद रा झेरा लेंवता–सा गुरुजी चिमकनै बोल्या। म्हैं गुरुजी नैं मोवनी री बाळी गमणै अर लाधणै री बात बताई। जाण'र बै ई राजी हुया। मोवनी रै मूंढै माथै फेरू मुळक बापरगी। म्हनैं लाग्यो कै मोवनी सूं बेसी हरख जे किणी नैं हुयो होसी तो बो म्हनैं ई हुयो है। मोवनी री बाळी लाधतां ई उणरी बैन सोवनी भाज'र आपरी मा नैं इण बात री बधाई दीनी। उणरो घर इस्कूल रै पाखती ई हो। उणरी मा हाथूंहाथ सवा रिपियै रा पतासा मंगाय'र रामदेवजी रै परसाद चढायो अर

पतासां रो ठूंगो इस्कूल ई भिजवायो।

ठूंगो हाथां में लियां गुरुजी अेक–अेक जणै नैं दो–दो पतासा बांट्या। बां पतासां रै मिठास नैं म्हैं कदैई नीं बिसराय सकूंला। उण परसाद रै परताप सूं जाणै मन रो मेल धुपग्यो हुवै... घर आयनै सैंग बातां म्हैं मा नैं साची–साची बताय दीनी।

'अरे वा ! आज तो सोनै रो सूरज ऊगग्यो..... खरो सोनो तो खरी बात अर खरो चालचलण ई हुवै। 'सांच' ई सोनो हुवै, खरो सोनो। इण सोनै रो उजास कदैई मगसो नीं पड़ै.....दैई नीं।' कैवती थकी मा म्हनैं गळै लगाय लीन्यो अर म्हारै माथै पर हिंवळास सूं होळै–होळै हाथ फेरै लागी।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. नाक री बाळी किणरी गमी ही ?

(अ) सोवनी री। (ब) मोवनी री।
(स) मंगळी री। (द) सुगनी री। ( )

2. अगूण किण दिसा रो नांव है ?

(अ) पूरब। (ब) पश्चिम।
(स) उत्तर। (द) दक्षिण। ( )

3. कहाणी रै नायक नैं किणसूं पतो लागग्यो कै सोनो चांदी सूं भी घणो कीमती है।

(अ) मा सूं। (ब) गुरुजी सूं।
(स) मावे नी सूं। (द) मानीटर सूं। ( )

4. मां रै पूछ्या कहाणी रो नायक सोनै री बाळी लाधण री ठौड़ किसी बताई ?

(अ) पीपळ गट्टै कनै। (ब) धूड़ै में।
(स) चौके री चीर मांय। (द) दरी–पट्टी माथै। ( )

5. 'सोनै रो सूरज' कहाणी रै शीर्षक सूं मतळब है ?

(अ) खरो चाल चलण। (ब) बेईमानी।
(स) चोरी–जारी। (द) ईमानदारी। ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. मोवनी री जुड़वा बैन रो कांई नांव है ?
2. 'जुड़वा' नै राजस्थानी में कांई कैवै ?
3. कहाणी रै नायक नै नाक री बाळी कठै लाधी ही ?
4. 'सोनै रो सूरज' कहाणी रो संदेस कांई है ?
5. 'कहाणी रो नायक नाक री बाळी लाधतां पाण ई मोवनी नै पाछी क्यूं नीं दी?'
6. 'उत्तर' दिसा नै राजस्थानी में कांई कैवै ?
7. सकरांत त्योहार रो धार्मिक महत्त्व बतावो।
8. कहाणी 'सोनै रो सूरज' किण शैली में लिख्योड़ी है ?

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. "सोनो लाधणो आछो नीं हुवै, असुभ हुवै....." मा अैड़ो क्यूं सोच्यो ? अर इण सूं छुटकारो पावण सारू वा कांई उपाय बतायो ?

2. 'अबै म्हैं ई बां रै सागै बाळी ढूंढण रो नाटक करण लागग्यो।' कहाणी रो नायक अैड़ो नाटक क्यूं कर्‌यो ?
3. 'सोनै रो सूरज' कहाणी रै अंत में मा सोने रो सूरज रो साचो मांयनो कांई बतायो है ?
4. "बां पतासां रै मिठास नै म्हैं कदैई नीं बिसराय सकूंला।" कहाणी रो नायक अैड़ो क्यूं कैयो ?
5. कहाणी रो नायक जद लाध्योड़ी नाक री बाळी मा नैं दीवी उण बगत मा री प्रतिक्रिया कांई हुयी ?
6. 'मा' रो चरित्र–चित्रण करो।
7. कहाणी रो नायक नाक री बाळी पाछी मोवनी नैं देवण सारू कांई नाटक कर्‌यो ?

लेख रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'सोनै रो सूरज' कहाणी हिरदै रै परिवर्तन अर मनोवैग्यानिक सांच नैं परगटै।' बाल मनोविग्यान री दीठ सूं इण बात नैं उजागर करो।
2. 'सोनै रो सूरज' कहाणी चावी लोककथा 'चोर री मां' कहाणी री याद दिरावै। उण कहाणी रै कथानक नै लिखो।
3. 'सोनै रो सूरज' कहाणी 'चोर री मां' कहाणी री उल्टी है, दोन्यू कहाणियां रै कथ्य री तुलना करतां थकां इण कहाणी री मौलिकता रो खुलासो करो।
4. 'सोनै रो सूरज' कहाणी री शिल्प अर भाषा–शैली री दीठ सूं चरचा करो।

34

इकाई : तीन
(अेकांकी)
निर्मोही व्यास

लेखक–परिचै

निर्मोही व्यास रो जलम 3 फरवरी, 1934 में हुयो। आपरी शिक्षा अेम. अे. (हिंदी) अर अेल. अेलबी. है। आप सन् 1956 सूं राजस्थानी साहित्य सेवा में लाग्योड़ा है। आप राजस्थानी भाषा मांय अबार लग 51 नाटक लिख चुक्या है। आं में– ओळमो, भीखो ढोली, सांवतो, बाबोसा, प्रणवीर पाबूजी अर अेक गांव री गोमती आद प्रमुख है। नाट्यकृति 'सांवतो' माथै आपनैं सन् 1994–95 में राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रो 'शिवचंद्र भरतिया गद्य पुरस्कार' मिल्यो। आपनैं वर्ष 1999–2000 में राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर कांनी सूं 'विशिष्ट साहित्यकार सम्मान' सूं अर राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपरु कांनी सूं वर्ष 2002–03 रो 'नाटय् लेखन अर निर्देशन' रै सैसूं ऊंचै सम्मान सूं सम्मानित कर्‌या गया। आप रेल सेवा सूं अवकाश प्राप्ति रै पछै नाट्य मंचन अर लेखन सारू पूरी तरै समर्पित है।

पाठ–परिचै

श्री निर्मोही व्यास री लिख्योड़ी आ अेकांकी 'पाणी आडी पाळ' साक्षरता, स्वावलंबन, परिवार नियोजन अर गांवाई तबकै सूं सरोकार राखै। नाटक री कथावस्तु बतावै कै घर मांय सै सूं मोटो मिनख चोखा काम री सरूआत करै तो घर रो वातावरण हीज बदळ जावै अर टाबरां मांय पढाई रै साथै–साथै आछा विचार अर संस्कारां री नींव पड़ै। छोटो परिवार ही घर रै सुख रो आधार हुवै। आ हीज बात निर्मोहीजी इण अेकांकी रै मार्फत पाठकां नैं समझावण री कोशिश करी है।

अेकांकी
पाणी आडी पाळ

पात्र

1.	पीरजी	–	गांव रा पंडित।
2.	पानकी	–	पीरजी री लुगाई।
3.	भंवरियो	–	पीरजी रो बडो बेटो।
4.	लिछियो	–	पीरजी रो दूजो बेटो।
5.	मास्टरजी	–	गांव रो मास्टर

(पीरजी पंडित दिनुंगै री बेळा पाटै पर बैठ्या दरपण सांम्है देख'र माथै पर तिलक लगावै, मांय कांनी सूं पानकी बाल्टी में धोयोड़ा कपड़ा घात'र लावै अर फटका देय देय'र सुखावण लागै।)

पानकी– इंयां माथै पर तिलक लगायां सूं गिरस्थी नीं चालै ग्यान अर पंडिताई थां में कूट –कूट'र भरी हुवैली, पण आं सूं टाबर नीं पाळीजै।

पीरजी– तूं इत्ती करकस अर लपरजीभी क्यूं है ? सावळ तरियां बोलीजै कोनीं। म्हैं जद ही कोई भलै काम वास्तै त्यार होवूं कै तूं अवस ही बड़का–तड़का चालू कर देवै। बाड़ी बोलती नैं कीं लखावै ही कोनीं।

(उठ'र आपरा पोथी–पानड़ा संभाळै)

पानकी– जद तांईं थे इण पंडताई नैं छोड'र दूजै काम में नीं लागोला, म्हारा तो अै ही बड़बड़ाटा रैसी। लाय लागै थांरै आं पोथी–पानड़ा नैं। टाबर–टींगर तो भूखा मरै अर थांनैं गीता रा पाठ सूझै। अजी, भगवान कीं री को सुणै नीं।

पीरजी– भगवान नैं क्यूं कोसै ? बांनैं तो जिको ध्यावै, बो ही पुण्य रो भागी हुवै।

पानकी– होयग्या भागी। क्यूं कडू. बोलो। तनजी रो बेटो गोमदियो सगळा देवी–देवतावां नैं धोक आयो, आज तांईं उणरो काम सर्‌यो कांई ? अळगा क्यूं जावो, हेऽऽ थांरै छोटोड़ै काकै नैं ही देखलो, पांच बरसां सूं लगोलग रूणीचै उपाळा जावै, रामदेवजी वांरै माथै राजी हुया तो कोनीं ? गुमियोड़ै बेटै री आज तांईं कठै ठाह ही लागी ? आं भाटां रै भोमियां नैं देख लिया। कोरो भरम है।

पीरजी– भगवान री मूरत्यां नैं क्यूं गाळियां काढै ? कीं तो सरम राख।

पानकी– सरम तो थांनैं आणी चाइजै, जिका दस–दस टाबरां रा बाप हाये 'र भी बांर‌ै वास्तै कीं नीं करो। सगळा रोंवता रैवै म्हारै जीव नैं।

पीरजी– तो इणमें म्हारो कांई कसूर ? जण्या तो तैं है। ना जणती।

पानकी– बोलण रो फेम राखो। जीभ सूं राम–नांव रा लळका तो देवो छाडे अर कीं हाथ–पग हिलावो कै दो पईसां री मजूरी हुवै। नीं जणै टाबरिया थांरा–म्हारा हाडका खावैला, आ सोच लिया।

पीरजी– बै तो खावैला कै नीं खावैला, पण तूं म्हनैं खायां नीं धापै। आ पक्की बात है। म्हैं तो तनै आंख्यां देख्यां ही नीं सुहावूं। इण जीणै सूं तो मरणो ही आछो।

पानकी– फेर इंयां करो, आं जायोड़ां नैं तो न्हाख आवो कोई कूवै में अर आपां दोनूं गळै में जेवड़ी बांध'र कोई दरखत सूं लटक जावां, जिको पिंड ही छूटै।

पीरजी– कीं और कैवणो है तो कैयदै।

पानकी– तो और कांई करूं ? काळजो सो सीजग्यो। माइतां नैं काळो खाद्‌यो हो कै म्हनैं भणाई कोनीं अर छोटी थकी रो ही ब्याव कर दियो। नीं जणै अै इत्ता टाबर नीं खिंडता।

पीरजी– तनैं जे थारा माइत बारखड़ी सिखा देंवता या तूं भणियोड़ी हुंवती तो कांई नौ रा तेरह कर देंवती ? टाबर तो होवणा लिख्या हा जिका होंवता ईज।

पानकी– क्यूं होंवता ? अणचाया ही कांई ? सै सूं पैली बात तो आ कै माइत भण्या–गुण्या अर समझदार होंवता तो बाळपणै में म्हनैं परणांता ही कोनीं। थे ही बतावो, आपणो बो कोई ब्याव हो ? नां थै हरख कर्‌यो, ना म्हैं। करता कठै सूं, उण बगत समझ ही कोनीं ही।

पीरजी– जद आपणी ऊमर ही कांई ही, जो समझ आंवती। म्हनैं बीं बेळा दसवों लाग्यो हो अर तूं होवैली सातेक री।

पानकी– जणै हीज तो आज करमां नैं रोवां हां। भणी–गुणी होंवती तो आज ओ तसियो नीं होंवतो। टाबरां री आ लैण लागबा नीं देंवती।

पीरजी– अबै कांई करणो ?

पानकी– आनैं पाळणा है। आं पोथी–पानड़ां नैं खाक में दबायां काम को सरै नीं। पंडिताई नैं आज कुण पुछै है ? ब्याव होवण लागग्या कोरटां में अर मर्‌योड़ै रै लारै दाणां न्हाख्योड़ा म्हनैं जाबक ही दाय नीं आवै।

पीरजी– अच्छा, तूं ही बता, और कांई धंधो करूं ?

पानकी– आ थे सोचो। *(अेकाअेक बारै सूं भंवरियै अर लिछियै नैं आंवता देख'र)* अै आयग्या म्हारा लोई पीवणिया। बाळणजोगा भोर होंवतै ही बारै निकळ जावै, जिका अबै जाय'र पूठा घर में बडै। अरे, कठै मर्‌या हा दोनूं ?

लिछियो– क्यूं रोळा करै है ? निपटण नैं गया हा।

पानकी– निपटण में कांई इत्ती ताळ लागै ?

भंवरियो– लागै क्यूं नीं ! अगूणियो धोरो कनै हीज है कांई ?

पानकी– पण, इत्तो अळगो जावण री जरूरत कांई ही ? कनै कोई दूजी ठौड़ कोनीं ही ?

लिछियो– तूं क्यूं दोरी हुवै ? म्हांरै वास्तै कोई काम है तो बता नीं।

भंवरियो– काम जोगा तो आं म्हांनैं बणाया ही कोनीं। ना कदै इस्कलू में पढबा भेज्यो अर ना कोई दूजो

काम सिखायो।

पीरजी– मोटा लड़दा हुया हो। मां रै सांम्है बोलतां लाज को आवै नीं ?

पानकी– आंनैं कीं लाज–सरम होंवती तो घाटो ही क्यांरो हो ? इंयां बेला अर छड़ा नीं फिरता।

लिछियो– तो कांई कोई डाको घातां कठैई ? मजूरी अठै कोई है कोनीं। अबै ढेरीया तो कातबा सूं रैया।

पानकी– क्यूं, रोई में बूजा कोनीं बाढीजै ? खेतां में हळ नीं चला सको ?

भंवरियो– हळ तो म्हारा बाप–दादा ही को चलाया नीं, म्हे कांई चलासां ? *(पीरजी सूं)* जी'सा ! म्हानैं तो थे थांरी कूड़ी–साची पंडताई सिखा द्यो। फेर म्हे जाणां, म्हारो काम।

पानकी– परनै बळो ! पंडताई रो तो म्हारै आगै नांव ही मत लो। अेक तो आं पंडताई करनै कोई न्याल कर दियो अर अेक थे कर देसो।

भंवरियो– फेर तूं ही बता, कांई करां ?

पानकी– मां मरगी, जिकी नै बैठ्या रोवो।

पीरजी– देखो रे, अबै थे कोई छोटा नीं हो। अठै नीं तो सैर जायनै कोई मजूरी करो। हरखै चौधरी रो बेटो लाटियो अेकर सै'र गयो जिको आदमी बण'र ही पूठो आयो।

पानकी– उणरी बरोबरी तो कोई करणै वाळो ही नीं है। दिन भर कमठाणै रो काम करतो अर सिंझ्या पढवा जावतो।

पीरजी– अबै कोई दफ्तर में बडो बाबू है। पांच हजार री पगार लावै। आज दिनंगुै ही आयो है। भाणजी परणीजै। भात भरणो है।

पानकी– नागराखादां, थे भी उणसूं कीं सीखो।

भंवरियो– आज थां लोगां कैयो है तो पगड़ै ही लो।

लिछियो– *(पानकी सूं)* अबै तो बेराजी मती हो। कालै भोर में ही निकळ जासां।

पीरजी– *(चिग निकाळता)* नि.....क.....ळ.....जा.....सां ! बो लाटियो तो अठै गांव आयोड़ो है अर थानैं बठै कांई गळ्यां में गोता खावणा है ?

भंवरियो– *(कान अपड़तो)* हांऽऽऽ ! आ तो म्हे भूल ई ग्या।

लिछियो– कोई बात कोनीं। लाटियो भाई जिकै दिन सैर जासी, बीं दिन उणरै सागै ही व्हीर हो जासां।

पानकी– जित्तै फेर मौज उडावो।

भंवरियो– लिखा'र लायां हां। उडासा क्यूं नीं ?

लिछियो– पैलां कूवै माथै जाय'र न्हा'र तो आवां !

भंवरियो– तूं ही न्हा आ। म्हनैं नीं न्हावणो।

लिछियो– कांई नीं न्हावणो ? दस दिन सूं बेसी होयग्या, जाबक ही नीं न्हाया।

पीरजी– वा रे सूरवीरां ! साची कैयी है कैण–

न्हावै धोवै दाळदी, कुल्ला करै कपूत।
बिना न्हायै रोटी खावै, बै ही बेटा सूपत।।

भंवरियो– (पानकी सूं) क्यूं मां ? नीं न्हावां तो अबै टोकै तो कोनीं ?

पानकी– अबै अठै सूं उखड़ो थे दोनूं। म्हारो माथो मती खावो।

पीरजी– अेकर पूठा चल्या जावो। थांरी मां रो अदाळ जी सोरो कोनीं।

भंवरियो– चाल रे लिछिया, थोड़ी ताळ गुवाड़ कांनी हो आवां।

लिछियो– आ ठीक कैयी। चालो।

(दोनूं बारै जावै परा।)

पीरजी– *(पानकी नैं पाटै पर मूंडो फुलायां बैठी देख'र)* अबै इंयां मूंडो सुजा'र क्यूं बैठी है ?

पानकी– बैठी हूं तो थे क्यूं दोरा हुवो ?
पीरजी– म्हारो मतलब है, इंयां क्यूं बैठगी ?
पानकी– म्हारी मरजी। आ समझो कै बैठी माइतां रै जी नैं रोवूं, जिका म्हनैं बेमतळब री जणी।
पीरजी– तो इणमें बांनैं क्यूं कोसै ? बांरो कांई कसूंर ?
पानकी– *(मूंडो बिगाड़ती)* नीं ! कसूर तो म्हारो हो, जिको म्हनैं इण जूण में आवण री रळी आवै ही।
पीरजी– अरे, अठै तो बो आवै, जिकै नैं बेमाता भेजै।
पानकी– पण म्हनैं क्यूं भेजी ? म्हारै बिनां कांई म्हारै माइतां रो काम अणसर्‌यो जावै हो ?
पीरजी– आज इंयां करड़ी कीकर बोलै है ?
पानकी– कंवळाई सिकड़गी, इण खातर।
पीरजी– इंयां ऊंधी–अंवळी आडियां तो घात मती। साची बात बता।
पानकी– साची सुणबा री हिम्मत है ?
पीरजी– क्यूं ? म्हनैं इत्तो कमजोर समझ लियो कांई ?
पानकी– तो साची बात आ है कै म्हारै माइतां नैं काळो खाद्‌यो हो जिको म्हनैं अठै परणाई। थां जिस्यां ठोठ सूं पानो पड़्यो। ना थे भण्यो, ना म्हैं भणी।
पीरजी– तो इंयां बोल नीं।

(इणी बगत बारै सूं मास्टरजी आ जावै।)

मास्टरजी–राम–राम पीरजी !
पीरजी– राम–राम मास्टरजी, राम–राम। आवो पधारो। आज तो मौकैसर आया।
मास्टरजी–कांई करां ? थे टींगरां कांनी ध्यान देवो कोनीं, जद म्हनैं खुद अठै आवणो पड़्यो।
पानकी– टींगरिया फरे कोई राफड़लीला मचा दी कांई ?
मास्टरजी–राफड़लीला तो आहीज है कै ना तो बै खुद पढै अर ना ही दूजां नैं पढबा दै।
पानकी– थोड़ी दाकल दिया करो। इंयां अबार रा टाबर मानै कोनीं। ढीठ हुयोड़ा है। अेकर आंख्यां दिखासो तो फेर सुधर जासी।
पीरजी– साची, आंख्यां दिखायां बिना काम को चालै नीं।
मास्टरजी–जणै वा।
पानकी– अजी, आ तो थांरी अपणायत है कै म्हांनैं कैबा नै थे अठै तांईं आयग्या। कोई दूजो होंवतो तो आवण रो तसियो कतई नीं करतो ? बीं रै भावां कोई खाड में पड़तो, कूवै में पड़ो।
पीरजी– थे तो मास्टरजी, अबै म्हनैं पढाणो चालू कर दो।
पानकी– म्हनैं भी।
पीरजी– तूं पढ'र कांई करसी अबै ?
पानकी– भतू री काळख मिटा'र अगाड़ी चानणो करसूं।
मास्टरजी–भली कैयी। थे दोनूं पढ जासो तो समझलो थांरो पूरो खानदान पढग्यो। थांनैं पढतां देख'र थांरा टाबर आपैई नीं पढै तो म्हनैं कैया।
पानकी– म्हारो भी ओहीज साचे है। अबै म्हारै पढियां बिनां पार नीं पड़ै।
मास्टरजी–थांरै पढबा सूं अेक मोटो फायदो ओ है कै थांरी पूरी गुवाड़ी ही
पाटी–बरतो उठावण नैं त्यार हो जासी। म्हैं तो बस आहीज चावूं कै आ अलख हर गांव में जगाई जावै।
पानकी– अलख जगावण रो काम थे म्हनैं सूंप दो।
मास्टरजी–हां, आ हुयी नीं बात। लुगायां री अलख जगायोड़ी कदै बेकार नीं जावै। क्यूं पीरजी ? पाणी आडी पाळ अैहीज बांध सकै।

पीरजी– *(थूक गिटता सा'क)* हां जी, सही फरमावो।

(इण बात पर मास्टरजी रै होठां माथै मुळक छा जावै तो पानकी हरख सूं हळाबोळ हो उठै।)

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. पानकी घर–गिरस्थी चलावण सारू किणरी दरकार बतावै ?
   (अ) ज्ञान। (ब) रिपिया–पईसा।
   (स) भगवान री भक्ति। (द) लांठाई। ( )
2. आंख्यां दिखाणी रो अरथ हुवै–
   (अ) आंख्यां बताणी। (ब) इसारो करणो।
   (स) धमकाणो। (द) डरावणौ। ( )
3. 'मर्‌योड़ै रै लारै दाणा–न्हाख्योड़ा' रो मतलब हुवै–
   (अ) मृत्यु–भोज। (ब) जलम–भोज।
   (स) ब्याव रो जीमण। (द) मिंदर री परसादी। ( )
4. मास्टरजी पीरजी पंडित कनै क्यूं गया ?
   (अ) जलम–पतरी दिखावण। (ब) तबियत पूछण।
   (स) पंडितजी सूं मिलण नैं। (द) टाबरियां री शिकायत करणै नैं। ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. पीरजी पंडित पुण्य रो भागी किणनैं मानै ?
2. पीरजी अर पानकी रै पढबा सूं मास्टरजी मोटो फायदो कांई बतायो ?
3. टाबर अणपढ रहणै सूं कांई–कांई नुकसाण हुवै ?
4. परिवार नियोजन घर रै सुख रो आधार क्यूं है ? समझावो।

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. मोटो परिवार दुखी क्यूं हुवै ? समझावो।
2. पानकी रो चरित्र–चित्रण आपरै सबदां में करो।
3. बाल–ब्याव करण सूं कांई–कांई नुकसाण हुवै ? समझावो।
4. 'पीरजी पंडित अेक आस्तिक मिनख है।' उणांरै व्यवहार सूं सिद्ध करो।

लेख रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. अेकांकी रा तत्त्वां रै आधार माथै 'पाणी आडी पाळ' रो विवेचन करो।
2. 'शिक्षा अर समाज' रै बारे में आपरा विचार लिखो।

39

इकाई : चार
(रेखाचित्र)
सत्येन जोशी

लेखक–परिचै

राजस्थानी रा चावा अर लूंठा कवि, उपन्यासकार, व्यंग्यकार अर नाटककार श्री सत्येन जोशी रो जलम 2 अक्टूबर, 1934 नै जोशियां री खटकळ, जोधपुर मांय पुष्करणा ब्राह्मण परिवार में हुयो। आपरो राजस्थानी रो पैलो अैतिहासिक उपन्यास 'कंवळ पूजा' 1975 में प्रकासित अर राजस्थानी प्रचारिणी सभा, कोलकाता अर मारवाड़ी सम्मेलन मुंबई कांनी सूं पुरस्कृत हुयो। 'हंस करै निगराणी' काव्य संग्रै 1977 में प्रकासित हुयो। 'रोवणिया दा'सा रेखाचित्र संग्रै 1983 में प्रकासित हुयो अर उण माथै राजस्थानी साहित्य अकादमी, उदयपुर रो 'पृथ्वीराज राठोड़' पुरस्कार मिल्यो। 'मुगती बंधण' काव्य नाटक 1983 में प्रकासित अर राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर कांनी सूं 'श्रेष्ठ राजस्थानी पद्य पुरस्कार' सूं पुरस्कृत। 1997 में प्रकासित आपरै काव्य–सग्रैं 'फेर ऊगैला सूरज' नैं मारवाड़ी सम्मेलन, मुंबई रै 'सर्वोतम साहित्य पुरस्कार' अर राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रै सिरै 'सूर्यमल्ल मीसण पुरस्कार' रै रूप में दोवड़ो सम्मान मिल्यो। 'बंतळ' नावं सूं गजल संगै भी प्रकासित। आप राजस्थानी गजल रा आगीवाण अर सिरैमोर गजलकार हा। आपरै जीवण रै छेड़हला दिनां में 'जूण विहूण' राजस्थानी रौ पैलो आंचलिक उपन्यास प्रकासित हुयो, जिको आपरी कलम री कमाई रौ अेक महताऊ दस्तावेज है। आपरी सगळी पोथियां राजस्थानी साहित्य रा ठावा अैनांण है।

पाठ–परिचै

आपां रै आखती–पाखती घणा ई अैड़ा मिनख मिल जावैला जिकै 'लाल बुझाकड़' बण्या रेवै। जिको मिनख जीवण रै अनुभव सूं बाते कीं जांणै वो कदैई नीं केवै के वो सह कीं जाणै वो तो कैया करै कै म्हैं नाचीज, कांई कोनी जांणू, पण जिण मिनख नैं किणी भांत रो पुखताऊ ग्यान नीं हुवै वो अपणै आप नैं सह कीं जाणण वाळो समझै। इणी भांत रा मिनखां मांय सूं प्रतीक रै रूप में किणी अेक आदमी नैं आधार बणाय'र उणरो असली नांव उजागर नीं कर'र लखणा मुजब किणी ओपमा रै उपनाम सूं ओळखाय'र उणरो जीवतो–जागतो चितरांम खेंच्यो है सत्येन जोशी। सत्येन जोशी रै 'रोवणिया दा'सा' रेखाचित्र सग्रैं सूं लियै थकै इण व्यंग्य प्रधान रेखाचित्र मांय 'समझ रा झाड़' री कद काठी रो चितराम नीं व्हैय'र वांरै सुभाव अर कथणी–करणी रो चितराम है, वांरी मनगत अर–हथौटी रो सांतरो चितराम सामाजिक जथारथ रै पड़दै माथै उकेरीज्यो है।

रेखाचित्र
समझ रा झाड़

नांव सुणनै चमकौ मती सा, केई बातां अैड़ी ज्यांनै बिनां की बैस–दलील मान लेवणी चाइजै अर साचांणी मानणी भी पड़ै है। ज्यूं के आप मान चुका हो के आपरो खुदरो नांव फलाणचंद के 'मल' है, आपरो

खुदरो नांव ओ ई नीं व्हैर फेरूं कीं व्हेतौ तो कांई फरक पड़तौ ? आप भी आ मान लिरावो सा के 'समझ रा झाड़' नांव रा अेक जीव जलमिया। वां में कित्ती समझ ही ईं रौ अंदाज तो ई बात सूं व्है जावैला के औ नांव वांरै खुद रै धरियोड़ौ नीं हो, ज्यूंके आज ढेबरियौ आपरौ नांव बदळ'र अशोक कुमार धर लियौ अर गोबूड़ी कैवै के म्हनैं मीना कुमारी नांव सूं बतळावौ।

'समझ रा झाड़' दरअसल जलम सूं ई समझदार है अर यां दिनां तो परदेसां में भी अेड़ी बिमारियां बापरगी है के आठ दस बरस रा टाबरां रौ दिमाग बडेरां जैड़ौ ई व्है जावै। पण आ कैड़ी बात के कम उमर में घणी समझ रौ व्हैणौ भी बिमारी गिणीजै ? सोळियै दूध रौ सीरौ बणियौ। जीमण वाळा नीत सूं लाचार। घणौ सारौ सीरौ पुरसा लेवता। जीमण परायौ हो पण पेट तो घर रौ ई हो। इण सारू जित्ता खूणा खोचरा पटे में व्हैता वांनैं ठूंस –ठूंस नैं भर लिया। फेरूं भी घणौ सारौ सीरौ अैंठौ पड़ियौ रेयौ। न्याय रा पंचां रै कांना आ बात पूगी तो वै सीरौ चाखियौ! घणौ सवाद हो पण जाणै लोग क्यूं अैंठौ छोड जावता। न्यात रौ जीमण करणियौ भी बिचारौ दुखी व्हियौ कै इता रिपिया खरच कर, वो बढ़िया जिनस त्यार कराई पण लोग है के अठैं नांखता ई जावै। सेवट पंच ईं बात माथै विचार करण लागा पण वांरी समझ तो देवाळौ काढ़ दियौ। वै लोगां सूं पूछताछ भी करी पण वां रै पडूतरां सूं पंचां नै संतोख नीं व्हियौ। जद आ पूछताछ चालती ही तद औ बालक भी डकारां खावतौ पेट माथै हाथ फेरतौ पंचां सांमै पूगौ, वांनैं दुखी देख'र ई नै दया आयगी। वो पूछियौ–

कांई सा ? आपरी चिंता रौ कांई कारण है ?

अेक पंच बड़कियौ, ''तूं बडो 'समझ रो झाड़' है अठै बूढा–बडेरां रै भी समझ में नीं आई अर तूं लपका कर रैयौ है, छोटै मूंडै मोटी बात ?''

बालक बोल्यौ– हूं तो उमर में छोटौ ई सा, पण बातां मोटी किया करूं।

हमै अेक दूजौ डोकरौ तड़कियौ– फेरूं सांमी बोलै।

अबै बालक बोल्यौ– देखो सा, के आपरी अक्कल में पड़ग्या भाटा, अेक छोटीसीक बात रौ फसै लौ नीं कर सकौ। बड़ा भूसाकड़ बणियोड़ा फिरौ के म्हां न्यात रा पंच हां, कांई फैसला करता व्हौला न्यात रा ? अबै अेक तीजौ पंच वीं बालक नै पुटावतौ व्है ज्यूं बोलियौ– हां, बेटा ! आज तो वाकैई माजनै में धूड़ पड़गी। बोल, तू ई बोल के न्यात इत्तौ अैंठौ क्यूं नांख रैयी है ?

हमै वो मुळकियौ।

–देखौ सा, आ है न्यात–गंगा! अर गंगा आपां सारू कैड़ी पवीतर अर पूजनीक है ? सो न्यात–गंगा सत्त रौ दांणौ तो चुग्गी अर असत्त रौ दांणौ छोडगी !

औ पडूतर सुण सगैं पंच सुट्ट व्हैग्या। छोरौ कैड़ी कोवरियै यूं बात काढ लायौ है ? बापड़ै जिजमान रै तो मूंडै रौ थूक सुकग्यौ। पगै लागणौ कर वो बालक उठै सूं व्हीर व्हैगौ। वीं दिन सूं वीं नैं सब 'समझ रौ झाड़' कैयनै ई बतलावै।

'समझ रै झाड़' री जवानी री बातां तो छोडौ, क्यूंके वै तो जलम तांई सौ बरसां रौ माजनौ लेय'र आया। वां रै पाडोस में अेक मजदूर नेता रैवै। वै अेक दिन बोलिया– काकोसा ! आज सैर में हड़ताल करावणी है। बाणिया आपनैं ओळखै सो आप साथै चालनै दुकानां तो बंद करा दिरावौ।

काकोसा बोलिया– हां चाल, अबार दुकानां बंद करादां। खैर दुकानां तो बंद व्ही ज्यूं ई व्ही पण 'समझ रा झाड़' औ जस खुद रै माथै ई ओढियौ। जीवण भर वै दूजां सूं नीं तो कीं चायौ नीं मांग्यौ। वै तो बस पड़ियौ जस लूटणौ चावता। सो औ जस भी वै लूटियौ। हड़ताल व्हैगी।। जुलसौ निकळियौ, 'समझ रा झाड़' जुलसै में चौसरां अर गुलालां सूं भरीजग्या। टेसण पूग'र जुलसौ खतम व्हियौ अर उठै सभा करणी ही। अबै सवाल औ पैदा व्हियौ के सभापति किणनैं बणायौ जावै ? जुलसै में 'समझ रा झाड़' रै अलावा कोई बुजुर्ग हो ई कोनी। भतीजौ काका नैं फेरूं जस लूटण रौ मौकौ दियौ। सभा सरू व्ही अर अेक दो मिनख भासण भी दिया। भासण कांई हो, औ तो झाड़ां रै पल्लै पड़ियौ कोनी पण वां रै आ समझ में जरूर आयगी के भासण तो वां नैं भी देवणौ ई पड़ैला अर अठै आय गाडी अड़ जावैला अर सारी थोथ चवड़ै आ जासी। सेवट वै समझ सूं काम लियौ। भतीजै नैं बुलाय'र वीं नैं कान में कैयौ के थारी सभा तो लंबी चालसी, म्हारै काम घणा है सो म्हैं हमें जावणी चावूं। भतीजौ बोल्यौ– जावौ परा खैर, पण आपनैं भासण देवणौ जरूरी है।

–तो म्हैं पैला देदूं भासण ?

–हां, पैला देदो।

भासण देवणै रौ हुंकारौ तो भर लियौ पण फंसग्या। पण वै 'समझ रा झाड़' हा, ई वास्तै समझ तो ऊपरातळी झड़ती। वै ऊभा व्हैय'र माइक कनै जाय'र बोल्या– म्हारै थोड़ौ जरूरी काम है, नींतर म्हैं फेरूं बेठतौ। आप लोग बोत चोखा भासण दिया। म्हनैं ई विसै में जिकी बातां कैवणी है वै म्हारै भतीजै नैं समझा दी है अर वो आपनैं सैंग खुलासै सूं समझावैला।

आ कैय'र वै भतीजे री कमर ठोकी अर खरां–खरां समझ रौ रुतबौ जमाय घरै आयग्या।

किणी मंत्री, अफसर, इत्याद सूं ओळख–पैचांण व्है चावै नीं, वीं रौ नांव आतां ई वै झट बोलै– वीं सूं तो म्हारा पुराणा खाता है। अर छोरा मसखरी करण री गरज सूं वांनैं काम बतायदै। इत्तौ ई नीं वै टैक्सी के इक्कौ करनै वां नैं वीं मंत्री के अफसर कनैं ले जावै। 'समझ रा झाड़' वीं सांमै अैड़ौ बुजर्गी सूं अर विस्वास सूं बोलै के बापड़ै नै हरेक बात रो हूंकारौ भरणो ई पड़ै। छोरा जाणै के औ सब कौतक है, पण वां नैं ईं कौतक में ई आणंद आवै अर झाड़ आपरै जस री बही में अेक पानड़ी फेरूं अटका लेवै।

छोरा वां सूं मसखरियां कर खूब रबड़ी पीवै। वां रै कीं सवालां अर पडूतरां रा कीं नमूना पेस है :–

छोरा– सैर में समझदार कुण ?

झाड़– अेक तो म्हैं अर दूजौ जैनारांण।

(इत्ते में ई भतीजौ थोड़ौ खैंकारो करै) हां बैम थारौ भी करै।

छोरा– अमरीका वाळा चांद माथै पूगग्या है।

झाड़– कूड़ा है साळा, वां रा बाप दादा ई कोनी पूग सकै। जावता तो म्हनैं ले'र जावता। म्हैं वां नैं चार कागद लिख्या के म्हनैं साथै ले जावौ तो भरोसौ करूं नींतर कूड़ा हो साळां !

छोरा– बॉबी फिशर जीतग्यो है शतरंज में।

झाड़– हां, म्हांसूं कीं चालां पूछी ही।

ईं भांत वै हरेक बात रौ जस लेवै वां री भोळप कैवां के समझ ? अेकर अेक जणौ आय'र बोल्यौ– काका, थांरै तो फाइनैंस मिनिस्टिर सूं बेलीपौ है।

–बेलीपौ कैंरो रे, म्हारै हाथं में हुसियार व्हियौ है।

–म्हारै अेक काम है ?

–बोल ! अेक कांई दस व्है तो करां दूं।

–लाटरी रा लंबर वो चावै जिणनैं दिरा सकै।

–म्हैं तो सुणी के मसीन सूं काढै।

–नीं काका ! वै चावै जिण नै दिरा सकै।

–अबार है अठै आयोड़ौ ?

–हां काका, सरकट हाउस में है।

–तो ल्याव इक्कौ, अबार चालां, थारौ काम व्है जासी। अर साचांणी काका उठै जायर मंत्री नैं कैयौ– हमकै ईं रौ लंबर काढ दीजै। गरीब है बापड़ो, आसीस देवैला।

पाछौ आवतौ वो गरीब काका नैं गिलास भरनै रबड़ी पाई। वां सूं सुफारसां करावणिया सैं जांणै के सैं की कौतक है पण वै काका नैं ईं मिस ई खवावै–पावै। लोग वां री भोळप रौ मजौ लूटै अर वै खुद आपरी समझ अर जस रौ परताप समझै। वां रौ औ ई मोटौ गुण है के वै हरेक रै काम आवै। नटै किणी नै नीं। नटै जकौ वांनै नट सकै, पण नटै कोनीं।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. आपां रै आखती–पाखती घणा ई अड़ा मिनख मिळ जावैला जिकै– बण्यां रेवै–

(अ) लाट साब। (ब) खुदा।

(स) लाल बुझाकड़। (द) रईस। ( )

2. 'सत्त रौ दांणो तो चुगगी अर असत्त रौ दांणो छोडगी।' कुण–

(अ) लाछां। (ब) मोली बाई।

(स) रोवणियां दा'सा। (द) न्यात–गंगा। ( )

3. लाल बूझाकड़ रौ मतळब है–

(अ) मूरख। (ब) ठोठ, पण बणावटी ग्यांनी।

(स) परम ग्यांनी। (द) कुचमादी। ( )

4. हड़ताळ सारू दुकानां बंद करावण रौ झूठो जस लियो–

(अ) न्यात रा पंचां। (ब) भतीजै।

(स) समझ रा झाड़। (द) ता तीजै। ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1.'समझ रा झाड़' रेखाचित्र बांचती वेळां आपनैं कुण याद आवै ?

2. समझ रा झाड़ जस लूटण सारू कांई तरकीब अपणावता ?

3. अेक सभा मांय भासण देवण सारू फंसिया 'समझ रा झाड़' कांई तरकीब सूं आपरो कांण सार्‌यो ?

4. समझ रा झाड़ सूं मसखरियां कर'र रबड़ी कुण पीवता ?

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. इण रेखाचित्र मांय 'लाल बुझाकड़' कैताणै रौ प्रयोग कठै हुयो है ?

2. 'समझ रा झाड़' सुभाव सूं कैड़ा'क हा ? अेक दो सबदां मांय पडूत्तर देवो।

3. 'समझ रा झाड़' हर किणी री सिफारस हर किणी नै क्यूं कर देंवता ?

4. लोग वां री भोळप रौ मजो कीकर लूटता ?

लेख रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. इण रेखाचित्र मांय समायोड़ै व्यंग्य नै भलीभांत उजागर करो।

2. इण मिनख रौ नांव 'समझ रा झाड़' कदै अर कीकर पड़्यो ?

3. 'समझ रा झाड़' रौ खाको आपरै सबदां मांय ऊकेरो।

4. इण रेखाचित्र सूं आपानैं कांई प्रेरणा मिलै ? खुलासैवार समझावो।

5. 'समझ रा झाड़' री भाषा–शैली री विशेषतावां उजागर करो।

अतुल कनक

लेखक–परिचै

अतुल कनक रो पूरो नांव अतुल कुमार जैन है। आपरो जलम 16 फरवरी, 1967 नैं रामगंज मंडी, जिला कोटा में हुयो। आप हिंदी, इतिहास अर अंग्रेजी में अेम.एम. कर्योड़ा है। अतुल कनक हिंदी, राजस्थानी में कविता, कहाणी, व्यंग्य, रिपोर्ताज आद भी लिखै। आपरी प्रकाशित पोथ्यां में 'पूर्वा हिंदी नव गीत संग्रै', 'तुभ्यम् नमोस्तु' हिंदी नाटक अर 'आओ बातां करां' राजस्थानी काव्य–संग्रै सामळ है। आप जयपुर दूरदर्शन सारू कीं धारावाहिक अर वृत्तचित्र रो लेखन भी कर्यो है। अतुल कनक देश–प्रदेश री केई संस्थावां सूं सम्मानित अर पुरस्कृत रचनाकार है।

पाठ–परिचै

अरावळी पर्वतमाळा का सबसूं ऊँचा डूंगर 'गुरु शिखर' के सांमै पूग्यां वै लेखक ऊँ सूं बतियाबा को माहे न्हं तज सक्यो। गुरु शिखर तो कांई क्हैतो, लेखक ने ही आपणा मन की बात कहैबा के बहाने आपणा दौर की विसंगतियां पे अफसोस तो जतायो छै पण यो विश्वास भी बणायो राख्यो छै के जद तांई धर्म अर धीरज की गुरुता ई वहन करवा हाळा मनख्यां की प्रेरणा जीवती छै, मनख जमारो या आस राख सकै छै के आखिरी जीत सच्चाई की ही होगी।

रेखाचित्र

गुरु शिखर सूं

क्यूं रे भाई गुरु शिखर ! कांई हालचाल छै ? मनख तो तू कोय न्ह, पंण काळ का थपेड़ा तो थारा भी डीळ पे पड़ै ही छै। यो थांरो गाढोपण छै, के दत्तात्रेय जी का तप को पुण्य प्रताप, कै कदी भी ई काळ कीं दाळ थांरे सामै न्ह गळ पाई। न्हॅ तो अतना बरसां सूं माथो ऊंचो कर'र जीवतो रहबो भी कोय आसान काम कोय न्हॅ। जमीन सूं सैकड़ूं फुट ऊपर उठतां सतां थांनै कांई–कांई देख्यो होवैगो अर कांई–कांई बरदास्त कर्यो होवैगो। कुण जाणै?

मनख्यां के बीचे रहै'र भी ऊपर की आड़ी बदतो जाबो आसान काम कोय न्हॅ। पण ज्यां में गुरुता होवे छै, वे आसान काम करै भी कद छै ? थांरो नांव अश्यां ही तो गुरु शिखर न्हं पड्यो। नतके थांरा दरसाव केई आता मनख्यान् को जमघट साबित करे छै के मनखजमारो भल्यां ही पतन की गैल पे चालतो दीखै, पण मनख्यान् में ई ऊंचाई के बेई सिरधा अबार भी जीवती छै। या सिरधा ही मनख्यॉ ई ओछो न्हॅ होबा देगी। यो ही ई बात को भी प्रमाण छै के सगळी आशंकान् के होतां–सतां भी बेहतरी बेई आस बणाई राखी जा सके छै। जे मनख हाफ्तां–सतां भी थारै नीड़ै आ'र दुनिया को दरसाव करबो चाह्वै छे, वे मनख कश्या भी दीखता होवे–पण ऊंचाई के बेई सिरधा अर आकर्षण वां में अबार भी छै अर यो ही सत् भाव सगळा

जमारा नें पतन की खाई में गिरबा सूं बचावैगो। जठी भगती छै, उठी विश्वास छै। जठी विश्वास छै, उठी अच्छाई छै अर जठी अच्छाई छै–ऊँ ही ठाम पे म्हां सगळा की आस छै। ईं आस का परचम ई तू अश्याँ ही थाम्याँ राखजे गुरुशिखर।

म्हनै सुणी छै के अरावळी का ये डूंगर दुनिया का सबसूं पुराणा डूंगरान में सूं अेक छै। कतनी उमर होगी थांरी ? पंण छोड़, उमर को यो गणित जाण'र म्हूं करूंगो भी कांई ? म्हूं तो बस या ही सोचूं छूं के अतना बरसान में थनै ई दुनिया का कश्या–कश्या रंग देख्या होवैला ? जद जिनगाणी नें ईं धरती पे अंगड़ाई ली होवैगी तो तू मुळक्यो होवैगो। फेर थनै ही आदमजात की छाती पे मूंग छळता परमाणु बम भी देख्या होवेगा। शांति का नांव पे जेल में बूज द्या ग्या मनख्यां का लत्ता उतार'र खिलखिलाबा को शक्ति–प्रदर्शन तो थंनै देख्यो ही छै, पण थंनै तो डील का लत्ता उतार'र शांति की खोज में म्हैला नूं सूं खड़ जाबा हाळो राजकुमार महावीर भी देख्यो होवेगो। यां दनां, कतनो आंतरो देखतो होवेगो तू जमारा की चाल में ?

म्हूँ जाणूँ छूँ के जामण धरती को अर थारो हियो भाटा को अश्यान ही न्हॅ होयो। कळजुग में जीबो छे तो हिया ई भाटा को करयो ही पड़ै छै। कळजुग ही कांई, हर जुग में हिवड़ो भाटो न्हॅ होवे तो जीबो मुश्किल हो ज्यावे। राज का सुख की तिकड़म भिड़ातां–सतां राज का असली वारिस ई चौदह बरस को बनवास मांगबा को जुलम बरदास्त करबो भी आसान न्हॅ होवे अर राज की चौसर पे हारग्या भाई सगान् ई अपमानित करबा बेई घर की बींदणीं को चीर–हरण करबा को पाप सह्बो भी। जीं ठांव पे तू छै, ऊँ ठांव सूं दुनियां ई देखबो सबका बस की बात कोय न्हॅ। हियो भाटो न्हॅ होतो तो तू भी अबार शरम की मार्यां गळ–गळ'र दम तोड़ देतो। पॅण सत् की डोर थाम्या राखबा बेई हिवड़ा में गाठोपॅण रखाणबो भी तो जरूरी छै। गंगापुत्र होवे के गुरुशिखर होवे–ओळयूं दोळयूं का मनख्यान् सूं बेसी कद रखाणबा को यो दंड तो भुगतणो ही पड़ै छै। ई जमारा में कोय ई गुरुता अश्यॉ ही तो न्हॅ मिल ज्यावै।

रे गुरुशिखर! थारी छत्रछाया में दत्तात्रेय जी ने तपस्या करी छै। म्हॅनै सुणी छै के जे मंत्र–तंत्र भगवान शिव का शाप सूं कील ग्या छा, दत्तात्रेय जी ने कठन तप कर'र वां मंत्रान् अर त़ंत्रान् के तांई ई शाप सूं मुक्त करायो छै। वे तो अब ई दुनिया में कोय न्हॅ। पण वां का माहात्मय सूं थारो तो कदी संवाद होतो होवेगो। वे अबकी बेर अश्यो कोय मौको आवे तो वां सू पूछने के कांई अश्यो कोय मंत्र–तंत्र कोय न्हॅ, जे ई दुनिया के तांई स्वारथ की गैल सूं हटा'र परमारथ बेई चालबो सीखा सके ? बगुलामुखी मंत्र को जाप बैरी को शमन करबा हाळो मान्यो जावे छै, पॅण आपणै ही भीतर बस्या आपण ही बैरियॉ की आड़ी कुण को ध्यान छै ? कांई वां को भी शमन हो सके छै ?

तू भी सोचतो होवेगो के तड़कै तड़कै यो कश्यो झक्की आ–र ऊबो होग्यो, थारै कनै ? पॅण कांई करूं ? थॅ सूं न्हॅ क्हूं तो कुण सूं क्हूं ? म्हॉकी दुनिया में तो जा लोगान् ई देखबा बेई गर्दन ऊँची करनी पड़ै छै, वां लोगान् ई म्हारा जश्या मामूली लेखक की बात सुणबा की फुर्सत ही कोय न्हॅ। आज ईं ठांव

पे उद्घाटन तो काल ऊँ ठांव पे भाषण। वां में कोय की बात सुणबा बेई ठिठकबा की थरता ही होती तो फेर यो रोणो ही कॉय में होतो ?

म्हूँ जाणूं छू के तू सदियाँ सूं अश्यॉ ही ऊब्यो होबो छै अर सदियाँ तांई अश्यॉ ही उब्यो र्‌हैगो। थारी थरता को लाभ ले'र म्हॅने तो म्हारी भड़ास खाड़ ली, अब तू कांई कर सकै तो करजे गुरुशिखर !

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. सगळा जमारा नै पतन री खाई में गिरबा सूं कुण बचा सकैला ?
   (अ) सत्भाव। (ब) विश्वास।
   (स) भगवान। (द) संत–महात्मा। ( )
2. गुरु शिखर री महिमा लेखक कांई बताई है
   (अ) गुरुता। (ब) महानता।
   (स) अहमं। (द) ऊंचाई। ( )
3. डील का लत्ता उतार'र शांति की खोज में म्हैल छोड़'र कुण निकळ्यो हो ?
   (अ) विवेकानन्द। (ब) महावीर स्वामी।
   (स) शंकराचार्य। (द) तीर्थंकर पार्श्वनाथ। ( )
4. लेखक री दीठ सूं आदम जात की छाती पे मूंग कुण दळता आ रैया है ?
   (अ) युद्ध। (ब) परमाणु बम।
   (स) शक्ति प्रदर्शन। (द) सगळां देसां रा स्वारथ । ( )
5. गुरु शिखर री छत्र छाया में कुण कठन तपस्या करी ही?
   (अ) महादेव। (ब) दत्तात्रेय।
   (स) मत्तात्रेय। (द) गोतम बुद्ध। ( )

साव छोटै पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'गुरु शिखर सूं' कुण–सी पर्वतमाळा री सै सूं ऊंची चोटी है ?
2. 'गुरु शिखर सूं' चितराम किण शैली में लिख्योड़ो है ?
3. 'गुरु शिखर' पे कुण कठन तपस्या करी ही ?
4. भगवान महावीर किण धरम रा है ? वांरी खांस शिक्षा कांई है ?
5. गंगापुत्र री कहाणी किण महाकाव्य री है ?
6. आज ईं ठांव पे उद्घाटन तो काल ऊ ठाव पे भाषण। लेखक रो इसारो कैड़ा मिनखां कांनी है ?

छोटै पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'पण आपणै ही भीतर बस्या आपणा ही बेरियां की आड़ी कुण को ध्यान छै ?' लेखक इण मिस कांई कैवणी चावै, समझा'र लिखो।

2. 'गुरु शिखर सूं' चितराम रो मूळ संदेस कांई है।

3. 'लेखक' गुरु शिखर रो हियो भाटै जैड़ो क्यू बतायो है ?

4. 'जठी विश्वास छै, उठी अच्छाई छै अर जठी अच्छाई छै ऊ ही ठाम पे म्हां सगळा री आस छै।' इण बात नैं खुलासै सूं समझावो।

लेख रूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'चौदह बरस को बनवास मांगबा को जुलम बरदास्त करबो भी आसान न्है होवै।' इण पंक्ति री घटना री सप्रसंग चरचा करो।

2. चौसर पे हारग्या भाई सगान् ई अपमानित करबा बेई घर री बींदणीं को चीर–हरण करबा को पाप सह्बो भी।' इण लैण सूं आपनै महाभारत री किसी घटना याद आवै, उणरी सप्रसंग व्याख्या करो।

3. 'गुरु शिखर सूं' चितराम में लेखक रा मूळ भाव खुलासैवार समझावो।

4. हेठै लिख्योड़ा मुहावरां रो अरथ बतावता थकां आपरै सबदा में वाक्य लिखो।

दाळ गळना, दुनिया रो रंग देखणो, छाती माथै मूंग दळणो, भाटै रो हियो, हिवड़ा में गाठोपण राखणो।

48

इकाई : पाँच

(निबंध)

डॉ. गोवर्द्धन शर्मा

लेखक–परिचै

राजस्थानी, हिंदी अर गुजराती भाषा रा ठावा आलोचक, समीक्षक शोध लेखक अर भाषाविद। प्राचीन अर मध्यकालीन साहित्य रा मर्मज्ञ अर निष्णात विद्वान, गुजराती अर राजस्थानी संस्कृति रै बिचाळै अेक सेतु पुरुष। लोक–साहित्य अर लोक–संस्कृति रा आगीवाण अन्वेषक। साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, गुजरात हिंदी साहित्य अकादमी अर राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रै निर्णायक मंडळ में घण मानीता सदस्य रै रूप में घणा बरसां सूं सांवठी सेवा कर रैया है। आप अलेखूं बार घण महताऊ पुरस्कारां अर भांत–भांत रै गुमेज जोग सम्मानां सूं नवाज्या जाय चुक्या है। संप्रति : सेवानिवृत्त प्रोफेसर, गांधीनगर, गुजरात।

पाठ–परिचै

राजस्थानी रा चावा–ठावा अर विद्वान साहित्यकार डॉ. गोवर्द्धन शर्मा रो ओ निबंध स्व. चन्द्रसिंह बिरकाळी द्वारा संकलित अर संपादित पोथी 'राजस्थानी निबंध संग्रह' सूं अठै लिरीज्यो है। जदपि इण पोथी नैं देखतां ओ निबंध विस्तार में घणो है तदापि साहित्य पढणिया विद्यार्थियां सारू साहित्य री ओळखांण जरूरी है। भलांई संस्कृत साहित्य पढो अर भलांई हिंदी कै राजस्थानी साहित्य पढो, साहित्य रै सरूप री पिछाण तो घणी जरूरी है। डॉ. शर्मा इण निबंध मांय साहित्य री सांगोपांग ओळखांण कराई है। साथै ई साहित्य रै तत्त्वां अर साहित्य रा भेदोपभेदां रो खुलासो करता थकां डॉ. गोवर्द्धनजी इण निबंध मांय मानव समाज मांय साहित्य री घण महताऊ भूमिका रो सांतरो अर सरावण जोग विरोळ कर्‌यो है।

निबंध

साहित्य अर उण रा भेद

अेक सवाल उठै––साहित्य कांई है ? उणरो कांई अरथ है ? समाज में उणरी कांई जरूरत ? साहित्य पढियां सूं पेट भरीजै नीं। भूखो तो धापियां पतीजै। कविता–कहाणी, नाटक–ख्याल, ख्यात–वात कांई काम रा ? अणकमाऊ रै मन भावै। कमाऊ पूत नैं तो मरण री फुरसत कोयनीं। कांई करै वो इण साहित्य रो। जमानो बोदो। रुजगार चलै नीं। साहित्य खोटी बीमारी, इण विध लोग संका करै।

बात वाजबी। पण अेक गंवार नैं अेक हीरो लाधो। वो उणमें कांई समझै? मन में घणो हरख हुयो 'नेनिया तांई रमत लाधी।' हीरै री कीमत तो जौहरी जाणै। आ बात साहित्य तांई सांची। आज रो जमानो खोटो। आपां शरीर तांई जतन करां। कैवां– 'पैलो सुख निरोगी काया।' टका घणा खरचां। सियाळै बंधेज बांधां। वैदजी री सरण जावां, देवता मनावां। पण शरीर सूं बतो मन अर दिमाग। दिमाग सारू कीं करां नीं। पेट नैं जीमण द्यां पण पेट नैं खुराक नीं द्यां। आज रा जुग रो ओ उलटो वायरो। आ बात उचित कोनी।

आज रै दिन साहित्य सबसूं बतो। इणरी सबसूं ज्यादा जरूरत। भौतिकवाद रो भूत आज जगत रै दोळो हुग्यो। अणु बम अर हाइड्रोजन बम। मिनख मद में आंधो। भरत सूं आपो भूलग्यो। विज्ञान रो मालक बणतो सेवक बणग्यो। मौत रै मूडैं जावै। विनास रा बीज बोवै। आज मरजाद टूटगी। बावळो मानखो दौड़ै है। आपत समझै नीं। अेक सूं अेक भयंकर साधन संजोवै। मारकाट मचावै। इण विनास वेळा में साहित्य सबसूं जरूरी। मिनखपणै री रक्षा तो साहित्य ही करसी। जद जगत में मिनखपणै रो काळ पड़ै लोग आपो गमाय कूड़ी बातां लारै दौड़ै। झूठी बातां सिरमारै बणै। सांची लाजै, तो साहित्य म्हांनै सांचो मारग बतावै। ठोकरां सूं बचावै। काम नैं बणावै। मानखां री मरजाद राखै। इण वास्तै आज रै जुग में साहित्य सबसूं जरूरी।

कैवै कै 'ओ मिनख जमारो बार–बार नीं मिलै। ' इणरो कारण आईंज कै मानवी सगळा प्राणियां सूं सिरै। हाथी सरीसा बलवान नै ना'र सरीसा भयंकर जीवां नैं चावै ज्यूं नचावै। आभै में पंखेरू दांई उडै। समदरां नैं पार करै। कुदरत नैं बस में करै। इण सब रो कारण कांई ? मानव ओ सगळो करतब आपरी चतुराई सूं कीनो। मेहनत सूं कीनो। ताकत सूं नीं। ताकत रो सवाल उठै कोनी। ताकत ही दुनिया में सगैं होती तो आज घोड़ै माथै मिनख नही ं मिनख माथै घोड़ो सवारी करतो। पण मिनख रो ग्यानं उणनैं सबसूं सिरमोड़ बणायो। जुगां सूं मिनख ग्यानं री खाजे में खपियो, पीढियां तर पीढियां कोसीस करी। कामयाब हुयो। इण ग्यानं रो प्रपूरब भंडार, अनुभव रो आगार अर जमानै री झंकार– इणरो नाम साहित्य। मानखै रै सुख–दुख री का'णी, हार–जीत, विगत अर उन्नति रो इतिहास– इणरो नाम साहित्य। अच्छाई रो घर, फूटरपणै रो माप नै मनाप रो दरपण, इणरो नाम साहित्य। भगवानां रो चितराम, जीवण रो अरथ नै धरम रो मूळ– इणरो नाम साहित्य। जगत रो सार, तरक्की रो कारण नै धरती नैं सरग बणावण वाळो– इणरो नाम साहित्य। इण धरती माथै जो भी चोखो, सुंदर अर हितकारी– उणरो नाम साहित्य।

साहित्य रो क्षेत्र घणो विसाल। इणरो ओरण घणो लांबो, घड़ो चौड़ो। मां री ममता अर बेनड़ रो लाड। सती रो तेज अर वीर रो दरप। मिरगानैणी री लाज अर कंत रो मुळकणो। भावज री सुरंगी चूंदड़ी अर नणद री रोळ। बेटी री रमत अर वीरां री राखी। जामी रा सपना अर धण रो फरज। अै सैंग साहित्य रै ओरण रा रूंख। करसा रो पसेवो अर बोड़ियां री मेहनत। बागां रा रंगरंगीला फूल अर खेजड़ियां रा खोखा। बाजरी रा पूंक अर काचर बोर मतीरा। सेठां रा मै'ल अर रैबारियां रा झूंपा। नयी नवेली बरखा अर मुळकती सरद। तपाती, हंफाती, तिसा मारती लू अर कंपाती, धूजाती सिंया मारती डांफर। ऊंचा–ऊंचा भाखर अर मोटा–मोटा धोरा। आसोजां रो बळबळतो तावड़ो अर पूनम री धोळी बुगलै री पांख ज्यूं चांदणी। अै सैंग साहित्य रै ओरण रा रूंख। मूंछ री मरोड़ अर कळु री आण सारू पग–पग माथा पछटण वाळी वीर भावना, आपणी धरती री मरजाद अर प्रेम सारू पग–पग त्याग करण वाळी धिरणां। भला अर चोखा मिनखां नैं देख अर आवण वाळो लाड– अै सगैं साहित्य रै क्षेत्र में गिणीजै। साहित्य रो देस अक अनोखो देस । इण देस री वेळा में लोही दौडै, भाठां में प्राण बसै, पंखेरू अर जिनावर मिनखां री बोली बोलै, सुरंगा फूल मुळकै अर किरत्यां रोवै। इण साहित्य री अपरंपार मै'मा।

लागे साहित्य नैं कैवै– ओ सत्यं, शिवं, सुंदरं है। इणरो कांई अरथ? इणरी कोई विगत ? आ घणी

जरूरी बात है। कांई साहित्य में सगैं बातां सांची हुवै ? कांई उणमें लिख्योड़ी हुवै कै रामूड़ै रै खेत में कित्ती नेपा हुई? साहित्य कांई सदैई जैड़ी देखै वैड़ी ईज कैवै ? पछै उणमें कल्पना क्यूं ? अै सैंग सवाल जचै तो है। साहित्य सैदई सांची बात कैवै। इणमें कोई मीन न मेख। पण ओ सांच नयै ढंग रो है। साहित्य नीं बतावै कै रामूड़ै नैं घणी नेपा देखनै घणो हरख हुयो ? साहित्य मिनख स्वभाव री सच्चाई बतावै। मिनखां रो रंग–ढंग बदळै पण सुभाव नीं बदळै। जदै ईज तो विलायत रा नाटककार सेक्सपीयर रा नाटक जुगां सूं सैंग रसिकां नैं सुहावै, काळीदास री कविता चोखी लागै अर चेखब री का'णियां मन में मोद जगावै।

'शिव' रो अरथ भलांई करण वाळो हुवै है। साहित्य कदै झूठी बात नीं बतावै। उणसूं ग्यांन री बढोतरी हुवै। सैंग जीवां री भावनावां साहित्य रै सामिल। इण विध साहित्य जगत री भलाई करै।

संसार में जको फूटरो है, वो साहित्य रै काम रो। साहित्य में सूगलो टिक नीं सकै। इण फूटरपणै री भावना साहित्य नैं पांखड़ा देवै। ऊंची–ऊंची कल्पना। जीवण अर जगत में जिको खराब, उणनैं साहित्य आपरै करतब सूं फूटरपणै में ढाळै। धरती नैं सरग बणावै। जिणसूं साहित्य 'सत्यं शिवं सुंदरं' कैईजै।

साहित्य री रेखा

इण दिनां साहित्य सबद रो प्रयोग घणो व्यापक अरथ में हुवै है। किणी अेक विसय री सारी पोथियां उण विसय रो साहित्य कैईजै। किणी औखद रा गुण बतावण वाळो प्रचार साहित्य। किणी धंधै री जाणकारी देवै वो इण धंधै रो साहित्य। साहित्य रो राज घणो लांबो, घणो चौड़ो। पोथी–पानड़ा इण साहित्य में गिणीजै। मूंडै याद कवित्त, दूहा अर ओखाणा पण साहित्य कैईजै। लोग इणनैं 'लोक साहित्य' कैवै। लोक –साहित्य रो अरथ जनता रो साहित्य। पढ्या, अणपढ्या, टाबर, बूढा, मोट्यार अर लुगायां, सैगां रो साहित्य। नाना–नानी री का'णियां, रातिजोगां रा गीत, दाना मिनखां री कहावतां, छोरियां री लूरां– सैंग लोक–साहित्य रा अंग। इण विध साहित्य में लिखियो अर अणिलिखयो– दोई जात री रचनावां मानीजै।

लिखियोड़ी पोथियां तीन भांत री–

1. खबर देणो साहित्य– कई पोथियां म्हांनै नई बातां री जाणकारी देवै। उणां में घणी नवी–नवी बातां री विगत रैवै, इसी पोथियां नैं बांच'र म्हांनै रस नीं आवै, भाव नीं प्रजालै, मन अर माथो बेअसर रैवै। साहित्य ज्ञान बढावै पण आणंद नीं देवै। ओ साहित्य 'खबर देणो' साहित्य रै नाम सूं ओळखीजै।

2. विवेचन साहित्य– कई पोथियां इण तरै री होवै कै उणां सूं नयो ग्यान तो मिलै ईज पण इणरै अलावा वै म्हारै दिमाग नै, बोधविरती नैं प्रभावित करै। दरसण, विज्ञान अर इतिहास री पोथियां इण में ईज गिणीजै। इण साहित्य नैं 'विवेचन साहित्य' रै नाम सूं बोल्यो जावै।

3. सरस साहित्य– कई पोथियां इण तरै री होवै कै उणां सूं नुंवो ग्यान मिलै कै नीं मिलै पण वै आपणी भावना नैं जगावै। अै पोथियां पाठक नैं इण संसार सूं बडै घणै व्यापक संसार रो रैवासी बणावै। उणनैं खुद रै दुख– सुख रै जंजाळ, स्वारथ री माळ अर ओछापण सूं दूर करनै भारीखवो,दयालु अर मिनखपणै रो लाजेतो बणावै। इण साहित्य रै घर में जड़ अर चेतन, सजल अर उसर, सजीव अर निरजीव, मिनख अर ढांढो, पंखेरू अर समुंदर री माछली– किण में भी फरक नीं। पाठक रो चित्त दूजां रा दुख में दुखी, दूजां

रा सुख में सुखी अनुभवण करण लागै। इणसूं पाठक नैं अपूरब आणंद मिलै। इण आणंद री भांत अनोखी। इणसूं ओ 'लोकोत्तर आणंद' कैईजै। इण सरस साहित्य ईज नै पण घणी बार साहित्य नाम सूं संबोधै।

साहित्य सबद घणो पुराणो। जुगां सूं इणरो बैवार। विद्वानां रो धोरण कैवै इणरी उत्पत्ति संस्कृत रै 'साहित्य' सबद सूं हुई। साहित्य रो अरथ हुवै साथै–साथै, रमणीयता पैदा करतां, जद सबद अर अरथ दोई साथै– साथै चावै, इणनैं साहित्य नाम सूं ओळखीजै। इणनैं ईज 'काव्य' पण कैवै।

साहित्य रो मळू मिनख जमारो। मिनख रै जीवण सूं साहित्य रो जन्म होवै। मिनख जको देखियो, विचारियो, भुगतियो, समझियो उण सब रो चितराम साहित्य में हुवै। जुगां सूं आगै बढतै मानखै री विगत साहित्य। खराबी रै नास पाण लड़तै मिनखपणै रो इतिहास साहित्य। ज्या सुधी जीवण री नदी रो पाट, त्यां सुधी साहित्य रो फैलाव। इण कारण अेक आथूणै विद्वान रो कैणो है कै भाषा रै जरियै जीवण री अभिव्यक्ति ईज साहित्य है। साहित्य अर जीवण रो गहरो अर लागतो संबंध है, इण बात में कीं फरक कोयनी।

मिनख अेक सामाजिक प्राणी है। वो समाजां सूं दूर नीं रह सकै। खुद रै विकास सारू अर सो'रो सुखी बणावण सारू समाज री घणी जरूरत पड़ै है। मिनख बैवार अर विचार दोयां में सामाजिक रचना सारू प्रेरक शक्ति रही है।

साहित्य री नौ खूंट सत्ता रो की कारण। बात आ है कै साहित्य जीवण अर जगत रो मेळ है। महात्मा अर पूगियोड़ा सिद्धयोगी जिण अेक, सत्ता रो अनुभव घणी साधना, नेम अर तप सूं करै है साहित्य उण अेकता रो अनुभव सो'रो सो'रो करा देवै। इण जगती में घणो जंजाळ। घणी छोटी बडी भांत री चीजां है, पण इण ऊपरी सचाई इण सब चीजां में है जिणनैं समझणो रमत कोयनी। 'काव्य' कै 'साहित्य' इण अेकता नैं संवारै, सामी प्रगट करै।

मिनख–मिनख में भेद नीं। धरन, जात, न्यात, देस, रंग अर लिंग रा भेदां में बट्योड़ा सैंग बरोबर अर अेक सरीखा हुवै। लोही सबां में बैवै। भूख सबां नैं लागै। लागै री पीड़ अर जीवण रो हरख सबां नैं हुवै। मांदगी री वेदना अर किरोध रो खार सबां नैं सतावै। इण कारण सूं जुगां पैली बण्योड़ी कविता आज भी म्हांनै भावै। पीथळ रा दूहा आज भी पाठकां नैं जोम चढै। हरिरस रो पाठ कर आज भी मन नैं सांति मिलै। मरवण रो ओखाणो सुण आज भी जीव नैं दुख हुवै तो मूमल रै दुख आज भी नैण सजळ हो जावै। साहित्य देस , जात किणी तरै रो भेद पण पाळै नीं। गोरियो अर राजा लियर रो आपरी आपरी औलाद सारू प्रेम देख'र आज भी सात समुंदर पार रैवण वाळा म्हां हिंदुस्तानियां रो मन भी डोल जावै। संजमराय अर फांसी री राणी रो तप–त्याग बांचनै विलायत रा वासियां रा चित्त चंचल हो जावै। शकुंतला नैं जोय'र जर्मन महाकवि गेटे मोह गयो अर रामायण नैं बांच फ्रांस रै विद्वान प्रोफेसर लेवी रो मन नाच उठ्यो। इण सब रो अरथ ओ कै साहित्य सदा आभा सरीसो व्यापक अर चांदणी सरीसो मोहक है। वा मिनख री गाथा है, सदा नाम अमर राखण वाळो।

साहित्य रा रूप

मानवी नैं दूजा जीवां सूं सिरमौड़ ठहरावण वाळी बातां में प्रमुख बात उणरो कला–प्रेम है। भरथरी तो संगीत, कला अर साहित्य रै बिना मिनख नैं बिना सींग पूंछ रो जिनावर मान्यो। ओ साहित्य कांई है ? इण सवाल रो जवाब जुगां सूं सुजाण अर ग्यानी मिनख देता आया है। पण निसतार मिल्यो नीं। तो ई साहित्य रा विविध रूपां सूं ओळख काढां उणरै पैली देस अर परदेस रा गुणियां रा ख्याल जाणणा जरूरी है। संस्कृत रा अेक आचरज राजसेखर रो कैणो है– 'शब्दार्थयोर्यथाववत्सह भावेन विधा साहित्यविधा।'

इणरो अरथ ओ कै सबद अर अरथ रै वाल्है मेळ सूं बणियोड़ी विधा नैं साहित्य विधा कैवै है। इण परिभाषा नैं परखां तो सगळी अरथ वाळी बातां साहित्य में गिणीजै। 'शब्दकल्पद्रुम' नाम री अेक बीजी संस्कृत री पोथी में साहित्य नैं स्लोकां वाळी रचना कही है– 'मनुष्यकृत श्लोकमय ग्रंथविशेषः साहित्यम्।'

आपणा सुरसती मां रा व्हाला बेटा, साहित्य रा सपूत, महाकवि टैगोर साहित्य री विगत यूं बतावै है– 'साथै सबद सूं साहित्य रो मिलण रो भाव देखीजै है। वो कोरो मिनख रो काल साथै, भाषा सूं भाषा रो, पोथी सूं पोथी रो ही मिलण नीं है पण मिनख साथै मिनख रो, काल साथै आज रो, दूर साथै नेड़ै रो, गाढ मिलण भी है, जको साहित्य बिना किणी विध नीं बणै। इण कथन रो अरथ साहित्य सबद धातुगत अरथ माथै चालै अर साहित्य रै फैलाव नैं दिखावै अर इणरै महातम नैं प्रगट करै।'

अंगरेजी विद्वान हडसन रो कै'णो है कै, 'साहित्य भाषा री मदद सूं जीवण री अभिव्यक्ति है।' इण अरथ में घणो फरक कोनीं। टैगोर री परिभाषा सूं इण परिभाषा में घणो मेळ है। आं सगळी परिभाषावां नैं आपां देखी। साहित्य रै फैलाव, अरथ, महातम अर प्रभाव माथै आपां पछै विचार करांला। अवाम् तो साहित्य रा कित्ता रूप है, इणरो विचार करां।

साहित्य सारू पुराणा आचारज 'काव्य' सबद काम में लेवता हा। इण काव्य रा दो भेद। अेक तो 'श्रव्यकाव्य' अर बीजो 'दृश्यकाव्य'। पैली छापाखाना हा कोनीं। सगळो साहित्य याद राखणो पड़तो। कैबत भी है– 'लुगाई तो साथै, विद्या जीभ माथै अर रुपिया तो अंटी मांय रा ईज काम रा है।' लोग गुरु कना सूं सुणता, भणता अर याद राखता। वेदां नैं याद राखण रो ओ हीज तरीको हो, इणसूं उणां नैं स्रुति कैवता। साहित्य में कविता का'णी, बात, ख्यात, सगळा काव्य मानीजै। 'दृश्यकाव्य' में रास मांडीजै। उणनैं आपां आंख्यां सूं देखां, इणसूं नाम 'दृश्यकाव्य'। इणनैं नीचै मुजब चितरायो जाय सकै–

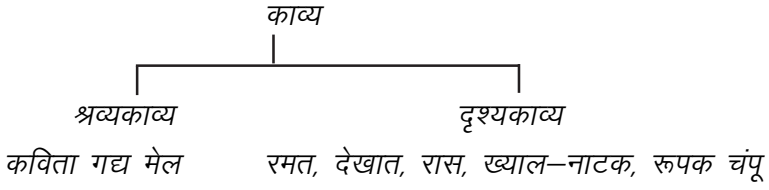

श्रव्य काव्य रा तीन प्रकार। लोक अर छंद में लिख्यो साहित्य कविता कहीजै। भाषा अर बोलचाल

में बण्योड़ी रचना जाणीजै गद्य। कविता अर गद्य रो कियोड़ो मेल चंपू नाम सूं ओळखीजै। कविता अर गद्य रा आज री दांई पैली घणा सख्त भेद नीं हा। आज तो कविता में प्रबंधकाव्य, खंडकाव्य, महाकाव्य अर मुक्तककाव्य भेद करीजै। मुक्तककाव्य नैं फेर पठणकाव्य अर गीतकाव्य में बांटै। इण सबां रा भेदां अर उपभेदां माथै पछै फरे कदैई विचार करस्यां। गद्य तो आज रै जुग रो जीव है। छापाखाना री मदद सूं रोज आपस में बाले चाल री बातां रै रूप में गद्य घणो फैल्यो। आज गद्य में निबंध, कथा, का'णी, उपन्यास, जीवनी, सबद चितराम अर आलोचना जिसा घणा ही रूप मानीजै है। जिंयां–

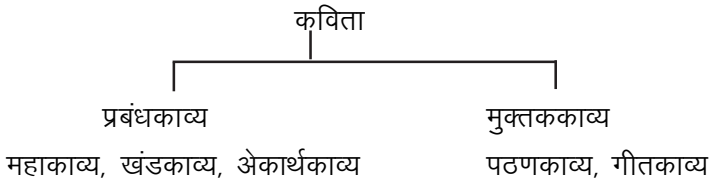

इणी तरै गद्य रा अै विभाग गिणीजै–

निबंध, का'णी, उपन्यास, आलोचना, जीवनी, सबद चितराम, कागद–दफ्तर पण आपणी राजस्थानी में इण विध कियोड़ी पांत रुचै कोनीं। राजस्थानी रो साहित्य घणो पुराणो, घणो अनोखो। बिध–बिध रा साहित्य रूप इणमें मिलै। इणसूं ऊपर बतायोड़ो ओ विभाजन ठीक नीं बैठै। आपां नैं राजस्थानी साहित्य रा रूप जाणबा सारू अेक नुंवो मारग लेणो पड़सी। म्हारी समझ में ओ मारग ठीक रैसी।

काव्य– 1. दृश्यकाव्य रा भेद : दृश्य काव्य भदे जका लारै दियोड़ा है, ठीक है। 2. श्रव्यकाव्य रा भेद : प्रबंधकाव्य, मुक्तककाव्य। 3. प्रबंधकाव्य रा भेद इण गत है– महाकाव्य, खंडकाव्य, अेकार्थकाव्य, पठणकाव्य, गीतकाव्य, डिंगळ गीत, हरजस गीत, कथाः दास्तान, वचनिका, प्रसंग, दवावैत, ख्यात, इतिहास, बात, ओखाणा।

महाकाव्य री गिणती में अनेक रासो ग्रंथ अर चरित आवसी। परवाड़ा छंद, रास नै वेल आदि खंडकाव्य में रैसी। मुक्तककाव्य, पठणकाव्य में दोहा, सोरठा, सुभाषित अर बीजा प्रकार गिणीजसी। गीतकाव्य में डिंगळ गीत, हरजस गीत अर बोल लिया जाय सकै। कथा में दास्तान, प्रसंग, ख्यात, बात, वचनिका, दवावैत, इतिहास, ओखाणा जिसा अनेक प्रकार आवै। राजस्थानी रा इण प्रकारां में गद्य अर कविता नैं घणो मान नीं दियोड़ो है। दास्तान गद्य में हो सकै है अर कविता में भी। राजस्थानी गद्य में भी कविता री दांई तुक रो ध्यान राखीजै। ओ ईज नी, वयणसगाई रो पाळण पण हुवै। इणसूं वारता, ओखाणा, मेल, चंपू जाण पड़ै। आज रो समै देखतां राजस्थानी में आलोचना, निबंध अर बीजा साहित्य रूप पनपैला। इण सब रूपां नैं पुराणी परंपरा साथै जोड़णो पड़सी, जद ईज राजस्थानी रो साहित्य–शास्त्र रच्यो जासी।

54
अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. साहित्य नांव है–
   (अ) चोखै, सुंदर अर हितकारी रो। (ब) चोखै अर गुणकारी रो।
   (स) सुंदर अर सदाचारी रो। (द) हितकारी अर सदाचारी रो। ( )
2. 'शिव' रो अरथ होवै–
   (अ) फूटरो। (ब) चोखो।
   (स) भलाई करण वाळो। (द) भदे राखण वाळो। ( )
3. कविता रा भेद होवै–
   (अ) गीत–गजल। (ब) प्रबंध अर मुक्तक।
   (स) रमत–रास। (द) चंपू अर रम्मत। ( )
4. लोक साहित्य मांय होवै–
   (अ) सत्यं, शिवं, सुंदरम्। (ब) सुंदरम्।
   (स) शिवं। (द) सत्यं। ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. बार–बार कांई नीं मिलै ?
2. सेक्सपियर कांई–कांई लिखिया ?
3. हरिरस रै पाठ सूं मन नैं कांई मिलै ?
4. संगीत, साहित्य अर कला बायरै मिनख नैं भरथरी कांई कैवै ?
5. 'साहित्य भाषा री मदद सूं जीवण री अभिव्यक्ति है।' ओ वाक्य किणरो है?

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. मानवी नैं दूजां सूं सिरमौड़ ठैरावण वाळी खास–खास बातां उजागर करो।
2. साहित्य अर मानवी जीवण रो आपसी संबंध उजागर करो।
3. डॉ. गोवर्द्धन शर्मा रै सबदां में मिनख री कुणसी विरति साहित्य रचना सारू मिनख री प्रेरक शक्ति रैयी है ?
4. साहित्य री संक्षेप में परिभाषा लिखो।

लेख रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. साहित्य रा खास–खास भेदां रो खुलासो करो।
2. सरस साहित्य अर खबर देणै वाळै साहित्य रो भेद उजागर करो।
3. संस्कृत रा आचार्य राजशेखर रै सबदां मांय बताओ कै साहित्य किणनैं कैयो जावै ?
4. मोटै रूप सूं साहित्य रो वर्गीकरण करो।
5. साहित्य सत्यं, शिवं अर सुंदरम् क्यूं कैईजै ? विरोळ करो।

55
सौभाग्यसिंह शेखावत

लेखक–परिचै

राजस्थानी साहित्य–जगत में सौभाग्यसिंह शेखावत रो नांव सावळ ओळखीजै, जाणीजै। श्री शेखावत प्राचीन–साहित्य रा शोधवेता रै रूप में आपरी अलायदी पिछाण राखै। आपरो जलम 22 जुलाई, 1924 नैं सीकर जिलै रै भगतपुरा गांव में होयो। आप सन् 1957 में उदयपुर री राजस्थान विद्यापीठ रै साहित्य–संस्थान में शोध सहायक रो औहदो संभाळ्यो। तापछै 1963 सूं 1980 तांई राजस्थानी शोध–संस्थान, चौपासणी (जोधपुर) में पैलां शोध सहायक अर पछै सहायक निदेशक रो पद संभाळ्यो। इण दौरान आप केई प्राचीन पांडुलिपियां रो संपादन कर्‌यो। आप राजस्थानी भाषा, साहित्य अेवं संस्कृति अकादमी रा दो बार अध्यक्ष रैय चुक्या है। इणरै अलावा राज्य सरकार कांनी सूं गठित 'राजस्थानी भाषा उन्नयन समिति' रै अध्यक्ष पद रो दायित्व भी आप संभाळ्यो। राजस्थानी साहित्य जगत में मिलण वाळा घणकरा पुरस्कारां अर अलंकरणां सूं अलंकृत श्री शेखावत नैं अकादमी रो सर्वोच्च 'पृथ्वीराज राठौड़ पुरस्कार' भी मिल चुक्यो है। वृद्धावस्था रै बावजूद आप आज भी लेखन अर संपादन रै काम में लाग्योड़ा है।

श्री शेखावत द्वारा संपादित प्रमुख कृतियां है– जाडा मेहडू ग्रंथावली, डूंगरसी रतनू ग्रंथावली (दो भाग), राजस्थानी वीर गीत संग्रह (च्यार भाग), राजस्थानी बातां (भाग 3, 4, 5 अर 7), विन्है रासौ, बलवद विलास, कहवाट विलास, शेखावाटी के वीर गीत, अैतिहासिक रुक्के परवाने। आपरो काव्य–संग्रह 'रणरोळ' लारलै बरस ई छप्यो है।

पाठ–परिचै

'बचन' अेक प्रेरक अर शिक्षाप्रद निबंध है। मरद री जबान, घोड़ै री लगाम ज्यूं थिर अर मजबूत रैवै। जूनी बातां मांय इण बात रा म्यांना मिलै। जगदेव बचन सूं बंध्यो कंकाळी भाटण नैं आपरो माथो देवै। पण आज रो मिनख थिर मानसिकता रो कोनीं। लेखक बदळतै जमानै मांय भी मिनख नैं बचन निभावण री सीख दी है। इण निबंध मांय राजस्थान रै इतिहास अर पुराणी परंपरा रा पारखी जूनै साहित्य रा जाणीकार सौभाग्यसिंह शेखावत आपरी बात पुखताऊ ढंग सूं उजागर करी है।

निबंध

बचन

म्हारो नांव बचन है। 'कौल' नैं 'बोल' भी म्हनैं कैवै है। म्हारा परिवार में म्हारो सगळां सूं इधको आघमान है। जठै कठैई आपसरी में बैर, विरोध, खटपट, झगड़ो–झांटो अर बोला–चाली होय जावै तो म्हैं बीच में पड़'र बीच–बचाव कर राड़ नैं बुझा'र पाछो मेळजोल अर बोलचाल कराय देवूं। इण खातर सारो भाईपो म्हनैं सिरै गिणै अर म्हनैं सैज में ईज नीं लेवणो चावै। म्हारी दादी रो नांव वरणमाळ है अर म्हारै और बावन भाई है। म्हां सगळां रो घर बावनी बाजै। इणीं कारण कवियां आपरी घणी रचनावां रा नांव 'बावनी' राख्या है। जिंयां सुजस बावनी, उपदेश बावनी, नीति बावनी अर वीर बावनी आद नांव आप सगळा सुणिया ईज होवोला। पण म्हां बावन भायां में बब्बा, चच्चा अर नन्ना तीन भायां में बालपणै सूं ई घणो हेत–इखळास अर मेळ–मिलाप हो। म्हैं निज में कणैई लड़िया–झगड़िया कोनीं। घणकराक साथ–साथ ई रैया। टाबरपणै में बिना समझ म्हारा दूजा भायां में घणी बार खड़बड़ाहट अर छुटबड़ होय जावती। पण म्हैं तो सदा नीर–खीर री भांत तीन देह अेक प्राण ईज रैया। दूजा भायां में राड़ो–धाड़ो होय जावतो तो वै कैवता म्हांनैं 'बचन' दे देवो तो म्हैं थांरो बिसवास करां, नींतर तो थांरो कांई भरोसो?

सो म्हैं घणी–घणी बार अमेळ अप्रीतो भांग'र बिसवास नैं पाछो जमाय देवता अर बीखरता घर नैं ठौड़ री ठौड़ जमायो राखता। इण कारण म्हांरी 'देवचो' सरीखी गिणती रहती अर अबखी वेळा में म्हारी बरोबर मांग बणी रैवती। राजा–रजवाड़ां री सींव–नींव रा झोड़ नैं जिंयां बीच में भाटो मकरबो, खंभो रोप'र मिटावै बिंयां ईज म्हारै पूग्यां आपस में तनाजो मिट जावतो। म्हारो भरोसो होवतो तो अेक देस, दूजा देस सूं आपसरी में सींव पर कांटा रा तार लगाय'र वैर रा कांटा नीं बिखेरता अर भाईपो बण्यो रैवतो। रूस, अमेरिका म्हनैं मानता तो ठौड़–ठौड़ घातकारी, विणासकारी मिसाइलां लगावण री कठै जरूरत पड़ै ही ? अर म्हारै सागै छळ–छंद रचै अर धोखाधड़ी करै जणांस तो चावै तीन तिलोकी नाथ विष्णुजी ईज क्यूं नीं होवो, बावनियो बणै ईज। अपकीरत होवै ईज। देवराज री बहकावणी में आयनै विसंभर राजा बळ कर'र कपट रच्यो तो कांई लाडू ले लियो। पौछड़ी का आपरो डोळ अर रुतबो ईज तो भंडायो। राजा बलि आपरा गुरु शुकराचार्यजी रै नटतां–नटतां गबळको काढ'र म्हनैं विष्णुजी नैं दे दियो, सो आप सुणी ईज है। इन्दर पद तो आगो रैयो, ऊंडो नीचै पाताळ में जावता कठैई बलि रा पांव टिकिया। जिको म्हनैं देवणै सूं पैली, मिनखां नैं सौ बार सोचणो चाइजै अर जे गैलसफा बण नैं नीं सोचै जणासं तो राजा दसरथ वाळी गति बणै। दसरथ विजै मद में गैळीज'र कैकेयी नैं म्हनैं सूंप दियो, पछै कांई हो ? काळजै री कोर राम नैं वन में जावणो पड़ियो अर दसरथ नैं प्राण गमावणो पड़ियो। बैठो–ठालो घर नैं घरकुंडियो बणाय दियो। द्वापर में जुधि ठर सतवादी बाजतो। आज भी बाजै है, पण श्रीकृष्ण रै चाळै लाग'र महाभारत में 'नरौ वा कुंजरौ वा' बोल'र आपसी सांच री पोल काढदी। महाभारत में कुंती अर श्रीकृष्ण राजा करण नैं घणो ईज पोमायो, लालच लोभ देय'र दुर्योधन सूं फांटणो चायो, पण करण लौह री लाठ ज्यूं म्हारै पर अडिग रैयो। कैयो, 'दुर्योधन नैं बचन दियोड़ो है, बचन नैं किंयां लोपीजै ?'

बचन अर बाप तो अेक ईज होवै है। आप सुणी होवोला कै परखनळी में मिनख–सांडियां रो बीज अस्पताळां में भेळो कर्योड़ो राखै है। कांई ठा किण–किणरो भेळो कर्योड़ो होवै है। उणरी सुंई लगाय'र ढांढा री भांत ईज मिनख जलमा देवै है। अैड़ा लोग म्हनैं लोप जावै तो अणूती बात कांई है ? पण राजा करण पर लाख लांछण हुवो, बो अेक बाप रो हो, सो म्हनैं नीं हार्यो अर धोखैबाज इन्दर नैं जाणतो–पिछाणतो भी आपरा कुंडळ देय दिया पण म्हनैं राख लियो। ओ ईज कारण है कै आज प्रभात रा पौर में करोड़ां मिनख उठतां ई सतवादी जुधिष्ठिर, गांडीवधारी अरजुण, भीमनादी भींव रो नांव कोनीं लेवै पण राजा करण नैं चितारै अर कैवै, 'राजा करण रै बगत कठै खोटी बाण बोलै है ?' म्हनैं दूजै नैं देवणो अर पछै म्हारै पर अटल रैवणो सौरो काम कोनीं। म्हनैं देवणो मरजाणी–घरजाणी रो खेल है। थै आंतरै क्यूं जावो ? अठै ई इण कळजुग में ई देखल्यो म्हनैं दियो जिकां रो कांई हाल होयो ? पाबूजी राठौड़ देवळ बाई चारणी नैं अेक घोड़ी रै पूंछड़ै म्हनैं देय दियो। पछै म्हारै खातर सात फेरा अधूरा मेल आपरी परणेता रो हाथ छोड'र भाग्यो। ब्याव रा कांकण–डोरड़ा अर सेवरो बांध्यो थको ईज आपरा बहनोई जिंदराव खीची सूं लोह–रटाको लेय'र काम आयो। पण भली गिणो कै म्हारै खातर मरियो जद आज भी पाबूजी लोक में देव सरूप मानीजै, पूजीजै है। बाकी म्हारै बिना मरबा नैं सगळी जियाजूण मरै है। पण काळ रा परळा में उणां बापड़ा जीवां नैं कुण नारेळ चढावै है ? कुण उणां रा देवळ थरपै है ? कुण धूप –ध्यान करै है ? म्हनैं राखै उणां रो म्हैं भी आघमान राखूं हूं।

म्हारै तांई रणतभंवर रो धणी राव हम्मीर बिजाती महमासाह नैं राख लियो अर दिल्ली रा पातसाह अलावदीन री फौज सूं बाथेड़ो कर'र आपरो राज–परिवार परगह अर प्राण गमाय दिया। पण म्हारो ईज कारण है कै राव हम्मीर रो ख्यातां–बातां में आज तांई नांव चालै है।

मिनख में मोट्यार बाजण वाळा तो आज सिटळ–फिटळग्या पण लुगायां में अजै तांई पचाणवैं सैकड़ा अैड़ी है जिकी म्हारै पर अटल है। फेरा में लोग लुगाई दोनूं अगन री लौ धकै सारा परिवार रै

सांमै म्हनैं (बचन) देवै कै आखी ऊमर साथ रैवांला। पण मिनख म्हनैं छोड'र केई चूड़ैलणां, कुदाळ, कुरांडां रै चाळै लाग'र आपरी वैरवानी छोड देवै, मार देवै, फोड़ा घालै पण लुगायां काणो, खोड़ो, नामरद, नाजोगो, भोळो–तोळो, पांगो, गोबर रो गोबिंदो, कैड़ो भी होवो,कोई–सी ईज इंयालकी निकळै जिकी रोहिणी री तरै भाग'र चितरथ गंधप जैड़ा रा घर में जा बड़ै। पण वांरी कांई आछी गिणत थोड़ी ईज होवै है। सो, मरद री जबान (बचन) अर घोड़ै री लगाम तो मजबूत ईज आछी। गाडी रा पहियां री गळांई जिकै रा मूंडा में म्हैं फिरूं उणरी कदैई, कठैई राज–तेज, सभा–समाज में कोई ग्यान–गिणत नीं करै। म्हनैं (बचन) हारणो अर जमारो हारणो अेक गिणीजै। म्हैं मुख कोस सूं निकळ्यां पछै जदि हाथी रो दांत पाछो मूंडै में बड़ै तो म्हैं बडूं। जद ईज कैयो है–

हाथी हंदो दंतड़ौ, मुंहड़ा हंदौ बोल।
काढ्यां पाछौ नीं बडै, ओ इर्ज आंरौ मोल।।

बोल म्हारो ईज लाड रो नांव है। (बोल) म्हारै सूं ईज आदमी रो ठावा मिनख पिछाण करै है। इण वास्तै म्हनैं मुखद्वार सूं काढता समै घणी सावचेती बरतणी चाइजै। चालतै ई लबळको लेवै वै ईज तो लबाळी बाजै। गोळी रो घाव भरीज जावै पण बचन (म्हारो) घाव नीं भरीजै। म्हैं नाटसाळ री भांत लाग'र सारी ऊमर मिनख रै दूखणा ज्यूं दूखतो सालतो रैवूं। इण वास्तै म्हनैं तोल'र बोलणो चाइजै। जिका बोलणो नीं जाणै वां बापड़ां नैं धेलै भाव भी कुण बूझै है ? जीभ–रस (बोल रो रस) सब रसां में सिरै मानीज्यो है–

बण रस कण रस तांत रस, सब रस दीठै तोल।
सब रस ऊपर जीभ रस, जो जाणीजै बोल।।

म्हनैं बोल'र म्हनैं देय'र जिका पूरा नीं ऊतरै वांरो मोल कौडी रै भाव धैला बरोबर। अै छिदामिया मिनख न मिनख में गिणीजै अर न ढांढां में पुणीजै। अैड़ा कौडी मोला भणीजै–

बोलै जितरा बोल, नर जे निरवाहै नहीं।
त्यां पुरसां रा तोल , कौडी मुंहगा करणिया।।

म्हनैं मिनख होवै जिका तो सोच समझ'र मुख सूं काढै अर दूजा नैं सूंपियां पछै पलटै नहीं। अैड़ा म्हारा धणी (बचन–धणी) बाजै। वै सभा–सम्मेलन में किणी ठौड़ नीं लाजै। नीं रण में भाजै। वै धीर–वीर गंभीर कहीजै–

बडा न लोपै बचन कह, लोपै नीच अधीर।
उदय रहै मरजाद में, वहै उलट नद नीर।।

म्हनैं अेक बात याद आयगी। अेक बार अेक ठाकर आपरी मोटी टणकी हेली री चानणी पर गादी–मोड़ां लगायां बैठो हो। इतरा में अेक कागलो कांव–कांव करतो आय'र गोखड़ा पर बैठ'र ठाकरां रै माथै बींठ करदी। ठाकर, चाकर नैं कैयो, 'ल्या रे रूपा क्रपाण इण कांडी रो पाप काटां।' कागलो जाणियो तरवार सूं तो नीं मरूं। ठाकर उठसी जितरै में उड'र परो जासूं। पण ठाकर क्रपाण री ठौड़ कमाण उठाय'र तीर मार्‌यो। घिरो खाय'र कागलो बाण री चोट सूं गिरह चक्री खावतो नीचै आय'र बोल्यो–

बचन पलट्टां सौ मुवा, कागा मुवा न जांण।
मारा नहीं क्रपाण सूं, मारा उठा कमाण।।

सो, म्हनैं (बचन) तो पंखेरू भी समझै है अर म्हां पर भरोसो राखै। म्हारै (बचन) बळ सूं ईज मंत्र चालै। संसारा रो धाको धिकै। कारज सिद्ध हुवै। वाच भी म्हारो ही जवानी रो नांव है। म्हैं निकळंक गिणीजूं। सतपुरखां नैं लोग म्हनैं सिमर'र ईज जुहारड़ा करै, वारणा लेवै। म्हनैं हारै, चूकै जिकां रा भौ बिगड़ै। अर म्हनैं पाळै जिकां री संसार में वाहवाही होवै। पण म्हनैं देणो आगी–पाछी सारी बात सोच– समझ'र। जुग जोधार जगदेव पंवार कंकाळी भाटणी नैं म्हनैं दियो तो निभावण नैं माथो देवणो पड़ियो। इण वास्तै म्हारी कीमत समझणी। आज विग्यान–ग्यान बळ रा रातींधा में चूंधीज्योड़ा, राजनेता

म्हारो मोल घणो घटायो। म्हैं सदा सूं ईज न्याय रो सीरी रैयो। मिनखपणा रै खातर ढाल बण्यो। म्हारै कहै चालिया जिका सुख री नींद सोया। जस खाटियो। जीवण रो लाहो लियो। सो, लाख जावो पण साख नीं जावो।

इण वास्तै सबद सांचा पिंड काचा। चलो मंत्रों ईसरो वाचा। बचन लोपै तो धोबी री कुंड में पड़ै। सो, ओ मिनखां ! बचन देय'र लोपियो तो थांनैं लूणां चमारी री आण है। अजमाल जोगी री दुहाई है।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. बचन रा दो पर्यायवाची है–
   (अ) बोल अर बात (ब) बात अर ख्यात
   (स) कौल अर बात (द) कौल अर बोल ( )
2. रणत भंवर रो धणी हो–
   (अ) प्रताप (ब) सांगा
   (स) हम्मीर (द) अलावदीन ( )
3. लोह री लाठ ज्यूं बचन माथै अडिग कुण रैयो–
   (अ) दुर्योधन (ब) अरजुण
   (स) करण (द) श्रीकृष्ण ( )
4. गांडीवधारी किण रो नांव है ?
   (अ) जुधिष्ठिर (ब) अरजुण
   (स) भीम (द) द्रोणाचार्य ( )
5. बचन रो मोल घटावणिया है–
   (अ) राजनेता (ब) समाजशास्त्री
   (स) विचारक (द) मानखो ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. द्वापर मांय सतवादी कुण बाजतो ?
2. सब रसां में सिरै रस किसो मानीजै ?
3. आज रो मानखो किणसूं चूंधीज्योड़ो है ?
4. पाबूजी इण लोक में देवरूप क्यूं पूजीजै ?
5. 'बचन' नैं लाड सूं किण नांव सूं पुकारीजै ?

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'बचन' देय'र लोपण वाळो मिनख कांई कहीजै ?
2. जुग–जोधार जगदेव पंवार कंकाळी नैं माथो क्यूं दियो ?
3. बोलती बगत कांई सावचेती राखणी चाइजै ?
4. अलेखूं काव्य रचनावां रा नांव 'बावनी' क्यूं राखीज्या है ?

लेख रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'मरद री जबान अर घोड़ै री लगाम तो मजबूत ईज आछी।' 'बचन' लेख रै आधार माथै खुलासो करो।
2. 'हाथी हंदौ दांतड़ौ, मुंहडा हंदौ बोल।
   काढ्यां पाछौ नीं बड़ै, ओ ईज आंरो मोल।' इण दूहै रो भावार्थ आपरै सबदां मांय उजागर करो।
3. 'बचन' निबंध आज रै जुग में घणो प्रासंगिक है। ' इण कथन रो खुलासो करो।

59

डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई

लेखक–परिचै

जलम – अबूबशहर, सिरसा (हरियाणा)। शिक्षा – अेम. अे. (इतिहास), पी–अेचडी., पी. जी., डिप्लोमा इन जर्नलिज्म, अेल. अेल. बी.। छपियोड़ी पोथ्यां – नाथियै रा सोरठा, तीतर पंखी बादळी, राजस्थानी रामायण, विलोजी की वाणी, विश्नोई संतों के हरजस, कवि गद्द के कवित्त, पंचशती स्मारिका, गुरु जांभोजी एवम् विश्नोई पंथ का इतिहास, महात्मा सुरजनजी के हरजस।

प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ, शिलालेख, पट्टा–परवाणा पढण में महारथ हासल। 'तीतर पंखी बादळी' पोथी माथै राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रो 'पैली पोथी पुरस्कार'। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान में वरिष्ठ शोध अधिकारी अर प्रभारी।

पाठ–परिचै

जंभेश्वर महाराज कैयो है–

आकास, वायु, तेज, जल, धरणी।
तामें सकल सिस्टी री करणी।।

मतलब कै आं पांच तत्त्वां रै जोग सूं ई सगळी सृष्टि बणी इै। अठै तेज रो अरथ अगनी है। आ बात बिसवाबीस ई सही है। 'पिंडै सो ई बिरमंडै।' आं पांचूं तत्त्वां रै मेळ सूं बिरमांड बण्यो है। आं तत्त्वां मांय घाट–बाध हुवतां ई सृष्टि रो संतुलन बिगड़ जावै, अठीनै काया तो काची माटी रो कुंभ है, सो इण घाट–बाध सूं सृष्टि में दोष वापरै। वो दोष ही छेवट विणास रो कारण बणै। सृष्टि रै इण दोष सूं दूषित हुवणो ई प्रदूषण है। सृष्टि रो सही संतुलन ई पर्यावरण रो शुद्ध रूप है। बणराय नैं बणाई राखणी ई पर्यावरण री शुद्धता है। डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई आपरै निबंध 'पर्यावरण रा पागोथिया' में पर्यावरण री संक्षेप ओळखांण करावतां थकां पर्यावरण री रुखाळी सारू जंभेश्वर महाराज री सीख उजागर करी है अर साथै ही इण घण महताऊ यज्ञ मांय बिश्नोई समाज रै अनुपम योगदान री जाणकारी करवाई है। आज वन्य–जीव अर बणराय दोनूं बिखै मांय है। अैड़ी बिखमी वेळा मांय विद्यार्थियां सारू सरल अर सहज भाषा मांय इण भांत री अतरी–ओपती ओळखाण री पूरी दरकार है–

निबंध

पर्यावरण रा पागोथिया

पर्यावरण सबद आपणै च्यारूंमेर रै वातावरण रो जीवण सूं संतुलन बणायो राखण रै कांनी संकेत करै। प्रकृति रा पांच तत्त्व है– पवन, पाणी, आभो, आग अर माटी। आं पांच तत्त्वां सूं मिनख री काया बणै। आं तत्त्वां री घटत–बढत सूं पर्यावरण मांय बिगाड़ आवै अर ओ बिगाड़ मिनखां, पंखेरूआं अर जीव–जिनावरां रै जीवण मांय बिगाड़ लावै। आं तत्त्वां रै बराबरी रै जोग सूं सुध प्राकृतिक पर्यावरण रो निर्माण हुवै। सुध पर्यावरण बणायो राखण सारू आपणा संत–महात्मा, रिसी–मुनियां अर बूढा–बडेरां आपांनैं घणी–घणी बातां बताई, जिणां रो आपणै जीवण मांय घणो महत्त्व है।

मोटै रूप सूं पर्यावरण तीन तरां रो मान्यो गयो है– अंदरूणी, बाहरी अर सामाजिक। आपणै अठै सतजुग मांय 'कळप–बिरछ' अर 'कामधेनु' रो उल्लेख मिलै। अै दोनूं ई मिनख री सैं कामनावां पूरण करणिया मान्या जावता। जिण तरां आज रै समै मिनख नैं रोटी, कपड़ै अर मकान री जरूरत है अर आंरी पूरती अेकै सागै बिरछ कर सकै तो वो बिरछ कलप बिरछ ही तो है। दिखणादै भारत मांय आज ई लोग नारेळ रै बिरछ नैं कळप–बिरछ मानै। वो अेकै साथै वांनैं दूध, पाणी, गाभो–लत्तो, झूंपा–झूंपड़ी,

आहार–विहार देवै। मरुथळ मांय लोग खेजड़ी रै रूंख नैं कळप–बिरछ मानै। खेजड़ी री छिंयां सारू लोगां आपरा माथा ई कटा नांख्या। इणी तरां 'कामधेनु' दूध देवण आळी पसुवां री जाति रो संकेत करै। मिनख रै जीवण मांय रूंखां अर दुधारू पसुवां रो महताऊ योग रैयो।

पर्यावरण रो अरथ भोत बडो है। आप इणनैं हर समै महसूस कर सको। पवन–पाणी, जीव–जिनावर, पेड़–पौधा आद सै जीव अर निरजीव मिल'र पर्यावरण बणावै। पर्यावरण मांय धरती री सै भौतिक, रासायनिक अर जैविक अवस्थावां शामिल है। इणनैं जीव–विग्यान, भौतिक–विग्यान, रसायन– विग्यान, भू–विग्यान, समाज–शास्त्र, मानव–शास्त्र अर इतिहास सूं समझ्यो जाय सकै। आपां बीजा सबदां मांय कैय सकां हां कै जिण वातावरण मांय आपां रैवां हां, जिण माटी मांय खेलां हा, जिण

पवन मांय सांस लेवां हां अर जठै रो पाणी पीवां हां, प्रकृति रै आं कामां रो नांव ई तो पर्यावरण है। पर्यावरण मांय वै सै बातां आवै जकी सजीवां सूं न्यारी है अर जकी किणी न किणी रूप मांय रूंखां रै जीवण माथै असर न्हांखै। वातावरण रै जीवतै भाग मांय मिनख अर बणराय है अर अणजीवतै मांय पवन, पाणी, प्रकाश, ताप अर माटी शामिल है। आं कारकां मांय असंतुलन होवण सूं पर्यावरण रै संरक्षण रो खतरो पैदो होयग्यो है।

मिनखां नैं आहार–पाणी माटी मांय ऊग्या हरिया रूंखां सूं मिलै। अै पौधा सूरज री किरणां नैं रासायनिक क्रिया सूं प्रकाश मांय बदळै। मिनख जको सांस लेवै वो इणी रूंखां री छोड्योड़ी ऑक्सीजन है। इण तरां पेड़–पौधा, जीव–जंतु पर्यावरण रा जैविक तत्त्व है अर अै पारिस्थितिकी यंत्रस्वना करै। इण तरां सगळा जीव–जंतु पिरथवी रै प्राकृतिक स्रोतां पर निर्भर है। पर्यावरण रै किणी तत्त्व में किणी भांत रो खतरो है तो वो खतरो है मिनख नैं आपरै जीवण रो।

भोजन रै बिना मिनख केई दिन जी सकै, पाणी रै बिना भी उणरी सांसां कीं समै चाल सकै, पण पवन रै बिना मिनख अेक मिनट भी नीं जी सकै। मिनख पवन मांय सांस लेवै, जळ पीवै अर आखर माटी मांय मिल जावै। माटी सूं सगळां नैं भोजन मिलै। माटी री उर्वरता इण मांय मिलण आळा कोटी–कोटी अणदेख्या जीवां सूं है, जका माटी रै बणावण अर उणरी उर्वरता बधावण में हाथ बटावै। जे अै जीव नीं होवता तो धरती बंजर होवती अर फसलां भी नीं होवती।

भारत री संस्कृति वनां री संस्कृति है। इणसूं आपणै इतियास, दरसण अर परंपरा रो जलम होयो। बडा संत–महात्मा, रिसी–मुनि, तपसी अर जति–जोगेसर वनां मांय ई रैया। वै आपरो ग्यान अठां ई लियो अर भारत रै जन–गण नैं प्रभावित कर्‌यो। आपणां जूना ग्रंथ–वेद , उपनिषद्, रामायण, महाभारत आद आं वनां मांय रचीज्या जिणां मांय ग्यान, दरसण अर विग्यान है।

विष्णु–पुराण मांय अेक कथा है, जिणसूं पतो चालै कै राजा वेन रै अत्याचारां सूं तंग आय'र रिसियां उणनैं मार नांख्यो। उणरै शरीर सूं पिरथु रो जलम होयो। पिरथु नैं राज मिलतां ई काळ पड़्यो। पिरथवी अन्न देवणो बंद कर दियो। पिरथु पिरथवी नैं मारण चाल्यो। पिरथवी अन्न देवणो सरू कर दियो अर आपरै दूध सूं वनस्पतियां नैं सींची। इण कारण ई पिरथवी रो अेक नांव शाकंभरी है। पिरथवी री पूजा सूं भारत देवी री पूजा सरू हुई। सिंधु घाटी री सभ्यता रै समै री अेक मुद्रा मिली है, जिणमें लुगाई रै गरभ सूं अेक ऊगतै रूंख रो चितराम है। इणसूं पतो चालै कै पिरथवी वणराय री देवी है।

भास्कर गूह्य सूत्र मायं सीता रो उल्लेख करसण री देवी रै रूप मायं होये है अर राम रो उल्लेख अेक किसान रै रूप मायं हळ जाते तां होयो है। इणसूं ओ पतो चालै कै आपां रा देवी–देवता वणराय नैं कित्तो प्यार करता हा।

बिरज रा लोग पैला इंदर री पूजा करता हा। क्रिसण बठै गोवर्धन री पूजा सरू करी। वै गो–धन नैं महत्त्व दियो। खेतां सूं आगै वन है अर वनां सूं आगै भाखर। म्हारी गति भाखरां तांई है।

भगवान राम जगचावो है, जको वै पंचवटी वन मांय काट्यो। भगवान क्रिसण वन मांय गायां चराई। पांडवां आपरो अज्ञातवास वनां मांय काट्यो। गौतम बुद्ध अर महावीर स्वामी नैं ग्यान वनां रै रूंखां

हेठै ई मिल्यो। रूंखां रै बिना अै सगळी बातां पूरी नीं होय सकै। ओ ई कारण है कै किणी बात नैं जे धरम सूं जोड़ दियो जावै तो वा घणी असरदार बणै। इणी कारण पुराणां लोगां रूंखां नैं धरम रो अेक अंग बणायो अर वांरी पूजा सरू करी। रूंखां नैं संरक्षण दियो। इणी कारण अठै रा लोग पींपळ, बड़, खेजड़ी, तुळसी आद री पूजा करै अर वांनैं काटणो पाप समझै। रूंख आरोग्य री ओखद है, धरती रो धणी है, गुणां रो गुड़ है अर मिनख रो मान है। राजस्थान मांय बड़ रै रूंख मांय वासुदेव, पींपळ मांय विष्णु अर आकड़ै मांय महादेव रो वासो मान्यो है। अठै री लुगायां पींपळ पूजती गावै–

पींपळ पूजण म्हैं गई कुळ आपणै री लाज।
पींपळ पूज्यां हर मिल्यो, अेक पंथ दो काज।।

भारत मांय नदी–नाळा अर भाखरां माथै बण्योड़ा, तीरथ, मंदिर अध्यात्म अर संस्कृति रा केंद्र अर भौगोलिक चेतना रा वाहक है। जळ रात–दिन बैवै। वो काया मांय प्राण घालै, माटी सूं मिल'र वनस्पतियां नैं उगावै। वां सूं अन्न मिलै। बठैई पसुवां सूं दूध मिलै, दूध सूं खून बणै, खून सूं जीवण चालै। मिनख नैं बळ मिलै। पैलां री टैम गांवां मांय पसुवां रै चरण खातर कीं जमीं खाली छोडता, जिण माथै खेती नीं खड़ी जाती, अैड़ी जमीं नैं गोचर भूमि कैवता अर जकी जमीं देवी–देवतावां रै नांव छोडता वींनैं ओरण कैवता। ओरण मांय किणी भांत रै रूंख नैं काटण री मनाई होवती। राजस्थान मांय पाबूजी री ओरण, करणीजी री ओरण, जांभैजी री ओरण चावी है। इण तरां जंगळां नैं अबोट राखण रो ओ अेक उमदा तरीको हो। इणसूं पसु–पंखियां नैं आसरो मिलतो अर मिनखां नैं फळ–फूल मिलता।

महाराजा अशोक पसुवां रै संरक्षण सारू आपरै पैलै आदेस मांय लिख्यो है कै जानवरां नैं मारणो बंद कर्‌यो जावै। इण मांय घणी बुराई है। वै रूंखां रै संरक्षण सारू आपरै दूजै आदेस मांय लिख्यो है कै पिरथवी रै सगळै राजावां नैं सड़क रै किनारै रूंख लगावणा चाहीजै, कुआं खोदणा चाहीजै अर तरकारी बोवणी चाहीजै। अेक विद्वान इदरीस इग्यारवीं सदी रै बारै में लिख्यो है कै भारत मांय मांस खातर कोई भी जानवर नीं मार्‌यो जावतो हो अर अैड़ो कोई बूढो बैल नीं हो जकै नैं चारो नीं मिलतो हो।

गुजरात मांय तो पेड़ नैं बचावण सारू उण माथै फाट्‌योड़ा गाभा न्हांख देंवता। अैड़ै पेड़ नैं वै चिथड़िया मामा कैवता। राजस्थान मांय भी खेजड़ी नैं चूनड़ी ओढावण रो ऊजळो धारो है। भाखर नैं संरक्षण देवण खातर अठै भाठां पर सिंदूर रो टीको काढ देवै। पर्यावरण रै संतुलन खातर पेड़ नीं काटण रै साथै–साथै नूंवां पेड़ लगावण में भी लोग रुचि राखता। मरुखेतर री रियासतां रा जूना पोथी–पानड़ां मांय आ जाणकारी हासिल हुवै कै किसानां नैं धोरां आळी धरती मांय खेती करण सारू प्रोत्साहन दियो जावतो। राज री आ मनसा रैवती कै करसा जिका अैड़ी धरती नैं खड़सी तो धोरां रो फैलाव घटसी। जोधपुर अर बीकानेर रै राज मांय तो हरी खेजड़ी नैं काटण पर राज कांनी सूं जुरमानै रो प्रावधान हो।

पर्यावरण रै इतिहास मांय 15वीं सदी रो कीं खास महत्त्व है। उण टैम सन् 1451 मांय गुरु जांभोजी रो जलम मरुभोम रै नागौर परगनै रै पीपासर गांव मांय लोहटजी पंवार राजपूत रै घर होयो। वांरी माता रो नांव हांसादेवी हो। वांनैं पर्यावरण नैं सुध राखण री सीख आपरै मां–बाप सूं ई मिली। वै बालपणै में माटी रा धोरां पर रमता, गायां चरावता अर पेड़ लगावता। इण तरां वै पर्यावरण संरक्षण री अेक मुहिम छेड़दी। सन् 1485 मांय वै विश्नोई पंथ री थापना करी, जिणरा गुणतीस धार्मिक नियम है। आं नियमां मांय पर्यावरण रै संरक्षण रा नियम इण भांत है :– दिनूगै सिनान कर'र होम करणो, हर्‌या रूंख नीं काटणा अर नीं काटण देवणा, जीवां पर दया राखणी अर मांस नीं खावणो, था अमर राखणी अर बैलां नैं बधिया नीं करवावणो, पाणी अर दूध नैं छाण'र लेवणो अर ईंधण नैं झाड़'र काम में लेवणो, वाणी साच बोलणी आद। वै कैयो– 'जीव दया पाळणी, रूंख लीलो नीं घावै।'

गुरु जांभोजी आपरो पैलो परचो राव दूदैजी मेड़तियै नैं पीपासर रै कुअै कनै खेजड़ी रै हेठै दियो। वै आपरो पैलो सबद होम करतां अेक बामण नैं कैयो। वै आपरा घणकरा सबद समराथळ रै धोरै

माथै हरि कंकेड़ी रै पेड़ हेठै दिया। वै कैयो– 'हरि कंकेड़ी मंडप मैड़ी, तहां हमारा बासा।' वै पेड़ काटण आळां नैं कैयो– 'सोम अमावस आदितवारी, कांय काटी वणरायौ।' गुरु जांभोजी विश्नोई पंथ री थापना भी अेक हरि कंकेड़ी रै पेड़ हेठै बैठ'र करी ही। जद गुरु जांभोजी नौरंगी रो भात भरण नैं रोटू (नागौर) पधार्‌या तो वै अेक खेजड़ियां रो बाग लगायो हो, जको आज तांई है। सुरजीबाई रै बुलावै पर गुरु जांभोजी जदै मुरादाबाद पधार्‌या तदै वै अेक खेजड़ी रो पेड़ लोदीपुर मांय लगायो जिको आज भी उणांरी साख भरै। जोधपुर रै राजा मालदेव नैं गुरु जांभोजी लोहावट रै जंगळ मांय अेक खेजड़ी हेठै उपदेस दियो हो। जदै जांभोजी जैसलमेर गया तदै वै रावळ जैतसी सूं दोय बचन लिया– 1. आपरै राज में लीला रूंख नीं काट्‌या जावै, अर 2. अबोला जीवां नैं नी मार्‌या जावै। इण तरां वै जैसलमेर राज मांय पेड़ां अर अबोला जिनावरां नैं संरक्षण रो पट्टो दिरायो। गुरु जांभोजी आपरो सरीर मिगसर बदी नवमी, वि. सं. 1593 मांय लालसर री साथरी रै अेक हरि कंकेड़ी रै पेड़ नीचै छोड्‌यो। आं सगळी बातां सूं वांरो बिरछां री खातर हेत रो पतो लागै।

जे मिनख हिंसा नीं करसी तो वो मांस नीं खावैलो। मांस नीं खावण सूं साकाहार नैं बढावो मिलै। मिनख मांय सात्विक गुणां री बढोतरी हुवै। जदै हिंसा नीं हुवैली तद वन्य प्राणियां नैं संरक्षण मिलैलो। वन्य प्राणियां रै संरक्षण सूं प्रकृति रै मांय संतुलन बणैलो। प्रकृति रै मांय संतुलन सूं ई पर्यावरण री सुद्धि है। ओ योगदान अपणै आप मांय उल्लेखजोग है। गुरु जांभोजी मुसलमान नैं जीव हिंसा नीं करण रो उपदेस देंवता कैयो–

चरि फिरि आवै सहजि दुहावै, तिहकी खीर हलाली।
तिहकै गळै करद क्यूं सारौ, थे पढ गुण रहिया खाली।।

गुरु जांभोजी रै पर्यावरण आंदोलन नैं विश्नोई पंथ रा लोगां आगै बधायो। वांरै चेलै वील्होजी रूंख लगावण अर पाणी छाण'र पीवण सारू जोर दियों वां कैयो, 'बिरछ काटण आळै मिनख नैं तो नरक मांय भी जाग्यां नीं मिलैली। रूंखां री रुखाळी सारू सै सूं पैलां वि. सं. 1661 मांय दो सगी बैनां करमां अर गोरां आपरा माथा कटाया। इण बात रो पतो वील्होजी री साखी 'करमां अर गोरां' सूं चालै। वांरी अेक दूजी साखी 'तिलवासणी' सूं पतो चालै कै तिलवासणी गांव री खिवणी नेतू अर मोटू भी आपरा पिराण बिरछां री रिछ्‌या सारू दिया। इणी तरां वि. सं. 1700 मांय पोलावास (मेड़ता) गांव रा बूचोजी अेचरा आपरो बलिदान रूंखां री खातर दियो। विश्नोइयां रो नारो है– ''सिर सूंपां रूंखां सटै तो भी सस्तो जाण।''

बिरछां री रिछ्‌या सारू सै सूं बडो बळिदान सन् 1730 मांय जोधपुर राज रै खेजड़ली कलां गांव मांय होयो। उण टैम जोधपुर रो राजा अभयसिंघ हो। अठै रै किलै रै निरमाण वास्तै चूनो पकावण सारू लकड़ियां री जरूरत ही। अठै रै दीवाण गिरधर भंडारी कनै रै गांव खेजड़ली सूं खेजड़ी रा पेड़ काटण रो आदेस दीन्हो। खेजड़ियां री रिछ्‌या सारू 363 विश्नोई आपरो बळिदान दियो, जिण मांय मिनख, लुगायां अर बाळक भी हा। देस जाति अर धरम खातर तो घणा साका होया है पण खेजड़ियां खातर अैड़ो खड़ाणो आखी दुनियां मांय नीं होयो। आं 363 मांय सै सूं पैलां बळिदान इमरता देवी दियो। विश्नोई पंथ रा लोग इणी तरां ई वन्य जीवां री रिछ्‌या सारू भी आपरो बळिदान देंवता आया है। पर्यावरण आंदोलन नैं आगै बधावण सारू आज बीजा लोग भी आगै आ रैया है। वै भी आपरो माथो बिरछां अर वन्य प्राणियां सारू देवण नैं त्यार है। आज रै 'चिपको आंदोलन' री जड़ां मांय गुरु जांभोजी रै उपदेसां रो ही हाथ है।

भारत रा वनस्पति वैग्यानिक श्री जगदीशचंद्र बसु ओ सिद्ध कर्‌यो कै पेड़–पौधा मांय भी जीव हुवै। वै सियाळो उनाळो जाणै। पण आ बात विश्नोई पंथ री थापना करण आळा गुरु जांभोजी 15वीं सताब्दी मांय बतायदी ही। इण बात सूं ओ पतो चालै है कै गुरु जांभोजी पैला पर्यावरण मिनख हा। भारत रै संविधान रै मूळ अधिकारां अर कर्तव्यां मांय पर्यावरण रै संरक्षण अर संवर्धन रो, वन अर वन्य प्राणियां

री रिछ्या रो प्रचार करैलो। प्राकृतिक पर्यावरण मांय केई वन–झील–नदी अर वन्य जीव है। राज वांरी रिछ्या करै, वांरो संवर्धन करै अर प्राणी मात्र पर दया राखै।

आज पर्यावरण नैं लेय'र सगळी दुनिया चिंतित है। इण माथै चरचावां चाल रैयी है। पवन, पाणी, अर माटी प्रदूषित होय चुकी है, पर्यावरण रै जाणकारां रो कैवणो है कै जे इण तरां मिनख चालतो रैयो तो मिनख रो इण धरती माथै सांस लेवणो दोरो होय जावैलो। वायुमंडळ मांय कारखानां रै धुंवै री जहरीली गैसां फैलती जावै, जळ प्रदूषित होवतो जावै, रासायनिक खादां घालण सूं धरती बंजर होवती जावै। प्रकृति सूं मिनख री आ अणूंती छेड़खानी आछी कोनीं। आज वैग्यानिक चिंतित है कै वायुमंडळ री ओजोन परत मांय ठींडो होयग्यो है। फेरूं आपांनैं सूरज री जहरीली किरणां सूं कुण बचावैलो ? इणनैं बचावण वाळो देव है– पर्यावरण। पर्यावरण रा पागोथिया चढ'र ई मिनख प्रकृति रै डागळै चढ सकै। जे मिनख प्रकृति रो सही उपभोग करणो चावै है तो वींनैं सुध पर्यावरण रो निरमाण करणो चाहीजै। इण समै सुध पर्यावरण री घणी जरूरत है।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. बिरज रा लोग क्रिसण सूं पैलां पूजा करता हा–
   (अ) विष्णु री। (ब) इन्दर री।
   (स) शंकर री। (द) देवी री। ( )
2. जानवरां नैं मारणो बंद करण रो आदेस जारी करियो–
   (अ) चंद्रगुप्त विक्रमादित्य। (ब) राजा भोज।
   (स) हर्षवर्धन। (द) सम्राट अशोक ( )
3. हरी खेजड़ी काटण पर जुरमानै रो प्रावधान हो–
   (अ) जोधपुर अर बीकानेर राज में।
   (ब) जैसलमेर अर सिरोही राज में।
   (स) जयपुर अर अलवर राज में।
   (द) किशनगढ़ अर जोधपुर राज में। ( )
4. गुरु जांभोजी विश्नोई पंथ री थापना करी ही–
   (अ) खेजड़ी रै रूंख हेठै। (ब) बोरड़ी रै रूंख हेठै।
   (स) कंकेड़ी रै रूंख हेठै। (द) पींपळ रै रूंख हेठै। ( )
5. जोधपुर राजा रै किण दीवान खेजड़ली सूं खेजड़ी काटण रो हुकम दियो–
   (अ) अभयसिंघ। (ब) गिरधर भंडारी।
   (स) इन्द्रचंद सिंघवी (द) सवाईसिंह चांपावत। ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. गुरु जांभोजी रै मा–बाप रा नांव लिखो।
2. पीपासर मांय किसा महात्मा जलमिया ?
3. जांभोजी री बगत मेड़ता रो शासक कुण हो ?
4. 'ओरण' रो तत्सम रूप लिखो।
5. 'गोचर' किण भूमि रो नांव है ?

छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. जैसलमेर रै रावळ जैतसी नैं जांभोजी किसा दोय वचन पाळण रो आदेस दियो ?
2. पर्यावरण रै संतुलन सारू किसै पांच तत्त्वां रो संरक्षण जरूरी है ?
3. पर्यावरण बाबत जांभोजी रा कोई दोय महताऊ नियमां रा नांव लिखो।
4. खेजड़ी री रुखाळी सारू जोधपुर राज रै किण गांव मांय सै सूं पैली कुण आहूती दीवी ?

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. पर्यावरण नैं सुध राखण सारू कांई–कांई उपाव है ?
2. वन्य जीव अर वणराय रै विणास सूं कांई नुकसाण हुवै ?
3. खेजड़ियां री रुखाळी सारू हुयोड़ा खास–खास खड़ाणां रा नांव लिखतां थकां किणी दोय खड़ाणा रो वरणाव करो।
4. 'पर्यावरण रा पागोथिया' निबंध सूं कांई सीख मिलै ? उजागर करो।

65

डॉ. महेन्द्र भानावत

लेखक–परिचै

डॉ. महेन्द्र भानावत रो जलम उदयपुर जिलै रै कानोड गांव में होयो। जद आप टाबर हा, आपरा पिता श्री प्रतापमलजी सुरगवासी होयग्या। आपरी माता श्रीमती डेलूबाई घणी हिम्मत राख'र आपरो लालन–पाळन कर आपनैं पढाया–लिखाया। आपरी सरूआत री शिक्षा जवाहर विद्यापीठ, कानोड अर जनै गरु कुल, छोटी सादड़ी में होयी। पछै आप बीकानरे रै सेठिया जैन छात्रावास में रैय'र बी. अे. करी अर बाद में नौकरी करता थकां महाराणा भूपाल कालेज उदयपुर सूं अेम. अे. हिन्दी अर उदयपुर विश्वविद्यालय सूं 'राजस्थानी लोकनाट्य परंपरा में मेवाड़ रो गवरी–नाटय् अर उणरो साहित्य' विषर पर पी–अेच डी री उपाधि हासल करी। अबार आप भारतीय लोक कला मंडल, उदयपुर में उप निदेशक है।

लेखक लोक–साहित्य अर लोककलावां रा मानीजता विद्वान अर गवेषक है। सरू में आपनैं लिखण री प्रेरणा आपरा बडा भाई डॉ. नरेन्द्र भानावत सूं मिली। अबार तांई देस री केई पत्र–पत्रिकावां में आपरा 300 सूं ऊपर आलेख छप चुक्या है। क्षेत्रीय अनुसंधान अर संपादन में भी आपरी खास रुचि रैयी है। आप मासिक पत्रिका 'रंगायन' अर छमाही शोध–पत्रिका 'लोककला' रा संपादक है।

डॉ. भानावत री केई पोथ्यां छप चुकी है, जिणां में प्रमुख है– लोकनाट्य परंपरा और प्रवृत्तियां, लोकरंग, लोकनाट्य गवरी, देवनारायण रो भारत, लोकदेवता तेजाजी, मेवाड़ के रासधारी, ताखा अंबाव रो भारत, राजस्थान के तुर्राकलंगी, रामदळा की पड़, काळा–गोरा रो भारत, राजस्थान के रावळ, राजस्थान की भवाई लोककला : मूल्य और संदर्भ, मेहंदी रंग राची, राजस्थान की रम्मतें, ब्रजराज काव्य माधुरी, राजस्थान स्वर लहरी आदि।

पाठ–परिचै

संकलित निबंध राजस्थान री लोककलावां री आछी ओळखांण करावै। लोककलावां री दीठ सूं राजस्थान केई मायनै में दूजा प्रांतां सूं हरावळ है। अठै री देव मूरतियां, पड़ां अर कावड़ां तो विदेसां में भी जबरो नांव कमायो। अठै री सांझीकला आपरो न्यारो ई कलात्मक सरूप राखै। वार–तिंवार माथै तो ढांडाढोरा तक अठै कलामयी जीवण जीवै। अठै रो गरीब सूं गरीब आदमी भी आपरै घर–आंगणै नैं कोर्‌या–सिणगार्‌यां बिनां नीं रैवै। इण कला रै छेत्र में अमीर–गरीब रो कोई भेद नीं है। आ कला कठैई भेद रेखा नीं खींचै। आ अंतस सूं अंतस जोड़ै, हिवड़ा खोलै। इण कलावां रै पाछै सुभाग, आस्था अर रिद्धि–सिद्धि रा जबरदस्त भाव जम्योड़ा है। इण खातर हरेक आप–आपरै मतै सूं आंनैं पूजै सरावै अर सम्मान देवै।

निबंध

राजस्थान री लोककलावां

सूरां अर संतां रै देस सरूप राजस्थान घणो नामी अर जोगो कहीजै। पण लोगां नैं आ ठा कोनीं कै लोककलावां री दीठ सूं भी ओ उत्तो ईज रूड़ो–रंगीलो, लूमो–झूमो अर रिद्ध–सिद्ध रो रंगरेज है। लोककलावां उत्ती ही पुराणी है जित्ती पुराणी मिनख री सभ्यता। घणाई पुराणा जमाना सूं मिनख आपरै हिरदै रै उमावां नैं रंग–रोगन सूं कोर'र तरै–तरै रा भांत–भंतावण अर रूप–रूपावण देवतो रैयो है। टाबरां रा टपरा अर घरौंदा सूं लेय'र बडा–बूढां रा घरा–कोठा तक में लोककलावां रा लाला–मोती देख्या जाय सकै। यां लोककलावां रो वर्गीकरण इण भांत सूं कर्‌यो जाय सकै–

1. वास्तुकला, 2. चित्रकला, 3. मूर्तिकला, 4. मांडणा, 5. थापा, 6. पड़कला, 7. गूउणा, 8. मेंदी, 9. काष्ठकला, 10. विविध कलावां।

वास्तुकला

राजस्थानी लोकजीवण में लोकदेवता री मानमनौती अर आस्था घणी जबरी है। इण वास्तै आं रा देव मन्दिर भी केई तरै री कारीगरी सूं बणाया जावै। बेंतरा छाजा, अगर री लकड़ी रा चौगटा अर चंदन रा किंवाड़ अर वांरी बणगट अर कारीगरी असी करी जावै कै जिणरो कोई मोल नीं आंक्यो जाय सकै। देवळ–मिंदर ई क्यूं, आपणै रैवा आळा बंगला भी घणाई कलात्मक ढंग सूं बणाया जावै। लांबा–लांबा बांसड़ा नैं चीर'र बेंत रा चिकणा अर पतळा भाग सूं आंनैं बांध्या जावै अर पान'र आत रा माना सूं उणरो छपर छवायो जावै। मोटा लोग बजर कंवाड़ां री मेड्या बणवाय'र लकड़ी रा केई तरै रा बारीक काम रा गोखड़ा बणवावै। मेवाड़ी ख्यालां में भी राणीजी सारू बांस–बल्यां रो बंगलो त्यार कर्‌यो जावै जिण मांय सूं टेरां देवता थका राणीजी नीचै उतरै। तुर्राकलंगी ख्यालां में अट्टालीनुमो आलीसान मंच बणायो जावै। मंच माथै बीस–बीस फुट तांई ऊंची अट्टालिका बांधै ज्यांनैं रंग–बिरंगी फरियां, कोर किनार्‌यां अर कपड़ा–लत्तां सूं सिणगारी जावै। आं अट्टालिकां नैं झरोखा अथवा म्हैल भी कैवै।

चित्रकला

चित्रकला में खास तौर सूं भींता परला चित्रां रो घणो महत्त्व है। सबसूं घणा चितराम ब्याव–शादियां पर मांड्या जावै। आं चित्रां में तोरणद्वार हाथी, घोड़ा, ऊंठ, छड़ीदार, चंवर ढोळती अर आरती करती लुगायां, घर में भींतां पर लिछमीजी, गणेशजी, पतंग उडावतो थको छोरो, भौजाई रै डावा पग रो कांटो काडतो थको देवर, घट्टी फेरतो थको व्याई अर मूसळ चलावती व्याण, मुगदर घुमावतो पैलवान, पाणी में न्हावती गोपियां अर उणां रा गाभा चुरावणिया बांसरी बजावता किसनजी जस्यां रो जाणै कमेरो उमड़ पड़ै। इण चित्र पांडउ पूती भींतां पर नारेळ री काचल्यां या गायां रा सरावाळ्या में भांत–भांत रा रंग त्यार कर खजूर री डाळी री कूंची सूं कोर्‌या जावै। रंगां में रचका नैं पीस'र लीलो, हळदी में नींबू न्हाख'र रातो, डाडम रा छोंतरां नैं उकाळ'र पीळो, हीराकसी अर काजळ सूं काळो, थपड़्या में डाडम रो छोंतरा भेळा अर मूंगीयो रंग त्यार कर्‌यो जावै। अै रंग इस्या पक्का अर गहरा होवै कै केई बरसां तक नीं तो भींतां सूं ऊतरै अर ना मगसा पड़ै। अबै तो केई रंग अर केई ब्रुश सब बणावणिया मिल जावै, इणी वास्तै चितारै (चित्रकार) नैं किणी बात री माथाफोड़ी नीं करणी पड़ै।

मूर्तिकला

लोककलाकार मूर्तियां बणावां में बडो चतर होवै। लकड़ी, पत्थर, माटी अर धातुवां री केई तरै री देवी–देवता अर दूजा जीवां री मूर्तियां अर खेल–खिलोणा घणाई मन लुभावणा लागै। आं में माटी री मूर्तियां री कला घणी सरावण जोग है। काळागोरा सूं लगाय'र ताखाजी, धरमराज, लालांफूलां, आमजमाता, रेबारीदेव, नारंसिघी, खाकल, सांडमाता, खेतरपाळ, पीपळाज, कूकड़ामाता अर काळका माता री हिंगाणा गांव–गांवां रै देवरा–देवरा में थरपी जावै। केई लोग देवी–देवतावां रा नांव बणा'र आपरै गळा में बांधै।

मांडणा

आंगणै पर जिका चितराम मांड्या जावै वै मांडणा कहीजै। मांडणा मांडवा पैली आंगणा नैं गोबर–पीळी सूं लोपी चूपीनै सापसूप बणायलै पछै आधा सूख्या अर आधा आला आंगणा पर लुगायां रूई रा फोया नैं पांडू रै पाणी में बोल नै आपणी देवळ पूजणी आंगळी सूं मूंडै बोलता मांडणा मांडै। कोई वार–तिंवार हुवो, मांडणा तो अवस करनै मंडीजैला। बिगर मांडणा आंगणो भूंडो लागै अर खावा नैं दौड़ै। आं मांडणां में दीवाळी माथै सोळा दीवा, चोक, बीजणी, पान, डाका, पगल्या, फूल, हीड, ताकड़ी, सांठा, पावडी सांत्या, रथ, जळेबी, मुरकी नै गायां रा खुर, होळी रा चंग, खांडा, घेवर, ढोलकी नैं कंवळ रो फूल , तीज्यां गणगोर्‌यां पर चौपड, गौर रो बेसर नै गुणां, मांडा–सादी पर सीतळा माता, गळीचो अर

फूलड़्यां अर ब्याव पछै पैलीपोर , लाडी जद आपणा पीयर सूं सासरै आवै तो वीं दिन भी सुभ सकून रा चौक, फळ, सात्या अर आंरै आजू–बाजू नाना–नाना दीवा, कुलड़्यां, झाड़, वाटका, चड़ी–चरकला नै जळेब्यां मांडी जावै। कैवत में कैवै कै कंवळ सूं ज्यूं पाणी री, फूल सूं ज्यूं धरणी री अर बरात्यां सूं ज्यूं ब्याव री सोभा व्है ज्यूं ई मांडणां सूं घर–आंगण री सोभा अर सुवाग गिण्यो जावै।

थापा

हाथ री आंगळ्यां रो थापो देईनै उपरै जो चित्र कोर्‌या जावै वांनैं थापा कैवै। अै थापा कंकू, काजर, हरद, हिंदूर, गेरू अर अेपण सूं बणाया जावै। लुगायां उणां थापा नैं कोरनै आपणा वरत पूरा करै। करवा चौथ, चूरमा चौथ, राखी, नागपांचम, सीतळा सातम, होई आठम, दीयाड़ी नम, गणगौर अर दसा माता पर तरै–तरै रा थापा कोरनै वरत कथावां कहीजै।

सरदा रै पूरै पखवाड़ै छोर्‌यां आपणा बारणां माथै रो दीवार अथवा हडमची री गोरी ऊपर गोबर सूं नित हमेस नुंवी–नुंवी संज्या कोरे अर बन्ने कनेर, कोलो, हजारी नै छोर्‌यां गुल रै फूलां सूं सिणगारै। अेकम सूं अेकताहरा सूं सरू हुयनै ई सज्या दसम तांई पांव–पछेटा, चांद–सूरज, वांदरवाळ, चौपड़, बीजणी, तिबारी, जनेऊ, निसरणी, वयाटका, खजूर, मोर, छाबड़ी अर पंखी रै भांत री संज्या मांडै। ग्यारस नै संज्या रो मोटो कोट गाळ्यो जावै जीमें संज्या री बरात अर नीचै जाडी जोधा, पातळी पेमा, गुजराणी, ढोली, भंगी अर उंदे माथै लटकतो थको खापर्‌यो चोर मांड्यो जावै।

पड़कळा

कपड़ा ऊपर चितराम मांडवा री अठारी भी जगजाहिर है। लोक जीवण में जे सूरवीर आपणा नेकी रै काम सूं देवळ रै रूप में थरपीजग्या वणा री जीवण लीला कापड़ा माथै मांडी जावै। आं देवां में पाबूजी, देव नारायणजी, रामदेवजी नै राम–लिछमण मुख्य है। कपड़ा रा ईज चितराम पड़चितर कहीजै। साहपुरा–भीलवाड़ा रा जोसी लोग ई पड़ां बणावै अर आं पडां रा भोपा गांमा–गांमा गीत गाता अर नाच री संगत सूं रात–रात भर जगैरो करनै आं में कोर्‌या मुजब अेक–अेक चित्र रो उलथावणी करै। लोगां नैं विस्वास है कै पड़ बंचायां पछै कोई भी पिराणी मांद मौत रो शिकार नीं हुवै। अै पड़ां पचास–पचास हाथ तांई लांबी व्है। कपड़ा पर पछवायां कोरवा रो भी अठै जोरदार काम है। अै पछवायां वै णव मिंदरां में भगवान री मूरत पिछाड़ी लगाई जावै। पछंवायां वणावां में नाथद्वारा रा कारीगरां री कोई होड नीं करी सकै।

गूदणां–मैंदी

सरीर ऊपरला मांडणा में गूदणां अर मैंदी मांडणा खासमखास है। आदमी रै मर्‌यां पछै वीं रै सागै कोई धन–संपदा नीं जावै। अस्यो विस्वास है कै गूदणा अर मैंदी हीज वीं रै सागै जावै। ओ हीज कारण है कै हर आदिवासी लुगाई आपणा सरीर पर तरै–तरै रा गूदणां गूदावणो आपणो पैलो धन–धरम समझै। गूदणां अर मैंदी दोई सुवाग रा चित्र है। चावै कोई वार–तिंवार अर मंगळ ओछब व्हो, लुगायां मैंदी रा हाथ अवस रचावै। मैंदी रा गीत भी केई, अर भांतां भी केई, भांत–भांत री मैंदी अर भांत–भांत रा गीत। चावै गरीब घराणा री व्हो चावै अमीर घराणा री, मैंदी सब रै ई हिवड़ा री हांसज कहीजै। मैंदी हाथां री कळाई सूं लेय'र पगां री पींड्यां तक देवण रो रिवाज है। इणरी भांतां में मोरकलास, छैलभंवर री भांत, चौकड़ी चटाई, सोपारी, ओछाड, गुणा, फीण्या–फूल, चूंदड़ी, केरी रो झाड़, भमरो, घेवर, चंग, कुंभकळस, रुपया भांत, बाजोट, तारा, पतासा, बीजणी नै मैंदी रो झाड़ सबां सूं ज्यादा सरायो अर मांड्यो जावै।

काष्ठ–कला

लकड़ी री बणी चीजां परली कारीगरी भी देखतां ई बणै। भांत–भांत री पुतळ्यां सूं लेईनै गणगौर, ईसर, तोरण, बाजोट, कावड़, हिंगळाट, ढोलिया, लंगुर्‌या, देवी–देवता, चौपड़ां, खांडा, देवदास्यां,

वेवण, मुखौटा, जंतरबाजा, कठपुतळ्यां नै गीगला रो गाडो, घोड़ा कोर्‌या चितर्‌या अस्या लागै जाणै आंनैं बणावा वाळो तो कोई भगवान री दरगा रो ईज आदमी व्है सकै।

विविध कलावां

होळी माथै छोर्‌यां होळी माता रै खातर गोबर रा वडूल्या अर चूड़ी, रखड़ी, नेवर्‌यां, टणका तमण्या, हथपान, सिंघाड़ा, कापडा, सोपारी, कांगसी, जीभ नै नारेळ रै रूप में गैणला बणा'र आंरी माळा कर होळी नैं पैरावै अर गीत गोठां करै। सकरांत नैं भी तरै–तरै रा सकरांतड़ा बणाया जावै। लुगायां गोबर ले'र आपणी चूड़्या–बींट्यां रा निसाण पाड़ै। दोई हाथां री मुठियां भेळी कर गाय, बळद अर छारी रा खुर मांड, अंगोठा सूं सात्या, पान नै बारीक–बारीक थापा बणावै अर आं सबनै पूज्यां पछैई घरलिछम्यां अपणो वरत खोलै। रंग्याथका चांवळां रा भी मिंदरां में तरै–तरै रा चौक पूर्‌या जावैं केई जात्यां में मानव रै मर्‌यां पछै संखाढाळ में चांवळा रो वैकुंठ, रामदे रा पगल्या, काळा–गोरा भैरूं, रूपांदे, तोळांदे, सुगना, डाळी, हड़मान, अंबाव, तरसूळ नै वासग बणाया जावै।

दन भर काम कर्‌यां पछै रात नै सुवा नै खाट रो आसरो लेणो पेड़ै। पण आ वात कदी सोची कै खाट री बुणावट भी अेक ऊंची कळा है। मैंदी अर मांडणां री तरै सूं खाट भी लेरिया, चौपड़, डाबा, पुतळी चौकड़ी, जसी भांतां में बुणी जावैं अेक भांत बेवजो तो अतरी बारीक व्है कै अणी पर जवार रा दाणा बखेर दो तोई अेक दाणो नीचै नीं पड़ सकै। केई बडाबूढां री जबान सूं आ बात भी सुणवा नैं मिलै कै अेक सांप री आकरती री बुणाई भी व्है। असी बुणाई री खाट ऊपर कदैई सांप नीं चढै। मिठायां में भी लोककलावां रा केई रूप देख्या जाय सकै।

लोककलावां रो ओ पसार तरै–तरै री धातुवां अर हाथी दांत री बणी चीजां, रंगाई, छपाई, सिलाई, सलमा–सितारा, गोटा–किनारी आदि सैकड़ां रूपां में देखण नै मिलै। आं कलावां रै पिछाड़ी आपणी संस्कृति रो लंबो इतिहास जुड़्यो है। परिवार, समाज अर देस रा सगळा धरम, करम, रेण–सेण, खाण–पाण, राग–रंग अर जीवण रा केई आदर्श आं कलावां में घणी चतराई अर बारीकी सूं कोरीजग्या है। अै कलावां देस री भावनात्मक अेकता अर सुख समरिध री सांची साख देवै है।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थान नैं रंगरेज कैवण सूं इण प्रदेस री कांई विशेषता प्रगट होवै ?
   (अ) सूरां अर संतां रो देस।
   (ब) पदमणी स्त्रियां रो देस।
   (स) रंगरेजां री बस्ती रो देस।
   (द) भांत–भांत री लोककलावां रो देस। ( )
2. जका सूरवीर आपणा नेकी रै काम सूं देवळ रै रूप में थरपीजग्या, वांरी जीवण–लीला कपड़ा माथै मांडी जावै' इण कला नैं कांई कैवै ?
   (अ) पड़। (ब) थापा।
   (स) मांडणा। (द) गूदणां। ( )
3. 'दोई सुवाग रा चित्र है।' अै दो चित्र किसा है ?
   (अ) मैंदी अर थापा। (ब) मांडणा अर पड़।
   (स) मांडणा अर पड़। (द) गूदणां अर मैंदी। ( )

4. लोककलावां में 'थापा' मांडणै सूं आशय है–
   (अ) गोबर थापणै सूं।
   (ब) हाथ री आंगळ्यां रो थापो मांडणो।
   (स) मांडणा मांडण वाळी नैं थापी देवणी।
   (द) थापी सूं आंगणो जमावणो। ( )

5. आदिवासी लुगायां आपरो पैलो धरम समझै–
   (अ) हरैक तिंवार पर वरत राखणो।
   (ब) शरीर पर गूदणां गुदावणो।
   (स) हाथां में मैंदी रचावणो।
   (द) गैंणा–गांठा धारण करणो। ( )

साव छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. लोककलावां रै पाछै किण तरै रो भाव जुड़्योड़ो है ?
2. हळदी में नींबू मिलायनै किसो रंग बणाईजै ?
3. होळी माथै छोर्यां किणरी माळा बणायनै होळी माता नैं पैरावै ?
4. डॉ. महेन्द्र भानावत री लिख्योड़ी किणी दो पोथ्यां रा नांव बतावो।

छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'पड़' कुण बांचै अर किंयां बांचीजै ?
2. मांडणा मांडण सूं पैलां लुगायां नैं कांई–कांई करणो पड़ै ?
3. तीज–तिंवार माथै किण भांत रा मांडणा मांडण रो रिवाज है ?
4. नीचै लिख्योड़ा सबदां रा तत्सम रूप लिखो–
   सात्या, सुवाग, सराद, संज्या, घरलिछमी
5. इण पाठ में छप्योड़ी किणी पांच लोककलावां रा नांव लिखो।

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'देस री भावनात्मक अेकता अर लोककला' विषय माथै सौ सबदां में अेक लेख लिखो।
2. गूदणां अर मैंदी मांडण री लोककला नैं विस्तार सूं समझावो।
3. राजस्थान में भित्ति–चित्र उकेरण री लूंठी परंपरा रैयी है। इण कला री खासियतां विस्तार उजागर करो।
4. 'लोककला री दीठ सूं राजस्थान घणो रूड़ो–रंगीलो है।' खुलासो करो।

70
सुमेरसिंह शेखावत

लेखक–परिचै

श्री सुमेरसिंह शेखावत रो जलम सीकर जिलै रै सरवड़ी गांव में होयो। आप हिंदी में अेम. अे. अर बी. अेड. री परीक्षावां पास करी। आप राजस्थान रै शिक्षा विभाग में अध्यापक है।

राजस्थानी अर हिंदी रा साहित्यकार श्री शेखावत साहित्य री सगळी विधावां पर कलम चलाई है। आपरै लेखन पर दरसण अर मनोविग्यान री गहरी छाप है। आपरी काव्य–पोथी 'मेघमाळ' घणी चरचा में रैयी। 'रावळै री रातां' अर 'देवळ कंकाळी' आपरी दूजी चरचित कृतियां है। आपरै लेखन में विचारां री मंजावट अर मायड़ भाषा री मठोठ सरावण जोग है।

पाठ–परिचै

संकलित निबंध 'राजस्थानी निबंध संग्रह' सूं लियोड़ो है। इणमें लेखक राजस्थान री प्राकृतिक विशेषतावां रै सागै मान–मरजादा अर आण–बाण पर मिटण आळा सूरां, संतां, अर कवियां रै दरसण री व्याख्या करतां थकां गूढ चिंतक बणग्यो है। तुकांत गद्य खंड, उपयुक्त विशेषण, भावात्मक शैली अर प्रवाहपूर्ण भाषा रै कारण इण निबंध री आधुनिक राजस्थानी साहित्य में ठावी ठौड़ है।

निबंध
राजस्थान अर उणरो जीवण–दरसण

राजस्थान भुजबळियां री धरती, सतवंती पदमणियां री पिरथी अर वाणी रा वरद सपूतां री जंगळ–मंगळ मरुधरा, जिणरै रुतबै रा सिखर अंबर सूं अड़ै अर साख री जड़ां पताळ में बड़ै। मिनख–मानवी अैड़ा कै भुजावां पर भवानी हिलोरा लेवै, जिणरी कीरत कथावां ख्यातां में भणीजै अर बातां में सुणीजै। आण पर जीवै अर बाण पर मरै। वाणी रो ओज अर सरीर रो तेज इसो कै सीस बिहूणा धड़ जूझै अर धड़ बिहूणा मुंड मुळकै। रजपूती अर मजबूती रै भरोसै आयै दिन मरण तिंवार मनै अर जस कीरत रा गायक जाचकां नैं माथां रै आखां री तिंवारी घालीजै। बगत पड़्यां जौहर री चितावां नै दीवटिया बणा'र देह रा दिवला धरीजै, ज्यारै धप–धप दिपतै चांदणै में जीवट रा अमर आखर लिखीजै। कथणी अर करणी में अंतर नीं, जीवण–मरण दोनूवां रो निस्काम भावना सूं वरण करै।

राजस्थान रो लोकजीवण हिवड़ै री धीर मंथर भावना री रसधार सूं सिंचीज'र तिरपत हुवै अर उणरै बेग री बाढ में ऊफणै–छळकै। पण ओछा विचारां री खाज–खुदळी नै खोरतो–खुजळातो कूकर री जूण नीं जीवै। अपणै भोळैभाळै सुभाव रै अंध विश्वासां री अेकांत गुफावां में नाहर री निश्चिंत निंदरा में जरूर उघै, पण झूठ–पाखंड री काळी खोडां में हिडकै ल्याळी री जिंयां भरणभट हुयां भुंइजतो कोनीं फिरै। चापलूसी रै विष री लील उणरै रातै रगत में कदै व्याप नीं सकै।

राजस्थान री धरती गोरा धोरां री, मगरै अर मोरां री। दिन में ऊकळै, रात नैं ठरै। बा'रा बा'रा कोसां थळी री काळी खोड़ा अर हर्‌या–भर्‌या मेवाड़ी भाखर इणनैं जंगळ–मंगळ बणावै। कदै आथूणी कूंटां सूं काळी–पीळी आंधी आवै तो कदै उतराध कांनी सूं घूमर घालती कळायण उमटै। सावण में अठै री परकत ओढी–पै'री नवल बनड़ी–सी ओपै तो फागण में आटी–पाटी ले'र सूती दुहागण–सी लागै। सरद पुन्यू री रातां नैं अठै री उनाळी रातां मात करै। बरसाळै री रुत छातां पर चढ–चढ'र मोर वारणा–सा लेवै तो सीयाळै आकास में पंगत बांध'र उडी कुरजड़्यां री सुरां में 'सोरठ' अर 'निहालदे'

रा गीतां सूं गूंजै तो रेवड़ां रा टण–मण बाजता टोकरा सूनसट दो'पारी रै सरणाटै नैं मुखर बणावै। झांझां–सी झणकै ज्यूं भूखा–तिसाया टाबर ठणकै। जाणै रीता घड़ा झबळकै तो संझ्या रै समै मिंदर देवरा झालर अर नगारां सूं गरणावै जद जाणै असाढ रा बादळ गाजैं बूंदी रा नवहत्था नाहर, सुलखणा नागौरी खांप रा बैल्या अर बीखां बैवणा बीकानेरी ऊंट मरुभोम रै सूरापण, सील अर मदमस्ती रा प्रतीक। पाणी–पतसळा पण पीवणियां रै जीवट रा सीस सिखर आकासां डीघा, गांव–गांव में देवळ, कांकड़–कांकड़ में पगल्या, सतियां अर जूझारां री जस गाथावां कैवै। कण–कण रगत झकोळ्यो अर पग–पग तलवारां भिणियो जिणां रो कोई जवाब नीं। जुगां जूनी, खळां सूनी, बंजड़, पड़ती ऊपर उजाड़, आ राजस्थान री धरती, जिणरो पत–पाणी'र सातू समदरां रो जळ सोसणिया अगस्त रिसी रै भी गळै में अटक जावै। इण वास्तै आ रणबंका भुजबळियां री धरती अर जौहर करण वाळी पदमणियां री पिरथी बाजै।

राजस्थानी नर–नाहर मरदानगी रो महारथी, पुरसारथ रो हिमायती, वीरता में बेजोड़। सूरवों इसो कै मरणनै मर जावै पण पीठ नीं दिखावै। सुगरापण री मरजाद राखै अर नुगरो नीं बणै। आपणां आगै अपूठो पण अरियां सांमो आघो। रजवट री रीत जीवट रै भरोसै जीवै मरै। अपणी सींव रुखाळै अर परायी टाळै। जिणरो निपज्यो अन्न–जळ भोगै उण धरती माता री हदां परायै पगां उलांघण नीं देवै। जिण जामण रा बोबा चूंघै उणरै दूध नैं नीं लजावै। बांकड़ली मूंछां पर पाण पटकै तो जाणै काळ रा केस खींच रयो होवै कै उणांरै अेक–अेक बाळ री कीमत कूंत रयो होवै। दाढी पर हाथ फेरै तो जाणै जवानी अर रवानी रो पाणी परख रयो होवै कै बुढापो आयां पैली रो ओसर ढूंढ रयो होवै। केसरिया बागो, कसूमल पाघ अर हथियारां सूं लैस अर असवारी नैं घुड़लो–ओ राजस्थानी बीर रो परंपरागत रूप–सरूप। माथां रै मोल हार–जीत रो निरणै होवै। भरोसो करै तो भुजावां रो, पण विश्वास में अर कंठ कटानो भी पाछो नीं सिरकै। हिम्मत रै पाण धरती लाटै अर मैनत मजूरी रै बूतै जमारो काटै, पण ओसर सारू रातै रगत सूं होळी खेलतां भी नीं झिझकै। संतोसी सभाव, पण अड़ जावै तो आगलै नैं छठी रो दूध याद दिरा'र मानै। महाभारत रा वीरां री आतमावां रा जे कठै दरसण हुवै तो राजस्थान में। बाळू रेत सरीखो ठंडो घणो तो गरम होतां भी जेज नीं लागै। नर ही कांई, सांचकलो नाहर,। रजपूती अर मजबूती नैं वैरी भी सरावता–सरावता नीं अघावै। जीं रो खावै, उणरी पूरी बजावै।

राजस्थानी रमणी उनाळै रै तावड़ै में तपै अर लूवां लागै तो उणरी कंवळी काया छुई–मुई री ज्यूं कुमळावै, पण चिता री अगनी रै धप्पड़बोज में गंगा–सिनान रो आणंद लूटै तो रूं–रूं हुळसै अर निखरै। घूंघटियै रो पल्लो उघाड़ै तो सोळा सूरज ऊगै अर अंधारो सैंचनण हुवै, पण विकराळ बण'र कोप करै तो रणचंडी–सी लागै। रीझै तो चंदरकांत मणि–सी दीखै अर खीझै तो सामीं झांक'र नीं देखै। तूठै तो सरवर वारै अर रूठै तो ब्याज समेत बदळो ले। पत रै पाणी सत री काती न्हावै। जिणरै सूंवै लिलाड़ सुहाग री बिंदी जाणै भोर रै आकास में सूकर तारो धप–धप दीपै। गोडा ताणी झूलती बैणी जाणै बासक नाग उणरी सील–संपदा री रुखाळी कर रयो हुवै। कटीला नैण, जाणै सपेती रै मिस सत नैं उजाळै, ललाई रै ब्याज नेह री लाली रचावै अर काळिमा रै बहानै धीरता अर गंभीरता री गहराई जतावै। बाफणा भंवारां रो परस करै तो जाणै उडण नैं आतुर भंवरां री पांखड्यां हुवै। गोर–निछोर चंद्रबदन सूं सालीनता फूटै, जाणै सरद पून्यू री चांदणी निखर री हुवै। सोळा सिणगार कर'र मधरी चाल चालै तो मस्ती रा हस्ती मारग छोड'र निरखै। जिणरै आंचळ रै दूध री धार सूं चट्टान फाटै अर पीवण वाळा नरसिंघां री दहाड़ सूं अरियां रा काळजा बैठै। आं पदमणियां रा जौहर इतिहास में अनूठा अर बेमिसाल। नारी कै ना'री। अबळा नहीं सबळा। अेक माटी री अनेक, जाणै ममता री मूरत री सरबव्यापी छाया, पण माया नहीं, जाया। पदमणी भी, चनण भी। कामण भी अर जामण भी। जिणरै दूध री तासीर संजीवणी सगती जिसी अर सील री मरजाद लिछमण रेखा जैड़ी, बा राजस्थानी रमणी।

राजस्थानी रिचाकर अर कवि, रवि री किरणां जठै पैठ नीं होवै, उठै पूगै अर भावना रै अथाग रतनाकर में चिुबकी लगा'र भावां रा लाखीणा मोती सोधै, ईं वास्तै बांरी बोली नैं लाखीणा बोल कैवै। ज्यांरी वरद वाणी मुरदां नैं जगावै अर जीवतां नैं अमरता रो मारग बतावै, बै तलवारां सूं बेरियां रो निनाण कर'र सूरापण री साख निपजावै अर वीरता री भावभीणी रसधार सूं सींच'र जीवण रा अमरफळ पैदा करै। कलम, खड्ग अर विश्वास रा धणी में सुरसत, भुजावां में भवानी अर आतमा में असीम रो अणहद आणंद निवास करै। जीवट रै गायक अर समरभोम रै नायक कवि री कविता पागल रो परळाप कोनीं, आतम रो उतकर्स हुवै। वाणी जीभ पर बैठ'र सांसां री सरगम पर जगजीवण नैं सरसावै। वीर, सिणगार अर करुण रसां री तिरवेणी सो बांरो साहित्य जिकै में अवगाहण करणिया इण लोक में निस्काम भावना रै करमजोग री प्रेरणा लेवै अर परलोक भी सुधारै। राजस्थान रा अै समरथ गायक ऊंचै सूं ऊंचां सुरां में जगजीवण री सच्चाई नैं परगट करै जिकी स्रोता रै मरम नैं सीधी परसै। बांरै वाक्–बाणां रो निसाणो अचूक पण असर संजीवणी रो। पतो नहीं अैड़ा किताक ईसरदास, पिरथीराज अर सूरजमल सारखा नखतर आपरी किरत्यां रै साथै ढळ्या अर बिसर्या। सर्जणा करणो बांरो धरम अर सार संभाळ राखणो पाछलां अर पीढियां रो फरज। और देसां में इण्या–गिण्या कवि हुया तो अठै पूरी जमात अर जात–चारणां अर बारठां री, ज्यांरै वीर रस रै साहित्य री टक्कर रो साहित्य किणी दूजी भाषा में सिरज्यो नीं गयो। कवियां री इण जमात रो काम बळिदान अर विश्वास रा संस्कार जग जण में जगाणो, जिकै नैं अै पूरी तरै निभायो।

तो, तलवार री धार पर जीणो, बळिदानी भावना रो आसव पीणो अर रातै रगत री रणगंगा में सिनान कर'र तातै लोही सूं पुरखां रो तरपण करणो राजस्थान रो परम धरम अर चरम रयो। जिणरी निजरां में 'करलै सो काम अर भजलै सो राम'। काम–आराम री इण सीधी–सादी अर बेलाग परिभाषा में राजस्थान रै जीवण–दरसण री संपूरण भावना झळकै। स्यात काम अर राम री इत्ती व्यापक व्याख्या संसार रा बीजा दरसण–ग्रंथां में नीं मिलै। गीता अर उपनिसदां रै करमवाद, ईस्वरवाद दोनवां नैं दो पद में संजो देणो राजस्थानी दारसणिक रिचाकार री सामरथ परगट करै। गीता अर उपनिसदां रै दरसण नैं सरल अर सरस बणा'र अठै रो लोकमानस अपणायो। काम बो जिको करणै जोग अर राम बो जिकै नैं अंतरात्मा मानै। काम करणै सूं लोक अर राम नैं भजणै सूं परलोक सुधरै। काम करण रै साथै राम नैं भी भजै तो सोनो'र सुगंध। 'करलै काम रो' अरथ ओ भी काम बुरो कोनीं, अलबत करतां भला ही बुरा बाजै। काम अर अकाम रो भेद अपणो अपणी धारणा अर विस्वासां मुजब हुवै। इणीं भांत भलै–बुरै रो निरणै करता रै विवेक पर छोड'र राजस्थानी दरसण करम नैं महता देवै। भजलै सो राम रो मतलब कै आस्था रो ही नांव ईस्वर। फेर कांई औ अर कांई बो, मन मानै सो। पण पतै री बात आ कै इण रिचा रो पैलडो पद नास्तिक भौतिकता अर दूसरो असि रो समन्य और भी चोखो रैवै। सारा मत–मतांतणरां सूं परै इण रिचा री व्यापकता अर सूझ–बूझ रै पाण आ निस्पक्ष मानता राजस्थानी रिचाकारां नैं गूढ चिंतण अर दूर–देसां रा धणी दार्सणिकाएं री पैलड़ी पंगत में ल्या खड़्या करै।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. जिण रो खावै, उणरी पूरी बजावै।' इण कथन सूं वीर रै चरित री कांई खूबी प्रगट होवै ?
   (अ) सूर–वीरता। (ब) कर्तव्यपरायणता।
   (ब) स्वामीभक्ति (द) ईमानदारी।
2. रवि री किरणां री पैठ नीं होवै, उठै कुण पूगै ?
   (अ) कवि। (ब) वीर।
   (स) देसभगत। (द) स्वाभिमानी।

3. लेखक री दीठ सूं राजस्थान रै जीवण–दरसण री संपूर्ण भावना किण उक्ति में झलकै ?
   (अ) जिणरो खावै, उणरी पूरी बजावै।
   (ब) हिम्मत रै पाण धरती लाटै अर मैनत मजूरी रै बूतै जमारो काटै।
   (स) जिण जामण रो बोबा चूंघै उणरै दूध नैं नीं लजावै।
   (द) करलै सो काम अर भजलै सो राम।
4. महाभारत रा वीरां री आत्मावां रा दरसण हुवै–
   (अ) राजस्थान में। (ब) गुजरात में।
   (स) दिल्ली में। (द) हिमाचळ प्रदेस में।

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थान री धरती री कांई विशेषता है ?
2. ईसरदास, पिरथीराज अर सूरजमल कुण हा ?
3. 'रजपूती अर मजबूती' रो अरथ बतावो।
4. 'हिम्मत रै पाण धरती लाटै।' कुण ?
5. 'गोरा धोरां री, मगरा मोरां री', किणरै वास्तै कथीज्यो है ?

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थान रो परम धरम अर चरम कांई रैयो है ?
2. 'राजस्थानी वीर' री दो खासियतां रो खुलासो करो।
3. बूंदी, नागौर अर बीकानेर किण–किण पसुवां सारू प्रसिद्ध है ?
4. नीचै लिख्योड़ा सबदां रा विलोम सबद लिखो–
   रीझणो, दुहागण, तावड़ो, तूठणो, अबळा, मुरदो।
5. नीचै लिख्योड़ा तद्भव सबदां रा तत्सम रूप लिखो–
   आखर, तिरपत, पिरथी, सुरसत, सींव।

लेख रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थान रै लोकजीवण री खूबियां रो खुलासो सौ सबदां में करो।
2. 'रजवट री रीत जीवट रै भरोसै जीवै–मरै।' आ रजवट री रीत कांई है ? विस्तार सूं समझावो।
3. राजस्थान री वीर–वसुंधरा री विशेषतावां आपरै सबदां में उजागर करो।
4. पाठ रै आधार पर 'राजस्थान रै जीवण–दरसण' पर अेक लेख लिखो।
5. नीचै लिख्योड़ी दोनूं उक्तियां री व्याख्या करो–
   (अ) करलै सो काम, भजलै सो राम।
   (ब) जिण रो खावै, उणरी पूरी बजावै।

अबखा सबदां रा अरथ

इकाई : अेक

रामदेव तंवर री वात

पातसा = बादशाह। कोट = दुरग। वित्त = धन–संपदा। चढिनै = चढाई करनै। दीठो = देख्यो। परणायी = ब्याव कर्‌यो। पोहकरण = पोकरण। राकस = राक्षस। कितरेक दिनां = केई दिनां। ऊनो = गरम, तातो। ऊफणियो = उफण्यो। विरततं = वृत्तांत। दड़ियां = दड़ी , गेंद । वसायी = बसायी।

इकाई : दो

गाय

सारै = कैया में, कैयो मानण वाळो। चाख रै टूण = अठै इणरो अभिप्राय बुरी निजर सूं है। हठी = अठै इणरो मतलब मजबूत डील कै हाडकै सूं है। ईरखा = ईर्ष्या। सैणप = सीधापन, सैणापन, सरल। हकीगत = हकीकत, वास्तविकता। अभड़–छोत = छूआछूत ।

रजाई

सीरख = रजाई। टापरौ = कच्चो मकान, घास–फूस रो घर, झूंपड़ी। विखा = विपदा, कष्ट। बगारौ = तीणो, खाडो। खामचाई = हथौटी, हस्तकळा, हाथां सूं बणियोड़ी । घासियौ = गद्दो, मोटो बिस्तर। लचकाणौ = झेंपणौ। सुभट = स्पष्ट, साफ, चौड़ै परगट। धिरगार = धिक्कार। मैंणी = कटुवचन, तानो, व्यंग्य। कंवळी = मुलायम, कोमल।

बंटवारो

कारून्दा = कर्मचारी, गुमास्ता। बाखळ = घर रो बारलो चौक, छत रै आगै बण्योड़ो। बखारी = भखारी। बरजतां–बरजतां = मना करतां–करतां। रूखाळौ = रिछ्या करणियो, पौ'रैदार। जेवड़ी = रस्सी। बांथा–झोड़ = द्वन्द्व युद्ध, गुत्थमगुत्था, झिकाळ।

सोनै रो सूरज

हुबड़ास = उमस, अमूझियोड़ौ वातावरण। अंणूतो = अति, उद्दण्ड। गूंजियै में = जेब में, पाकेट में। गळगचिया = अधिक घी युक्त भोजन। कोर = कवो। दर ई = बिलकुल नीं, अंगै ई नीं। बुरकाय = भुरकणो। अणी = कोर। हाथूंहाथ = उणीं बगत, तुरंत। मगसो = मंद, तेजविहूणो। हिंवळास = हियै रो हेत।

इकाई : तीन

पाणी आडी पाळ

करकस = कड़वी, कानफाड़ू लपरजीभी = घणी बोलण वाळी, जिणरी जबान कतरणी ज्यूं चालै। उपाळा = पैदल। फेम = होस। जेवड़ी = डोरी। जाबक = बिलकुल। रोळा = हाका। लड़दा = अेवड़ रा पसु। बेराजी– नाराज। दाळदी = दरिद्री। पूठा = पाछा। दाकल = डाट–फटकार, ललकार। हळाबोळ = सराबोर।

इकाई : चार

समझ रा झाड़

फलाण = अमुक, फलाणो। सेवट = अंत में, छेकड़, आखिरकार। मूसाकड़ = बुझाकड़ अठै 'लाल बुझाकड़' सूं मतलब है, लाल बुझाकड़ अेक कैताणो है। पड़ूत्तर = प्रत्युत्तर। बेलीपो = मित्रता। कोतक = आडम्बर सूं मतलब है। भोळप = भोळपणो।

गुरु शिखर सूं

मनख = मिनख, आदमी। अतना = इतरा, इत्ता। सिरधा = श्रद्धा। ठाम = जाग्यां, ठौड़। अश्या = अैड़ा, इंयां। कश्या–कश्या = कैड़ा–कैड़ा। आशंकान = आशंका। कदी = कभी, कदैई। तड़कै–तड़कै = परभातै, सुबै–सुबै।

इकाई : पांच

साहित्य अर उणरा भेद

वेळा = समय। नेपा = उपज, पैदावार। सिरमौब = सिरमौड़। सदैई = सदैव, हमेस। ओरण = अरण्य। इबरकै = इण बार। धण = जोड़ायत, घरआळी। पांखड़ा = पांख्यां (कल्पना री उडाण भरणै री खिमता सूं)। बोड़ियां = बीनण्यां, बहुआं। दाना मिनख = मनगरा मिनख, पूजता आदमी। खोखा = शमीफळ सांगरी रो पक्योड़ो रूप। वाल्हो = प्रिय। पूंक–बाजरी रा सिट्टा। डांफर = ठंडी हवा, ठारी। वेला = नस्सां, नाड़ियां। किरत्यां = तारामंडळ में तारां रो झुमको।

बचन

खड़बड़ाट = हलचल। गैलसफा = डफोळ, पागल (बुद्धिहीन)।

पर्यावरण रा पागोथिया

घावै = प्रहार करणो। खडाणो = बळिदान रो उछब। बिरछ = रूंख, पेड़। ओरण = अरण्य (वा गोचर भूमि जिण मांय पेड़–पौधा है अर वांनैं काट्या नीं जावै)। आभो = आकास। बणराय = वनस्पति।

राजस्थान री लोककलावां

रूड़ो = रूपाळो, सुनहरो। चौगटा = चौखट, मुखोटा। सणगारी = शृंगारित। चितराम = चित्र। मुगदर = घोटो, पै'लवानी सारू। गोखड़ा = गवाक्ष। कंवाड़ = किंवाड़, दरवाजो। गाबा = कपड़ा , वस्त्र। चितारो = चित्रकार। थरप्योड़ी = स्थापित। लोपी–चूपीनै = लीपापोती। कंवळ रो फूल = कमल रो पुष्प। कैवत = कहावत। तिबारी = घर रै पिछवाड़ै रो खुलो अर हवादार कमरो। ओछव = उत्सव।

राजस्थान अर उणरो जीवण–दरसण

भुजबळिया = बलवान, भुजबल वाळा। पिरथी = धरती। जीवट = जिंदादिली। कूकर = कुत्तो। आखर = अक्षर। ल्याळी = भेड़। भुंइजतो = भटकतो। रगत = खून, लोही। मगरा = पहाड़, भाखर। दुहागण = विधवा। कळायण = काळी घटावां। उतराध = उत्तर दिसा। अघावै = थाकै कोनीं, बोर नीं होवै। बेणी = चोटी। सपेती = सफेदी। अरियां रा = शत्रुवां रा। सगती = शक्ति। चुबकी = डुबकी। सूरापण = शूरवीरता। समरभोम = जुद्धभूमि। अणहद = हद सूं ज्यादा। पैलड़ी पंगत = पैली पंक्ति, हरावळ में।

पद्य संग्रह

भूमिका

राजस्थानी पद्य : अेक ओळखाण

देस अर समाज री साचीं साख भरै उठै रो साहित्य। साहित्य समाज री आरसी होवै समाज में घट्योड़ी सगळी घटनावां अर थितियां रो वरणन साहित्य पेटै करीजै। किण बगत में प्रदेस री सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक अर सांस्कृतिक दसावां कांई ही ? इणरो खुलासो करै उठै रो साहित्य। आ बात ई चावी कै जिणरो साहित्य सांवठो अर सिमरथ होवै, वो देस –समाज ई सिमरथ होवै।

राजस्थानी पद्य–साहित्य री विषय–वस्तु, प्रवृत्तियां, भाषा अर शैली री ओळखाण खातर साहित्य रै इतिहास री कूंत करणी घणी जरूरी है, क्यूंकै हर अेक जुग री आपरी न्यारी सामाजिक, सांस्कृतिक अर साहित्यिक थितियां होवै। समाज रा ढब अर ढाळा रै मुजब साहित्यकार रचना करै। राजस्थानी साहित्य रै इतिहास रो बगत न्यारा–न्यारा विद्वानां– डॉ. मोतीलाल मेनारिया, डॉ. अेल. पी. टैस्सीटोरी, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया अर पद्मश्री डॉ. सीताराम लाळस आद आप–आपरी दीठ सूं न्यारा–न्यारा काळ–खंडां में बांट्यो है। आं में पदमश्री डॉ. सीताराम लाळस रै राजस्थानी सबदकोस रै पैलै भाग री भूमिका में राजस्थानी साहित्य रै इतिहास रो काळ इण भातं दिरीज्यो है––

आदि–काळ – 800 सूं 1460 वि. सं.।
मध्य–काळ – 1460 सूं 1900 वि. सं.।
आधुनिक–काळ – वि. सं. 1900 सूं लगोतार।

आदि–काळ (800 सूं 1460 वि. सं.)

राजस्थानी भाषा रा विद्वानां अर पाठकां सूं आ बात छानी कोनी कै वि. सं. 835 में जाळौर रा जैन यति उद्योतनसूरि री रचना 'कुवलयमाळा' में 18 भाषावां साथै मरुभाषा रै रूप में राजस्थानी रो उल्लेख होयो है। इणसूं सुभट लखावै कै नौवीं सदी में राजस्थानी रो भाषागत सरूप अर दरजो हो; पण दसवीं सदी रै छेहलै दसक तांई इणरो लिखित साहित्य निंगै नीं आवै। अैड़ो मानण में आवै कै राजस्थानी रो जूनो अर सरूपांत रो सगळो साहित्य मौखिक रूप में चावो हो। इणनैं श्रुतिनिष्ठ साहित्य री संज्ञा दिरीजै। इण भातं रै साहित्य री मौखिक रचना अेक –दूजा रै मूंडै सुण'र किणी तीजा रै केठां ढळ जांवती अर पछै वा रचना कीं चावी अर पछै लोकचावी होय जावती।

जद मरुप्रदेस में चारण जाति रो अस्तित्व ई कोनीं हो, उण बगत फकत नायक अेक अैड़ी जाति ही जिकी आपरा बडेरां सूं सुण्योड़ा गीत अर पवाड़्यां नैं कंठां राखती। गांव–गांव जाय इण जाति रा लोग लोकवाद्यां रै साथै राग–रागनियां में आं पवाड़्यां अर गीतां नैं सुणावता अर अरथावता। इणीज बगत में जोगी अर नाथ ई इण मौखिक साहित्य नैं जीवतो राखण में मदत करी। मौखिक सरूप रै कारण इण बगत रा साहित्य नैं उणरा असल रूप में राखणो घणो दोरो काम हो। उण मांय कीं बातां तो मिट–मिटायगी अर कीं नूंवी बातां जुड़गी, अबै उण रचना रा मूळ सरूप नैं कोई किंया जाण सकै ? जूना साहित्य री थाती नैं मिटतां देख उणनैं उबारण खातर चित्रलिपि री सरूआत होयी। चरित्र नायकां रो पूरो जीवण चित्रां में उजागर होवण लागो। सगळी घटनावां रो चित्रां सूं पूरो मेळ होवतो। चित्रां रै आधार माथै गाइजण वाळा गीतां नैं 'फड़' बांचणो कैवै। राजस्थान रा गोवां में पवाड़्यां अर फड़ नैं बांचण रो काम खास तरै री जातियां रो होवै। चित्रपटां सूं कथा में थिरता तो आई पण मौखिक होवण रै कारण भाषा अर वर्णन बदळता रैया।

दसवीं सदी री सरूआत में सिंध सूं चारणां रै इण मरुप्रदेस में आवण सूं राजस्थानी साहित्य रै इतिहास रो ओ जुग कीं पसवाड़ो फेरै। इण बगत कविता नैं अेक गति (प्रवाह) मिळी। प्रदेस री राजनीतिक थिति ऊकचूक ही, राजावां री आपसी लड़ाई अर झगड़ा, खार–ईसकै में साहित्य–सिरजण

अर उणनैं रुखाळण री बात कुण सोचै ? चारण कवि आपरा आश्रयदातावां री विरुदावली में काव्य रचता। इण काळ रा ग्रंथां में घणकरो जैन साहित्य सांमी आवै, जिको आपरा धरम सूं ज्डुयोड़ो है। लिखित अर प्रामाणिक साहित्य रै रूप में मिळण वाळा आं ग्रंथां री अंवेर जिनालय, जैन भंडार अर उपासरां में करीजी। जैन –साहित्य री रचना तो संस्कृत–काळ सूं हावेती आई है। प्राकृत अर अपभ्रसं सूं आ रीत राजस्थानी में आई। सरू सूं ई जैन रचनाकार आपरा साहित्य री अंवेर अर रुखाळी वास्तै सावचेत रैया। ओ ईज कारण कै प्राचीन राजस्थानी साहित्य रै रूप में अठै रा जैन ग्रंथ ई पुख्ता प्रमाण है।

राजस्थानी रो आदिकालीन साहित्य मौखिक परंपरा में ई रैयो, लिखित सरूप घणो थोड़ो लाधै। सरूआती काळ री केई महताऊ रचनावां मिळै पण वांरा रचनाकार कुण है, आ बात पुख्ता नीं होवै तो कठैई रचनाकाळ में अबखाई आवै कै 'अमुक' रचना किण बरस में लिखीजी ? आं रचनावां में आयोड़ा चरित नायकां सूं कीं पड़ताळ करी जाय सकै, पण अेक बगत में अेक नावं रा केई शासक अर मिनख होया, इण कारण आं रचनावां री प्रामाणिकता वास्तै घणै शोध री दरकार है।

इण काळ री कीं खास रचनावां में 'खुम्माण रासौ' (जिण मायं चित्तौड़ रै महाराणावां रो वर्णन है), बीसलदेव रासौ (जिण मांय अजमेर रा राजा बीसलदेव रो वर्णन है) खास है। बीसलदेव रासौ जूनी राजस्थानी रो सबसूं प्रामाणिक ग्रंथ है। प्रेम–काव्य अर संदेस–काव्य रै रूप में आलौकिक–शैली री रचना है। 'ढोला–मारू रा दूहा', 'जेठवै रा सोरठा' अर 'आभल–खींवजी रा दूहा' प्रेम–काव्य रै रूप में घणी चावी रचनावां रैयी है। कवि आसाइत री ''हंसाउली'' रचना ई प्रेम–काव्य है जिको चार खंडां में 440 कड़ियां में लिख्योड़ी मिळै।

श्रीधर व्यास कृत 'रणमल्ल छंद' राजस्थानी री जूनी अर वीर रस री रचना है। 13वीं सदी तांई कीं जैनेत्तर कवियां री फुटकर रचनावां सांमी आवै जिकी भाषा अर शैली री दीठ सूं महताऊ है। आं में बारूजी सोदा, ढूमण चारण, रामचंद्र चारण, बागण कवि इत्याद खास है।

11वीं सदी सूं 15वीं सदी रा पैलड़ा पांच दसकां तांई जैन कवियां रा प्रामाणिक ग्रंथ राजस्थानी साहित्य में बधैपो करता दीखै। आं में–– जिनवल्लभ सूरि री रचना 'व्रैद्ध नवकार', वज्रसेन सूरि री 'भरतेस्वर बाहुबलि घोर', सालिभद्र सूरि रचित 'भरतेस्वर बाहुबलि रास', 'बुद्धि रास', कवि आसिगु रचित 'जीवदया रास', 'चंदन बाला रास', धम्म मुनि रचित 'जंबू स्वामी', विजयसेन सूरि रचित 'रेंवतगिरि रास', पल्हण कवि कृत 'आबू रास', 'नेमिनाथ बारामासा', जिनभद्र सूरि रचित 'वस्तुपाल तेजपाल प्रबंधावळी', अभयदेव सूरि रचित 'जयंत विजय', मुनि राजतिलक रचित 'सालिभद्र रास', राजेस्वर सूरि रचित 'प्रबंध कोस', 'नेमिनाथ फागु' अर हलराज कवि कृत 'स्थूलिभद्र फागु' इत्याद अलेखूं रचनावां अर जैन कवियां रा नांव गिणाया जाय सकै। आं जैन रचनावां री आपरी निकेवळी विशेषतावां रैयी। आं रचनावां में संबंधित (रचना सूं) पूरो प्रामाणिक विवरण, भाषा री पुष्टता (गरबीली अर गुमेज जोग भाषा), विविध काव्य रूप परंपरा जिणमें 117 काव्य रूपां री ओळखाण अबार तांई मिळै। जूना गद्य री बोहळायत, अैतिहासिक रचनावां री मोकळायत, नैतिकता माथै बळ अर रचनावां नैं लोकभाषा में लिखणो। लोक–साहित्य री अंवेर, हजारूं लोक गीतां अर कथावां नैं आपरै लिखित साहित्य में अपणाय'र उणनैं अखी राख्यो।

इण भांत आदिकाळ में जैन साहित्य अर जैनेतर साहित्य रै रूप में राजस्थानी साहित्य रा दोय रूप मिलै, जिणांरी खास प्रवृत्तियां–– प्रेम–काव्य या सिणंगार–काव्य, नीति अर उपदेशात्मक–काव्य, वस्तु–वर्णन प्रधान काव्य री रैयी। कीं वीर रसात्मक काव्य रो सिरजण ई इण काळ में होयो।

मध्य–काळ (वि. सं. 1460 सूं 1900)

मध्य–काळ राजस्थानी भाषा अर साहित्य री दीठ सूं घण महताऊ काळ मानीजै। ओ राजस्थानी रो सुवरण–काळ ई कैवीजै। इण काळ में राजस्थानी भाषा रो व्याकरणगत, शैलीगत, विधावांगत जित्तो विगसाव होयो, साहित्य री दोनूं विधावां (गद्य अर पद्य) में सिरजण ई उत्तो ईज हायो।

राजपूत रियासतां री आपसी फूट, खानवा रा जुद्ध में महाराणा सांगा री हार अर कीं दिनां पछै

वांरी मौत सूं दुखी, नाउम्मीद अर निरास मानखो, मुगलां रै पछै ई मराठां सूं भारत रा वीरां नैं हरमेस संघ्रस करणो पड़्यो। ओ बगत जुद्धां अर संघ्रसां रो काळ हो। इण जुग में वीरां आपरै वीरत्व री ओळखाण कराई। हंसता–हंसता प्राणां नैं मातृभूमि माथै निछावर करण री अठै अनूठी रीत रैयी है। वीरां री वीरता, साहस, त्याग अर बलिदान री जस गाथावां सूं ओ साहित्य सरोवर छिल्योड़ो लाधै।

साहित्य नैं अखी राखण वाळा कवि किणी–न–किणी राजा रा आसरा में रैवता। आपरा आश्रयदाता री कीरति रै साथै जठै कठैई मिनखाचारो अर वीरता रा गुण देखता, वै झट उणनैं आपरै साहित्य–सिरजण रो आधार बणाय लेवता अर काव्य रै मिस मानखै तांई वां भावां नैं पुगावण रा जतन करता।

देसभक्तां, स्वामीभक्तां, दानवीरां, क्षमावीरां रा त्याग अर जस नैं लेय'र अठै रा कवियां जिको साहित्य सिरजण कर्यो वै राजस्थानी साहित्य सागर रा अमोलक (घण मूंघा) रतन है। अै कवि कलम अर तलवार रा धणी हा। काम पड़ियां रण में रीठ बजावता, अन्न रो औसांण उतार देवता, जुद्ध भूमि में ऊभा आपरै ओजस्वी बोलां सूं वीरां री हूंस बधावता। राजस्थान में कोई अैड़ी ठौड़ कोनीं जठै आन–बान अर धरम–मरजाद खातर जुद्ध नीं लड़ीज्या होवै। ओ ईज कारण कै अठै गांव–गांव, ढाणी–ढाणी वीर जोधा रां, भोमियां अर झूंझारां रा थान थरपीज्योड़ा लाधै। आं सगळां री ऊजळी कीरत रा बखाण करण वाळा कवियां सूं ई आ धरती रीती कोनी रैयी। जठै रा वीर जोधार तो खांगण में लड़तां–लड़तां मरणै रो मौको नीं चूकता, लुगायां अर टाबर आपरी आबरू बचावण वास्तै अगन देवता नैं समरपित होय जावता। उठैई इण प्रदेस रा कवि हर अेक दरसाव नैं निजरां देखता अर आखरां ढाळता। आपरा काव्य सूं त्याग–समरपण वाळी उण घड़ी–पळ नैं बांध देंवता। जिणां री वीरता नैं बैरी ई सरायां बिनां नीं रैया, अैड़ा वीरां रो जस राजस्थानी कवियां भर–भर मूंडा बखाणियां बिनां नीं रैया। 'राजा करण री बेळा' में याद करणजोगा वां वीरां री भावनावां रो कविसरां री भावनावां साथै जुड़णो मात्र हो, कोई अतिशयोक्ति वरणन कोनीं हो।

चित्तौड़ रा गढ में अकबर री फौज रै विरोध में घणी वीरता सूं लड़ण वाळा जयमल मेड़तिया अर पत्ता सिसोदिया री वीरता, देसभक्ति, त्याग अर साचा सांम धरम नैं देख अकबर ई बड़ाई कर्यां बिनां नीं रैयो। इत्तो ई नीं, बादशाह वां वीरां नैं अमर करण वास्तै हाथी रै होदै चढ्योड़ा जयमल–पत्ता, दोनूं री मूर्तियां बणाई अर आगरा रै किलै री सिरै पोळ माथै वां पाषाण मूर्तियां नैं थिरपत कराई। बैरी ई जाणग्यो कै गढ रा रुखाळा अर सांम धरमी होवै तो जयमल–पत्ता जैड़ा। उठै प्रमाण सारू ओ दूहो ई खुदवायो––

जयमल बड़तां जीमणै, पत्तो डावै पास।
हिंदू चढिया हाथियां, अड़ियो जस आकास।।

अैड़ा वीरां वास्तै राजस्थानी कवि री लेखणी लिखती नीं थाकी तो अपजोगती बात कांई ? जद कदैई हिंदू राजा निरास होया, कायरता लाया, बैर्यां सूं डर'र पग पाछा मेल्या, आपरा कर्तव्यां नैं भूलण लागा तो अठै रा कवियां ई वां में हूंस भरी, कायरां–उर सालण वाळी वाणी सूं जोस जगायो, कर्तव्य– विमुखां नैं सूंवै मारग चालण री सीख दी। राजा जठै कठैई झूठो गरब कर्यो तो आपरा सूळ जैड़ा बोलां सूं वांरो हियो बींधतां कवि खरा बोल कैवण में अर वांरी भूंड करण में पाछ नीं राखी। कीं दाखला देय'र आं बातां नैं पुख्ता करणी चावूं––

खानवा रा जुद्ध में हार्योड़ा राणा सांगा में 'आतम–बळ' वापर्यो उण बगत रा कवि 'जमणाजी' रा गीत सं। जिणरा नांव सूं अकबर सूतो ओझकतो अर जिणरी वीरता नैं रंग देवतो, उण महाराणा प्रताप री वीरता, देसभक्ति, त्याग अर बलिदान किणसूं अछानो है ? दुरसा आढा अर सूरायच टापरिया रा काव्य में प्रताप री वीरता रा जिका बखाण होया है उणसूं कायरां में ई वीरत्व पांगर जावै। जयपुर रा राजा मानसिंघजी जोधपुर (मंडोवर) रा राव जोधा सूं खुद री बरोबरी करतां उदयपुर में पिछोलै घोड़ा पावतां कूडो गरब कर्यो तो वांरा आश्रित कवि सूं रहीज्यो कोनीं अर मानसिंघ रो गरब गाळतां ओ दूहो कैयो–

मांना मन अंजसो मती, अकबर बळ आयांह।
जोधै' जंगम आपणा, पांणां बळ पायांह ।।

इणी'ज भांत नरहरदास बारठ मारवाड़ रा महाराजा जसवंतसिंघजी (पैला) री कायरता देख'र घणी मै'णी दी। कम्माजी चारणवास मेवाड़ महाराणा राजसिंघ नैं चेताया अर हिंदुवांण री रीत राखण री सीख दी।

राजस्थानी साहित्य में अैड़ा हजारूं उदाहरण मिळै जिणमें कवियां आपरा आश्रयदातावां रो लिहाज नीं राखतां खारी अर खरी–खोटी पण साची बात कैय'र वांरो मारग–दरसण कर्‌यो।

'जस जीवण अर अपजस मरण' वाळी सीख नैं मानती अठै री वीरांगनावां ई वीरां सूं अेक पांवडो ई लारै नीं रैयी। वै किणी कायर, कपूत री मां, बैन, बेटी कै जोड़ायत बणणो कदैई नीं अंगेजियो। कायर धणी री लुगाई खुद नैं विधवा अर कायर–कपूत री मा खुद नैं निपूति कै पछै बांझड़ी मानती। इणी'ज भावना रै कारण 'दूध लजाणौ पूत सम, वलय लजाणौ नाह', हियो दझावण वाळी अै दोय बातां वीर क्षत्राणी नैं कदैई दाय नीं आई। राजस्थानी कवियां घणै अंजस रै साथै वीरांगनावां रा बखाण आपरै काव्य में कर्‌या–– जद जयसिंघ कछवाहा री बेटी किसनावती आपरा बेटां री रिछ्या सारू जुद्ध कर्‌यो तो 'गोरधन बोगसा' रै काव्य में देवता ई उण वीरांगना माथै निछावर होयग्या। ईसरदास बारठ 'हालां–झालां रा कुंडळियां' में जसाजी री जोड़ायत रै मूंडै उण वीर री वीरता बखाणी है। जोधपुर महाराजा मालदेवजी री राणी उमादे भटियाणी 'रूठी राणी' बण'र रैयी, महलां रो सुख नीं देख्यो; पण मालदेवजी साथै सती होय'र पतिव्रत धरम नैं निभायो जिणरो जस वर्णन 'आसा बारठ' रा सबदां में –'लछण महा लच्छिमी, जिसी गंगा पारबती' रूप में होयो।

सत–पत, धीज अर पतीज सूं दोनूं कुळां में ऊजळी कीरत री रीत राखण वाळी वीरांगनावां रै जस री अखूट परंपरा अठै बणगी। आधुनिक काळ रा कवि सूरजमल मीसण तो आपरी रचना 'वीर सतसई' में वीर नारी रा सगळा रूप दरसाया है अर सिंघ सरूप वीरां नैं जणण वाळी उण मातृशक्ति माथै कवि सौ–सौ बार निछावर होवणी चावै।

राजस्थानी साहित्य रा मध्य–काळ में श्रुतिनिष्ठ साहित्य आपरी चाल चालतो रैयो, मौखिक साहित्य रा रूप में –पवाड़्या, फड़ां, बाता, लोकगीत, चिरजावा, भजन, हरजस ई इण जुग में आपरी ठाडै बणावता रैया। लिखित साहित्य रा रूप में––अैतिहासिक काव्य जिको चरित नायकां रै नांव साथै रासौ, रूपक, प्रकास, विलास, वचनिका, वेल, वेलि इत्याद लगाय'र लिखीजता। ज्यूं –रायमल रासौ, रतन रासौ, सूरजप्रकास, भीमप्रकास, राजविलास, राजरूपक, अनोपसिंघजी री वेल, अचलदास खीची री वचनिका आद आं काव्य–रूपां रा उदाहरण है। केई रचनावां डिंगळ छंदां नैं आधार बणाय'र वांरै नांव सूं लिखीजी। जथा––गोगैजी चौहाण री निसांणी, सोढां रा गुण झूलणा, बीदावत करमसेण हिमतसिंघोत री झमाल, हालां–झालां रा कुंडळिया, अभैसिंघजी रा कवित्त, पाबूजी रा दूहा, प्रकीर्णक काव्य, अनुवाद अर अनेक शास्त्रीय साहित्य रै साथै गद्य रूपां में वात, ख्यात, विगत, वंशावली, पीढी इत्याद री इण जुग में बोहळायत रैयी। डिंगळ–गीत, फुटकर रचनावां साथै घणकरो डिंगळ–काव्य इण जुग री देन है। डिंगळ–काव्य शैली रा रचनाकारां में चारण जाति रो नावं सिरै मानीजै। आ बात कोनीं कै चारणेतर कवियां री डिंगळ–शैली में कठैई खामी रैयी होवै; पण चारणां री बोहळायत सूं ई ना नीं करीजै। डिंगळ–गीतां रै रूप में चारण–शैली री मौखिक परंपरा ई रैयी। होळै–होळै अै गीत लिखित सरूप लेवण लाग्या। ध्वन्यात्मक सबदां–– ट, ठ, ड, ढ ण जैड़ा कठोर करकस सबदां नैं चारण–काव्य में परोटण री आपरी न्यारी कला है। इण काव्य में सगळा सबदालंकारां अर अरथालंकारां रै साथै राजस्थानी रो आपरो वैण सगाई अलंकार, जिणरो काव्य री आळी–ओळी में भरपूर प्रयोग कर काव्य कुशळता री ओळखाण कराईजी है। छंदां री विविधता अर रसत्रिवेणी रा दरसण ई इण चारण–शैली री आपरी इधकी विशेषता रैयी है।

सिवदास गाडण विरचित 'अचलदास खीची री वचनिका', बादर ढाढी री 'वीरमायण', चानण खिड़िया रा गीत, पसाइत री रचना 'राव रिड़मल रो रूपक', 'गुण जोधायण', पद्मनाभ कृत कान्हडदे प्रबंध, कवि दामो कृत 'लखमसेन पदमावती चौपई' कवि भाडउ व्यास री 'हमीरायण' अर बीठू सूजो कृत 'राव जैतसी रौ छंद' इण काळ री नांमी रचनावां है।

मध्य–काळ में मिटता हिंदू धरम अर समाज में पग जमावता मुस्लिम धरम, धरम रै नांव माथै होवता अत्याचार, जनता में पसर्‌या अविश्वास मांय हिंदू धरम अर संस्कृति नैं उबारण रो काम कर्‌यो अठै रा भक्त–कवि अर संत संप्रदाय। भक्ति री सगुण अर निरगुण धारा मध्य–काळ में बैवती रैयी। आं भक्त–कवियां में भक्त–शिरोमणि मीरांबाई (मीरां पदावली), ईसरदास बारठ (हरिरस अर देवियांण), महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ (क्रिसन रुकमणी री वेलि) रस–त्रिवेणी रै साथै केई भक्ति रचनावां लिखी। सांयाजी झूला कृत 'नागदमण', माधोदास दधवाड़िया कृत 'रांम रासौ', नरहरिदास कृत अवतार चरित्र जैड़ा अलेखूं कवि होया। लौकिक शैली में, लोकभाषा अर लौकिक वरणन विषयां री समन्वयवादी दीठ, जनकल्याण, लोकचेतना री भावना सूं लोकविश्वास नैं जगावण सारू अठै रा संतां, अर संत संप्रदायां री घणी महताऊ भूमिका रैयी। संत जांभोजी, सिद्ध जसनाथजी, रज्जबजी, संत दादूदयालजी, हरिरामदासजी, दयालदासजी इत्याद अनेक संतां आपरी सबद, साखियां, वाणियां रै रूप में धरम, करम, नीति अर उपदेश री बातां समाज लग पुगावण रो सरावण जोग काम कर्‌यो। राजस्थानी साहित्य हरमेस आं संत कवियां अर समाज–सुधारकां रो करजदार रैवैला।

इण भातं मध्य–काळ में सूरां, सापुरुषां अर सतियां री इण वीर–वसुंधरा वास्तै अलेखूं कवियां आपरी लेखनी रै बळ वीर, सिणगार, नीति अर भक्ति रो साहित्य रच्यो तो संत संप्रदाय धरम री जड़ हरी करी। इणरै साथै ई लोक–साहित्य आपरी सगळी विधावां साथै पांगर्‌यो अर हरियल रूंख ज्यूं फळ्‌यो–फूल्यो। भाषाई दीठ सूं राजस्थानी भाषा ई आपरै बाळपणै रै संगी–साथियां नैं छिटकाय जोबन मतवाळी, राती–माती निजर आवण लागी।

आधुनिक–काळ (वि. सं. 1900 सूं आज तांईं)

इण काळ में दोय न्यारी थितियां में न्यारी काव्य–धारावां अर न्यारा विचारां नैं बळ मिल्यो। आजादी सूं पैली रो काळ अर आजादी रै पछै रो काळ। दोनूं बगत चेतना जगावण वाळा हा; पण विषय न्यारा हा। मोटै रूप सूं ओ काव्य–चेतना रो जुग हो। इण काळ में देस माथै अग्रेंजी हकुमत, उणरा अत्याचारां अर अन्यावां सूं मानखो दुखी हो। 'फूट घालो अर राज करो' वाळी दोगली नीत नैं अपणाय'र गोरां केई रियासतां माथै हक जमाय लियो। केई राजा तो अंग्रेजां रै हाथ रा रमतिया हा। केई राजा, सामंत, अंग्रेजां साथै राजीपा रो सोदो कर बैठा हा। इण जुग में ई देसप्रेमियां अर स्वाधीनता नैं पूजण वाळां रो घाटो कोनीं हो।

राजस्थानी कवि आथूणी हवा साथै उठता काळा धूंवां सूं अणजाण कोनीं हा; गोरी सरकार रै काळा मन नैं वै चोखी तरियां जाणता हा। अबै राजावां नैं विरुदावण री दरकार कोनीं ही। कवियां परंपरागत काव्य री लीक छोड'र अंग्रेजी सत्ता रै विरोध में काव्य करण लागा। अंग्रेजां री खोटी नीतियां अर वांरा कानून आगै तळतळीजतै मानखै नैं न्याव दिरावण वास्तै आं कवियां री कलम चाली। देस में जनजागरण, देसप्रेम , वीरता अर स्वतंत्रता रो पाठ पढावण वाळा इण जुग रा पैला कवि सूरजमल मीसण होया। वीर रसावतार रै रूप में चावा इण कवि री 'वीर सतसई' रो अेक–अेक दूहो देसभक्ति अर स्वतंत्रता री सीख देवै, तो कायरां–उर छैलका करै जैड़ा। रामनाथ कविया 'द्रोपदी–विनय' रै मिस नारी रै विद्रोही रूप नैं दरसायो। शंकरदान सामौर रा 'गोळी–हंदा' गीतां में अंग्रेजां नैं झूंपड़ियां रा धाड़ायती बताईज्या तो केसरीसिंघ बारठ, हींगळाज दान कविया, माणिक्यलाल वर्मा, विजयसिंघ पथिक जैड़ा कवियां अंग्रेजी सत्ता री खिलाफत करतां जनचेतना जगाई अर जनता में आजादी रो सुर भर्‌यो।

जनकवि ऊमरदान लाळस प्रगतिशील काव्य–धारा री सरूआत करी। समाज नैं सांस्कृतिक अर

सामाजिक उत्थान सारू चेतायो। धरम रै नांव माथै होवण वाळा पाखंडां रो खुलासो करतां समाज–सुधारक अर जनकवि रो काम सार्‌यो।

राजस्थान रा कवि हरमेस थाकल मिनखां रो साथ दियो, रियासतां रा सामंतां, जागीरदारां, ठाकरां रा हेठवाळिया करसां अर मजदूरां रो साथ देवतां समाज रा आं ठेकैदारां नैं आडै हाथां लिया। जोसीला सबदां में वांनैं फटकारण रो काम गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' जैड़ा जनकवि ई कर सकै। समाज रा हेठला तबका रो साथ देवणिया कवियां में रेंवतदान चारण, उदयराज उज्ज्वळ, हीरालाल शास्त्री अर जयनारायण व्यास जैड़ा कवि आगै आया। देसप्रेम, अेकता, अधिकारां वास्तै सावचेत करणो, अशिक्षा नैं मेटणी, काम–धंधा अर मैनत री जै बोलावतां वरगभेद अर नारी जागरण री बात आंरी रचनावां में करीजी।

गांधीजी री अगवाई में देस री आजादी खातर जिकी लड़ाई छिड़ी, अठै रो साहित्यकार ई उणसूं अळगो अर अछूतो नीं रैयो। गांधीजी रै सत्य, अहिंसा, न्याय अर वांरा आदर्शां नैं लेय'र साहित्यकारां बोहळो काव्य लिख्यो। राजनीतिक आंदोलन, समाज–सुधार, अछूतोद्धार, सामाजिक अेकता, कुटीर उ़द्योगां रै साथै गांधीवादी विचारां सूं ओतप्रोत कवियां अठै रामराज्य री कल्पना ई करी। आं सगळां विषयां नैं लेय'र राजस्थानी में सैकड़ूं रचनावां लिखीजी।

साहित्यिक दीठ सूं आधुनिक जुग में केई नूंवी चिंतन धारावां रो जलम होयो। देस री आजादी पछै नूंवी काव्य चेतना री सरूआत होयी। प्रकृति संवेदणा परक काव्य में प्रकृति रो मानवीकरण करीज्यो है। प्रकृति साथै मिनख रो आद–जुगाद संबंध रैयो है। मानखै रै हिरदै में लुक्योड़ी भावनावां नैं प्रकृति रा कोमल–कठोर, अर रूप–विडरूप रै मिस प्रगट करीजी है। प्रकृति–काव्य कै छायावादी–काव्य री अठै लूंठी परंपरा रैयी। इण काळ रा कवियां में––चंद्रसिंह बिरकाळी (बादळी, लू), नारायणसिंह भाटी (सांझ), नानूराम संस्कर्ता (कळायण, दसदेव), गजानन वर्मा (सोनो निपजै रेत में) , कन्हैयाला सेठिया (मींझर), कल्याणसिंह राजावत (परभाती), रेंवतदान चारण (बिरखा–बीनणी), सुमेरसिंह शेखावत अर डॉ. मनोहर शर्मा आद रा नांव गिणाया जाय सकै।

प्रबंध–काव्यां रै साथै मुक्तक कविता रो भी जोर रैयो। प्रबंध–काव्य में रामायण, महाभारत, उपनिषद् अर पौराणिक विषयां नैं आधार बणाय'र धार्मिक प्रबंध–काव्य लिखीज्या, तो अैतिहासिक, अर्द्धअैतिहासिक, लोक–काव्य अर काल्पनिक प्रबंध–काव्यां रो सिरजण ई अठै होयो। अमृतलाल माथुर री 'गीत रामायण', मेघराज मुकुल री 'सैनाणी', डॉ. मनोहर शर्मा री 'कुंजा', 'अमरफळ', 'पंछी', 'मरवण', महावीर प्रसाद जोशी री 'बिंदराबन', 'द्वारका', 'मथरा', 'अंतरधान', श्रीमंत कुमार व्यास री 'रामदूत', सत्यप्रकाश जोशी री 'राधा', सत्यनारायण 'अमन' प्रभाकर री 'सीसदान', गिरधारीसिंह पड़िहार कृत 'मानखो', करणीदान बारठ री 'शकुतं ला' इत्याद प्रबंध–काव्यां रै रूप में मोटी अर लांबी काव्य–रचनावां लिखण री अठै लूंठी परंपरा रैयी है।

आधुनिक–जुग रा कवियां में कन्हैयालाल सेठिया री कविता में नूंवा बिंब–विधान रै साथै जीवण–दरसण रा भाव है। देस अर समाज रा बदळता रंग–रूप, ढब, जीवणगत, मानवी भावनावां रा सैंस रूप प्रगट करण में आधुनिक कवियां री लांबी पांत है जिणमें –तेज सिंह जोधा, मणि मधुकर, ओंकारश्री, पारस अरोड़ा, गोरधनसिंह शेखावत, भगवतीलाल व्यास, मोहम्मद सदीक, गजानन वर्मा, बुद्धिप्रकाश पारीक, गणपतिचंद्र भंडारी, किशोर कल्पनाकांत, कल्याण सिंह राजावत, सुमनेस जोशी, सत्यप्रकाश जोशी, रघुराजसिंह हाडा, प्रेमजी प्रेम, सीताराम महर्षि, भंवरलाल भ्रमर, कानदान कल्पित जैड़ा अलेखूं कवियां आधुनिक कविता में नूंवा भाव–बोध, बिंब–विधान, प्रतीकां नैं लेय'र राजस्थानी कविता में नूंवा प्रयोग कर्‌या। धोरां वाळा देस नैं जगावण वास्तै कदैई मनुज देपावत नैं आगै आवणो पड़्यो तो कदैई 'मानखै' री ऊंडी नींव राखण नैं गिरधारी सिंह पड़िहार जैड़ा सादगी वाळा कवि नैं मुखरित होवणो पड़्यो। श्रीमंत कुमार व्यास नैं आपरी बात द्रोपदी, मीरां, मांडवी अर कैकयी रै ओळावै कैवणी पड़ी।

आधुनिक राजस्थानी कविता नैं दूजी भाषावां री कवितावां रै सैंजोड़ लावण नैं, उणरी कूंत करण वास्तै कविता में नूंवा–नूंवा रूप उकेरीजता रैया। बगत रै परवाण कवियां समाज री विडरूपता माथै रोस करता भांत–भांत सूं भावां री अभिव्यक्ति दी है। आं कवियां में––पुरुषोत्तम छंगाणी, मोहन आलोक, चंद्रप्रकाश देवल, सत्येन जोशी, हरमन चौहान, अस्तअलीखां मलकांण, वीरेन्द्र लखावत, सत्यदेव संवितेन्द्र, श्याम महर्षि, सांवर दइया, नंद भारद्वाज, मीठेस निरमोही, आईदानसिंह भाटी, चैनसिंह परिहार, जुगल परिहार, ज्योतिपुंज, कुंदन माली, अर्जुनदेव चारण, शिवराज छंगाणी, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, चेतन स्वामी, बद्रीदान गाडण, हरीश भादाणी बी. अेल. माली 'अशांत', मालचंद तिवाड़ी, लक्ष्मणदान कविया, रामस्वरूप किसान, भरत ओळा, सत्यनारायण सोनी, मुकुट मणिराज, दलपत परिहार, वासु आचार्य, ओम पुरोहित 'कागद', नीरज दइया, अशोक जोशी 'क्रांत', शंकरसिंह राजपुरोहित अर गिरधारीदान रतनू इत्याद आज तांईं रा राजस्थानी कवि इण आधुनिक जुग में आवै।

आं मांय सूं केई कवि परंपरागत काव्य लिखै, तो केई जथारथवादी काव्य रै नैड़ा ढूकै। केई प्रकृति रा प्रेमी इणरा कण–कण नैं आखरां ढाळै, रूंखां री महिमा गावै, तो केई मैणत रा नारा देवै। केई संस्कृति री रूपाळी छिब तीज–तिंवारा देख'र उणरा गीत गावै तो केई नूवां भाव–बोध साथै अनाम कविता, मिनी कविता नैं सिरजै। मानवी भावनावां साथै जडु.'र झीणी संवेदना नैं कविता रा सुर बणावै, तो केई समाज री दसा अर दिसा माथै छीजतो निजर आवै। कोई विरलो कविता नैं साचै संचै ढाळै, तो केई फकत नांव खातर च्यार ओळ्यां मांड'र कवि बण जावणो चावै। कीं होवो, आधुनिक राजस्थानी कविता री थिर जातरा करता आगै बधता आं कवियां री कोरणी मंड्या आखरां में आधुनिक भावबोध, नवजीवण अर नूंवै भाव–बोध, कथ्य, रचाव, विचार, भाषा, बिंब अर शिल्प सरावण जोग अर आपरी निकेवळी पिछाण बणावण जोग है।

इण भांत आधुनिक काव्य री खास प्रव त्तियां में जथारथवादी काव्य, प्रगतिशील काव्य, नवजीवण रो काव्य, नव भाव–बोध रो काव्य, हास्य–व्यंग्यात्मक काव्य, प्रकृतिवादी काव्य, नूंवां बिंब अर प्रतीक विधान में लिखीज्यो तो परंपरागत काव्य में भक्ति, नीति, प्रकृति, वीरता, सिणगार रो काव्य बरोबर लिखीजतो रैयो, तो छंद–मुक्त कवितावां इण जुग री मोटी विसैसता रैयी।

डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत

इकाई : अेक

ढोला–मारू रा दूहा

पाठ–परिचै

'ढोला–मारू रा दूहा' राजस्थानी रो अेक लोकप्रसिद्ध जूनो गाथा काव्य है। आ 'गाथा' दूहां में रच्योड़ी अेक अैड़ी प्रेम–गाथा है जिकी राजस्थान ई नीं, इणरी सींवां वाळा प्रांतां में भी घणी लोकप्रिय रैयी है। इणरी लोकप्रियता रो ओ प्रमाण है कै इणरो कोई न कोई दूहो थेट गांव में रैवणियो अणपढ आदमी भी आपरी जुबान माथै राखै। इण बाबत ओ दूहो इणरी साख भरै––

सोरठियो दूहो भलो, भल मरवण री बात।
जोबन छायी धण भली, तारां छायी रात।।

प्रेम–गाथा होवतां थकां भी इणरो सिंणगार वरणाव घणी मरजादा सूं रच्योड़ो है। राजस्थानी भाव अर भावना सूं इणरी आत्मा सराबोर है। साहित्यकारां री दीठ मांय इणरो काव्य–सौष्ठव सांगोपांग है।

'ढोला–मारू रा दूहा' रो रचयिता कुण हो अर इणरी रचना कद होयी, इण बाबत विद्वानां रा न्यारा–न्यारा मत है। कीं विद्वानां री दीठ सूं आ 'गाथा' किणी खास कवि री कृति नीं होय'र मौखिक परंपरा रै जूनै काव्य जुग री अेक खास काव्य–कृति है, तो कीं इणनैं कवि 'कल्लोल' री काव्य–कृति मानै। कीं विद्वान जैन कवि कुशळलाभ नैं इणरो रचयिता मानै। पण आं धारणावां रा पुख्ता प्रमाण नीं मिळै। इण खातर इणरै विषय में डॉ. माताप्रसाद रो ओ विचार लय पड़तो लागै कै– 'ढोला–मारू रा दूहा रो सिरजण–काळ अर उणरो सिरजक अज्ञात ई है।' विद्वानां री मान्यता है कै असली काव्य सरूआत में सगळो ई दूहां में हो, पण समै रै साथै लोग दूहा भूलता गया अर इणी बिचै कीं दूहा बचग्या, ज्यांरो कथासूत्र अेकदम विडरूप होयग्यो। इण कथासूत्र नैं मिळावण खातर जैन कवि कुशळलाभ वि. सं. 1618 रै लगैटगै चौपाइयां बणाई अर दूहां रै बिचै जोड़ जोड़'र कथासूत्र नैं संवारियो। ओ काम जैसलमेर रै रावळ हरराज रै समै होयो। कीं विद्वान 'ढोला–मारू रा दूहा' रो बगत संवत् 1000 रै लगैटगै बतावता कुशळलाभ अर रावळ हरराज रै समै नैं कूंतता थकां इण रचना रो सिरजण–काळ वि. सं. 1450 सूं पैली मानै। मोटै रूप में कैय सकां कै इण प्रसिद्ध लोक–काव्य रो सिरजण–काळ अर सिरजणहार दोनूं अज्ञात है, पण कथा विख्यात है।

'ढोला–मारू रा दूहा' गाथा–काव्य रो सार

देस–काळ रै किणी टैम पूगळ में पिंगळ अर नरवर में नळ नांव रा राजा राज करता हा। समै रै संजोग सूं पूगळ देस में अेक बार काळ पड़ग्यो। राजा पिंगळ परिवार समेत राजा नळ सूं पु कर में मिल्या। राजा पिंगळ रै मारवणी नांव री अेक कन्या ही अर नळ रै ढोला उर्फ साल्हकुमार नांव रो अेक राजकुमार हो। उण टैम ढोला नैं देख'र राजा पिंगळ री राणी इण माथै रीझगी ही अर राजा माथै जोर देय'र आपरी कन्या मारवणी रो ब्याव उणरै सागै कराय दियो। उण बगत ढोलो तीन अर मारवणी फगत डोढ बरस री ही। टाबर हावे ण रै कारण राजा पिंगळ आपरी लाडल मारवणी नैं नरवर नीं राख'र पाछा आवतै समै पूगळ ले आया।

.....यूं करतां–करतां केई बरस बीतग्या। बठीनै राजा नळ पूगळ नैं घणो अळगो अर उणरो मारग अबखो समझ'र ढोला रो दूजो ब्याव माळवै री राजकुमारी माळवणी रै साथै कर दियो। इणसूं पैली होयोड़ै ब्याव री बात नैं वै सबांई लुकाय'र राखी। ब्याव होयां ढोलो अर माळवणी प्रेम रै सागै राजसी ठाठ–बाट अर आणंद सूं रैवण लाग्या अर अठीनै पूगळ में मारवणी बडी होयी तो पिता पिंगळ नरवर कंवर ढोला नैं बुलावण खातर केई दूत भेज्या, पण माळवणी सौकिया डाहवस पूगळ सूं आवण वाळै मारगां माथै पौरा दिराय इसा पुख्ता इंतजाम कराय दिया कै वै दूत नरवर पूगण सूं पैलां ई मारगां में ई मार दिया जावता।

आं सब गूढ बातां रो ढोला नैं पतो ई नीं लागतो।

अठीनै पूगळ री राजकुमारी मारवणी मोटयार होयगी अर अक दिन वा सपनै मांय ढोलै नैं देख्यो। इणसूं उणरी विरह पीड़ा जागगी। सताजागे सूं उणी टमै नरवर कोनी सूं घोड़ां रो अेक सौदागर पूगळ आयो। उण राजा पिंगळ नैं ढोला रै दूजै ब्याव री जाणकारी दीवी। इणसूं राजा घणो दुखी हुवो, पण राजा पिंगळ आपरै निजू पुरोहित नैं बुलाय'र पुरी बात मांड सुणाई अर ढोला नैं बुलावण रै वास्तै नरवर जावण रो तकादो कर्‌यो। पण राणी रै कैयां संदेस ढाढियां रै साथै भेजायो। मारवणी ई आपरै मन रो संदेस आं ढाढियां नैं बताय दियो।

ढाढी गुपताऊ संदेस लेय'र थेट नरवर जा पूग्या। आपरै गावणै–बजावणै रै बलबूतै माळवणी रै पौरादारां नैं रीझाय दिया, बां आंनैं जाचक समझ'र मारगां में नीं रोकिया अर वानैं आगै जावण दिया। ढोला रै म्हलै तांईं पूग'र आं ढाढियां रातभर माड–राग रै करुण सुर में मारवणी रो प्रेम –संदेस गायो। विरह री करुण पीड़ा नैं सुण'र ढोला रो चित्त उठग्यो। ज्यूं ई दिन ऊग्यो, उण वानैं बुलाय'र सगळा हाल जाण्या। जथाजागे पडूत्तर दियां बखसीस देय'र वानैं विदा कर्‌या। ढोलो कीं दिनां पछै माळवणी री विणती नैं उलांघ'र आपर मन माफक करहा माथै सवार होय'र पूगळ पूग्यो। पनरै दिनां तांईं आपरै सासरै में आणंद सूं ठाठ भोग्यां पछै मारवणी रै सागै नरवर खातर व्हीर होयो। मारग में जठै वां विश्राम कर्‌यो, मारवणी नैं पीणो सांप पीयग्यो। पण वा अेक जोगी रै प्रताप सूं पाछी जीवती होयगी। इण पछै ऊमरा–सूमरा री सेना सूं भी मुकाबलो होयो। आं सब विपदावां सूं पार पाय'र आपरी व्हाली धण मारवणी रै सागै आपरै ऊठं माथै सवार होयां नरवर आय पूग्यो अर घणै आणंद–उछाव सूं रैवण लाग्या।

इण संग्रै में 'ढोला–मारू रा दूहा' मायं सूं भाव व्यंजना री दीठ सूं मारवणी रो रूप वरणाव, मारवणी रो विजोग वरणाव, मारवणी रो संदेस, ढोला–मारू मिलाप वरणाव अर मारू देस वरणाव सरूप कीं दूहा सांमळ करीज्या है। अै दूहा काव्य–कला री दीठ सूं बेजोड़, भाषा री दीठ सूं सजै है। मन रळियावणो अर उच्च कोटि रो ओ गाथा–काव्य अेकण कांनी प्रेम, विजोग, विरह अर कुदरती फूठरापै री साख नैं सवाई करै, तो दूजै कांनी मानखै रै हिरदै रा कंवळा मनोभावां नैं सैज अर रळियावणै रूप में अभिव्यक्त करै।

मारवणी रो रूप वरणाव

चंपा वरणी नाक सळ, उर सुचंग विचि हीण।
मंदिर बोली मारवण, जाण भणक्की वीण।।
गति गंगा, मति सरसती, सीता सीळ सुभाइ।
महिलां सरहर मारुई, अवर न दूजी काइ।।
नमणी, खमणी, बहुगुणी, सुकोमळी जु सुकच्छ।
गौरी गंगा नीर ज्यूं, मन गरवी तन अच्छ।।
रूप अनुपम मारुवी, सुगुणी नयण सुचंग।
साधण इण परि राखिजइ, जिम सिव मस्तक गंग।।
थळ भूरा वन झंखरा, नहीं सु चम्पउ जाइ।
गुणे सुगन्धी मारवी, महकी सब वणराइ।।
घम्मघमन्तइ घाघरै, उळट्‌यौ जांण मयन्द।
मारू चाली मन्दिरे, झीणै बादळ चन्द।।

मारू विजोग सिंणगार वरणाव

इसइ आरखइ मारुवी, सूती सेज बिछाइ।
साल्हकुंवर सुप नइं मिल्यउ, जागि निसासउ खाइ।।
बाबहियउ नइ विरहणी, दुहुवां अेक सहाव।
जबहि बरसइ घण घणउ, तबहि कहइ प्रियाव।।
ऊंचौ मन्दिर अति घणौ, आवि सुहावा कंत।
वीजळि लिये झबूकड़ा, सिहरां गळ लागंत।।
ऊनमि आइ बद्दळी, ढोलौ आवउ चित्त।
या बरसइ रितु आपणी, नयण हमारइ नित्त।।
ऊनमियउ उत्तर दिसइ, काळी काण्ठळि मेह।
हूं भीजूं घर आंगणइ, पिउ भीजइ परदेह।।
बिज्जळियां नीलज्जियां, जळहर तूं ही लज्ज।
सूनी सेज विदेस पिउ, मधुरइ–मधुरइ गज्ज।।
चंपा केरी पांखड़ी, गूंथूं नवसर हार।
जउ गळ पहरूं प्रिय बिन, तउ लागै अंगार।।
कूंझा द्यौ नइ पंखड़ी, थाकउ विनउ वहेसि।
सायर लंघी प्री मिलउं, प्री मिळि पाछी देसि।।
सहियां सोइ, विदेस पिव, तनहि न जावै ताप।
बाबहिया आषाढ जिम, विरहण करै विलाप।।

मारवणी संदेस

ढाढी अेक संदेसड़उ, ढोलइ लगि लइ जाइ।
जोबण फट्टि तळावड़ी, पाळि न बंधउ काइ।।
पंथी, अेक संदेसड़उ, लग ढोलउ पौहचाइ।
विरह महादव जागियउ, अगनि बुझावउ आइ।।
ढाढी जे राज्यंद मिळइ, यूं दाखविया जाइ।
जोबण हस्ती मद चढ्यउ, अंकुस लइ घरि आइ।।
सज्जण थारइ कारणउ, तातउ भात न खाइ।
हिंयड़ै भीतर थइ बसउ, दाझणती डर पाइ।।
पंथी हाथ संदेसड़उ, धण विळळंती देह।
पग सूं काढइ लीहटी, उर आंसुआं भरेह।।

ढोला मारू मिळाप वरणाव

ढोले जांण्यौ वीजळी, मारू जांण्यौ मेह।
च्यारूं आंख अेकठि हुइ, सयणै बंध्यो सनेह।।

जिणनूं सुपनइ देखती, प्रगट भयइ प्रिउ आइ।
डरती आंख न मूंदही, मत सुपनउ हुय जाइ।।
मारू बैठइ सेज सिर, प्री मुख देखइ तास।
पूनम केरे चंद ज्यूं, मन्दिर हुवउ उजास।।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'ढोला मारू रा दूहा' किण भांत रो काव्य है–
   (अ) महाकाव्य (ब) खंड–काव्य
   (स) गाथा–काव्य (द) परवाड़ा–काव्य ( )
2. 'ढोला–मारू रा दूहा' रा रचयिता है–
   (अ) कुशळलाभ (ब) अज्ञात
   (स) कवि कल्लोल (द) रावळ हरराज ( )
3. 'ढोला–मारू रा दूहा' नैं जोड़–जोड़'र इणरो कथासूत्र संवारण रो काम कर्‌यो हो–
   (अ) रावळ हरराज (ब) ऊमरा–सूमरा
   (स) जैन यति कुशळलाभ (द) राजा पिंगळ ( )
4. साल्हकुमार किण नांव सूं प्रसिद्ध है–
   (अ) बन्नो (ब) ढोलो
   (स) राजकुमार (द) महाराज कुमार ( )
5. 'ढोला–मारू रा दूहा' में किण रस रो परिपाक होयो है–
   (अ) वीर रस (ब) हास्य रस
   (स) भक्ति रस (द) सिंणगार रस ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'ढोला–मारू रा दूहा' किण तरै रो काव्य है ?
2. राजा नळ कठै रा राजा हा ?
3. राजा पिंगळ री लाडल रो नांव बतावो ?
4. राजा पिंगळ नरवर क्यूं गया ?
5. दूहो किण भांत रो छंद है ?
6. मारवणी आपरो संदेस किणरै साथै भेज्यो ?
7. ढोला आपरो दूसरो ब्याव किणरै साथै कर्‌यो ?
8. 'पग सूं काढै लीहटी' अठै 'लीहटी' रो अरथ बतावो।

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'ढोला–मारू रा दूहा' काव्य में बिखर्‌योड़ै कथासूत्र नैं संवारण रो काम किण अर क्यूं कर्‌यो ?
2. मारवणी आपरै विरह रो संदेस किण साथै किण भांत दियो ?
3. मारवणी रै रूप–सौंदर्य रो वरणाव करो ?
4. 'पगसूं काढइ लीहटी, उर आंसुंआ भरहे।' इण ओळी रो भाव सारांश बतावो।

5. 'पाळि न बंधउ काइ', इण ओळी रो भाव विस्तार लिखो।
6. ढाढियां माळवणी रै पौरादारां नैं किण भांत रिझाया ?
7. दोहा छंद नैं समझावो।
8. नीचै लिख्यै सबदां रा अरथ बतावो–

विचिहीण, सरहर, साधण, मयन्द, ऊनम्मियउ

लेख रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'ढोला–मारू रा दूहा' अेक लोक–काव्य है या सिष्ट काव्य ? समझावो।
2. पठित दूहां रै मारफत 'ढोला–मारू रा दूहा' रो भाव अर कला–पख समझावो।
3. मारवणी री विरह री वेदना आप आपरै सबदां में लिखो।
4. आं दूहां री सप्रसंग व्याख्या करो–

(अ) थळ भूरा वन झंखरा.....महकी सब वणराइ।।

(ब) बाबहियउ नइ.....कहइ प्रियाव।।

(स) कूंझा द्यौ नइ पंखडी.....पाछी देसि।।

(द) ढाढी अेक संदेसड़उ.....बंधउ काइ।।

उत्तरमाळा

1. स 2. ब 3. स 4. ब 5. द

89

इकाई : दो

ईसरदास बारठ

कवि–परिचै

'ईसरा सो परमेसरा' रा विड़द सूं चावा कवि ईसरदासजी रो जलम बाड़मेर जिलै रै भाद्रेस गांव में होयो। कवि रा जलमकाळ वास्तै साहित्य में दोय दूहा मिळै, जिण मुजब अेक दूहै में वि. सं. 1515 सावण सुद बीज अर दूजै दूहै में वि. सं. 1595 चैत सुद नम रो उल्लेख होयो है। इणी'ज भांत आपरै सुरगवास रा ई दोय बरस विगतवार 1622 अर वि. सं. 1675 मानीजै। आपरै पिता सूरोजी अर माता अमराबाई रो सुरगवास बेगो ई होयग्यो। टाबरपणै में ई मा–बाप सूं विजोग होयग्यो। राजस्थानी रा सिमरथवान कवि आसानंदजी आपरा काका हा। काका आसानंदजी ई आपनैं पाळ–पोख'र विद्यादान दियो, काव्य सिरजण री सीख दी। ईसरदास आपरा काका आसानंदजी साथै विद्वानां री सभावां अर राजदरबारां में जावता जिणसूं आपरा ज्ञान में बधेपो होयो। आपरो घणकरो बगत जामनगर रा रावराजा जाम रै आसरै बीत्यो। अठै रा दरबारी पंडित पितांबर भट्ट नैं गुरु बणाय'र संस्कृत भाषा, दरसण, पुराण अर केई धरमशास्त्र पढ्या अर आपरै जीवण में उणरो सार अंगेजियो।

भक्ति रै परताप सूं ईसरदासजी में केई अतिमानवी गुण हा, जिणसूं वांरै जीवण में केई चमत्कारी काज होया। वांरै जीवण सूं जुड़्योड़ी केई किंवदंतियां लोकविश्वास में बदळगी। ईसरा नै परमेसरा बणावण में आ लोकधारणा ई मोटो कारण रैयी।

आप डिंगळ रा सिरमौर कवि हा। आपरी लोह–लेखणी सूं लिख्योड़ी वीर रसात्मक कृति 'हालां–झालां रा कुंडळिया' डिंगळ री बेजोड़ रचना है। इणीं भांत भक्ति रो अमर–काव्य 'हरिरस' आपरै भक्त–हिरदै री पुकार अर श्रद्धाभाव है। आपरी दूजी रचनावां में देवियांण, गुण रास लीला, गुण आगम, गुण वैराट, गुण निंदा स्तुति, गुण भगवंत हंस, गुण बाललीला, गुण सभापर्व, गुरड़ पुराण, दांण–लीला, सामळा रा दूहा अर केई फुटकर रचनावां गीत, साखियां, वाणियां, पद... आद है। चारण देवीपुत्र कहीजै, माता रै रिण सूं उरिण तो संतान नीं होय सकै पण कीं खैंचल अवस कर सकै। 'देवियांण' में मा भगवती री सरब–सत्ता अर सरब–व्यापकता रो वरणाव कर कवि देवीपुत्र होवण रो फरज पूरो कर्‌यो है। आपरी भक्ति सूं सराबोर रचनावां 'देवियांण' अर 'हरिरस' रो आज ई चारण कुळ रा घणकरा घरां में हरमेस पाठ करीजै।

पाठ–परिचै

चारण जाति रै स्वभाव मुजब 'हालां–झालां रा कुंडळिया' कवि रो वीर रसात्मक अैतिहासिक काव्य है, जिण मांय अेक ध्रोळ ठाकुर हाला जसोजी अर हळवद नरेस झाला रायसिंघजी रै वीरत्व रा बखाण है। सूर्यमल्ल मीसण री 'वीर सतसई' वाळी वीर नारी रै उनमान वीर जसोजी री जोड़ायत रा ओजस्वी बोल वीरां में सूरापो जगावै अर कायरां रा काळजा कंपावै। इण कृति में 50 कुंडळिया छंद है, जकां मांय सूं कीं झड़उळट कुंडळिया प्रस्तुत पाठ में राखीज्या है। इणमें वीरता, सिंणगार अर नीति रो जबरो वरणाव मिळै। ओपती ओपमावां वीरां रा विशेषण, डिंगळ शैली रा ओजस्वी अर मरमभेदी बोल आं कुंडळियां री निकेवळी विशेषता है।

भक्तकवि ईसरदास री दूजी चावी रचना 'हरिरस' सूं कीं भगवत–महिमा रा टाळवां दूहा अठै लिरीज्या है। धरती री पाटी अर खुद गणेशजी लिखण वाळा होवै तो ई भगवान रा गुणां रो पार नीं पाय सकै। उठै कवि आपरी असामरथ बतावै। नासवान मिनखा देह, खूटती ऊमर,, जलम–मरण रो फेर,

अमोलक मिनखाजूण अर मुगती रो मारग आं दूहां रो सार है।

हालां–झालां रा कुंडळिया

सादूळौ आपा समौ, बियौ न कोई गिणंत।
हाक बिडाणी किम सहै, घण गाजियै मरंत।।
मरै घण गाजियै, जिकौ सादूळ महि।
सत्रां चा ढोल सिर, सकै किम जसौ सहि।।
वयण घण सांभळै, रहै किम वीसमौ।
सुपह सादूळ कणि, गिणै आपा समौ।।

केहरि केस भमंगमणि, सरणाई सुहड़ांह।
सती पयोहर क्रपण धन, पड़सी हाथ मुवांह।।
मूंवाहिज पड़ैसी, हाथ भमंग–मणि।
गहड़ सरणाइयां, ताह रै गैड सणि।।
काळ ऊभौ जसौ सकै नेड़ा करी।
कुणि सती पयोहर मूंछ लै केहरी।।

सीहणि हेकौ सीह जणि, छापरि मंडै आळि।
दूध विटाळण कापुरस, बोहळा जणै सियाळि।।
घणा सियाळि जे जणै जंबूक घणा।
तोहि नहं पूजवै पांण केहरि तणा।।
धूणि ख्ग ऊठियौ अभंग साम्हौ धणी।
सीह जसवंत जिसौ हेक जणि सीहणी।।

हिरणां लांबी सींगड़ी, भाजण तणौ सभाव।
सूरां छोटी दांतळी, दै घण थट्टां घाव।।
घाव घण थट्टां अत पिसण दळ घालणौ।
पांच सै पाखरिया हेकलो पालणौ।
रांण जसवंत सौ राखिया विरणिया।
हाक वागी तठै कूदिगा हिरणियां।।

मरदां मरणौ हक्क है, ऊबरसी गल्लांह।
सापुरसां रा जीवणा, थोड़ा ही भल्लांह।।
भलां थोड़ा जीवियां नाक राखै भवां।
खेल ऊभारवै भागलां सिर खवां।
कळ चड़ै जोय चंद जस नांमौ करै।
मरद सांचा जिकै आय अवसर मरै।।

91
हरिरस में गुरु–स्तुति

पीठ धरणीधर पाटली, हर उत लेखण हार।
तऊ तोरां चरितां तणों, परम न लभ्ये पार।।

तोरां हूं पूरा तवी, सकां केम समराथ।
चत्रभुज सह थारा चरित, निगम न जाणै नाथ।।

देव कसी उपमा दियां, ते सरज्या सह कोय।
तूंझ सरीखो तुंहिज है, अवर न दूजो कोय।।

आभ वछूटां माणसां, है धर झिल्लणहार।
धरणिधर धर छंडतां, आस तूझ आसार।।

नारायण हूं तुज नमों, इण कारण हरि आज।
जिण दिन आ जग छंडणो, तिण दिन तोसूं काज।।

अवध नीर तन अंजळी, टपकत स्वास उसास।
हरि भज्यां बिण जात है, (आ) अवसर ईसरदास।।

हिया म छंडे हरिभगती, रसण म छंडे राम।
अन्तरजामी आपणौ, ठाकर है सह ठाम।।

हसं माहं ला मढूं रे, कर हरि सें विसराम।
मर मर धर पर फिर मती, उर धर गिरधर नाम।।

सांई सो सब कुछ हुवे, बंदे सो कछू नांहि।
राई को परबत करे, परबत राई मांहि।।

क्षुधा न भागै पाणिये, त सा न छीजे अन्न।
मुगती नहीं हरिनाम विण, मानव सांचे मन्न।।

धारे तो साहब धणी, करे विलंब न काय।
मार उपावे मदे नी, मुहरत हेकण मायं ।।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. ईसरदास रचित वीर–रस री रचना है
   (अ) रणमल्ल छंद (ब) हम्मीर रासौ
   (स) देवियांण (द) हालां–झालां रा कुंडळिया ( )
2. 'हालां–झालां रा कुंडळिया' किणरी बडाई में लिखीज्या है–
   (अ) कवि ईसरदास री (ब) आसानंद री
   (स) सूजोजी री (द) रायसिंघ अर ठाकुर जसाजी री ( )
3. 'हालां–झालां रा कुंडळिया' रचना में कुंडळियां री संख्या है–
   (अ) 100 (ब) 72
   (स) 50 (द) 172 ( )

4. कवि ईसरदासजी री भक्ति–रस री रचना है–
(अ) नाग–दमण (ब) राजिया रा दूहा
(स) हरिरस (द) विरुद छिहत्तरी ( )

5. ईसरदासजी रो घणकरो बगत किणरै आसरै बीत्यो–
(अ) रावराजा जाम रै (ब) पितांबर भट्ट रै
(स) सूरोजी रै (द) आसानंदजी रै ( )

साव छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. भक्तकवि ईसरदास बारठ रो जलम कठै होयो हो ?
2. 'हालां–झालां रा कुंडळिया' किण रस री रचना है ?
3. ईसरदास बारठ रै माता–पिता रो कांई नांव हो ?
4. 'केहरि केस भमंगमणि' ओळी में 'केहरि' रो अरथ बतावो।
5. 'नारायण हूं तुज नमों' ओळी किणनैं समर्पित है ?

छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'हिरणां लांबी सींगड़ी, भाजण तणौ सभाव' में कवि कांई कैवणो चावै ?
2. 'हालां–झालां रा कुंडळिया' किण भांत री रचना है ?
3. 'अवध नीर तन अंजळी, टपकत स्वास उसास' रो मूळ भाव कांई है ?
4. 'अंतरजामी आपणौ, ठाकर है सह ठाम' में कवि कांई कैवणो चावै ?
5. पितांबर भट्ट सूं ईसरदासजी किणरो ग्यांन लियो ?

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. हालां–झालां रा कुंडळिया' ईसरदासजी री वीर रसात्मक अर ओज गुण सूं सराबोर रचना है। इणरो खुलासो करो।
2. 'हरिरस' कवि इर्स दासजी रै ईसरा–परमसे रा विरद में कठै तांई सार्थक है ?
3. पाठ में आई रचनावां रै आधार माथै कवि ईसरदासजी री काव्यगत विशेषतावां रो वर्णन करो।
4. नीचै लिख्या पद्यांशां री सप्रसंग व्याख्या करो–

(अ) पीठ धरणीधर पाटली.....लभ्ये पार।
(ब) हंस मांहला मूढ रै.....गिरधर नाम।
(स) मरदां मरणौ हक्क.....अवसर मरै।
(द) सीहणि हेकौ सीह.....जणि सीहणी।

उत्तरमाळा

1. द 2. द 3. स 4. स 5. अ

93

संत जसनाथजी

संतकवि अर पाठ–परिचै

राजस्थानी साहित्य रा इतिहास में मध्यकाळ री थितियां मुजब भगती री भागीरथी लावण में अठै रा संतां अर संत–संप्रदायां रो घणो सैयोग रैयो। समाज में उण बगत ईश्वर जैड़ी अदीठ सत्ता रै वास्तै विश्वास अर आत्मबळ देवण खातर अठै अनेक संत संप्रदायां री थरपणा होयी। संस्थापक संत अर वांरा चेला (शिष्य–परंपरा) आपरी साधना, अनुभव, ईश्वरीय प्रेम अर जीवण मूल्यां अर नीति सूं जुड़्योड़ो काव्य राजस्थानी साहित्य नैं सूंपिया। लोकभाषा में सरल अर सहज भाव सूं संतां री वाणियां, सबद–साखियां, जलम– झूलणा आद रै रूप में संतां रो ओ काव्य संत–साहित्य रै नांव सूं जाणीजै, जिण रो खास उद्देश्य लोककल्याण रो रैयो। आं रचानावां में काव्य–गुण, दोष अर व्याकरण रै नेमां री पालणा माथै निजर नीं राखीजी, क्यूंकै संत कवियां री दीठ मानखै री भलाई माथै ही।

संत–संप्रदायां री परंपरा में अेक जसनाथी संप्रदाय है। इणरा प्रवर्तक संत जसनाथजी हा। आं रो जलम वि. सं. 1539 में काति महीनै री चानणी इग्यारस रै दिन बीकानेर जिलै रै कतरियासर गांव में होयो। आपरै मा–बाप रै विषय में खास जाणकारी नीं लाधै। हमीरजी जाट अर वांरी जोड़ायत रूपांदे जसनाथजी नैं बेटा ज्यूं पाळ–पोस'र मोटा कर्‌या अैड़ी मान्यता ई है कै जसनाथजी आंनैं मारग में पड़्या लाधा हा, जिणांनैं बेटा रै ज्यूं इण जोड़ै सूं लाड–बालोच मिल्यो। बारह बरसां री ऊमर में कांकड़ मांय सांढियां चरावती बगत बाळक जसवंत री गुरु गोरखनाथ सूं भेंट होयी। गोरखनाथजी 'गुरु सबद' दियो। बाळक जसवंत सूं जसनाथजी नांव होयग्यो। इण बाबत अेक उक्ति चावी है–

संवत् पनरै इक्यावनै, आसोजी सुद पाय।
वां दिन गोरखनाथ सूं, जसवंत जोग पठाय।।

जप–तप, जोग–साधना करतां वि. सं. 1563 में आसोज सुद सातम रा आप कतरियासर में समाधि लेली। उण बगत जसनाथजी 24 बरसां रा हा। कतरियासर जसनाथी पंथ रो पवित्र तीरथ मानीजै। जसनाथजी, विश्नोई पंथ रा प्रवर्तक संत 'जांभोजी' अर राठौड़ां री कुळदेवी भगवती 'करणीजी' रै बगत रा संत होया। आप मुगती खातर गुरु रो मारग दरसण अर नांव–सिमरण री लवल्या नैं घणी महताऊ मानता। वांरी वाणियां में ब्रह्मा, विष्णु, महेश अर राम–कृष्ण रा नांव आया है, पण मुगती वास्तै वै निरगुण निराकार री उपासना नैं सिरै मानी। आप करमवाद रा खरा समर्थक हा। वांरो मानणो हो कै मिनख नैं उणरी करणी रो फळ जरूर मिळै। जैड़ा करै, वैड़ा भरै अर भोगै। आपरी शिष्य–परंपरा में ई केई संत कवि ज्यूं– करमदास, देवोजी, चोखनाथजी, हरोजी, सोभोजी सोनी, पंचोजी अर 18वीं सदी में नामी संत कवि लालनाथजी होया।

इण पाठ मांय जसनाथजी रै सबदां रा कीं अंस लिरीज्या है। जियोजी ब्राह्मण नैं तत्त्व–ज्ञान करायो, जगत–पिता परमेसर सूं भेंट रो आध्यात्मिक मारग बतायो। आप कैवै– कै 'धरती अर इंद्र रो जोड़ो अमर है, दूजा जोड़ा तो बिछड़ण वाळा ई है।' वै नासवान देह, आछी करणी अर सिमरथ गुरु–ज्ञान री बात अठै करी है, जिणरा साखीधर अै सबद–

धरती इन्द सिरो जुड़ावो, नित लग नेह सनेहा।
अमी मंडळ में बाजा बाजै, बरस सवाया मेहा।
इन्दर बरसै धरती सोसै, ऊंडा बैसैं तेहा।

धरती माता सरब सन्तोखै, रूप छत्तीसौं ऐहा।
कांई रे पिराणी खाजे नैं खोजै, खाख हुवै भुस खेहा।
काची काया गळ–बळ जासी, कूं–कूं बरणी देहा।
हाडां ऊपर पून ढुळैली, घण हर बरसै मेहा।
माटी में माटी मिळ जासी, भसम उडै हुय खेहा।
हुय भूतळा खाख उडावै, करणी रा फळ ऐहा।
करणी हीणा नित पिछतावै, लाधै न गुरु का भेवा।
पूरै गुरु नैं जोय पिराणी, आवै पापां रा छेहा।

(बुधहीणां) बुधबायरां नैं आपरा उपदेसां रो इमरत पाय जसनाथजी हरिभजन री बात कैवै। बिन हरि नैं पिछाण्यां मिनख सींग–पूंछ बायरो ढोर है, बिना कणुका वाळो बुमणो है। औसर चूक्यां पछै पिछतावो ई लारै रैवै। आप गऊ–रिछ्या री बात कर अहिंसा रो पाठ पढावै। गाय रो महत्त्व अर उणरा रुखाळा सूरज–चांद नैं बतावै–

गाय न गोखी शीसो सूअर, न चीनो हरियाई।
बै बिमुणा विमुख हांडै, कण बिन कुगस गाई।
रण में पंछी तिस्यो मरियो, ओसर चूको डाई।
सांभळ मुल्ला, सांभळ काजी, सांभळ बकर कसाई।
किण फरमाई बकरी बिरदो, किण फरमाई गाई।
गाय गोरख नैं इसी पियारी, पूत पियारो माई।
फिर चरि आवै सांझ दुहावै, राख लेवै सरणाई।
थे मत जाणो रुळी फिरै है, चांदो– सूरज गिंवाळी।

कूड़ा–कपटी, ठगोरा अर राम नांव री भगवां चादर पैर्‌योड़ा धरम रा धाड़ायतां नैं सावचेत करै। सांच, सील, मीठा बोल, जीव रिछ्या, परोपकार, हरिभजन अर हरिकथा साचा संतां रा गुण है। नीति–उपदेस रा कीं उदाहरण अठै देखणजोग है–

जत–सत रै'णा कूड़ न कै'णा, जोगी तणी सहनाणी।
मन कर लेखण तनकर पोथी, हरगुण लिखो पिराणी।
अमीं चवै मुख इमरत बोलो, हालो गुरु फरमाणी।
गाय'र गाडर भैंस'र छाळी, दुय दुय पिवो पिराणी।
सिरज्या देव अमीं रा कूंपा, गळबी काट न खाणी।
जे गळ काट्यां होय भलेरो, अपरो काट पिराणी।
कांटो भागां थरहर कांपो, पर जिवड़ो यूं जाणी।
कुंडा धोवै करद पलारै, रगत करै महमाणी।
सै नर जाणे सुरगे जास्यां, कोरा रह्या अयाणी।
झूठां नैं जमदूत धवैंला, भाड़ धवैं ज्यूं धाणी।
बळ–बाकळ भैरूं री पूजा, गोरख मना न माणी।
साधां नै इन्द लोके वासो, देव तणी देवाणी।
साधु हिंयर हिंडोळै हींडा, पुंता सुरग बिवाणी।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. जसनाथी संप्रदाय रा प्रवर्तक हा–
   (अ) जांभोजी (ब) चरणदासजी
   (स) जसनाथजी (द) हरिरामदासजी ( )
2. जसनाथजी री जलमभोम रो नांव है–
   (अ) पूगळ (ब) लिखमीदेसर
   (स) बम्बलू (द) कतरियासर ( )
3. जसनाथजी रो जलम होयो–
   (अ) वि. सं. 1539, काति री चानणी इग्यारस
   (ब) वि. सं. 1450, माघ री अंधारी सातम
   (स) वि. सं. 1540, काती सुद इग्यासर
   (द) वि. सं. 1965, वैसाख सुद तीज ( )
4. संत–साहित्य रो मूळ उद्देश्य कांई है ?
   (अ) कवियां में नांव कमावण रौ
   (ब) पुरस्कार लेवण रौ
   (स) लोककल्याण अर चेतना जगावण रौ
   (द) साहित्य री समृद्धि रौ ( )
5. जसनाथजी जीवित–समाधि ली, जणां वांरी ऊमर ही–
   (अ) 25 बरस (ब) 24 बरस
   (स) 29 बरस (द) 39 बरस ( )
6. संत–संप्रदायां रै मूळ में किसी परंपरा चालै–
   (अ) गुरु–शिष्य परंपरा (ब) देवी–देवतावां री परंपरा
   (स) देव–पुजारी परंपरा (द) खाली गुरु परंपरा ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. जसनाथी संप्रदाय रो मोटो तीरथ–धाम किसो गिणीजै ?
2. जसनाथजी रो बाळपणै में कांई नांव हो ?
3. जसनाथजी नैं 'गुरु–सबद' कुण दियो ?
4. जसनाथजी किणनैं तत्त्व–ज्ञान दियो हो ?
5. 'फिर चरि आवै सांझ दुहावै' किणरै सारू कथीज्यो है ?

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. जसनाथी संप्रदाय रा जीव–मुगती खातर कांई विचार है ?
2. संत–काव्य रूपां में किणी तीन रा नांव लिखो।
3. जसनाथजी परमात्मा रै किण रूप रा उपासक हा ?
4. जसनाथजी री रचनावां रा मूळ विषय कांई रैया है ?
5. 'धरती इन्द सिरो जुड़ावो' रा भाव कांई है ?

6. 'कांटो भागां थरहर कांपो' में कवि कांई कैवणी चावै ?

7. नीचै लिख्या पद्यांशां री संप्रसंग व्याख्या करो–

(अ) कांई रे पिराणी खोज नै.....बरसै मेहा।

(ब) माटी में माटी मिळ.....पापां रा छेहा।

(स) गाय न गोखी.....किण फरमाई गाई।

(द) जत–सत रै'णा.....अपरो काट पिराणी।

(य) कांटो भागां थरहर कांपो.....सुरग बिवाणी।

बड़ै रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. जसनाथजी रै जीवण अर सबद–साहित्य सूं कांई सीख मिलै ?

2. जसनाथजी रै सबद–साहित्य रा भाव आज रा जुग में ई घणा महताऊ है। इणरो खुलासो करो।

3. संत जसनाथजी रो सबद–साहित्य सांचै अरथां में मिनख रो मारग– दरसण करै। इण कथन माथै आपरा विचार राखो।

4. संत–साहित्य अर उणरा महत्त्व नैं उदाहरणां सूं समझावो।

उत्तरमाळा

1. स 2. द 3. अ 4. स 5. ब 6. अ

97

मीरांबाई

कवयित्रि–परिचै

भक्ति री गंगा सूं सूखै मरुप्रदेस नैं सजळ करण वाळी, सरसावण वाळी अर कृष्ण–भक्तां में सिरमौर भक्त–सिरोमणि मीरांबाई रो नांव भारतीय लोकमानस में अछानो कोनीं। मीरांबाई रो जलम राठौड़ां री मेड़तिया खांप रा संस्थापक राव दूदा रा बेटा रतनसिंघ रै रावळै होयो। विद्वानां रा मत मुजब मीरां रै जलम रो बरस बैसाख सुद तीज वि. सं. 1555 मानीजै। मीरांबाई री जलमभोम नैं लेय'र विद्वानां में मतभेद चालै। घणकरा विद्वान मीरां रो जलम 'कुड़की' गांव में होवणो बतावै। कीं विद्वानां रो मानणो है कै मीरां रो जलम 'बीजारण' (आज रो बाजोली गांव) में होयो, जिको डेगाणा सूं दस कि.मी. अगूणै कांनी आयोड़ो है। कुड़की गांव में मीरां रै टाबरपणा में रैवण री जाणकारी मिळै। मीरांबाई दोय बरसां रा हा, जद आपरी माता रो सुरगवास होयग्यो। आपरो बाळपणो दादोसा राव दूदा रा लाड–सनेव सूं बीत्यो। राव दूदाजी वैष्णव भक्त हा। भगवान चारभुजा नाथ आपरा इष्टदेव हा। मीरां में राव दूदा रा संस्कार हा। बाळपणै में बीज्योड़ो कृष्ण–भक्ति रो बीज बगत परवाणै हरियल रूंख रो रूप ले लियो।

मीरांबाई रो ब्याव मेवाड़ रा महाराणा सांगा रायमलोत रा पाटवी कंवर भोजराज साथै होयो। ब्याव रै छः–सात बरसां पछै ई भोजराज री मौत सूं मीरां रै मन में वैराग उठग्यो। सरूपांत में मा रै पछै दादोसा राव दूदाजी अर पति भोजराज रै समायां इण संसार नैं असार अर नासवान जाण'र मीरां संसार रा बंधणां नैं छोड'र साधु–संतां रो संग कर लियो। सांवरा नैं आपरै भव–भव रो पति मान'र मीरांबाई उण परम–प्रभु री अमर सवागण बणगी। भजन–कीरतन अर साधुवां री संगत में मीरां रो मन अैड़ो रमियो कै राजघराणै री सगळी मरजादा अर लोकलाज नैं तज न्हाखी। इण खातर मीरां नैं आपरै सासरै वाळां रो, केई राजकुळां रो घोर विरोध ई सहन करणो पड़्यो। मीरां रा पदां में इणरो उल्लेख मिळै। अैड़ी लोकधारणा है कै वि. सं. 1603 में मीरां रै जीवण री जोत द्वारकाधीश भगवान रणछोडजी री अमरजोत में समायगी, पण राठौड़ां री मेड़तिया साखा रा कुळ गुरुवां री बहियां में ओ लेख मिळै कै मीरां रौ सुरगवास वि. सं. 1604 में माघ सुद पांचम नैं होयो। गोमती रै किनारै 'गोमती घाट' माथै वांरो दाह–संस्कार करीज्यो। उठै आज ई मीरां रो मिंदर बण्योड़ो है। आपरी भौतिक देह सूं मीरांबाई आज कोनीं, पण वांरो अमर–भक्ति रो संदेस सगळा भगतां रै हिवड़ै बस्योड़ो है। लोकभाषा में रच्योड़ा वांरा सरस पद सगळै लोकमानस में रम्योड़ा है। मीरां रा पद अनेकूं राग–रागनियां में गेयता लियोड़ा है।

पाठ–परिचै

मीरां रै अणगिण पदां रै साथै नरसीजी रो मायरो, राग सोरठ, राग मलार, राग गोविंद, सत्यभामाजी नूं रूसणूं, रुकमणी मंगळ, नरसी मेहता री हुंडी, गीत गोविंद री टीका इत्याद रचनावां मीरां री बताई जावै। अै सगळी रचनावां मीरां री है, इणमें ई विद्वान अेक मत कोनीं। मीरांबाई रै काव्य रो मूळ विषय आपरै सांवरै री भक्ति, गिरधर रै वास्तै निरमळ प्रेम अर विरह रो रैयो है। सगुण भक्ति में माधुरी भाव, दाम्पत्य भाव अर दास्य भाव है तो निरगुण भक्ति रा पद ई मिळै। लौकिक पण साव निकेवळा प्रतीकां सूं मीरां आपरा भाव प्रगट कर्‌या है। इण पाठ में आया पदां मांय ई कृष्ण दरसणां री उडीक, वैरागण रो रूप, सरणागत भाव, गिरधर रै प्रति मीरां री अटूट प्रीत, खरो विश्वास, भगवान सूं अभेद संबंध,

द्रढ निश्चय (संकळप) भक्ति रे मारग में आवण वाळी अबखायां अर विरोध रो पड़ूत्तर, मुरारी नैं मीठा ओळमा, जीवण आधार रूप में कृष्ण, वृंदावन री सजीव झांकी अर अंत में तीरथ, व्रत, नेम–धरम अर भेख लेवण नैं नकारतां थकां हरि अविनासी रा नाम सुमरण नैं ई सांचो बतायो है।

1.

अंखियां कृष्ण मिलन की प्यासी। टेर।
आप तो जाय द्वारका छाये, लोक करत मेरी हांसी।
आम की डार कोयलियां बोलै, बोलत सबद उदासी।
मेरे तो मन ऐसी आवै, करवत लेहौं कासी।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चरणकमल की दासी।

2.

अपणा गिरधर के कारणै, मीरां वैरागण हो गई रे। (टेर)
जबतै सिर पर जटा रखाई, नैणां नींद गई रे।
दंड कमंडळ और गूदड़ी, सिर पर धार लई रे।
छापा तिलक बनाये छबि सों, माळा हात लई रे।
दोउ कुल छांड भई वैरागण, हरि सों टेर दई रे।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, गोविन्द सरण भई रे।

3.

अरे राणा पहली क्यूं नीं बरजी,
लागी गिरधरिया सूं प्रीत (टेर)
मारो चाहे छांडो राणा, नाहिं रहूं मैं बरजी।
सुगनां साहिब सुमरतां रै, मैं थारे कोठे खटकी।
राणाजी भेज्यो विष रो प्यालो, कर चरणामृत गटकी।
दीनबंधु सांवरियो है रे, जाणत है घट–घट की।
म्हारा हिरदा मांय बसी है, लटकन मोरमुकट की।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, मैं हूं नागरनट की।

4.

अहो कांई जाणै गुवाळियो, बेदरदी पीड़ पराई (टेर)
जो जनमत ही कलु त्यागन कीनों, बन बन धेनु चराई।
चोर चोर दधि माखन खायो, अबला नार सताई।
सोला सैंस गोपी तज दीनी, कुबजा संग लगाई।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, कुंण करै थारी रे बडाई।

5.

आली री मेरे नयनन बान पड़ी (टेर)
चित्त चढी मेरे माधुरी मूरत, उर विच आन अड़ी।
कब की ठाडी पंथ निहारूं, अपने भवन खड़ी।
कैसे प्राण पिया बिन राखूं, जीवन मूल जड़ी।
मीरां गिरधर हात बिकानी, लोग कहै बिगड़ी।

6.

आली मोहि लागत वृंदावन नीको (टेर)
घर–घर तुलसी ठाकुर पूजा, दर्शन गोविंदजी को।
निर्मल नीर बहत यमुना को, भोजन दूध–दही को।
रत्न–सिंहासन आप बिराजे, मुकुट धर्‌यो तुलसी को।
कुंजन कुंजन फिरत राधिके, शब्द सुनत मुरली को।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, भजन बिना नर फीको।

7.

भज मन चरण कमल अविनासी।
जेताई दीसै धरण गगन बिच, तेताई सब उठ जासी।
कहा भयौ तीरथ व्रत कीन्है, कहा लियै करवत कासी।
इण देही का गरब न करणा, माटी में मिल जासी।
यो संसार चहर की बाजी, सांझ पड़्यां उठ जासी।
कहा भयो है भगवा पहर्‌यां, घर तज भयै संन्यासी।
जोगी होय जुगत नहिं जांणी, उलट जनम फिर आसी।
अरज करूं अबला कर जोड़ै, स्यांम तुम्हारी दासी।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम की फांसी।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. मीरां बाई रो जलम होयो–
   (अ) 1495 वि. सं. (ब) 1555 वि. सं.
   (स) 1629 वि. सं. (द) 1775 वि. सं. ( )
2. मीरांबाई रो पाळण–पोसण कर्‌यो–
   (अ) राव रतनसिंघजी (ब) वीर कुंवरी बाई
   (स) राव दूदाजी (द) वीरमदेवजी ( )
3. मीरां रै पति रो नांव हो ?
   (अ) भोजराज (ब) राणा विक्रमसिंह
   (स) महाराणा सांगा (द) इण मांय सूं कोई नीं ( )
4. मीरां रा इष्टदेव हा–
   (अ) राम (ब) कृष्ण
   (स) विष्णु (द) संत दादू दयाल ( )
5. मीरां री रचनावां मिलै–
   (अ) चारण शैली में (ब) जैन शैली में
   (स) लौकिक शैली में (द) परंपरागत शैली में ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. मीरां री जलमभोम रो कांई नांव हो ?
2. मीरां रा दादोसा कुण हा ?

3. मीरां रो ब्याव किणरै सागै होयो ?
4. मीरां रै काव्य रो मूळ विषय कांई है ?

छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. मीरां री भक्ति किण भांत री भक्ति ही ?
2. मीरां रै सुरगवास बाबत कांई लोकधारणा है ?
3. मीरां रो सासरो कठै अर किण राजवंश में हो ?
4. वैरागण मीरां नैं किणरै विरोध रो सामनो करणो पड़्यो ?
5. मीरां री कोई दो रचनावां रा नांव लिखो।

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. मीरां रै जीवन–वृत्त अर पदां री विशेषता रो वर्णन करो।
2. मीरां री रचनावां रा भाव आपरै सबदां में लिखो।
3. मीरां कृष्ण री सगुण भक्त (उपासक) ही। इण बात रो खुलासो करो।
4. नीचै लिख्या पद्यांशां री सप्रसंग व्याख्या करो–

    (अ) अंखियां कृष्ण मिलन.....चरण कमल की दासी।
    (ब) अपणा गिरधर के कारणै.....गोविन्द सरण भई रे।
    (स) अरे राणा पहली क्यूं नीं बरजी.....मैं हूं नागरनट की।
    (द) आली मोहि लागै वृंदावन.....भजन बिना नर फीको।

उत्तरमाळा

1. ब 2. स 3. अ 4. ब 5. स

101

श्रीमद् जयाचार्य

संतकवि अर पाठ–परिचै

राजस्थानी भाषा रो जैन–काव्य विविध अर विशाल है। राजस्थानी साहित्य मांय आदिकाळ सूं ई जैन रचनाकारां रो घणो योगदान रैयो। आपरै धर्म नैं आधार बणाय'र आखो जैन–काव्य जैनाचार्यां, तीर्थंकरां, बलदेवां, वासुदेवां, जैन मुनियां, सतियां अर धार्मिक शासकां सूं संबंधित कथा–काव्य, चरित–काव्य, उत्सव–काव्य, नीति–उपदेश अर स्तुति–काव्य रै रूप में मिळै। जैन रचनाकारां आपरै लेखन री न्यारी शैली में रचनावां रो सिरजण कर्‌यो। आदिकाळ सूं लेय'र आधुनिक–काळ तांईं जैन–शैली रो अखूट साहित्य भंडार न्यारी–न्यारी विधावां अर काव्य–रूपां में लाधै। आं रूपां में––विवाहलो, धमाळ, फागु, संधि, धवळ, हींयाळी, सलोक, ढाळ, चौढाळियो, रसावळी, बारामासा अर केई संख्यापरक काव्य रूप आं रचनावां में देख्या जाय सकै।

जैन–कृतियां में दोय जूनी रचनावां रा साहित्य में विशेष दाखला दिरीजै। पैली रचना वि. सं. 1125 में वज्रसेन सूरि री लिख्योड़ी 'भरतेस्वर बाहुबलि घोर', जिणमें वीर रस रो सांतरो वर्णन है। इणरो कारण उण बगत री समाजू थितियां होय सकै। दूजी रचना वि. सं. 1241 में सालिभद्र सूरि कृत 'भरतेस्वर बाहुबलि रास' है। जूनां जैन कवियां री ओळी में ई कवि आसिगु, जिनपति सूरि, विजयसेन सूरि, जिनभद्र सूरि अर कवि पल्हण आद रा नांव विशेष गिणावण जोग है। घणकरा जैन–काव्यां में धर्म, नीति अर उपदेश री सीख मिळै। अै सगळी रचनावां शांत रस री सरस इमरत–वाणी ज्यूं लखावै।

'तेरापंथ' अेक जैन धर्मसंघ है। इणरो राजस्थानी भाषा सूं ठेठ रो संबंध रैयो। इण धर्मसंघ रा पैला आचार्य भिक्षु स्वामी होया। उणां राजस्थानी साहित्य लेखन री इत्ती गहरी अर सैंठी नींव राखी कै वांरै पछै रा आचार्यां उण माथै राजस्थानी साहित्य रो गढ ई बणाय दियो। आचार्य भिक्षु री राजस्थानी पद्य रचनावां, जिणमें प्रबंध–काव्य अर मुक्तक–काव्य है। 'भिक्षु ग्रंथ–रत्नाकर' नांव सूं आपरी रचनावां रा दोय भाग छपग्या अर तीजो गद्य है जिको छपणो बाकी है। आचार्य भिक्षु रै पछै ई राजस्थानी लेखन रो काम चालतो रैयो। इणी'ज धर्मसंघ रा चौथा आचार्य श्रीमद् जयाचार्य हा, जिका राजस्थानी साहित्य रा ऊजळा नखत हा। लारला दोय सौ बरसां रा सिरै रचनाकारां नैं देखां तो उणमें जयाचार्य रो नांव पैली पांत में आवै। आप गद्य अर पद्य, दोनूं विधावां में समरूप सिरजण कर्‌यो। आपरो सगळो साहित्य साढी तीन लाख पद्यां रो है। आज पैली ओ देखण में अर सुणण में नीं आवै कै अेक कवि रा इत्ता पद्य है। आपरै श्रीमुख में सुरसती रो वासो हो, जिको बोलता वा रचना बण जावती। आप आशु कवि हा।

श्रीमद् जयाचार्य रो जलम जोधपुर संभाग रै रोयट गांव में वि. सं. 1860 री आसोज सुदी चवदस नैं होयो। आपरा पिता रो नांव आईदानजी अर माता रो नांव कल्लूबाई हो। आप ओसवाळां री 'गोलछा' साखा में जलम्या। आपरै जलम रो नांव जीतमल हो। आपसूं पैलां दोय बेटा कल्लूबाई री कूख सूं जलम्या। 1863 में अचाणचक घर–परिवार माथै आई विपदां सूं होळै–होळै पूरै परिवार में ई वैराग रो भाव जागण लागग्यो अर सताजोग जैन मुनि रा मारग–दरसण सूं 1869 वि. सं. में घर रा पांचूं ई सदस्य जैन दीक्षा अंगीकार करली अर साधु बणग्या। बालक जीतमल, जिको आगै चाल'र श्रीमद् जयाचार्य रै नांव सूं ख्यातनांव होयो, दीक्षा री बगत फकत नौ बरसां रो हो। मुनि हेमराजजी आपरा शिक्षा–गुरु हा। आपरै ज्ञान री जोत में ठौड़–ठौड़ चातुर्मास करतां बारह बरसां तांईं श्रीमद् जयाचार्य आगम ग्रंथां रो गैराई सूं अध्ययन कर्‌यो। अनुशासन, निमता अर खिमता रै पाण आपरै साहित्य री नींव पक्की बणती गई। जलम

सूं जिको काव्य–कुशळता रो गुण हो, वो चावो होयो अर दीक्षा रै दोय बरसां पछै फकत 11 बरसां री ऊमर में 'संतगुणमाळा' नांव री पैली रचना लिखी। छोटी ऊमर पण मन नैं काबू कर बांधणो, निष्ठा अर समर्पण भाव जैड़ा गुण आपनैं गुरु हेमराजजी सूं विरासत में मिल्या हा। आपरा ऊंचा आचार–विचार अर बुद्धि री खिमता रै पाण आपरा दीक्षा–गुरु आचार्य ऋषिराय, धर्मसंघ रा नेम मुजब आपनैं अग्रणी अवस्था पछै युवाचार्य अवस्था में खुद रा उत्तराधिकारी बणाया। ऋषिरायजी रा सुरगवास पछै वि. सं. 1909 में माघ री पून्यू नैं आप आचार्य री गादी विराज्या। आचार्य रै रूप में आप तीस बरसां तांईं तेरापंथ धर्मसंघ री सेवा करी। संघ नैं घणो मजबूत बणायो। आपरै सेवाकाळ रो बगत इण धर्मसंघ रो सुवरणकाळ हो, जिणमें इणरो च्यारूं खूंटां विगसाव होयो। आप आपरै धरमसंघ री जूनी अर नूंवी परंपरा रा समन्वयक बण्या। जयाचार्यजी सिरजणधर्मी अर साहित्यप्रेमी हा। आपरै बगत में साहित्य री घणी अंवेर राखीजी। आप आपरै धर्मसंघ में अनुशासन अर व्यवस्था सुधार रा केई नेम–कायदा बणाय'र प्रशासकीय कुशळता रो परिचै दियो।

श्रीमद् जयाचार्य राजस्थानी रै मांय अेक नूंवी गीत–विधा री सरूआत करी जिकी 'टहुका' नांव सूं चावी होयी। आप उण बगत तेरापंथ धर्मसंघ में साम्यवादी विचारां री नींव राखी जद देस में समाजवाद कठैई नैड़ो–आगो ई कोनीं हो। जीवण रा 77 बरस पूरा कर वि. सं. 1938 री भादवा बदी बारस रै दिन सिंझ्या री बगत आप परलोकधाम सिधारग्या। आपरो व्यक्तित्व घणो प्रभावी हो–– खठरा; पण छरहरो डील, नैना नैना हाथ–पग, सांवळो रंग, मोटो लिलाड़, दीपतो उणियारो, हियै री उजिया, दृढ संकल्पी, बुद्धिबळ री खिमता अर समाजवादी चिंतन–साधना रा सजग अर सावचेत पौरैदार हा।

आप राजस्थानी रा वीर रसावतार सूरजमल्ल मीसण री जोड़ रा आशु कवि हा। आपरो साहित्य विविधरूपा हो। आप राजस्थानी रा सिरमौर सिरजणकार रै रूप में जाणीजै। आप मौलिक सिरजण रै साथै अनुवाद रो काम ई घणोई कर्‌यो। प्राकृत भाषा रा जैन आगमां रो राजस्थानी अनुवाद कर्‌यो। प्रबंध–काव्य, जीवण–चरित्र, भक्ति–काव्य, संस्मरण, कथाकोश, जोड़, इतिहास इत्याद री राजस्थानी रचनावां लिखी। आप अठारै बरस री ऊमर में प्राकृत रो सबसूं गूढ–गंभीर अरथ वाळो आगमग्रंथ 'पन्नवणा' री राजस्थानी पद्य टीका कर तेरापंथ में राजस्थानी रा संत ज्ञानेश्वर बणग्या, जिण भांत कै महाराष्ट रा संत ज्ञानेश्वर सोळा बरस री ऊमर में 'गीता' री ज्ञानेश्वरी टीका लिखी ही। आप उणी'ज परंपरा नैं आगै बधाय'र राजस्थानी रा बेजोड़ संतकवि बणग्या। आपरी रचनावां रो लेखो कर्‌यां लखावै कै कांई सांचै ई अै अेक कवि री रचनावां है।

सरल, सहज राजस्थानी भाषा रा सबदां नैं परोटतां आप अैड़ी रचनावां लिखी कै जन–साधारण रै हिये ढूक सकै। काव्य–संबोधन रै रूप में आपरी रचना रा कीं पद इण संकलन में लिरीज्या है, जिणमें जप–तप, आत्म–कल्पना, मन–बुद्धि री थिरता, धीरता, समता भाव, भलाई, शांति, सास्वत सुख अर केई औगुणां में रीस, निंदा, ईसको, कटुसबद आद री बात करतां आत्मचिंतन सूं खुद नैं जाणणो, आपरी खामियां नैं देखणो, चोखी सीख मानणी अर धरम री मरजाद में रैवणो, धरम रो पाळण करणो आद आपरा आं पदां रै रूप में जीवण रो सार है––

आत्म–संबोध

जीता ! जनम सुधार, तप जप कर तन ताइयै।
छिन छिन में तन छार, दिन थोड़ा में देखजै।।

जीता ! निज दुख जोय, कुण कुण कष्टज भोगव्या।
अब दिल में अवलोय, ज्यूं सुख लहियै शासता।।

स्नेह–राग संताप, जीता ! निश्चय जाणजै।
समभावे चित थाप, आप सुख–दुख बहुला अख्या।।

स्तुति जश और प्रशंस, हिवड़ै सुण नवि हरखियै।
अवगुण द्वेष न अंश, सुण तूं जय ! निज सीखड़ी।।

क्रोध–अगन उपसंत, खिम्या चित्त धारै खरी।
धीर गंभीर धरंत, कठिन वचन नवि काढियै।।

जय ! सागर सम जाण, महिमागर मुनिवर सही।
अखिल परम्पर आण, अल्प दिवस में अचल सुख।।

वेरी मान बिखेर, (जय) नरमाई गुण नीपजै।
हिवड़ै पर गुण हेर, निज ओगुण सुण निद मा।।

जय निज–आदि सुजोय, विविध पणै तूं दुख लह्यो।
अल्प–कठिन अवलोय, थोपै तूं किण कारणै ?।।

जय ! खिम्या वर टोप, वचन–समिति वख्तर प्रष्ट।
अधिक गुणागार ओप, आतम गढ आराधियै।।

भू सम जय ! गंभीर, निष्पकम्प मन्दर–गिरी।
हेरे निज गुण हीर, ध्यान सुधारस ध्यायनै।।

धर धन्नो चित्त धीर, अल्प काळ आराधियै।
तूं कर धर तप–तीर, सखरी सुण 'जय' सीखड़ी।।

उळझ्यो काळ अनाद, अंतर 'जय' गुण ओळखो।
प्रवर प्रशांत प्रसाद, धर खिम्या वर खांत सूं।।

चतुराई चित्त चिंत, सुध निज कारज साधियै।
मत कर बीजो मिंत, आतम मिंत जय ! अचल कर।।

जय ! अंतिम जगदीश, कुण कुण तप अप खार किया।
धर्म खिम्या जगदीश, अष्ट न तप आदर सकै।।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी भाषा रो जैन–साहित्य है–
   (अ) अबखो अर दोरो (ब) सरल अर सहज
   (स) विविध अर विसाल (द) गैरो अर गूढ ( )
2. जैन रचनाकार किण शैली में रचनावां करी–
   (अ) जैन–शैली में (ब) डिंगळ–शैली में
   (स) पिंगळ–शैली में (द) लौकिक–शैली में ( )
3. घणकरा जैन कवियां रा विषय रैया है–
   (अ) वीरता अर सिणगार (ब) बात बणाव अर चमत्कार
   (स) धरम–नीति अर उपदेश (द) तीनां मांय सूं कोई नीं ( )

4. जयाचार्य किण पंथ रा हा–
   (अ) तेरापंथ (ब) दादू पंथ
   (स) लालदासी पंथ (द) गूदड़ पंथ ( )
5. जयाचार्य दीक्षा री बगत हा–
   (अ) 12 बरसां रा (ब) 9 बरसां रा
   (स) 13 बरसां रा (द) 7 बरसां रा ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. जयाचार्य रै टाबरपणै रो कांई नांव हो ?
2. जयाचार्य रो जलम कदै अर कठै होयो ?
3. जयाचार्य रा माता–पिता रो नांव लिखो।
4. जयाचार्य रा शिक्षा–गुरु कुण हा ?
5. जयाचार्य री लिखी किणी अेक रचना रो नांव लिखो।
6. दो जूनी जैन रचनावां रा नांव लिखो।

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. तेरापंथ रा पैलड़ा आचार्य कुण हा अर वै किण साहित्य री नींव राखी ?
2. जयाचार्य किणरी जोड़ रा अर कैड़ा कवि हा ?
3. जयाचार्य में कांई–कांई गुण हा ?
4. आचार्य बणियां पछै जयाचार्य कांई–कांई काम कर्या ?
5. जयाचार्य रो बारलो व्यक्तित्व कैड़ो हो ?

लेख रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी साहित्य में जैन साहित्य रा योगदान नैं समझावो।
2. जयाचार्य रा व्यक्तित्व अर कर्तत्व रो वर्णन करो।
3. जयाचार्य रै जीवण सूं कांई सीख मिलै ? समझावो।
4. नीचै लिख्योड़ा पद्यांशां री सप्रसंग व्याख्या करो–
   (अ) जीता ! जनम सुधार.....लहियै ाासता।
   (ब) स्नेह राग संताप.....निज सीखड़ी।
   (स) क्रोध अगन उपसंत.....अचल सुख।
   (द) चतुराई चित्त चिंत.....तप आदर सकै।

उत्तरमाळा

1. स 2. अ 3. स 4. अ 5. ब

इकाई : 3

गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद'

कवि–परिचै

प्रगतिशील काव्यधारा रा नामी कवि श्री गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' रो जलम जोधपुर में सन् 1907 में होयो। आजादी री अलख जगावणिया 'उस्ताद' आजादी रै आंदोलन री सबसूं आगली पांत में रैया अर केई बार जेळ भी गया। आम रैयत री बात आप आपरी लेखनी सूं संजीदगी सूं राखण रै कारण आपनैं 'जन–कवि' रै रूप में पिछाण मिली।

पत्रकारिता सूं घणो जुड़ाव राखणिया 'उस्ताद' आपरी कवितावां सूं आजादी री अलख जगाई अर आजाद भारत में जनसंपर्क विभाग में रैवता थकां आप केई विकास रा गीत भी लिख्या। आपरी कवितावां– 'जनकवि उस्ताद' (संपादक–रावत सारस्वत अर रामेश्वरदयाल श्रीमाळी) अर 'कलम रो उस्ताद' (संपादक–विजयदान देथा) में संकलित है।

पाठ–परिचै

जुगवाणी : अंग्रेजां री अनीत अर जोर–जुलम नैं आपरी लेखणी रै पाण जनता रै सांमी राख'र कवि कैवै कै कवि री काया तो मिटणी है, पण कविता अमर है। कवि संदेस देवै कै कविता में जुग री वाणी होवणी चाइजै।

बंधणां नैं तोड़ो : आजादी अर जन–बळ री पैरवी करता थकां कवि जूनै बंधणां नैं तोड़ण री बात कैवै। इसा बंधण, इसी रीतां, जिणसूं जन रा पग बंध जावै अर जिणसूं विकास माथै उळटो प्रभाव पड़ै। कवि कैवै कै सगळो बळ अेकठ हो जावै तो देस री दसा बदळ सकै।

जुगवाणी

आ जनकवि री जुगवाणी, आ कदै न चुप रह जाणी
कोई लाख जतन कर हारै, आ समझै साच सुणाणी

कोई मारकूट धमकाई, धन–कुरब–धाम ललचाई
सै जुग रा जुल्मी खपग्या, इण करी नहीं सुणवाई
आखड़िया सो आखड़िया, इण माथै धूंस जमाणी

जद जन रै पग में बेड़ी ही, जनता गाडर जैड़ी ही
राज रौ जोर जमावण, अंगरेज फौज नैड़ी ही
जब कठै दबी जरबां सूं, अब किणरै हाथ दबाणी

जद गौरी हुकमत अड़ती, सड़कां पर गोळ्यां झड़ती
जेळां में चोखट चढियां, मौरां री खाल उधड़ती
पिण 'जै स्वराज' घुर्राता, नरसिंह जुत्योड़ा घाणी

आ चोट लाग्यां चमकै है, निरणां पेटां दमकै है
फाटा गाभा नै रण रा, झिंडा गिणती घमकै है
इणरा धण–टाबर जाणै, विपदा माथै मुसकाणी

आ भूलां समझालेला, ऊजड़ खड़ता पालैला
पूठै, इण घड़ी अगाड़ी, हाळी, हालै, हालैला
जुग–जुग इण री भावी है, सिलगाणी फेर बणाणी

गायक इक दिन मिट जासी, पिण अैड़ा गीत बणासी
जन–जन रै कंठां रमसी, पीढी–दर–पीढी गासी
आ काया तो कवि री है, पण जनता री जुगवाणी

बंधणां नैं तोड़ो

बंधणां नैं तोड़ो, जुग रा जूझारां दौड़ो–दौड़ो
बंधणां नैं तोड़ो, जुग री सगत्यां दौड़ो–दौड़ो

हाथ सरीखा नर नै नारी, क्रोड़ भुजां बळ नै कईं भारी
जो रीतां जन रा पग बांधै, बांरी नाड़ मरोड़ो

जन–बळ जागै घड़ी –घड़ी में, बंधै बीजळी कद गुदड़ी में
धरण जागगी, हथ बळ हुलस्यो, जूझै जुग जाग्योड़ो

धड़क–धड़क भव रो हिय धड़कै, जन–पुरसारथ रा भुज फड़कै
गींड बणा धरती सूं खेलै, जीवण ज्वार चढ्योड़ो

हुकमत घर री, जुगगत साथै, कळा मोकळी धरती हाथै
समंद फाड़दै, क्रोड़ जणां रो, साथै चरण बंध्योड़ो
बंधणां नैं तोड़ो

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. जुगवाणी सूं कवि रो मायनो है–
   (अ) कवियां री वाणी (ब) सांची वाणी
   (स) कमतरां री वाणी (द) आजादी री वाणी ( )
2. जद देस गुलाम हो, जनता कैड़ी ही–
   (अ) लौह रै गार्डर जैड़ी (ब) भेड़ जैड़ी
   (स) गाड्योड़ै मिनख जैड़ी (द) गारड़र जैड़ी ( )
3. 'जेळां री चौखट चढिया, मौरां री खाल उधड़ती', इण ओळी में 'मौरां री खाल' सूं कवि रो मायनो है–
   (अ) मोरां री खाल (ब) राजा मोरधज
   (स) जेळां रा मोर (द) पीठ री चामड़ी ( )
4. 'बंधणां नैं तोड़ो, जुग री सगत्यां दौड़ो–दौड़ो' इण ओळी में 'सगत्यां' सूंकवि रो कांई मायनो है–
   (अ) सगळी जनता (ब) सगळां री गती

(स) लुगायां (द) लुगायां रा संगी ( )

5. 'जो रीतां जन रा पग बांधै' इण ओळी में 'रीतां' सूं मतलब है–

(अ) खाली (ब) रीता नांव री छोरी

(स) रीतै हाथां रा लोग (द) समाज री कुरीत्यां ( )

साव छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. कुण चुप कोनीं रैय सकै ?
2. साच कुण सुणावै ?
3. जुलम्यां साथै कुण सुणवाई नीं करी ?
4. 'जै स्वराज' कुण घुर्राता ?
5. 'निरणां पेट' सूं कांई मतलब है ?
6. 'ऊजड़ खड़ता' सूं कांई मतलब है ?
7. जन रा पग कुण बांधै ?
8. 'घर री हुकमत' सूं कवि रो कांई मतलब है ?

छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'जुग रै जुलमियां' जुगवाणी नैं थामण सारू कांई–कांई कर्‌यो ?
2. 'आ समझै साच सुणाणी' सूं कांई आशय है ?
3. 'जद जन रै पग में बेड़ी ही' सूं कांई मतलब है ?
4. 'जद कठै दबी जरबां सूं, अब किणरै हाथ दबाणी।' अठै 'जद' सूं कांई तात्पर्य है ?
5. कवि किसी रीतां नैं तोड़ण री बात करै ?
6. कवि रै मुजब घड़ी–घड़ी में कुण जागै अर क्यूं ?
7. 'उस्ताद' नैं जनकवि कैवण रो मोटो आधार कांई है ?
8. जन–बळ रो साथै चरण बंध्योड़ो होवै तो वै कांई कर देवै ?

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'जुगवाणी' कविता आधुनिक प्रगतिशील काव्यधारा री अेक नामी कविता है। समझावो।
2. 'बंधणां नैं तोड़ो' कविता रो सार समझावो।
3. नीचै दियोड़ी ओळ्यां रो भाव–विस्तार समझावो।

(अ) जो रीतां जन रा पग बांधै, बांरी नाड़ मरोड़ो।

(ब) आ भूलां समझालेला, ऊजड़ खड़तां पालेला।

उत्तरमाळा

1. ब 2. ब 3. द 4. स 5. द

चन्द्रसिह बिरकाळी

कवि–परिचै

आधुनिक राजस्थानी कवियां में श्री चन्द्रसिंह अेक महताऊ ठौड़ राखै। आपरो जलम बिरकाळी गांव में संवत् 1969 में होयो। 'डिंगळ' री कविता सूं न्यारी आज री राजस्थानी कविता री न्यारी निकेवजी ओळखाण थापणिया चन्द्रसिंह 'बादळी' अर 'लू' जैड़ी महत्त्वपूर्ण रचनावां रा सिरजक है। श्री चन्द्रसिंह मूळ रूप सूं प्रकृति रा चितेरा कवि है। राजस्थान री मरुभोम बादळ अर बिरखा नैं हमेशा सूं ई तरसती रैयी है अर इणरो प्रभाव अठै रै मानखै रै जीवण माथै गैराई सूं पड़्यो। कवि भी इण प्रभाव सूं अछूता नीं रैया अर आपरै इणी प्रभाव री वजै सूं आप 'बादळी' अर 'लू' जैड़ी मौलिक रचनावां करी। आं रचनावां रै पाण आपनैं राजस्थानी साहित्य मांय अेक सिरै स्थान मिल्यो। आं रचनावां रै अलावा 'दिलीप', 'काळजै री कोर', 'सांझ' अर 'बालसाद' रचनावां भी छप चुकी है। आं में 'दिलीप' अर 'काळजै री कोर' रचनावां क्रमशः 'रघुवंश' अर 'गाथा' रो आंशिक अनुवाद है।

कविवर चन्द्रसिंह प्रकृति अर खास करनै मरु–प्रकृति रो घणो सांतरो अर प्रभावी अंकन आपरी रचनावां में कर्‌यो है। कवि उण भावां नैं भी घणै फूठरापै सूं उकेर्‌या है जिका भाव प्रकृति रै विविध रूपां नैं देख'र आम मरुवासी रै मन में जलमै।

पाठ–परिचै

बादळी– इण संकलन में 'बादळी' काव्य–कृति मांय स ूं कीं दूहा लिरीज्या है। कवि 'लू' नैं जठै मरुभोम रै वास्तै अभिसाप मानै तो 'बादळी' नैं वरदान, क्यूंकै अठै रो लोकजीवण बादळां रै वरदान माथै ई टिक्योड़ो है। मरुभोम रै तपतै अंतस माथै बादळां री छांट मोती बण'र अठै रै जीवण में ठंडळक पौंचावै। इणरी भाषा सीधी–सादी अर मीठी है। भावां में संप्रेषणता अर स्वाभाविकता है। 'बादळी' रै वरणाव में अेक सांगोपांग फूठरी–सी गति है। इणी कारण सूं इणरी लोकप्रियता रो परचम लैरायो।

मरुधर महिमा– इण कविता मांय कवि जलमभोम री महिमा रो बखाण करता थकां कैवै कै जिण मरुधर आपां सबां नैं पोखिया है उणरो माण राखणो आपां सब रो धरम है।

बादळी

जीवण नै सह तरसिया, बंजड़, झंखड़, बांठ।
बरसै भोळी बादळी, आयौ आज आसाढ।।

आठूं पौर उडीकतां, बीतै दिन ज्यूं मास।
दरसण दै अब बादळी, मत मुरधर नैं तास।।

आस लगायां मुरधरा, देख रही दिन रात।
भागी आ थूं बादळी, आयी रुत बरसात।।

छिन में तावड़ तड़तड़ै, छिन में ठंडी छांह।
बादळियां भागी फिरै, घात पवन गळ बांह।।

रंग–बिरंगी बादळी, कर कर मन में चाव।
सूरज रै मन भांवतौ, चटपट करै बणाव।।

पहरै बदळै बादळी, बदळ पहर बदळाय।
सूरज साजन नैं सखी, आसी कुणसो दाय।।

सूरज साजन आवसी, बैठी पेई खोल।
बदळ–बदळ धण बादळ्यां, पहरै वेस अमोल।।

दूर खितिज पर बादळ्यां, च्यारूं दिस में गाज।
जाणै कम्मर बांधली, आभै बरसण आज।।

भूरी काळी बादळी, बीजळ रेख खिंचाय।
जाण कसौटी ऊपरां, सुवरण रेख सुहाय।।

आभ अमूझी बादळी, घरां अमूझी नार।
धरां अमूझ्या धोरिया, परदेसां भरतार।।

गांव–गांव में बादळी, सुणा सनेसो गाज।
इंदर बूठण आवियौ, तूठण मुरधर आज।।

आज कळायण ऊमटी, छोड़ै खूब हळूस।
सौ सौ कोसां बरससी, करसी काळ विधूंस।।

ज्यूं–ज्यूं मधरौ गाजियौ, मनड़ौ हुवो अधीर।
बीजळ पळकौ मारतां, चाली हिवड़ै चीर।।

परनाळां पाणी पड़ै, नाळा चळवळिया।
पोखर आस पुरावणा, खाळा खळखळिया।।

टप–टप चूंवै आसरा, टप–टप विरही नैण।
झप–झप पळका बीज रा, झप–झप हिवड़ौ सैण।।

मरुधर महिमा

मरुधर म्हांनै पोखिया, मरुधर म्हारो प्रांण।
राखां आखै जगत में, मरुधर रो म्हे मांण।।

म्हारै मन में मोद अत, मरुधर म्हारो देस।
मरुधर रा म्हे लाडला, गावां गीत हमेस।।

वै धोरा वै रूंखड़ा, वा सागण वणराय।
वै साथै रा सायणा, किंयां भुलाया जाय।।

जावां च्यारूं कूंट में, जोवां जगत तमाम।
निस दिन मन रटतो रहै, प्यारो मरुधर नाम।।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'बादळी' काव्य–कृति रा रचनाकार है–
   (अ) सत्यप्रकाश जोशी (ब) चन्द्रसिंह
   (स) मेघराज मुकुल (द) कन्हैयालाल सेठिया ( )

2. 'बादळी' किण भांत री काव्य–कृति है–
   (अ) सिंणगारिक–'काव्य (ब) प्रगतिशील–काव्य
   (स) रीति–काव्य (द) प्रकृति–काव्य ( )
3. मुरधर नैं कुण तास देवै–
   (अ) आंधी (ब) लूआं
   (स) बादळी (द) कोई नीं ( )
4. बादळी किणरै साथै गळबांह घाल'र भागती फिरै–
   (अ) पवन रै साथै (ब) सूरज रै साथै
   (स) झाड़–झंखाड़ रै साथै (द) आभै रै साथै ( )
5. 'करसी काळ विधूंस।' अठै 'काळ' सूं तात्पर्य है–
   (अ) काळो रंग (ब) आवण वाळो काल
   (स) अकाळ (द) सुगाळ ( )

साव छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. चन्द्रसिंह बिरकाळी री ख्यात कृति रो नांव बतावो।
2. मरुभोम किणनैं तरसती रैयी है ?
3. जीवण नैं कुण–कुण तरस रैया है ?
4. किणरै अंतस माथै बादळी ठंडळक पौंचावै ?
5. रंग–बिरंगी बादळी किणरै मन भावतो बणाव करै।
6. सूरज साजन रै वास्तै बादळी कांई–कांई करै ?
7. 'कम्मर बांधली' सूं कांई तात्पर्य है ?
8. कवि मरुधर नैं प्राण क्यूं मानै ?
9. 'म्हारै मन में मोद अत' सूं कवि रो कांई तात्पर्य है ?

छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. चन्द्रसिंह बिरकाळी री रचित कृतियां रा नांव बतावो।
2. 'बादळी' किण भांत रो काव्य है ? सार रूप सूं समझावो।
3. 'दरसण दै अब बादळी, मत मुरधर नै तास।' इण ओळी रो भाव सारांश बतावो।
4. कवि आपरी कृति में प्रकृति रै साथै मानवीकरण कर्‌यो है। किण भांत ?
5. 'बादळी' किणरै मन भावतो बणाव, किंयां अर किण भांत करै ? समझावो।
6. 'वयण सगाई' अलंकार नैं पोखण वास्तै कोई–सी तीन–च्यार ओळ्यां छांट'र समझावो।
7. 'मरुधर री महिमा' रो आप आपरै सबदां में वरणाव करो।

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. पठित पद्यांश रै आधार माथै सिद्ध करो कै चन्द्रसिंह बिरकाळी मरु–प्रकृति रा फूठरा चितेरा है।
2. 'बादळी' काव्य रो भाव अर कला–पख समझावो।
3. इण पद्यांशां री सप्रसंग व्याख्या करो–
   (अ) आठूं पौर उडीकतां.....मुरधर नै तास।।
   (ब) पहरै बदळै.....कुणसो दाय।।
   (स) भूरी काळी.....रेख सुहाय।।
   (द) आज कळायण.....काळ विधूंस।।

उत्तरमाळा

1. ब 2. द 3. स 4. अ 5. स

कन्हैयालाल सेठिया

कवि–परिचै

राजस्थानी भाषा रा ख्यातनांव कवि श्री कन्हैयालाल सेठिया रो जलम सुजानगढ (चूरू) में सन् 1919 में होयो। आप राजस्थानी रै सागै–सागै हिंदी, उर्दू में भी कवि रै रूप में घणी ख्याति अर्जित करी है। जलमभोम रै प्रति प्रेम, दार्शनिकता री गूढता अर कम सूं कम सबदां में घणी सूं घणी बात कैवण री खिमता रै पाण ही श्री सेठिया राजस्थानी रा सिरै कवि मानीजै।

आपरी रचनावां खास करनै मातृभूमि प्रेम, आदर्शवादी चेतना अर नैतिक नजरियै सूं प्रभावित रैयी है। श्री सेठियाजी री राजस्थानी में मींझर, सबद, कूंकूं, अघोरी काळ, रमणियै रा सोरठा, लीलटांस अर हेमाणी आद काव्य–कृतियां छप चुकी है। 'लीलटांस' नैं तो केंद्रीय साहित्य अकादमी रो पुरस्कार भी मिल चुक्यो है। राजस्थानी रै अलावा आपरी उर्दू री 'ताजमहल' अर हिंदी री 'प्रणाम', 'मर्म' , 'अनाम' अर 'निर्ग्रंथ' आद रचनावां नैं मोकळी ख्याति मिळी।

पाठ–परिचै

इण संकलन में शामिल दोनूं कवितावां श्री सेठिया री दो न्यारी–न्यारी खासियतां नैं उजागर करै। 'जलमभोम' कविता में कवि आपरी मातभोम री महताऊ खासियतां अर इण माथै जलम लेवण वाळा मिनखां रूपी हीरां रो वरणाव कर्‌यो है। आ कविता परंपरागत शैली में रच्योड़ी है। भाषा सरल अर सहज होवण रै कारण कविता री ग्राह्यता आम आदमी री पहुंच में है। कवि रै रूप में प्रसिद्धि रो ओ भी अेक बडो कारण है।

दूजी कविता 'गांव' नांव सूं लिखीजी है, जिणमें कवि मुक्त छंद रै माध्यम सूं संदेस देवै कै जठै संवेदणा अर ओळखाण है, बठै आत्मा अर परमात्मा रो वासो है। आ कविता भारतीय दरसण नैं पाठकां रै सांमै राखण में घणी सबळी बण पड़ी है।

जलमभोम

आ धरती गोरा धोरां री
आ धरती मीठा मोरां री
ईं धरती रो रुतबो ऊंचो
आ बात केवै कूंचो–कूंचो
आ फोगां में निपज्या हीरा
आं बांठां में नाची मीरां
पन्ना री जामण आ सागण
आ ही प्रताप री मां भागण
दादू रैदास कथी वाणी
पीथळ रै पाण रयो पाणी
जौहर री जागी आग अठै
रळ मिळग्या राग–विराग अठै

तरवार उगी रण खेतां में
इतियास मंड्योड़ो रेतां में
वो सत रो सीरी आडावळ
वा पत री साख भरै चंबळ
चूड़ावत मांगी सैनाणी
सिर काट दे दियो क्षत्राणी
ईं कूख जलमियो भामासा
राणा री पूरी मन आसा

गांव

ईं काणती कमेड़ी रो आळो
जाटै बास रै पींपळ पर है,
आ गंजली कागली
गेली परली नीमड़ी पर ब्यायोड़ी है,
ओ झीम्परियो गंडक
लीलगरां री ढाणी रो है,
हीरू कुंभार री बैड़की
काल टोगड़ी ल्याई है,
टाबरां रै धार हुगी,
रात मोती बळाई रै घरां
जागण हो,
आछी मनवार खातर करी,
अै खोज तो मानदासजी रा है
सुधियां ही कुनै निसरग्या ?
छोरां, भूतियै खेजड़ै रा खोखा
चोखा कोनीं
ना खाइज्यो, उलाकता फिरोला,
सोहन माळी री सांड
अबार बिराईज'र मरगी
गरीब नैं हांडी हेठै करगी,
ओळखाण रै संवेदण रो नांव
गांव उठै आतमा परमातमा।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. श्री सेठियाजी री केंद्रीय साहित्य अकादेमी सूं पुरस्कृत रचना रो नांव है–
   (अ) जलमभोम (ब) गळगचिया
   (स) लीलटासं (द) कूंकूं ( )

2. मातभोम री खासियतां नैं उजागर करण वाळी कविता रो नांव है–

(अ) ताजमहल (ब) मींझर

(स) प्रणाम (द) जलमभामे ( )

3. गांव कविता में किण खासियत रो वरणाव है–

(अ) अकाळ रो (ब) सुगाळ रो

(स) गांव री संवेदणा रो (द) गांव री गरीबी रो ( )

4. जौहर रै कारण प्रसिद्ध प्रांत रो नांव है–

(अ) गुजरात (ब) हरियाणा

(स) राजस्थान (द) पंजाब ( )

5. 'सत' अर 'पत' री साख भरणिया है–

(अ) आडावळ अर चंबल (ब) थार रो मरुस्थल

(स) राव गांगा अर सांगा (द) पीथळ अर प्रताप ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. परंपरागत अर आधुनिक मुक्त छंद में कविता रचण में सिद्धहस्त कवि रो नांव बतावो।
2. 'लीलटांस' काव्य–कृति नैं किण अकादमी सूं पुरस्कार मिल चुक्यो है ?
3. राजस्थानी भाषा रै अलावा कवि री रच्योड़ी मुख्य रचनावां रा नांव बतावो।
4. 'जलमभोम' कविता में किणरो वरणाव कर्‌यो गयो है ?
5. आं सबदां रा तत्सम रूप लिखो–
   आडावळ, जामण, पीथळ, सैनाणी,
6. 'पन्ना' अर 'प्रताप' में कांई संबंध हो ?
7. कूंचो–कूंचो किणरी बात कैवै ?
8. 'गरीब नैं हांडी हेठै करगी', कींकर ?

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. श्री सेठियाजी राजस्थानी भाषा रा सिरै कवि क्यूं मानीजै ?
2. श्री सेठियाजी री प्रमुख रचनावां रा नांव बतावो।
3. 'जलमभोम' कविता रो भाव सारांश बतावो।
4. 'गांव' कविता रै माध्यम सूं कवि कांई संदेस देवणो चावै ?
5. 'तरवार उगी रण खेतां में, इतियास मंड्योड़ो रेतां में। ' इण ओळी रो भाव बतावो।
6. 'ईं कूख जलमियो भामासा, राणा री पूरी मन आसा।' संदर्भ सहित समझावो।

लेख रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'जलमभोम' कविता रो सारांश विस्तार सूं समझावो।
2. पठित पद्यांशां रै आधार माथै सेठियाजी री काव्य–कला नैं समझावो।
3. नीचै दियोड़ै अंशां री सप्रसंग व्याख्या करो–

(अ) ईं कूख जलमियो.....पूरी मन आसा।।

(ब) तरवार उगी रण.....साख भरै चंबल।।

(स) ओळखाण रै.....परमातमा।।

उत्तरमाळा

1. स 2. द 3. स 4. स 5. अ

मेघराज 'मुकुल'

कवि–परिचै

'सैनाणी' कविता सूं मंच माथै राजस्थानी भाषा अर साहित्य री जोत जगावण वाळा सुरीला गीतकार मेघराज 'मुकुल' रो जलम राजगढ (चूरू) में 17 जुलाई, 1923 में होयो। कविता में इतिहास री ऊजळी छिब उकेरण वाळा कवि 'मुकुल' रो पैलो कविता–संग्रह 'उमंग' हो, जिणमें राजस्थानी अर हिंदी, दोनूं भाषावां री कवितावां भेळी ही। राजस्थानी में आपरो काव्य–संग्रह 'जागी जोत' 1969 में छप्यो। अेमअे. तांई भणाई कर्‌यां पछै आप राजस्थानी सांस्कृतिक अधिकारी बण्या। काव्य–सिरजण री प्रेरणा मा सूं मिली। सैनाणी, सीमा रेखा, कोडमदे, डांफर, जाग उठ्‌या अंगारा, राणी पद्‌मावती, चंवरी, सैनाणी री जागी जोत, हिरोळ, आण री बात, दुर्गावती, सत्ता रो त्याग, छिंयां तावड़ो, बेटी री लाज, आज आंतरो घणो बण्यो आद काव्यां री रचना करी है।

मुकुल रो काव्य लोककथावां रै ओळै–दोळै घूमतो रैयो। घणकरो काव्य इतिहास रै पानां सूं लियोड़ी लोकचावी छोटी–छोटी कथावां है। आं कथावां नैं काव्य–रूप में 'मुकुल' पिरोई, पण कथा में आपरी कोई मौलिक उद्‌भावना नीं भरी। फेरूं भी दूर–दिसावर रैवणियां लोगां नैं मेघराजजी री कविता में आपरै मुलक री मोवणी सौरम आवती, जिणसूं मंच माथै वै खूब जमता। वांरी कविता 'सैनाणी' मंच माथै हिंदी सूं सवाई राजस्थानी भाषा री जोत जगाई। राजस्थान रै जूनै गौरव रो बखाण करणै रै सागै आपरै काव्य में राजस्थान रै लोकजीवण अर प्रकृति रा फूठरा चित्राम खींचिया है। उणांमें संवेदन, साहस, आसा अर क्रांति रा ऊजळा, अर सुरंगा रंग भर्‌या है।

पाठ–परिचै

इण संकलन में आपरी कविता 'सूरज रै माथै सिंदूर' किरत्यां काव्य सूं लिरीजी है। इण कविता में नवै जुग री नवी मान्यता री जोत जगमगावै। कवि री वाणी करसां अर कामेतरां नैं चेतावै। आज सगळा भणिया–गुणिया नौकरियां नैं उडीकै है, पण बेरोजगारी रै इण समय मांय हर आदमी आपरै दो हाथां सूं मैणत नैं अंगेजलै तो ओ देस संसार रो सिरमौर बण जावै। सरकार भी जद करसां अर मजूरां रै उत्थान री बात करै। भारत कृषि प्रधान देश है। अठै रा करसा अर मजूर सिमरध होसी तो ओ देस मतैई सिमरध होय जासी। आज रै संदर्भ में आ कविता पथ–प्रदर्शक बण सकै–

सूरज रै माथै सिंदूर

बरसै चारूं कूंट चानणो, अंधकार नैं आवै लाज।
जिको बूकियां पाण कमावै, वो धरती पर करसी राज।।
धरा धरम नैं छोडै कोनीं, शोसण पर तो पड़सी गाज।
जिको बहासी खून पसीनो, वो ही अब तो करसी राज।।
आग उकाळै सीळो पाणी, भक भक करती निकळै भाप।
बिजळी फाटै मेघ–माळियै, उमस्यां धरती बधसी ताप।।
लियां भूंगळी, फूंकण चूल्हो, आंधी आप जगावै आग।
इसी घड़ी में दम–दम करती, लपट सजावै जुगरो भाग।।
हळ रै सागै आस ऊभरै, निकमो छोलै छाती आप।
श्रम जद पीठ थपथपावै तो, ढीलै मुंह पर पड़ज्या थाप।।

बात बात में बात नीसरी, बणगी लंबी–चौड़ी बात।
बात बणायां सरसी कोनीं, अजै मोकळी ऊंघै रात।।
जिकै हाथ में हसियो–कसियो, वो ही हाथ बण्यो मजबूत।
जिकै हाथ में जेळी खुरपी, वो जीवैलो सावळ सूत।
जिकै पगां में रुळी गरीबी, वै पग हुया पांगळा आज।।
जिकै पगां सूं माटी लिपटी, वै पग बण्या गरीब–निवाज।
बीज उघाड़ै मूंदी पलकां, कूंपळ न्हावै झिर–मिर मेह।
नाज नीपजै खेतड़ला में, दम–दम दमकै उजळी देह।।
हिळमिळ बावै, हिळमिळ काटै, हिळमिल रैवै करसो आज।
जगमग खेती, झिलमिल खेती, खिलण–मिळण री उमर–दराज।
जुग हुंकारै, शंख बजावै, झालर–सी झणकै झणकार।
जणै–जणै रै हिवड़ै बसग्यो, मिनखपणै में भींज्यो प्यार।।
ले पसवाड़ो अब मत सो रे, जाग–जाग किरसाण मजूर।
रात बीतगी अरे देख अब, सूरज रै माथै सिंदूर।।
इण बेळा में ले अंगड़ाई, जगती जोत धरा पर देख।
डूंगर बळती घणी देखली, पगां बळी नै झुक–झुक देख।।
चूको मत किरसाण मजूरां, मुलक पसीनो मांगै आज।
धरा धरम नै जिको राखसी, अब तो वो ही करसी राज।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि रै कथनानुसार अब धरती पर राज करसी–
   (अ) नेता (ब) श्रमजीवी
   (स) देस–भक्त (द) देस रा जवान ( )
2. कवि 'सूरज रै माथै सिंदूर' कविता में किणनैं जगाया है ?
   (अ) राजा–महाराजा नैं (ब) नेता–हाकित नैं
   (स) किसान अर मजूर नैं (द) गरीब अर अमीर नैं ( )
3. बरसै चारूं कूंट चानणो, अंधकार नैं आवै लाज। इण ओळी में 'चानणै' रो आशय है–
   (अ) चांद रो चानणो (ब) सूरज रो प्रकाश
   (स) दिवलै री जोत (द) नवजागरण री चेतना ( )
4. किसानां अर मजूरां कनै सूं आज देस कांई मांगै ?
   (अ) अन्न–जळ (ब) पसीनो
   (स) लोही (द) बलिदान ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. मेघराज 'मुकुल' नैं साहित्य–सिरजण सारू प्रेरणा कुण दी ?
2. मुकुल री कुणसी कविता मंच माथै हिंदी कविता सूं सवायी राजस्थानी भाषा री जोत जगाई ?
3. मुकुल रो काव्य किणरै ओळै–दोळै घूमतो रैयो ?

4. 'सूरज रै माथै सिंदूर' कविता कवि री किण कृति सूं लिरीजी है ?
5. 'सूरज रै माथै सिंदूर' कविता में कवि किणनैं चेतावै ?

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. दूर–दिसावर रैवणियां नैं मेघराज 'मुकुल' री कविता दाय क्यूं आवती ?
2. कवि धरती पर 'जागती जोत' किणनैं बताई है ?
3. हंसियै अर कसियै रा हाथां नैं कवि मजबूत क्यूं बताया ?
4. 'डूंगर बळती घणी देखली, पगां बळी नैं झुक–झुक देख।' इण ओळी रो भाव बतावो।
5. 'सूरज रै माथै सिंदूर' कविता में 'रात बीतगी' सूं कवि रो कांई भाव है ?

लेख रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि किसान–मजूर नैं किण भांत जगावणो चावै ? विस्तार सूं समझावो।
2. समाज रै नवसृजन री बात कवि किण रूप में बखाणी ? समझावो।
3. काव्य–शिल्प री दीठ सूं मेघराज 'मुकुल' री कवितावां री विवेचना करो।
4. नीचै लिख्योड़ा पद्यांशां री सप्रसंग व्याख्या करो।

    (अ) आज उकाळै सीळो पाणी.....लपट सजावै जुग रो भाग।

    (ब) बीज उघाड़ै मूंदी पलकां.....हिळमिळ रैवै करसो आज।

    (स) चूको मत किरसाण–मजूरां.....अब तो वो ही करसी राज।

उत्तरमाळा

1. ब 2. स 3. द 4. ब।

118

प्रेमजी प्रेम

कवि–परिचै

कोटा रै घघराना गांव रै किसान परिवार में 1 मार्च, 1943 में जलम्या प्रेमजी प्रेम राजस्थानी रा नामी कवि–गीतकार रै रूप में याद करीजै। भणाई री दीठ सूं आप बी. कॉम. कर्‌यां पछै तीन विषयां– हिंदी, अंग्रेजी अर इतिहास में अेम. अे. करी। आप लेखाधिकारी रै पद माथै सेवारत् रैया। राजस्थान रै हाड़ौती अंचळ रा चावा–ठावा कवि प्रेमजी प्रेम नैं वांरी कृति 'म्हारी कवितावां' पोथी माथै साहित्य अकादमी, दिल्ली रो पुरस्कार मिल्यो। गीत–गजल अर हास्य–व्यंग्य री कवितावां टाळ महाकवि सूर्यमल्ल मीसण माथै खंड–काव्य 'सूरज' री आप रचना करी। गद्यकार रै रूप मांय आपरो 'सेळी छांव खजूर की' उपन्यास अर रामचंद्रा की रामकथा (कथा–संग्रै) चावा रैया। कविता संग्रै– चमचो, सरवर सूरज अर संझ्या, म्हैं गाऊं मन नाचै, सांवळो साच आपरी नामी कृतियां गिणीजै।

आपरा गीतां–गजलां में नवीनता अर कवितावां में प्रयोगशील दीठ रा दरसण होवै। आज री जिनगाणी में कूड़–कपट अर सुवारथ रो बोलबालो है। आज रो मिनख मिनखीचारो भूलग्यो है, अर जठीनै भी निजर पसारां बठीनै ई जिनगाणी रो विडरूप चैरौ निजर आवै। अै कीं भाव है जका प्रमुख रूप सूं प्रेमजी प्रेम री कविता में दरसाईज्या है। आं भावां नैं व्यक्त करती बगत कवि घणै अफसोस में डूब्यो निजर आवै तो रीस सूं भर्‌योड़ो भी।

पाठ–परिचै

इण संकलन में प्रेमजी प्रेम री तीन गजलां शामिल करीजी है। पैली गजल में आज री बोझिल, हताश अर कुटळाई सूं भरी जिनगाणी रो साचो चित्रण करीज्यो है। आज मिनख भौतिक जुग री दौड़ मांय बिना उद्देश्य रै दौड़ रैयो है। दुःख रै भारै नैं ऊंचायां फिरै है। आज भाई–भाई रो दुस्मण है। विश्वास करण री वेळा मिटगी है, आज तो चुगलखोरां रो बोलबालो है।

दूजी गजल में मिनख सूं मिनखाचारै रै लुप्त होवण पीड़ नै दरसाई है। आज मिनख रा सगळा सपना चूर–चूर होयग्या है। सगळा अेक दूजै नैं दुस्मण समझै अर अेक दूजै माथै दांत पीसै। आज धरती माथै नाम कमावण री दौड़ है। जठीनै निजर पसारां उठीनै दानव ई दानव निजर आवै।

तीजी गजल बदळतै परिवेश में आध्यात्मिकता नैं परखण री चे टा है। आज मिनखां में राम रैयो कोनीं। सगळा स्वारथ री होड में अेक दूजै री टांग खींचण में लाग्योड़ा है। 'मुंडै राम बगल में छुरी' री कहावत सोळा आना साची लागै। मातृभूमि अर रिस्ता रा संबंध मिटग्या। आज मनुष्य जैर रो पुतळो है। कवि समझाइश सारू कैवै है कै भगवान सूं मिलणो है तो मीठा बोलो। दूजां री सेवा करो अर मिनख बणो।

मेळा की चकरी

दुःख घर–घर घूमर दे अतनी बेफकरी छै।
मनख्यां री जिनगाणी मेळा की चकरी छै।

कांधा प उचवां मैं, न्है आई न्है आई,
या ऊपर की सल्ला–लोढी छ जबरी छै।

देखी पण हाथां में न्है आई न्है आई,
सुख ऊंचां छींका प लूब्यां की डबरी छै।

म्हारी वाणी में अब थीं की कविता जागी,
चुगल्यां खाबा हाळी या बोली सबरी छै।

नैणां में भर तो ल्यां कुण थां बोलो ?
मनख्यां को भेस धर्‌यां पतकाळ्यां बखरी छै।

आज का जणां

जीवता अश्यां कश्यां आज का जणां ?
आंखड़्यां कटार और जीभ पाछणां

रात–रात जागबो नैण नीर पी,
कटकटार चाबबो दांत का चणां।

आइला'र भाइलां छूट छाटग्या,
टूट टाट थूणियां और छापणां।

हेरबो घणो कठण मानवी अठी,
दानवी घणां अठी देवता घणां।

आज का बजार में हेत बीतग्यो,
वैर सींत–मांत छ माणियां मणां।

राव (राम) रतनधन

डील उघाड़ी रातां देखी पांव उभाणा देख्या सब दन।
लख चौरासी जूण्यां देखी पण न्हं पायो राम रतनधन।

अतनो भी आणंद न आयो, क मन नैं समझा तो ल्यां म्हां,
क धरती देल्यां अर कर हां, झूठी सांची खाल्यां सोगन।

आकास्यां में पांख लगायां, च्यारूं खूंटां डोल्यायो पण,
साता तद आयी पाछी, जद खूद क छपरै आ बैठ्‌यो मन।

जहर पियां में घनश्याम मलैगा या सोची अर पीबा लाग्या,
श्याम न दीख्या कोरां तांई बिस सूं भर्‌यो तन को बरतन।

क तो होवै पांख कंवळ की क तुळसां क चंदण होवै,
अमरत का कळस्या होवै, बां होठां की वाणी धन–धन।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. आज मिनख किणरो भेष धारण कर लीनो–
   (अ) मिसरी रो (ब) माखण रो
   (स) मिरचां रो (द) सल्ला–लोढी रो ( )
2. आज इण दुनिया में कांई हेरणो कठिन है–
   (अ) मानवी (ब) दानवी
   (स) देवता (द) भाइला ( )

3. आज का बजार में कांई बीतग्यो–
   (अ) परिवार (ब) बेली
   (स) हेत (द) बैर ( )

4. 'अमरत का कळस्यां होवै, बां होठां की वाणी धन–धन।' अठै 'अमरत का कळस्या' सूं कांई आशय है–
   (अ) चतुराई सूं बोलणो (ब) मीठो बोलणो
   (स) तीखो बोलणो (द) कम बोलणो ( )

साव छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. प्रेमजी प्रेम राजस्थान रै किण अंचल रा कवि हा ?
2. राजस्थानी साहित्य मांय भी उर्दू रै समान प्रेमजी प्रेम कुणसी विधा नैं चावी कीनी ?
3. सूर्यमल्ल मीसण माथै प्रेमजी प्रेम रो किसो खंड–काव्य लिख्यो ?
4. प्रेमजी प्रेम नैं कुणसी काव्य–कृति माथै केन्द्रीय साहित्य अकादेमी रौ पुरस्कार मिल्यो ?
5. प्रेमजी प्रेम रै अनुसार आज री जिनगाणी मांय किणरो बोलबालो है ?

छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. प्रेमजी प्रेम किण–किण विषयां मांय अेम. अे. करी ?
2. प्रेमजी प्रेम री गद्यकार रै रूप में चावी कृतियां रा नांव बतावो।
3. आशय स्पष्ट करो–
   (अ) आंखड़्यां कटार और जीभ पाछणां
   (ब) दानवी घणां अठी देवता घणां।
   (स) वैर सींत–मांत छ माणियां मणां।

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. कवि 'मेळा की चकरी' में मिनखां नैं पतकाळ्यां अर वांरी जिनगाणी नै मेळा की चकरी क्यूं बताई ? समझावो।
2. म्हारी वाणी.....सबरी छै। शे'र में सबरी रो संदर्भ कित्तोक सार्थक लागै ? विवेचना करो।
3. 'हेरबो घणो कठण मानवी अठै।' कुण–सा हालातां रै संदर्भ में कवि आ बात कही है ?
4. घणा–घणा कळाप कर्यां भी कवि री ब्रह्म सूं भेंट क्यूं नीं हुयी ?
5. प्रेमजी प्रेम री रचनावां री काव्य–कला री दीठ सूं विवेचना करो।

उत्तरमाळा

1. स 2. अ 3. स 4. ब

हिम्मतसिंह उज्ज्वळ

कवि–परिचै

चारण हिम्मतसिंह उज्ज्वळ रो जलम 1970 ई. में उदयपुर जिलै री मावली तहसील रै गांव भारोड़ी में होयो। आप राजस्थानी साहित्य मांय अेम. अे. करण रै उपरांत बी. अेड. री डिग्री प्राप्त करी। अबार आप अध्यापन रो काम करै। साहित्यिक विधावां मांय आप दूहा, सोरठा, गीत अर छंद रा कुशल कारीगर है। गद्य मांय कहाणियां अर वारता रा तकड़ा जाणकार है। आपरै काव्य सिरजण मांय 'गाथा राजस्थान री' अर 'सोरठा सतसई' प्रमुख है। आं मांय राजस्थान री भौगोलिक, साहित्यिक अर सांस्कृतिक सौरम री महिमा आछी तरै सूं बखाणीजी है। इणरै अलावा श्री उज्ज्वळ रा केई फुटकर दूहा, सोरठा अर गीत समै–समै पर पत्र–पत्रिकावां मांय छपता रैवै। आपरी कवितावां अर वारतावां आकाशवाणी उदयपुर सूं भी प्रसारित होंवती रैवै।

पाठ–परिचै

इण संकलन मांय आपरी अेक दूहा छंद में रच्योड़ी रचना 'मायड़ भाषा रै बिना' लिरीजी है। इण मांय आप मायड़ भाषा री मान्यता सारू पुरजोर वकालत करता थकां कैवै कै मायड़ भाषा री मान्यता रै बिना आपांरै जीवण नैं धिरकार है। इण प्रजातंत्र मांय प्रेसरग्रुप बणा'र ई इणनैं मान्यता दिराय सकां। इण वास्तै आपांनैं कवि, करसा अर कामेती सगळां नैं आगै आवणो पड़ैला। राजस्थानी री बोलियां बाबत कवि कैवै कै अै तो राजस्थानी रूपी बाग रै मांय भांत–भांतिला रंगां रा फूलां रै उनमांन है जिकां सूं बाग री शोभा बधै अर आ ईज शोभा इणरी कीरत है। भाषा रूपी दरबार में राजस्थानी अेक भूप रै समान बिराजमान है। इण भूप रै इधकै रूप री रक्षा खातर आपां सगळां नैं संघर्ष करणो ई पड़ैला। राजस्थानी भाषा नैं मान्यता मिल्यां बिना अठै री महान् परंपरावां अर अनूठी संस्कृति नैं राजस्थान रा टाबर किंयां जाणसी ? अतः इणरी विरासत नैं जीवती–जागती राखण खातर राजस्थानी भाषा नैं मान्यता दिरावणी जरूरी है।

मायड़ भाषा रै बिना

तन सूं तो है ताखड़ो, मूंडै नहीं जुबान।
मायड़ भाषा रै बिना, अैहड़ो राजस्थान।।

राजस्थानी नह सै, कुण कुणसी रा ठांव।
जूंझै राजस्थान रा, गळी, सड़क अर गांव।।

हक खातर लड़बो भलो, सब जाणै संसार।
मायड़ भाषा रै बिना, जीवण नैं धिरकार।।

हाथा जोड़ी बीतग्या, पंचां बरस पचास।
अब तो म्हैं करसां नहीं, औरां नैं अरदास।।

राजस्थानी नै रह्या, किण कारण थै छोड़।
भारत भर में पूत है, इणरा आठ किरोड़।।

राजस्थानी में अबै, व्हैसी सगळा काज।
ढाब सको तो ढाबलो, जनता री आवाज।।

करसां कवि धंधारथी, मजदूरां रो धोक।
राजस्थानी राखवा, सब चेत्या खम्म ठोक।।

झक नीं पड़सी जीव नैं, साखी है भगवान।
राजस्थानी मात नैं, मिलै न जद लग मान।।

इण भाषा री बोलियां, ज्यूं बागां में फूल।
इणरो ई आधार है, आइज हिन्दी मूळ।।

इणरी सांची व्याकरण, आछो इणरो रूप।
भाषा रै दरबार में, राजस्थानी भूप।।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'गाथा राजस्थान री' सतसई रा रचनाकार है–
   (अ) शंकरसिंह राजपुरोहित (ब) डॉ. आईदानसिंह भाटी
   (ब) हिम्मतसिंह उज्ज्वळ (द) गिरधारीसिंह पड़िहार ( )
2. राजस्थान री महान् परंपरावां अर अनूठी संस्कृति नैं अठै रा टाबर किंयां जाण सकै–
   (अ) राजस्थानी नैं मान्यता मिल्यां सूं
   (ब) राजस्थानी री रचनावां रो प्रकासण होवणै सूं
   (स) हिन्दी नैं पुरजोर समर्थन दियां सूं
   (द) राजस्थान री डिंगळ कवितावां पढणै सूं ( )
3. कवि जीवण नैं धिरकार क्यूं मानै–
   (अ) मायड़ भाषा नैं पढण वाळां री कमी रै कारण
   (ब) मायड़ भाषा नैं मान्यता नीं मिलण रै कारण
   (स) मायड़ भाषा में पत्र–पत्रिकावां नीं छपण खातर
   (द) मायड़ भाषा में साहित्यिक सृजन नीं होवणै सूं ( )
4. कवि हिन्दी रो मूळ आधार मानै–
   (अ) गुजराती नैं (ब) उड़िया नैं
   (स) नेपाली नैं (द) राजस्थानी नैं ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. हिम्मतसिंह उज्ज्वळ री रचियोड़ी 'सतसई' रो नांव बतावो।
2. मायड़ भाषा री मान्यता सारू कवि कांई करणै रो अैलाण कर्‌यो है ?
3. भारत भर में मायड़ भाषा रै सपूतां री संख्या कित्ती है ?
4. 'ज्यूं बागां में फूल', किणरै वास्तै कैयो गयो है ?
5. भाषा रै दरबार में राजस्थानी किण माफिक विराजमान है ?

छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'गाथा राजस्थान री' रचनाकार रो परिचय दिरावो।
2. करसा, कवि अर धंधारथी सूं कवि कांई अरदास करी है ?
3. मायड़ भाषा रै बिना कवि जीवण नैं धिरकार क्यूं मानै ?
4. राजस्थानी री बोलियां नैं कवि किण भांत री ओपमां दीवी है ?
5. 'राजस्थानी भूप' सूं कवि रो कांई तात्पर्य है ?

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. कवि हिम्मत सिंह उज्ज्वळ रा मायड़ भाषा बाबत विचारां नैं विस्तार सूं बतावो।
2. इण ओळ्यां री सप्रसंग व्याख्या करो–
   (अ) हक खातर लड़वो भलो.....जीवण नैं धिरकार।।
   (ब) इण भाषा री बोलियां.....हिन्दी मूळ।।
   (स) इणरी सांची व्याकरण.....राजस्थानी भूप।।
   (द) हाथा जोड़ी.....औरां नैं अरदास।।
3. राजस्थानी री मान्यता सारू विभिन्न विद्वांना रै विचारां नैं संक्षेप में समझावो।

उत्तरमाळा

1. स 2. अ 3. ब 4. द

नीति रा दूहा

'नीति–शास्त्र' नैं जे समाज रो 'अलिखित–कानून' कैयो जावै तो कोई अतिशयाक्ति नीं है। मानखै रो सास्वत रूप अर उणरो समाज रै साथ व्यवहार किण भातं रो हावेणो चाईजै; इण बात नैं बतावण खातर ईज 'नीति–शास्त्र' रो जलम होयो। प्राचीन काल सूं ई देव भाषा संस्कृत में 'नीति–विषयक' साहित्य रो सिरजण विपलु मात्रा में होये पण बदळतै समै रै साथै संस्कृत लोकभाषानीं रैय सकी; पण फेर भी इणसूं उद्भूत भाषावां में अेक राजस्थानी भाषा में 'नीति–विषयक' अपार साहित्य रो सिरजण होयो। इण मरुधरा में रैवण वाळां री नैतिक भावना नैं प्रगट करण वाळा अलेखूं दूहा अर सोरठा हर गांव–गळी अर गुवाड. में बिखरयोड़ा पड़्या है। ओ इर्ज कारण है कै राजस्थानी रै इण नीति–साहित्य (Wisdom-Literature) री अलेखूं विद्वानां घणी प्रशंसा करी है।

नीति–साहित्य रै मांय कल्पना अर अतिरंजना रो कोई स्थान नीं होवै क्यूंकै ओ साहित्य अनुभूति माथै टिक्योड़ो होवै। इण कारण विद्वानां रो ओ मानणो है कै– 'इण साहित्य नैं आधार मान'र राजस्थान रो जातीय अर राष्ट्रीय विचारधारा रो हजारूं बरस पुराणो इतियास लिख्यो जाय सकै।' राजस्थानी में नीति–साहित्य रा दूहा विविध विषयां सूं संबंधित है अर इणरै साथै ही रंज कभी है। आं दूहां अर सोरठां नैं अठै रै जनमानस इण भातं अपणाया है कै लोग आपरी बात–बंतळ में कहावतां दांई आं रो प्रयोग करता रैवै। जीवण–व्यवहार री सफळता सारू आ सामग्री घणी उपयोगी है। इणमें 'रस' री मात्रा भलां ई कम हुवो पण आपसी व्यवहार–कुशलता भरी पड़ी है। इणी'ज कारण आम जनमानस री आ धारणा है कै जितो व्यावहारिक ज्ञान अेक नीति रै दूहै में मिळै, बित्तो किणी भी अन्य स्रोत में नीं मिळै। क्यकूँ इणमें वर्णित घटनावां अर विषय जथारथ रै धरातळ माथै टिक्योड़ो होवै। इण वास्तै ईज ओ नीति–साहित्य आम जनमानस रै हियै मायं गैराई सूं घर करग्यो है; उणसूं गैराई सूं जुड़ग्यो है।

मानखै नैं कांई करणो चाइजै अर कांई नीं; समाज अर मानखै रै वास्तै कांई उपयोगी है; इण बाबत मानखै नैं किण भांत री संगत करणी चाइजै; समै रै मुजब किण भांत रो आपसी व्यवहार करणो चाइजै। इणरै आगै आ भी बतावै कै स्वारथ रै पायै माथै टिक्योड़ै समाज में बाहरी दिखावटीपण नैं जीवण में नीं उतार'र उणरै जथारथ नैं देखणो चाइजै; जिणसूं समाज री नींव मजबूत बण सकै। ओ संदेस देवणो नीति–साहित्य रो प्रमुख ध्येय होवै। इणरै हर दूहै में ज्ञान रो आलोक है; जिको आम जनमानस रो पथ–प्रदर्शन करै। इणी'ज कारण लोक जनमानस में थिर ठोड़ है, जिणनैं वो आपरी स्थाई सम्पत्ति मान'र घणै जतन सूं आपरै कंठां माथै राखै।

अगाऊ दूहां में आ बात बताईजी है कै आदमी हमेशा आछी संगति सूं ही'ज महान बणै; इण वास्तै बुरी संगति सूं हमेशा बचणो चाइजै। इणरै साथै नीति–साहित्य आ भी बतावै कै आदमी री महानता हमेशा उचित आबो–हवा अर वातावरण सूं ही निर्मित होवै। आछा संस्कारां रै पाण ही आदमी अकलवान बणै; जिणसूं समाज सुधरै। इणरै विपरीत धन तो कुसंस्कार वाळां रै कनै भी आय सकै पण इणसूं समाज रो सुधारो नीं होवै। इणरै अलावा नीति आ भी कैवै कै ओछै आदमी अर महान् आदमी री आछी तरै सूं पारख कर'र आपसी व्यवहार करणो चाइजै। ऊपरी तामझाम देख'र उणसूं प्रभावित नीं होवणो चाइजै। जथारथ रै धरातळ माथै परख'र उणसूं आत्मीयता जोड़णी चाइजै। इणरै आगै नीति कैवै कै आदमी नैं आपरो समै अनुकूल देख'र आत्म– अभिमानी नीं होवणो चाइजै; क्यूंकै समै रो बळतो वायरो भलां–भलां नैं झुळसा देवै। समै सबसूं बळवान होवै। इण वास्तै किणी दरिद्र नैं देख'र गर्वित नीं होवणो चाइजै। इणसूं भी आगै नीति कैवै कै दुनियां री चाल–ढाल अर आपसी संबंध सब स्वारथ माथै टिक्योड़ा है। इण

वास्तै कुण सैण अर कुण दुसमण; इणरो फैसलो भी समै माथै या काम पड़ै जद ई हुवै। इणरै बाद रै कीं दूहां में महानता अर आछैपण री मानसिकता नैं दरसाईजी है। अतं में ओ बताईज्यो है कै मानखै रै जीवण में सुख–दुख दोनूं ई अहम पहलू है अर आ मानखै री कमजोरी है कै वो हमेशा सबळ रो साथ दैवे; निरबळ रो नीं। इणमें आदमी री स्वारथता नैं भली–भांत दरसायी है–

नीति रा दूहा

संगत सार अनेक फळ, भूंड भंवर कै संग।
फूलां चढ हरकै चढ्यो, चरण पखाळ्या गंग।।

संगत वडां की कीजियै, वधत–वधत वध जाय।
बकरी कुंजर पै चढी, चुग–चुग कूंपळ खाय।।

भौम परख्खो हे नरां, कहा परख्खो बिंद।
भुंय बिन भला न नीपजै, कण, त्रण, तुरि, नरिंद।।

कमल कंकर नह नीपजै, जळ रै कांठै जोय।
अकल दुहेली मानवां, धन गैला ही होय।।

आंबो काट न बाड़ कर, गहली ! नींब न रख्ख।
जात न जाणै रूंख री, तो तोड़–तोड़ फळ चख्ख।।

अे गहली ! ओ इरंड है, पात देख मत दौड़।
धक्का सहै गजराज रा, वै दरखत कछु और।।

बरसाळै रा वाहला, ओछां केरो नेह।
वहतां वहै उतावळा, छिटक दिखावै छेह।।

नदी नीर वड़ अकुरो, उत्तम प्रीत प्रवाह।
अै पहली धीमा वहै, आगै वहै अथाह।।

आला वैर न खट्टियै, देख सवाया दीह।
समै पाय संसार में, पड़ै सांकळां सीह।।

गरजै मत ना गूजरी, देख मटूकी छाछ।
सौ–सौ कुंजर घूमता, राजा नळ रै वास।।

खेड़ै–खेड़ै ठीकरी, निकम्मी मती निहार।
आ भी तपी रसोवड़ै, अपणी–अपणी वार।।

सूरज तेज प्रकास दिन, रजनी चंद–विकास।
अपणै–अपणै समय में, सब ही करत उजास।।

सर सूकै नह संचरै, 'वाकां' पही, विहंग।
किणरै चालै संग कुण, सब स्वारथ रै संग।।

क्या झूठी गल्लां कियां, क्या मुख मीठा वैण।
काम पड़्यां सूं जाणियै, अै दुसमण अै सैण।।

की होवै आघा कियां, हेत विहुणां हत्थ।
नैण सलूणां नह मिळै, (तो) बाळ अलूणी बत्थ।।

जळ न डुबोवै काठ नैं, कहो कदूणी प्रीत।
अपणो सींच्यो जाण कै, अेह वडां की रीत।।
ओछा नर रै पेट में, रहै न मोटी बात।
तीन पाव रा ठांम में, कींकर सेर समात।।
सम्पत थोड़ो रिण घणो, वैरी मांहै वास।
नदी किनारै रूंखड़ो, जद तद हुवै विणास।।
सबै सहायक सबळ रै, कोई न नबळ सहाय।
पवन जगावै वासदी, दीवो देत बुझाय।।
संपत ते मत हरखियै, विपत देख मत रोय।
संपत जांही विपत है, करता करै सो होय।।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. समाज रो 'अलिखित कानून' किणनैं कैयो जाय सकै–
   (अ) रीति–रिवाजां नैं (ब) नीति–शास्त्र नैं
   (स) लोक–शास्त्र नैं (द) लोक–गीतां नैं ( )
2. 'नीति–साहित्य' विशेष रूप सूं किण आधार माथै टिक्योड़ो होवै–
   (अ) अनुभूति माथै (ब) अतिरंजना माथै
   (स) कल्पना माथै (द) राष्ट्रीय विचारधारा माथै ( )
3. 'समै पाय संसार में, पड़ै सांकळा सीह' रो भाव सारांश है–
   (अ) सीह सांकळां नैं तोड़ देवै
   (ब) समै बडो बलवान हुवै
   (स) संसार में समै रो पायो नीं होवै
   (द) भलै दिनां में सांकळ तोड़ देणी चाइजै ( )
4. 'सर सूकै नह संचरै, 'बांका', पही, विहंग।' इण ओळी रो भाव है–
   (अ) दुनिया स्वारथी है
   (ब) दुनिया बांकी चाल चलै
   (स) पही अर विहंग बांका बण जावै
   (द) इणमें कोई भाव नीं ( )
5. 'नैण सलूणां' रो भाव है–
   (अ) लूणवान आंख्यां (ब) सैलून री आंख्यां
   (स) लम्पट आंख्यां (द) प्रीत सूं भर्योड़ी आंख्यां ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. नीति–शास्त्र रो दूसरो कांई नांव दियो जाय सकै ?
2. नीति–साहित्य में किण बात रो स्थान नीं होवै ?
3. नीति–साहित्य किण तत्त्व माथै टिक्योड़ो होवै ?

4. लोग आपरी बात अर बंतळ में कहावतां दांई किणरो प्रयोग करै ?
5. 'बरसाळै रा बाहलां' री तुलना किण सूं करीजी है ?

छोटै पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. नीति साहित्य में किण वात रौ स्थान नीं होवै ?
2. नीति साहित्य रौ मुख्य ध्येय कांई होवै ?
3. 'उत्तम प्रीत प्रवाह' इण ओळी रौ भाव सारांस में बतावै ?
4. 'समै पाय संसार में, पड़ै सांकळां सीह।' इण ओळी रौ आसय बतावौ ?
5. 'भौम परख्खौ हे नरां' इण दूहै रो भाव विस्तार सूं बतावो ?
6. 'फूलां चढ हर कै चढ्यो' इण ओळी नै सप्रसंग समझावौ ?

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'नीति–साहित्य' रै उद्देश्य नैं विस्तार सूं समझावता थकां राजस्थानी में इणरै योगदान नैं समझावो।
2. 'राजस्थानी रै नीति साहित्य नैं लोक–मानस आपरी निजू सम्पत्ति मानै।' उदाहरण देयनै समझावो।
3. नीचै लिख्या दूहां री सप्रसंग व्याख्या करो–

(अ) संगत सार.....चरण पखाळ्या गंग।।
(ब) बरसाळै रा वाहला.....छिटक दिखावै छेह।।
(स) आला वैर.....पड़ै सांकळा सीह।।
(द) सर सूकै नह.....सब स्वारथ रै संग।।
(य) संपत ते मत.....करता करै सो होय।।

उत्तरमाळा

1. ब 2. अ 3. ब 4. अ 5. द

राजस्थानी लोक गीत

राजस्थानी भाषा जुगां जूनी। बरसां लग आ लोकभाषा रैयी। लोक रै अंतस री पीड़, हरख, उमाव अर हूंस री इण भाषा में लोक री सगळी भावनावां नैं उकेरण वाळा साहित्य रो सिरजण होयो। ओ सिरजण साहित्य री सगळी विधावां में होयो। उणमें लोकगीत उत्ता ईज जूना है, जित्तो कै मिनख। अै लोकगीत राजस्थानी जनमानस रै हिरदै रा सांचा उद्‌गार है; जीवता जागता चित्राम है। अै लोक री रचना है। आंरी बणगट रा जतन लोक कदैई नीं कर्‌या। अै तो मतैई उपजण वाळा अर साव निखोट अर मौलिक है। इण वास्तै ईज लोकगीतां रो कोई अेक सरूप नीं, कोई छंद–विधान नीं होवै। राजस्थानी लोकगीतां में उणरै मूळ रूप नैं छांटणो घणो अबखो काम। आखी जीवाजूण अर लोकमानस में रमण वाळा आं गीतां रो मूळ सरूप बगत अर ठौड़ रै साथै बदळतो रैवै। राजस्थानी में आ कैवत है कै 'बारै कोसां बोली बदळै।' बोली रै फरक साथै आं लोकगीतां रै सरूप में सब जगै थोड़ो–घणो आंतरो आयां बिनां नीं रैवै। अै तो अपणै आप में सहज–सुतंतर, परंपरागत अर नित–नूंवां है। गेयता आंरे खास गुण है। समाज रै हर तबकै नैं लेय'र लोकगीतां री रचना होयी है। जीवण रो कोई पहलू आं गीतां सूं अछूतो, अणदीठो कोनीं। घटती–बधती छिंयां अर तावड़ै रै उनमान ई मानखै रा जीवण में सुख–दुःख आवता–जावता रैवै। सुख, हरख, कोड, उछाव री घड़ियां में वो जिको मैसूस करै, आं अनुभूतियां री अभिव्यक्ति ई लोकगीतां रै जलम रो कारण बणै।

मूळ रूप सूं लोकगीतां रा दोय भेद है–– 1. धार्मिक लोकगीत, 2. मनोरंजनात्मक लोकगीत। धार्मिक लोकगीतां में देवी–देवतावां रा गीत, बरत–बडोळियां रा गीत, संस्कारां रा गीत आवै।जदकै मनोरंजनात्मक गीतां री ओळी में लुगाया, मोट्यारां अर टाबरां रै सरस प्रसंगां रा गीत, खेल–तमासां रा गीत, तीज–तिंवारां रा गीत, न्यारी–न्यारी रितुवां माथै गाईजण वाळा गीत आवै।

राजस्थानी संस्कृति रूपी रूंख री जड़ां धरम सूं सींच्योड़ी है। धरम मानखै में संस्कार लावै। धार्मिक लोकगीतां री अठै इधकी ठौड़। आपरै कुळ देवी–देवतावां री छत्तर–छिंयां में कड़ूंबो, घर–गवाड़ी फळती–फूलती रैवै, इण वास्तै मिनख वांनैं ध्यावै; मनावै अर अरदास करै। देवी–देवतावां रा गीतां नैं भजन, हरजस कैवै। केई भजन अर हरजस मिनख आपरो जलम सुधारण खातर गावै तो केई अबखी पुळ में भजनां रै जोर सूं गैरी–गंगैर में सूता देवां नैं जगावै अर मनचायो वर पावै। पौराणिक देवी–देवतावां रा भजनां रै साथै लोकदेवियां– करणी माता, जीण माता, चौथ माता, सुसाणी माता.....अर लोकदेवतावां में रामदेवजी, पाबूजी, गोगाजी, तेजाजी.....आद रा गीत गांव–गांव अर ढाणी–ढाणी में गूंजै। इण भांत रा गीत भजन मंडळियां सांवठै सुर में गावै अर साथै लोकवाद्यां में नगाड़ा, मंजीरा, इकतारा अर रावण–हत्था री धुन होवै तो भजनां में सवायो रस आय जावै।

राजस्थान तीज–तिंवारां रो प्रदेस। तीज–तिंवारां रै साथै जुड़्योड़ा है लुगायां रा बरत–बडोळिया अर आंरै सागै है लोकविस्वास। सावण री तीज होवो अर भलां ई भादवै री काजळी तीज, हींडो हींडती गोरियां गीत गावै अर गीतां रै गड़कै परदेसां गयोड़ै पीव नैं घरै आवण री मनवार करै। तीज माता रो अवास करै अर अमर–सवाग री अरदास करै। चेत मास में गिणगौर पूजती कंवारी कन्यावां चोखो घर अर वर मांगै

तो सवागण नार अमर चुड़लै री आस लियां गीत गावै, गौर माता नैं मनावै।

इणीं भांत होळी अर दीवाळी रा गीत गाईजै। हरेक महीनै में आवण वाळा छोटा–बडा तिंवारां नैं गीतां री गोख सूं लाडां–कोडां मनावण री रीत है। होळी रा दिनां में सायणी–साथणियां लूरां लेवती मीठा ओळबा सुणावै अर मसखरियां चालै, फागण गाईजै। मोट्यार चंग अर डफ रै साथै धमाल राग में फाग गीत गावै अर कीं दिनां खातर खुद नैं ई बीसर जावै। वै आपरै मन रो चाव गीतां रै ओळावै पूरो करै।

दीवाळी रा दिनां में टाबर मतीरां में नैनी–नैनी जाळियां बणावै। उणरै ऊपर ढेबरी काट'र मांय 'दीवो' मेल'र रात में गीत गावै अर घर–घर ओ संदेसो देवै कै 'दीवाळी रा दीवा दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा।' दीवो कठैई 'बडो' नीं होय जावै (बुझै नीं), इण वास्तै मिनखां में ओ विस्वास जगावै कै 'घालो तेल, बधै थांरी बेल।'

जीवण में संस्कारां रो घणो मोल, जीवण रा सोळा संस्कार मानीजै। जलम सूं लेय'र सौ बरस पूगै जित्तै मिनख आं संस्कारां रै गेलै–गेलै चालै। संस्कारां सूं जुड़्योड़ा है लोकगीत। घर में टाबर रो जलम होवै तो जच्चा रा गीत, सूरज पूजा रा गीत अर जळवा पूजण रा गीत गाईजै। इण मौकै सासू, बऊ, नणद–भौजाई, देराणी–जेठाणी रा गीत ई गाईजै, जिणमें जीवण रा खारा–खाटा अर मीठा अनुभव होवै। पैली होळी आवै जद टाबर री ढूंढ करै, उणरा गीत, जलम केसां नैं बडा करै तो झडूलै रा गीत गाईजै। जनेऊ धारण करावती बगत उणरा गीत गाईजै तो ब्याव रै मौकै विनायक, मायरो, वंदोळी, कामण, कळस, पीठी, तेल, हळदी, तोरण, फेरा, कुंवर–कलेवो, जुआ–जुई, सीख रा गीत गावण री रीत है। ब्याव रा गीतां नै 'बन्ना' कैवै जिणमें आपरै परिवार वाळां रा नांव लेय'र काकोसा, भाबोसा, दादोसा इत्याद रा संबोधन गीत गाईजै। इण मौकै भगवान नैं पति रूप में पावण री कामना करती 'बन्नी' जांणै भगवान जैड़ो वर मिलै। इण वास्तै वा कांई मांगै––

म्हैं तो मांगूं अयोध्या रो राज, पीहर म्हारो जनकपुरी।
म्हैं तो वर मांगूं भगवान, छोटो देवर लिछमणजी।।

जीवण री सगळी अवस्थावां में टाबरपणो आपरी न्यारी ठौड़ राखै। टाबरां रा गीतां में मेवाड़ रो 'हरणी' गीत, जिणनैं टाबरिया रमता–रमता गावै––

हरणी हरणी थूं क्यूं दूबळी अे,
चाल म्हारै देस ! राता गंउवां की घूघरी अे,
नूंवी तिल्ली को तेल..... ।

जीवण हरमेस रंगीलो नीं होवै। सुखां रै साथै दुःख ई जुड़्योड़ा है। अठै रा गांवां अर ढाणियां में रैवण वाळा मिनखां रो जीवण घणो अबखो अर दोरो। सियाळै री ठंडी रात में पाणत करता करसा अर लांबी जातरा करता कतारिया आं लोकगीतां सूं आपरै बगत नैं सरस बणावै। मनोरंजनात्मक गीतां री ओळी में ई चिरमी, हिचकी, ईंडाणी, जीरो अर केई ओळूं जैड़ा सिणगारू गीत ई गाईजै। पसु–पंखेरूवां साथै मिनखां रो घणो जूनो संबंध रैयो है। आं पंखेरूवां रै मिस आपरै पीव नैं संदेसो, तो कदैई मीठा ओळबा देवती गोरड़्यां गीतां में आपरी पीड़ उकेरै। कुरजां, सूवटो, कागलियो, मोरियो जैड़ा गीतां में अै पंछीड़ा ई विरहणियां रा सांचा मीत बणिया है तो कदैई संदेसवाहक रो काम सार्‌यो है।

प्रकृति नैं मानखो कीकर भूल सकै ? बरस में आवण वाळी रितुवां रो वरणाव लोकगीतां में होयो

है तो चौमासै रो चौगणो चाव गीतां में जबरो राचै। बिरखा माथै ई मानखै रो सगळो दारोमदार है। बिरखा ऊमटै, मेह वूठै तो बरस सोरो निकळै। चौमासै में खेतां री पगडांड्यां चालता हाळी–बाळदी चौमासैरा गीत गावै, इंदर राजा नैं मनावै अर बिरखा रा लाड–कोड करै। लोकगीतां रो वरणाव कठै नीं होयो ? बात करां जित्ती ई थोड़ी। जीवण री कठोरता आं गीतां में है तो मीठास रो ई पार कोनीं। आं गीतां में वो दरद है, वा पीड़ है कै पासाण हिम ज्यूं गळ जावै, वो इमरत है कै भलांई अेक पल वास्तै ई सही, पण ! मानखो जीव जावै, गीतां री सरसता में डूब'र खुद नैं ई भूल जावै। टाबरां नैं चिगळाय'र हींडै में सुवाड़ण रो जादू आं गीतां में है तो सूतोड़ां नैं जगावण रो जोर ई आं गीतां में लाधै।

लोकगीतां में समाज रा रीत–पांत, परंपरावां, लोकविश्वास अर उणरी भावनावां जुड़्योड़ी है। आं में किणी अेक मिनख रो नीं, समुदाय रो नीं, आखै समाज रो सुर है। किणी समाज री संस्कृति अर परिवेश नैं जाणण वास्तै उठै रा लोकगीतां सूं बध'र दूजो साधन कोनीं। लोक–साहित्य विधावां रो अथाग समदर है तो लोकगीत उणसूं निकळण वाळा अमोलक रतन।

राजस्थानी संस्कृति री छिब अर आखै जीवण री सरसता रा दरसण जठै करीजै, उण मांयली अेक कड़ी है–– 'बधावां' री। बधावो–– हरख–उमाव, लाड–कोड रो छौळां चढियो समदर। बधावो– जीवण री वां घड़ियां री सुखद अभिव्यक्ति, जठै घर–गिरस्थी रा सगळा सुख सैंधरूप होय जावै। घर में बेटा रो जलम होवै, चायै बेटा–बेटी रो ब्याव कै' पछै नूंवै घर में रैवास रो मौहरत होवै, आं अेढां माथै राग–रंग, उच्छब अर रस री बिरखा होवै तो हिये में हरख अर राजीपै रो पार नीं रैवै। आं सुभ अवसरां माथै 'बधावो' गीत गाईजै।

राजस्थान रा मध्यकालीन सामंती समाज में जुद्ध डावै हाथ रो खेल हो। धरती, धरम अर मरजाद राखण वास्तै, तो कदैई बदळै री भावना सूं, राज री सीमावां बधावण सारू तो कदैई वचन–पाळण, स्वामीभक्ति रै कारण भांत–भांत रा जुद्ध अठै लड़ीजता रैया। आं जुद्धां में राजा, सामंत, सरदार, वीर–सैनिक, ओहदैदार, मंत्री अर सेना नैं रासण पूगावण री खैचल वास्तै व्यौपारियां इत्याद नैं केई–केई महीनां घर सूं अळगो रैवणो पड़तो, जठै आव–जाव घणो दोरो, चिट्ठी–पतरी रो ई काम कोनीं। उण बगत घरां में रैवणिया हा तो फगत बूढा, बेमार, टाबर अर धणी रै घरै आवण री आस में कंवळै ऊभी उडीकती, काग उडावती, सूनो मारग भाळती अर झुरती वां वीर–जोधारां री विरहणियां। वै विजोग री वां घड़ियां नैं बिलमावण री अैळी खैचल करती। आपरी कुळ–मरजाद री लिछमण रेखा में बध्योड़ी सीलवंती– सतवंती कुळ–बऊवां री अैड़ी दसा में जद किणी रो प्रवासी प्रियतम अचाणचक घरै आय पूगो तो मेड़ी रा गोखड़ा सूं प्राण–पिया नैं निरखती वा विजोगण, सरब सवागण बण आपरा भाग सरावै अर 'सुख री घड़ी' में उणरो मन गावण लागै। ओ 'बधावो' गीत स्यात उणरै हिये री उण बगत री उकेल ही। गीत रा भाव इण भांत है–– आज आंगणै में जाणै सोळै सूरज अेकण साथै ऊगग्या होवै। इण सुख रो वरणाव वा किंयां करै ? लंबै विछोह पछै संयोग रो सुख सबदां मांय नीं कथीजै। उण सुख नैं भोगण वाळो, उण स्थिति नैं झेलण वाळो ई जाण सकै। 'गूंगै रा गुळ' जैड़ी सुख री घड़ियां में नायिका थोड़ी ताळ वास्तै नारी सुलभ लाज, संस्कार, घर–परिवार वाळां रो संको अर मरजाद नैं जाणै भूल जावै, मन रा कंवळा भाव इण भांत गीत रो रूप लेय लेवै। वा आपरै पति रा पौरुस, वीरता अर दरप सूं दीपती आंख्यां री बडाई 'झीणी केसर' सूं करै। अैड़ी अनूठी उपमा कठैई नीं लाधै। तीखा उणियारा माथै ओपता नाक वास्तै कैवै कै वैमाता जाणै निकमी

बैठ'र (फुरसत, नेठाव सूं) घड़ी है। ओ लोकप्रचलित ओखाणो है। इणनैं परोटण सूं नाक वास्तै दूजी ओपमावां री दरकार ई मैसूस नीं होवै अर उणरो फूठरापो आपै ई प्रगट होय जावै। अैड़ा घणा रूपाळा प्रियतम नैं निरखण रो लोभ है पण ! खिण अेक पछै स्यात उणनैं सोझी आ जावै– कुळ मरजाद अर बडेरां सांमी अेक टक, खरी मीट दियां उण रूप–रूड़ा नैं किंयां देखै ? झीणै घूंघटै री ओठ में ई उणरै कानां रा गजमोती कांई इधका लागै जाणै 'महलां में दीपती दिवलै री जोत।' नायक री कमर में बंधी कटारी वीरोचित्त स्वभाव रो प्रतीक है तो नेवज (प्रसाद, भोग) सूं भर्योड़ी थाळी जैड़ी उणरी हथाळियां अस्त्र–सस्त्रां नैं चलावण में उणरी खिमता दरसावै। इण छोटै'क गीत में नायक रै रूप अर गुणां री कैड़ी'क मरमपरसी अर सजीव अभिव्यक्ति होयी है। इणरी भाषा सहज, सरल अर प्रसाद गुण वाळी है। सगळा सबद सहज ही समझण जोग है। इण लोकगीत में नायिका आपरै धणी वास्तै केई संबोधन सबदां नैं काम लिया है ज्यूंकै 'नणदल बाई रा वीरा', 'सुगणी सासू रा जाया', 'कंवर बाई रा वीरा' इत्याद। राजस्थानी संस्कारां मुजब लुगाई आपरै धणी रो नांव नीं लेवै अर दूजा संबोधनां सूं उणनैं बुलावै। परिवार में आपसरी रा मीठा संबंधां नैं ई अै संबोधन उजागर करै। 'सुगणी सासू रा जाया' सूं अरथ है कै आछा गुणां अर ऊजळा संस्कारां वाळी मा रै जैड़ो उणरो बेटो ई गुणां रो गाडो है, क्यूंकै 'रूंखां जैड़ा छोडा होवै।' सासू री बडाई सूं खुद रै धणी री बडाई करण में कित्ती वाक् चतुराई है–

बधावो

माथै रो दुमालो कोई फूलां के रो भारो जी,
नणदल बाई रो ओ वीरा थांनैं सुख री जी घड़ी।
कंवर बाई रा ओ वीरा थांनैं सुख री जी घड़ी।
कानां रा गजमोती, आडै घूंघट जोती जी,
सासू सुगणी रा जाया थांनैं सुख री जी घड़ी।
आंखड़ल्यां रो पाणी, कोई झीणी केसर छाणी जी,
कंवर बाई रा ओ वीरा थांनैं सुख री जी घड़ी।
नाकड़लै री डांडी कोई निकमी बैठ'र मांडीजी,
नणदल बाई रा ओ वीरा थांनैं सुख री जी घड़ी।
हाथां री हथेळी कोई नेवज री बड़ थाळी जी,
सासू सुगणी रा जाया थांनैं सुख री जी घड़ी।
आंगणियै में ऊभा कोई सोळह सूरज ऊग्या जी,
नणदल बाई रा ओ वीरा थांनैं सुख री जी घड़ी।
सुख री घड़ी स्यूं गोरी रो मन राजी जी,
कंवर बाई रा ओ वीरा थांनैं सुख री जी घड़ी।

दूजो गीत 'आंबो मोरियो' राजस्थानी रो घणो चावो लोकगीत है। रूंखां नैं प्रतीक बणाय'र मन री बात कैवण रो आपरो न्यारो ढाळो है। इण गीत में 'आंबो' हर्या–भर्या घर–गवाड़ी, कुटुंब–कबीला रा सुखां नैं दरसावै। ओ गीत सासू–बऊ रै बिचाळै घणी अपणायत, हेत–प्रेम, आव–आदर रा बरताव नैं उजागर करै। कुटुंब रा मिनख ई सुपातर बऊ रा गैंणा–गांठा है। आं गैंणां रै मिस संबंधियां रा गुणां रा बखाण करण री अनूठी कला इण गीत में देखीजै––

आंबो मोरियो

मधुबन रो अे आंबो मोरियो।
ओ तो पसर्‌यो है सारी मारवाड़।
सहेल्यां अे आंबो मोरियो।
बऊ रिमाझम मै'लां सूं ऊतरी।
आ तो कर सोळा सिणगार।। सहेल्यां।।
सासूजी पूछ्‌यो अे बऊ,
थारो गैंणो म्हांनैं पेर दिखाय।। सहेल्यां।।
सासूजी गैंणै नैं कांई पूछो।
गैंणो ओ म्हारो सो पिरवार।। सहेल्यां।।
म्हारा सुसराजी गढां रा राजवी।
सासूजी म्हारा रतन भंडार।। सहेल्यां।।
म्हारा जेठजी बाजूबंद बांकड़ा।
जेठाणी म्हारी बाजूबंद री लूम।। सहेल्यां।।
म्हारो देवर चुड़लो दांत रो।
देराणी म्हारै चडुलै मायं ली चपूं ।। सहेल्यां।।
म्हारी नणदल कसूमल कांचळी।
नणदोई म्हारै गजमोत्यां रो हार।। सहेल्यां।।
म्हारा कंवरजी घर रो चांनणो।
कुळ बऊ अे दिवलै री जोत।। सहेल्यां।।
म्हारी धीयज हाथ री मूंदड़ी।
जंवाई अे म्हारो चंपै रो फूल।। सहेल्यां।।
म्हारो सायब सिर रो सेवरो।
सायबणी अे म्हैं तो सेजां री सिणगार।। सहेल्यां।।
म्हे तो वार्‌या अे बऊजी थांरा बाले नैं
लडायो म्हारो सै पिरवार।। सहेल्यां।।
म्हैं तो वार्‌या ओ सासूजी थांरी कोख नैं
थे तो जाया अरजण–भींव।। सहेल्यां।।

अभ्यास रा सवाल

घण विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी बरसां लग कैड़ी भाषा रैयी–
   (अ) डिंगळ भाषा (ब) लोक भाषा
   (स) पिंगळ भाषा (द) गुजराती भाषा ( )
2. लोकगीत उत्ता ईज जूना है, जित्तो कै जूनो है–
   (अ) महाकाव्य (ब) वेद
   (स) मिनख (द) राजस्थानी–काव्य ( )
3. लोकगीतां रो मूळ सरूप मिलणो घणो दोरो है, क्यूंकै–
   (अ) अै लोक री रचना है अर बारै कोसां बोली बदळै
   (ब) गेयता आंरो खास गुण होवण रै कारण
   (स) परंपरागत होवण रै कारण
   (द) आं मांय सूं अेक ई नीं ( )
4. 'घालो तेल, बधै थांरी बेल' टाबर क्यूं गावै ?
   (अ) ओ जीवण रो संस्कार है इण वास्तै
   (ब) तेल सूं बेल बधण री परंपरा है इण वास्तै
   (स) दीवो बडो नीं होवै, इणनैं लोकविश्वास सूं जोड़ण वास्तै
   (द) दीवाळी रो संदेसो घर–घर पुगावण वास्तै ( )
5. बालपणै में खेल रै साथै गाईजण वाळो गीत है–
   (अ) मेवाड़ रो 'हरणी गीत
   (ब) मारवाड़ रो 'जल्लो' गीत
   (स) गोडवाड़ रो 'चिरमी' गीत
   (द) मेवाड़ रो 'झुरणी' गीत ( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. लोकगीत री सबसूं मोटी विशेषता कांई है ?
2. लोकगीत किणरै हियै रा उद्‌गार है ?
3. ब्याव में गाईजण वाळा गीतां नैं कांई कैवै ?
4. गणगौर किण मास में आवै, लुगायां इण दिन कांई करै ?
5. पंखेरूवां सूं संबंधित दो लोकगीतां रा नांव लिखो।

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. लोकगीतां में कांई–कांई वर्णन होयो है ?
2. हाळी–बाळदी अर कतारिया गीत क्यूं गावै ?
3. लोकगीतां में कांई जोर है ?
4. आखै जीवण री सरसता रा दरसण किण में होवै, अर क्यूं ?

5. मनोरंजनात्मक गीतां री ओळी में आवण वाळा चार गीतां रा नांव लिखो।

लेख रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. लोकगीतां में सांवठी संस्कृति रा दरसण होवै। इण बात रो खुलासो करो।
2. लोकगीत 'बधावा' रो भाव आपरै सबदां में लिखो।
3. लोकगीत 'आंबो मोरियो' में सासू–बहू रा संवाद अर गीत री प्रतीकात्मक शैली रो वर्णन करो।
4. नीचै लिख्योड़ा पद्यांशां री सप्रसंग व्याख्या करो–

    (अ) माथै रो दुमालो.....आडै घूंघट जोती जी।

    (ब) आंखड़ल्यां रो पाणी.....निकमी बैठ'र मांडीजी।

    (स) हाथां री हथेळी.....गोरी रो मन राजी।

    (द) मधुबन रो अ.....म्हारो सो पिरवार।

उत्तरमाळा

1. ब 2. स 3. अ 4. स 5. अ

अबखा सबदां रा अरथ

इकाई : अेक

ढोला–मारू रा दूहा

चपां = अेक सुंदर फूल। वरणी = रंग री, इणी'ज आब री। उर = हियो, छाती। विचि = बीच में, कटि भाग। हीण = पतळी। मंदिर = महल, घर। भणक्कि = भणकारौ, मीठी आवाज। मति = अकल, बुद्धि। सीळ = इज्जत, आबरू। सुभाइ = सुभाव, उण भांत। सरहर = समान, बराबर। अवर = बीजी, और। खमणी = क्षमावान, मोटी अकलवान। सुकच्छ = फूठरै कक्षां वाळी। अच्छ = साफ–सुथरो, सुंदर, आबवान। मारूवी = मरवण। सुगुणी = गुणां सूं भरपूर। नयण = नैण, आंख। सुचंग = घणी फूठरी। साधण = सायधण, मनमेळू लुगाई। झंखरा = झाड़–झंखाड़ वाळा, पत्तां विहीण झाड़। गुणे सुगंधी मारवी = मरवण रा गुणां री सुगंधी लेय'र। वणराइ = वनस्पति, जंगळ रा पेड़–पौधा। घम्मघमन्तइ = घणै कळियां अर घेरवाळो। मयंद = हाथी, कुंजर। इसइ = इण तरै, इंयूं। आरखइ = दसा, औस्था। मिल्यउ = मिल्यो। निसासउ = निसांसां। बाबहियउ = पपीहा। नइ = अर। सहाव = सुभाव। घण = बादळ। घणउ = ज्यादा, अधिक। प्रियाव = प्रिय आवो, प्रिय री लगन। आवि = आवो, आना। सुहावा = सुहावणा, मनभावणा। कंत = प्रियतम, पति। झबूकड़ा = पळका मारणा। ढोलौ = साल्हकुंवर। ऊनमियउ =घटावां रो शानदार मंडाण। काळी कांठळि=गहरै काळै रंग री बादळी। नीलज्ज्यां=बेशर्म, लाजहीण। जळहर = इन्द्र भगवान। लज्ज = लज्जा कर, दया कर। प्रिउ = प्रियतम। गज्ज = गर्जना करना। जउ = जो, तउ = तो। अंगार = अग्नि समान। कूंझा = कुरजां, क्रोंच पक्षी। द्यौ = द्‌यो। विनउ = विनती करूं। लंघी = उस पार, लांघणो। प्री = प्रियतम। पाछी = वापिस। देसि = दे दूंला। सहियां = सखियां। तनहि = शरीर सूं। ताप = गरमास, पीड़ा। ढाढी = लोकगीतां नैं गावण वाळो जाचक। जोबण फट्टि तळावड़ि = यौवन रूपी तळाब फाट रैयो है। विरह महादव = विछोह री महाअगन। राज्यंद = राजन, प्रियतम। दाखविया = कहना। मद = नशा। अंकुस = हाथियां नैं कब्जै में करण वाळो अेक शस्त्र। तातउ = गरम। भात = भोजन। दाझणती = गरम सैक लगावणो। डर पाइ = डर सूं। विळळंती = विलाप रै साथै। लीहटी = लकीर, पंथी रै सांमो नीं जो'र नीचै आंख्यां कर'र धरती माथै आपरै पगां सूं अणभणै भावां रै साथै लकीरां काढै, (आ अेक राजस्थान री सांस्कृतिक सीमा है)। उर = हिरदो, काळजो। सनेह = प्रीत। मूंदही = मींचणो, बंद करणो। तास = उणरो। उजास = चानणो, प्रकाश।

इकाई : दो

ईसरदास बारठ

सादूळौ = सिंह। समौ = सांमो। बियौ = दूजो। हाक = हुंकार। विडाणी = दूजां री। सांभळै = सुण'र। वीसमौ = अचरज, अचूंभो। भमंगमणि = सांप री मणि। सुहड़ांह = जोधा मिनख, वीर पुरुष। मूंवाहिज = मर्‌यां पछै ही। गहड़ = गाढा, बलवान। गडैं सणि = वाराह, सूअर। जणि =जलम देवणो। छापरि = खुल्लो मैदान। मंडै = रचै। आळी = खेलणो। धूणि= घुमाय'र। विटाळण = अैंठो

करणो। जंबूक = गीदड़। अभंग = निडर। दांतळी = सूअर रा दांत। घणथट्टां = घणो गहरो घाव। पिसण = शत्रु। घालणौ = नास करण वाळो। पाखर्‌या = कवचयुक्त घुड़सवार। विरणिया = वीर। वागी = बजी। सापुरस = सत्पुरुष। ऊभारवै = धारण करणो। भागलां = कायरां, हिरण सारू। कळ = जुद्ध।

पाटली = पाटी, स्लेट। हर उत = शंकर रो बेटो गणेश। न लम्भे = लेय नीं सक्या। सरज्या = उत्पन्न कर्‌यो। आभ वछूटां = आभै सूं पड़ण वाळा। धरणिधर = धरती नैं धारण करण वाळो, परमात्मा। आसार = आश्रय। अवध = आयु। हंस= आत्मा। विसराम = मोक्ष, मुक्ति। पाणिये = पाणी। तसष = तिरस, प्यास। छीजै = मिटणो, धीरै धीरै कम होवणो। मेदनी = सृष्टि।

संत जसनाथजी

सिरो = श्रेष्ठ। अमीं = इमरत। सौसे = सोंखणो, चूंसणो। रूप छत्तीसों ऐहा = प्रकृति रै छत्तीसूं रूपां नैं वरण करणो। खोज नै खोजै = लाध्योड़ी चीज नैं कांई सोधणो। खाख = भसमी, राख। पून = हवा, वायरो। घण हर बरसै मेहा = चिता री अगन सूं जको धूंवो उठैला वो हवा रै योग सूं पाणी नैं सोख'र थारै हाडां माथै बादळ रै रूप में बरसैला। भूतळा = भूतळियो, चक्रवात। बाइन्दा = झंझावात। छेहा = अंत। शीसो = खरगोश। चीनो = पिछाणणो। हरिभाई = परम प्रभु। बिमुणा = लज्जाहीण। विमुख हांडै = उल्टो मारग पकड़'र गोता खावणा। कुगस गा'ई = फूस, फोफळिया, अनाज रा छिलका, थोथा। रण = अरण्य, जंगळ। विरदो =वध करो, मारो। सरणाई = दूध देय'र ई गाय शरण में राखै। गिंवाळी = गवाळिया, रुखाळा। जत = संयम। फरमाणी = आदेस। गाडर = भेड़। अमींरा कूंपा = दूध रूपी अमृत भंडार। गळबी = गला करद, छुरी। पलारै = धार देवै। महमाणी = बखाण करणो, गुण बखाणणो। भाड़ = भड़भूजां, धान सेकण वाळो। हिंयर = हाथी–घोड़ा।

मीरांबाई

छाये = हिरदै में बसग्या। करवत = करौत। वैरागण = संसार री मोहमाया सूं विरक्त। जटा = केश, बाल। गूदड़ी = बिस्तर, अथिर ठिकाणै रै अर्थ में। छांड = छोडणो। बरजी = मना करी, इनकार करी। कोठे = घर में, हिरदै में। सुगनां साहिब = सगुण आराध्य (अवगुणा–गुणातीत)। गटकी = पीना। घट–घट की = मन री, हिरदै–हिरदै री। लटकन = बांकी छवि। गुवाळियो = गायां नैं चरावण वाळो, ग्वाळो। कुबजा = पीठ में कूबड़ होवण रै कारण कुबजा नांव री दासी ही पण कृष्ण–भक्त ही। बडाई = तारीफ, प्रशंसा। बान = लत, आदत। उर = हिरदो। बिकानी = बिकगी, वस में होयगी, दासी बणगी, शरणागत। नीको = आछो, भलो, सुंदर। ठाकुर = भगवान श्रीकृष्ण। कुंजन = ब्रज री संकड़ी गळियां। फीको = अलूणो, नीरस। अविनासी = जिणरो नास नीं होवै। गरब = गर्व। चहर = चरभर रो खेल, कळंक, निंदा। जुगत = मुक्ति, उपाय।

श्रीमद् जयाचार्य

ताइयै = दुख देवणो, सतावणो। अवलाये = देखणो। शासता = सास्वत, हरमेस रैवण वाळा। समभावै = सुख अर दुख में अेक समान रैवणो, सगळां रै वास्तै समता रा भाव। उपसंत = उपजावणो, उत्पन्न होवणो। खिम्या = क्षमा करणो, माफ करणो। अखिल = पूरो, आखो, संपूर्ण। विखैर = बिगाड़णो, मान मिटावणो, खंडित करणो। हेर = तलाश, खोज। बख्तर = कवच। आराधियै = ध्यान देवणो, पूजा उपासना। ओळखो = पिछाणो, जाणो। अघ = पाप, नीच करम।

इकाई–तीन

गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद'

जुगवाणी = सैमरी आवाज, वाणी। जुल्मी = अत्याचारी। खपग्या = खत्म होयग्या। आखड़िया = लड़खड़ाणो। बेड़ी = गुलामी। गाडर = भेड़। जरबां = जोर–जुलमां सूं। निरणां = भूखा। गाभा = कपड़ा, वस्त्र। ऊजड़ = बिना मारग रै। जूझारां = जुद्ध रै मांय जूझण वाळा जोद्धा। गींड = गेंद, दड़ी। कळां = विधावां।

चन्द्रसिंह बिरकाळी

सह = सब, सभी। बंजड़ = बंजर जमीन। झंखड़ = झाड़–झंखाड़। बांठ = छोटी झाड़ियां। उडीक = इंतजार। तास = घणी पीड़ा देवणी। चाव = कोड, उमंग, उछाव। बणाव = सिणगार। दाय = पसंद। पेई = संदूक। खितिज = जठै आभो अर धरती भेळो होवतो दीखै, क्षितिज। सुवरण = सोनो। तूठणा = इच्छा पूरी करण नैं। बूठण = बरसात करण नैं। कळायण = काळा बादळां री घटा। ऊमटी = संभी, तत्पर होई। विधसूं = विनाश। पोखर = छोटो तळाब, नाडी–नाडियो। आसरा = घास–फूस सूं बण्योड़ा कच्चा घर।

कन्हैयालाल सेठिया

गोरा = आछा, साफ। रुतबो = आबरू, इज्जत। कूंचो–कूंचो = हरके । फोगां = मरुधरा री अेक झाड़ी विशेष। बांठां = छोटी झाड़ियां। जामण = मा। पाण = द्वारा। पाणी = इज्जत। आडावळ = अरावती पर्वत। पत = इज्जत अर आबरू, विश्वास। सैनाणी = निसाणी। काणती = अेक आंख वाळी। कमेड़ी = अेक मादा पक्षी। गेली परली = मारग रै उण पार। लीलगरां = अेक जात विशेष, रंगरेज। बैड़की = पैलियांत गाय। धार हुगी = थोड़ो–घणो दूध होयग्यो, धीणो। बळाई = अेक जात विशेष। सुधियां = सूबै बेगो, अलसुबह। उलाकता = उलटियां करता। साढं = ऊंठणी, मादा ऊंट। बिराईज'र = आफरो आय'र। हांडी हेठै करगी = भारी नुकसाण होवणो। ओळखाण = जाण–पिछाण। संवेदण = आपसी दुःख–दरद नैं जाणणो–पिछाणणो।

मेघराज 'मुकुल'

बूकिया = भुजा। गाज = बीजळी। सीळो = ठंडो। भूंगाळी = फूंकणी। थाप = चांटो, थप्पड़। अजै = ओजूं तांई, हाल तांई। सावळसूत = भली भांत। गरीब–नवाज = गरीब रो संगायती, साथी। उमर–दराज = लांबी ऊमर।

प्रेमजी प्रेम

मनख्यां = मिनखां। लूण्या = माखण। पतकाळ्यां = लाल मिर्च। डबरी = डळी। पाछणा = उस्तरो। थूणियो = मोटी अर लांबी लकड़ी, जकी आसरै में छात नैं सहारो देवण रै काम आवै। हेरबो = ढूंढणो, खोजणो। डील = शरीर। उघाड़ी = नागी। पांव ऊभाणा = नागै पगां, बिना पगरखी। आकास्यां = आभै। सातां = आराम, चेतना।

हिम्मतसिंह उज्ज्वळ

ताखड़ौ = उंतावळो, चुस्त। अैहड़ो = इण भांत रो। धिरकार = धिक्कार, फौट। अरदास = विणती। ढाबलो = रोकलो। धंधारथी = कामेती, कामगार। खम्मठोक = ताळ ठोक'र। मान = इज्जत। भूप = राजा।

इकाई : च्यार

नीति रा दूहा

भंवर = भ्रमर, भौंरा। हर = महादेव, शिव। पखाळ्या = धोया। वडां = बडा री, मोटां री। वधत–वधत = बढ़ते–बढ़ते। कुंजर = हाथी। बींद = दूल्हो। भुयं = भूमि। कण = अनाज। त्रण = घास, वनस्पति। नरिंद = श्रेष्ठ वीर, भलो आदमी। नीपजै = पैदा हुवै। कांठै = पास में। गैला = कम बुद्धि रा आदमी। बाड़ = खेत री झाड़ीवान चारदीवारी। गहली = पगली। रूंख = वृक्ष। वाहला = छोटा नदी–नाळा। ओछां = ओछी बुद्धि वाळा सूं ; कपटी। नेह = प्रीत। छेह = किनारा। वड़ = वटवृक्ष। आला = खतरनाक। खट्टियै = संचय करणो, प्राप्त करणो। सवाया दीह = आछा दिन। सांकळा = लोह री चैन, सांकळ, गुलामी। गरजै = आत्मगर्वित। खेड़ै–खेड़ै = गांव री गुवाड़; खुली जागा। वार = समय में। संचरै = आवणो, विचरण करणो। पही = पंथी। विहंग = पशु–पक्षी। बिहुंणा = बिना। सलूंणा = प्रीतवान, नेह सूं भर्‌योड़ा। अलूणी = बिना प्रीत रै; बिना नेह रै। कदूणी = कद री। विणास = विनाश। वासदी = आग। करता = परम–पिता, नीयति, प्रकृति।

राजस्थानी लोकगीत

दुमालो = साफो, पाघड़ी। सुगणी = गुणां वाळी। सोळह सूरज = सोळै सूरज रो तेज। आंबो मोरियो = पारिवारिक जस–कीरती अर वंश–वृद्धि रो प्रतीक। चूंप = सोनै री कोरणी। कसूमल = सुरंगी। लाल–गुलाबी रंग रो भेळ। धीयज = बेटी। सेवरो = फूलां रो बण्योड़ो जूड़ो। भींव = भीम।